Printed by

Pandit Atmaramji Sharma at the "George Printing works" Benares City from page 1 to page 320

and

Matubhai Bhaidas at the 'Surat Jain" Printing Press, Khapatia Chuckla, Surat from page 321 to page 376 and preface &c

Published by

Moolchand Kisondas Kapadia, Proprietor, "Digamber Jain Poostakalaya" and Hon Editor "Digamber Jain" Published from,

Khapatia Chakla, Chandawadi— Surat
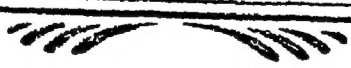
भूमिका ।

सहृदय पाठक !

यों तो यह संसार है अनेक मनुष्य आकर इसमें जन्म-धारण करते हैं और यथायोग्य अपने जीवनका निर्वाह कर चले जाते हैं परंतु जन्म उन्हीं मनुष्योंका उत्तम सार्थक एव प्रशंसा-भाजन गिना जाता है जो निस्वार्थ और परहितार्थ हो। मनुष्योंकी निस्स्वार्थता और परहितार्थता उन्हें अजर अमर बना देती है। पूर्वकालमें जिन २ मनुष्योंकी प्रवृत्ति निस्स्वार्थ और परहितार्थ रही है यद्यपि वे पुरुष इस समय नहीं है तथापि उनका नाम अब भी बड़े आदरसे लिया जाता है और जब तक संसारमें अंशमात्र भी गुणग्राहिता रहेगी बराबर उन महापुरुषोंका नाम स्थिर रहेगा।

यह जो मनोज्ञ ग्रंथ आपके हाथमें विराजमान है इसका नाम श्रेणिकचरित्र है। इस चारित्रके नायक प्रातःस्मरणीय महाराज श्रेणिक है । जैन जातिमें महाराज श्रेणिकका परम आदर है। जैनियोंका बच्चा२ महाराज श्रेणिकके गुणोंसे परिचित है और उनके गुणोंके स्मरणसे अपनी आत्माको पवित्र मानता है यहां तक कि जैनियोंके बड़े २ आचार्योंका भी यह मत है कि यदि महाराज श्रेणिक इस भारतवर्षमें जन्म न लेते तो इस

कलिकाल पंचमकालमें जैनधर्मका नामनिशान भी सुनना कठिन होजाता; क्योंकि वर्तमानमें इस भरतक्षेत्रमें कोई सर्वज्ञ रहा नहीं। जितने भर जैन सिद्धांत है उनके जाननेका उपाय केवल शास्त्र रह गये है और उनका प्रकाश भगवान् महावीर अथवा गणाधर गौतमसे अनेक विषयोंमें गूढ़२ प्रश्नकर महाराज श्रेणिककी कृपासे हुआ है।

महाराज श्रेणिक कब हुए इस विषयमें सिवाय इनके चरित्रको छोड़कर कोई पुष्ट प्रमाण दृष्टिगोचर नहीं होता। जैनसिद्धांतके आधारसे भगवान् महावीरको निर्वाण गये २४४० वर्ष हुए हैं और भगवान महावीरके समयमें महाराज श्रेणिक थे। इसलिये इस रीतिसे भगवान् महावीर और महाराज श्रेणिक समकालीन सिद्ध होते हैं। कहीं२ पर यह किंवदंती सुननेमें आती है कि महाराज श्रेणिक राजा चंद्रगुप्तके दादे वा परदादे थे।

श्रेणिकचरित्र।

यह संस्कृत ग्रंथ भट्टारक शुभचंद्रका बनाया हुआ है। और यह भाषा श्रेणिकचरित्र उसीका अनुवाद है।

ग्रंथकारपरिचय।

श्रेणिकचरित्रकी अंतिम प्रशस्तिमें भट्टारक शुभचंद्रने मूलसंघकी प्रशंसा की है इसलिये यह जान पड़ता है कि महाराज शुभचंद्र मूलसंघके भट्टारक थे एवं इसी प्रशस्तिमें

इन्होंने प्रथम ही भगवत्कुंदकुंदको नमस्कार किया है पीछे उन्हींके वंशमें पद्मनंदी, सकलकीर्ति, भुवनकीर्ति, भट्टारक ज्ञानभूषण एवं विजयकीर्ति भट्टारकोंका उल्लेख किया है और निम्न लिखित श्लोकोंसे अपनेको विजयकीर्ति भट्टारकका शिष्य बतलाया है।

जगति विजयकीर्तिर्भव्यमूर्तिः सुकीर्ति-
र्जयतु च यतिराजो भूमिपैः स्पृष्टपादः
नयनलिनाहिमांशुर्ज्ञानभूषस्य पट्टे
विविधपरविवादे क्ष्माधरे वज्रपातः॥१॥
तच्छिष्येण शुभेंदुना शुभमनः श्री ज्ञानभावेन वै
पूत पुण्यपुराणमानुषभव ससारविध्वसक
नो कीर्त्यो व्यरचि प्रमोहवशतो जैने मते केवल
नाहकारवशात् कवित्वमदतः श्री पद्मनाभेरिदं॥२॥

अर्थः—नय (प्रमाणांश) रूपी कमलिनियोंको प्रकाशित करनेमें चन्द्रके समान महाराज ज्ञानभूषणके पट्टपर अनेक परविवाद रूप पर्वतोंपर वज्रपात, अनेक राजाओंसे पूजित, उत्तम कीर्तिके धारक भव्यमूर्ति यतिराज श्री विजयकीर्ति संसारमें जयवंत रहो॥१॥

भट्टारक विजयकीर्तिके शिष्य शुभचंद्रने शुभ मन और ज्ञानकी भावनासे पुराणसे उद्धृत पवित्र एव संसारका नाश करनेवाला यह श्री पद्मनाभतीर्थंकरका चरित्र रचा है। मेरा जैनमतपर अटूट स्नेह है इसी लिये यह रचना की गई है किंतु कीर्ति अहंकार और कवित्वके मदसे नहीं की गई है।

भट्टारक शुभचंद्रके विषयमें जो पट्टावली मिली है उसमें भी यह उल्लेख पाया गया है कि भट्टारक शुभचंद्र भट्टारक विजयकीर्तिके ही शिष्य थे एवं भट्टारक शुभचंद्र भगवान् कुंदकुंद पद्मनंदी सकलकीर्ति आदिके आम्नायमें हुए है।

उसी प्रकार नीचे लिखी **पांडवपुराणकी** प्रशस्तिके श्लोकोंसे भी यह बात जानी गई है कि भट्टारक शुभचंद्र भट्टारक विजयकीर्तिके ही शिष्य और कुंदकुंदादि आचार्योंकी ही आम्नायमें थे।

श्री मूलसघेऽजनि पद्मनदी तत्पट्टधारी सकलादिकीर्तिः
कीर्तिः कृता येन च मर्त्यलोके शास्त्रार्थकर्त्री सकला पवित्रा ॥६७॥
भुवनकीर्तिरभूद्भुवनाद्भुतैर्भुवनभासनचारुमतिः स्तुतः।
वरतपश्चरणोद्यतमानसो भवभयाहिखगेट् क्षितिवत्क्षमी ॥६८॥
चिद्रूपवेत्ता चतुरश्चिरतनश्चिद्भूषणश्चर्चितपादपद्मकः
सूरिश्च चद्रादिचयैश्चिनोतु वै चारित्रशुद्धिं खलु नः प्रसिद्धिदा ॥६९॥
विजयकीर्तियतिर्मुदितात्मको जितनतान्यमनः सुगतैः स्तुतः।
अवतु जैनमत सुमतो मतो नृपातिभिभवतो भवतो विभुः ॥७०॥
पट्टे तस्य गुणाम्बुधिर्व्रतधरो धीमान् गरीयान् वरः
श्रीमच्छ्रीशुभचद्र एप विदितो वादीभसिंहो महान्।
तेनेदं चरित विचारसुकर चाकारि चंचद्रुचा
पाडो. श्रीशुभसिद्धिसातजनक सिद्ध्यै स्तुताना सदा ॥७१॥

अर्थः—मूल संघमें मुनि पद्मनंदी हुए और उन्हींके पट्टपर अनेक मुनियोंके बाद सकलकीर्ति मुनि हुए। भट्टारक सकलकीर्तिने मर्त्यलोकमें शास्त्रके अभिप्रायको भले प्रकार विवेचन करनेवाली समस्त कीर्तिका प्रसार किया ॥६७॥

भट्टारक सकलकीर्तिके पट्टपर भट्टारक भुवनकीर्ति हुए। भट्टारक भुवनकीर्ति समस्त लोकको आश्चर्य करनेवाले थे, संसारके स्वरूप प्रकाश करनेमें चतुरमति थे, स्तुत थे, उत्कृष्ट तपस्वी थे, संसारभयरूपी सर्पके लिये गरुड एवं पृथ्वीके समान क्षमाशील थे ॥६८॥

आत्मस्वरूपके ज्ञाता चतुर चिरंतन चंद्र आदिसे पूजित चरणकमलोंसे युक्त आचार्य श्री ज्ञानभूषण कीर्ति प्रसार करनेवाली चारित्रशुद्धि हमें प्रदान करें ॥ ६९ ॥

अन्य मनुष्योंके चित्तोंको जीतने एवं नम्रीभूत करनेवाले बौद्धोंसे स्तुत पवित्र आत्माके धारक बुद्धिमान अनेक राजाओंसे पूजित एवं प्रभु—भट्टारक विजयकीर्ति जैन मतकी रक्षा करै एवं ससारसे आप लोगोंका वचायें ॥ ७० ॥

भट्टारक विजयकीर्तिके पट्टपर गुणोंका समुद्र, व्रती, बुद्धिमान, अतिशय गुरु, उत्कृष्ट, प्रसिद्ध, वादीरूपी हस्तियोंके लिये सिंह एवं महान् श्री शुभचंद्राचार्य हुए। तेजस्वी श्री शुभचंद्रने यह सरल सदा भव्योंको सिद्धि प्रदान करनेवाला पांडवचरित्र रचा ॥ ७१ ॥

इसप्रकार उक्त तीन प्रमाणोंसे यह बात निर्विवाद सिद्ध हो चुकी कि भट्टारक शुभचंद्र मूलसघके भट्टारक हुए है और वे विजयकीर्तिके शिष्य और भगवत्कुदकुंदके आम्नायमें हुए है।

शुभचंद्रकी प्रशस्तियोंमें जगह २ शाकवाटपुरके उल्लेखसे यह बात जानी जाती है कि शुभचंद्र सागवाड़ाकी गद्दीके भट्टारक थे। यह गद्दी सकलकीर्तिके बाद ईडरकी गद्दीसे जुदी हुई है और तबसे उसके जुदे २ भट्टारक होते आये है।

पांडवपुराणकी प्रशस्तिमें—

श्रीमद्विक्रमभूपतेर्द्विकहते स्पष्टाष्टसख्ये शते
रम्येऽष्टाधिकवत्सरे सुखकरे भाद्रे द्वितीयातिथौ
श्रीमद्वाग्वरनिर्वृतीदमतुले श्रीशाकवाटे पुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुषाभिधे विरचित स्थेयात्पुराण चिरं ॥८६॥

इस श्लोकसे यह बात बतलाई गई है कि यह पांडवपुराण (शाकवाट) सागवाड़ामें विक्रम संवत् सोलहसौ आठ १६०८ भादों द्वितीयाके दिन बनाया गया है।

इससे यह साफ मालूम पड़ता है कि भट्टारक शुभचंद्र विक्रमकी सत्रहवीं शताब्दिमें हुए हैं।

पांडवपुराणकी प्रशस्तिमें भट्टारक शुभचंद्रने अपने बनाये ग्रंथोंके नाम दिये है वे ये है—

चंद्रप्रभचरित्र पद्मनाभचरित्र प्रद्युम्नचरित्र जीवंधरचरित्र चंदनाकथा नांदीश्वरीकथा पं. आशाधरकृत आचार शास्त्रकी टीका, तीसचौवीसीविधान सद्वृत्तसिद्धपूजा (सिद्धचक्रपूजा) सारस्वतयंत्रपूजा चिंतामणीतंत्र कर्मदहनपाठ गणधरवलयपूजन पार्श्वनाथकाव्यकी पंजिका पल्यव्रतोद्यापन

चारित्रशुद्धिव्रतोद्यापन अपशब्दखंडन तत्त्वनिर्णय तर्कशास्त्र तर्कशास्त्रकी टीका सर्वतोभद्रपूजा अध्यात्मपदवृत्ति चिंतामणि-व्याकरण अंगप्रज्ञप्ति जिनेंद्रस्तोत्र षड्वाद और पांडवपुराण। श्रेणिकचरित्र इन्हीं भट्टारकका बनाया हुआ है परंतु उपर्युक्त पांडवपुराणकी सूचीमें श्रेणिकचरित्रका उल्लेख नहीं किया गया है इसलिये मालूम होता है श्रेणिकचरित्र पांडवपुराणके पीछे अर्थात् विक्रम संवत् १६०८ के पीछे बनाया गया है तथापि कब बनाया गया यह निर्णय नहीं होता। भट्टारक शुभचंद्रके बनाये और भी अनेक ग्रंथोंके नाम मिलते है नहीं मालूम वे भी श्रेणिकचरित्रके पीछे बने है या पहिले?

विज्ञप्ति--

विज्ञपाठक!

मुझे अतिशय कठिन कार्य 'सनातनजैनग्रंथमाला'का संपादन करना पड़ता है और अवशिष्ट समयमें परीक्षाकेलिये पढ़कर कोर्स पूरा करना पड़ता है इससे अतिरिक्त मुझे काफी समय नहीं मिलता जिसमें मैं तीसरा काम कर सकूं तथापि श्रीयुत मान्यवर परमसज्जन, जैनधर्मकी उन्नतिमें सदा दत्तचित्त, मित्रवर, सेठि मूलचंदजी किसनदासजी कापड़ियाके आग्रहसे मुझे इस श्रेणिकचरित्रका हिंदी अनुवाद करना पड़ा है। पहिले मै पद्मनंदिपंचविंशतिकाका अनुवाद कर चुका हूं

और यह मेरा द्वितीय काम-है। भाषाके लिखते समय मेरा बराबर लक्ष्य नहिं रहा है। मुझे विश्वास है इस अनुवादमें मेरी वहुतसी त्रुटियां रह गई होंगी। इसलिये यह सविनय प्रार्थना है कि विज्ञपाठक मुझे उन त्रुटियोंकेलिये क्षमा करें।

मित्रवर मूलचंदजी किसनदासजी कापड़ियाको परम धन्यवाद है कि जिनके उद्योगसे जैनधर्मको उन्नत करनेवाले वहुतसे काम हो रहे है और स्वयं भी आप रातदिन परार्थ काम करते रहते है। मुझे विश्वास है आगे भी कापड़ियाजी इसीप्रकार काम करते चले जांयगे और जैनियोंमे उच्चादर्श बननेका दावा रक्खेंगे।

काशी। वीर सं. २४४१
मार्गशीर्ष शुक्ल ७। } विद्वत्कृपाभिलाषी—
गजाधरलाल।

विषय सूची

पृष्ठ

दिगंबरजैनग्रन्थमाला—सूरतके हिन्दी ग्रन्थों

श्री हनुमानचरित्र (भाषा)	०।=)
श्री महावीरचरित्र (निर्वाणकांड भाषा-गाथा और निर्वाणपूजनसह)	०)-॥
श्री श्रीपालचरित्र भाषा (नदिश्वरव्रतमहात्म्य पृ.२०० पक्की जिल्द)	१)=)
श्री जम्बुस्वामीचरित्र (भाषा)	०।)
प्रातःस्मरणमंगलपाठ	०)–)
श्री दशलक्षणधर्म	०।–)
श्री श्रेणिकचरित्र भाषा	१॥।)

सब प्रकारके जैन ग्रन्थों और

"पवित्र काश्मीरी केसर"

मिलनेका पता—

मैनेजर, दिगंबर जैन पुस्तकालय,

चंदावाडी—सूरत

समर्पण ।

पवित्र श्रेणिकचरित्र ।

आजन्मब्रह्मचारी अनेक महनीयगुणधारी निर्लोभ-
जातीयकार्यकारी परमोपकारी जैनसिद्धांत-
प्रचारैकव्रती प्रातःस्मरणीय श्रीमान् पंडित
पन्नालालजी बाकलीवाल के पावन कर-
कमलोंमे उनके अनेक उत्तमोत्तम
उपकारभारावनत प्रकाशक व
अनुवादक द्वारा सादर
समर्पित

जैनसिद्धांतोद्धारक बालब्रह्मचारी—

पंडित पन्नालालजी वाकलीवाल जैन, बनारस सीटी

श्रेणिकचरित्र।

श्रीवर्द्धमानमानंदं नौमि नानागुणाकरं।
विशुद्धध्यानदीप्तार्चिर्हुतकर्मसमुच्चयं ॥

शुक्लध्यानरूपी देदीप्यमान अग्निसे समस्तकर्मोंके समूह को जलानेवाले, अनेकगुणोंके आकर आनंदके करनेवाले **श्रीवर्द्धमान** स्वामीको मैं नमस्कार करता हूं ॥ १ ॥ जिस भगवानने वाल्यअवस्थामें ही मुनियोंका संदेह दूर करनेसे श्रेष्ठ विद्वत्ताको पाकर **सन्मति**नामको धारण किया। जिस भगवानने वाल्य अवस्थामें ही मायामयी सर्पके मर्दन करनेसे **महावीर**नाम को प्राप्त किया, और जो वाल्य अवस्थामें ही अत्यंत बलको पाकर वीरों के वीर कहलाये। जिसभगवानने मनुष्यलोकसंबंधी बड़े भारी राज्यको भी, जीर्णतृणके समान समझकर, छोड़ दिया एव जो दीक्षा धारण कर समस्तलोकके वंदनीय हुये। तथा जो महावीर भगवान केवलज्ञान केवलदर्शनको प्रकाशकर धर्मरूपी सपत्ति

से शोभित हुये । ऐसे समस्तलोकमें आनंद मंगल करने वाले श्रीमहावीरभगवानको मै (ग्रंथकार) अपनें हृदयमें धारण करता हूं ।

तत्पश्चात् ज्ञानरूपी भूषणके धारक, धर्मरूपी तीर्थके स्वामी, **श्रीऋषभदेव** भगवानसें लेकर पार्श्वनाथ पर्यंत तीर्थकरों को भी मैं अपनी इष्टसिद्धिकेलिये इस ग्रंथकी आदिमें नमस्कार करता हूं । इनसे भी भिन्न जो ज्ञानरूपी संपत्तिके धारी हैं उनको भी नमस्कार करता हू । तथा ध्यानसे देदीप्यमान शरीर के धारी, गणोंके स्वामी, एवं उत्कृष्टस्वामी (आदिगणधर) **श्रीवृषभसेन** गुरूको भी मैं अपन हितकी प्राप्तिके लिये नमस्कार करता हूं। तत्पश्चात् मुनि आर्जिका श्रावक और श्राविका इन चारों गणोंसे सेवित, धीर, समस्तपृथ्वीतलमें श्रेष्ठ, जिनसे मिथ्यावादी लोग डरते है, और जो तीनो लोकके प्रकाशकरनेवाले है. ऐसे (अंतिमगणधर) **श्रीगौतम** स्वामीको भी मै नमस्कार करता हूं ।

इनके पश्चात् जिस भगवती वाणीके प्रसादसे संसारमें जीव समस्त हिताहितको जानते है, और जो श्री केवली भगवानके मुखसे प्रकट हुई है उस वाणीको भी मै नमस्कार करता हू

तत्पश्चात् जो गुरु हितकारी, श्रेष्ट बचनरूपी संपत्तिसे शोभित ज्ञानरूपी भूषणके धारक, अत्यत तेजस्वी अहकाररूपी हस्तीके मर्दन करनेवाले है, , ऐसे कमरूपी

वैरियोंके विजयसे कीर्तिको प्राप्त करने वाले, हितैषी, और पुण्यरूपी मेरुपर्वतके शिखरपर निवास करनेवाले अर्थात् अत्यत पुण्यात्मा गुरूओंको भी मै नमस्कार करता हूं।

तथा इस भरतक्षेत्रमें आगे होनेवाले, समस्ततीर्थंकरोमें उत्तम, अत्यंत तेजस्वी, **श्रीपद्मनाभ** तीर्थंकरको भी मै समस्त विघ्नोंकी शांतिकेलिये नमस्कार करता हू, जो पद्मनाभभगवान, उत्सर्पिणीकालके कुछ समयके व्यतीत होने पर, इस भरतक्षेत्रमें, पांचप्रकारके अतिशयोंकर सहित, सैकडों इंद्र और देवोंसे पूजित, उत्पन्न होवेंगे, और चिरकालसे विद्यमान पापरूपी वृक्ष केलिये वज्रके समान होंगे। तथा चतुर्थकालकीआदिमें जब समस्त धर्ममार्गोंका नाश होजायगा, अहकार व्याप्त होगा, उससमय जो भगवान समस्तजीवोंके अज्ञानांधकारको नाशकर, मोक्षके मार्गके प्रकाशनपूर्वक धर्मकी और उन्मुख करेंगे। और जिस पद्मनाभभगवानने पहिले अपने **श्रेणिक** भवमें (श्रेणिक-अवतारमें) श्रीमहावीरस्वामी भगवानके समीपमें, अनादिकालसे विद्यमान मिथ्यात्वको शीघ्र ही दूर किया तथा अतिशय मनोहर निर्मल समस्तदोषोंसे रहित क्षायिकसम्यक्त्वको धारण किया और समस्त इन्द्रियोंको संकोचकर शुद्ध सम्याग्दर्शनसे विभूषित हुये। जिस भगवानने महावीर स्वामीके सामने तीर्थंकर प्रकृतिका बंध किया, और जिस पुण्यात्मा पद्मनाभभगवानने समस्तलोकमें सर्वथा आश्चर्य

करनेवाले आस्तिक्यगुणको प्राप्त किया। तथा जिस पद्मनाभ तीर्थंकरके श्रेणिक अवतारके समय, उनके किये हुये प्रश्नके उत्तरमें श्री महावीरस्वामीने समस्त पापोंके नाशकरने वाले तथा इस श्रेणिकचरित्रके भी प्रकाश करने वाले वचनोंको प्रतिपादन किया, और जिस पद्मनाभभगवानके जीव, श्रेणिक महाराज,के प्रश्नके प्रसादसे, पुराण व्रत संख्यान आदिके वर्णन करनेवाले, समस्त विवादियोंके अभिमानको नाश करनेवाले, इससमय भी अनेक ग्रंथ विद्यमान हैं, जो श्रेणिक महाराज महाश्रोता, महाज्ञाता, महावक्ता, धर्मकी वास्तविक परीक्षा करने वाले, भविष्यतकालमें होनेवाले समस्ततीर्थंकरोंमें प्रथम व मुख्य तीर्थंकरभगवान होंगे ऐसे (श्रेणिकमहाराजके जीव) श्रीपद्मनाभ तीर्थंकरको भी मैं मस्तक झुकाकर नमस्कारपूर्वक उनके संसारसंबंधी समस्त चरित्रका वर्णन करता हूं।

ग्रंथकार **शुभचंद्राचार्य** अपनी लघुता प्रकाश करते हुये कहते है कि कहां तीर्थंकरका यह चरित्र जिसके विस्तारका अंत नहीं, और कहां अनेकप्रकारके आवरणोंसे ढकी हुई मेरी बुद्धि तथापि जिसप्रकार सतमहले उत्तम मकानके ऊपर चढ़नेकी इच्छा करनेवाला पंगुपुरुष, प्रशंसाका भाजन होता है, उसीप्रकार इस गंभीर विस्तृतचरित्रके वर्णनकरनेसे मैं भी प्रशंसाका भाजन हूंगा इसमें किसीप्रकारका संदेह नहीं। यदि कोई विद्वान मुझे वावदूक अर्थात् अधिक बोलने

वाला वाचाल कहे तो भी मुझे किसीप्रकारका भय नहीं क्योंकि जिसप्रकार कोयल वसत ऋतुमें ही बोलती है और शुक सदा ही बोलता रहता है फिरभी शुकका बोलना किसीको आश्चर्यका करनेवाला नहीं होता, उसीप्रकार यद्यपि पूर्वाचार्य परिमित तथा समयपर ही बोलने वाले थे और मै सदा बोलने वाला हूं तो भी मेरा बोलना आश्चर्य जनक नहीं। जिसप्रकार पुष्पदंतनक्षत्रके अस्त होजानेपर अल्पप्रभाववालें तारा गणभी चमकने लगते है उसी प्रकार यद्यपि पूर्वाचार्योंके सामने मैं कुछ भी जाननेवाला नहीं हूं तौ भी इस चरित्रके कहनेकेलिये मैं उद्धतहोकर उद्योग करता हूं।

यद्यपि शब्दशास्त्रके जाननेवाले अधिक बोलनेवाले होते हैं तो भी वे वचन शुभ ही बोलते है उसीप्रकार यद्यपि हमारी वाणी स्खलित है तो भी हम शुभवचन बोलनेवाले हैं इसलिये हम पूर्वाचार्योंके समानही हैं। जिसप्रकार बड़े २ जहाज वाले सुखपूर्वक अभीष्ट स्थानको चले जाते हैं और उनके पीछे २ चलनेवाले छोटे जहाज वाले भी सुखपूर्वक अपने इष्ट स्थानको प्राप्त हो जाते है ठीक उसीप्रकार पूर्वाचार्येंके पीछे २ चलने वाले हमको भी इष्टसिद्धिकी प्राप्ति होगी। तथा जिसप्रकार दरिद्री पुरुष धनिक लोगोंके महलों, उनके उदय तथा उनकी अन्य अनेक विभूतियोंको देखकर विषाद नहीं करते उसीप्रकार सूत्रके अनुसार पूर्वाचार्योंकी कृतिको देखकर हमको भी वाक्योंकी रचनामें कभी भी विषाद

नहीं करना चाहिये, क्योंकि शक्तिके न होनेपर ईर्षा द्वेषकरना विना प्रयोजन का है। जिसप्रकार सिंह ही अपने शब्दको कर सकता है परन्तु उस शब्दको मेढ़क नहीं कर सकता अर्थात् सिंहके शब्द करनेमें मेढ़क असमर्थ है, उसीप्रकार यद्यपि पूर्वाचार्योंने ग्रंथोकी रचना की है तो भी मै वैसेग्रंथों की रचना करनेमें असमर्थ ही हूं। जिसप्रकार अत्यंत छोटे देहका धारक कुंथु जीव भी देहधारी कहाजाता है और पर्वतके समान देहका धारणकरनेवाला हाथी भी देहधारी कहाजाता है उसप्रिकार पुराण न्याय काव्य आदि शास्त्रोंको भलीभांति जानने वाला भी कवि कहाजाता है और अल्प शास्त्रोंका जाननेवाला मै भी कवि कहागया हूं। मूंकपुरुष भले ही उत्तम न बोलता हो तोभी वह बोलनेकी इच्छा रखता है, उसीप्रकार यद्यपि मै समस्तशास्त्रोंके ज्ञान से रहित हूं तौभी मै इसचरित्रके वर्णनकरनेमें प्रयत्न करता हूं। जिसप्रकार चरित्रके सुननेसे पुण्यकी प्राप्ति होती है उसीप्रकार चरित्रके कथन करनेसे भी पुण्यकी प्राप्ति होती है।इसप्रकार भलीभांति विचारकर मैन इस श्रेणिकचरित्रका कथन करना प्रारभ किया है। अथवा चरित्रोंके सुननेसे भव्यजीवोंको संसारमें तीर्थकर इंद्र चक्रवर्ती आदि पदोंकी प्राप्ति होती है यह भलेप्रकार समझ और तीर्थकर आदिके गुणोंका लोलुपी होकर, दृढश्रद्धानी हो, मै शुभचद्रांचार्य सारभूत उत्कृष्ट, और पवित्र श्रेणिक

चरित्रको कहता हूं । परन्तु जिसप्रकार, अधिक विस्तारवाले कच्चे धान्योंकी अपेक्षा पका हुवा थोड़ासा धान्य भी उत्तम होता है उसीप्रकार विस्तृत चरित्रकी अपेक्षा संक्षिप्तचरित्र उत्तम तथा मनुष्योंके मनको हरण करनेवाला होता है इसलिये मै इस श्रेणिकचरित्रका संक्षिप्तरीतिसे ही वर्णन करता हूं।

समस्त लोकका मन हरनेवाला, लाखयोजन चौडा, गोल, और तीनलोकमें अत्यन्त शोभायमान जम्बूद्वीप है । यह जम्बद्वीप कमलके समान मालूम पडता है क्योंकि जिसप्रकार कमलमें पत्ते होतें है, उसीप्रकार भरतादि क्षेत्ररूपी पत्ते इसमें भी मौजूद है, जिसप्रकार कमलमें पराग होती है, उसीप्रकर नक्षत्ररूपी पराग इसमेंभी मौजूद है । जिसप्रकार कमलमें कली रहती है, उसीप्रकार इस जम्बूद्वीपमें भी मेरुपर्वतरूपी कली मौजूद है । जिसप्रकार कमलमें मृणाल (सफेद तंतु) रहता है, उसीप्रकार इसजंबूद्वीपमें भी शेषनागरूपी मृणाल मौजूद है ।तथा जिसप्रकार कमलपर भ्रमर रहते है उसीप्रकार इस जम्बूद्वीपमें भी अनेक मनुष्यरूपी भ्रमर मोजूद है,। यह जम्बूदीप दूधके समान उत्तम निर्मल जलसे भरे हुवे तलावोंसे जीवोंको नानाप्रकारके आनंदप्रदान करनेवाला है । यह जम्बूदीप राजाके समान जान पड़ता है क्योंकि जिसप्रकार राजा अनेक बडे बडे राजाओं से सेवित होता है उसीप्रकार यह द्वीप भी अनेक प्रकारके

महीधरोंसे अर्थात् पर्वतोंसे सेवित है। जिसप्रकार राजा कुलीन उत्तमवंशका होता है, उसीप्रकार यह जबूंदीप भी कुलीन अर्थात् (कु) पृथ्वीमें लीन है और जिसप्रकार राजा शुभास्थिति वाला होता है उसीप्रकार यह भी अच्छी तरह स्थित है, तथा राजा जिसप्रकार रामालीन अर्थात् स्त्रियोंकर संयुक्त होता है, उसीप्रकार यहभी, रामालीन, अनेक बन उपबनोंसे शोभित है। जिसप्रकार राजा महादेशी अर्थात् बड़े बड़े देशोंका स्वामी होता है उसीप्रकार यहभी महादेशी अर्थात् विस्तीर्ण है, यद्यपि यह द्वीप **नदीनजड़संसेव्यः** अर्थात् उत्कटजड़ मनुष्योंसे सेवित है तथापि 'नदीनजड़संसेव्यः' अर्थात् समुद्रोंके जलोंसे वेष्टित है इसलिये यह उत्तम है। यद्यपि यह जबूंद्वीप, निम्नगास्त्रीविराजित', अर्थात् व्यभिचारिणी स्त्रियोंकर सहित है तथापि '**अनिम्नगास्त्रीविराजितः**' अर्थात् पतिव्रता स्त्रियोंकर शोभित है इसलिये यह उत्तम है। तथा यद्यपि यह द्वीप **द्विजराजाश्रितः** अर्थात् वर्णसंकर राजाओं के आधीन है तोभी उत्तम ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंका निवास स्थान होनेके कारण यह उत्तमही है। और पर्वतोंसे मनोहर, पुण्यवान उत्तमपुरुषोंका निवासस्थान, यह जम्बूद्वीप अनेकप्रकारके उत्तम तलावोंसे, तथा बड़े बड़े कुंडोंसे तीनोंलोकमें शोभित है। जिस जम्बूद्वीपकी उत्तम गोलाई देखकर लज्जित व दुःखित हुवा, यह मनोहर चद्रमा रात दिन आकाशमें घूमता फिरता है। तथा जिसप्रकार लोक अलोकका

मध्य भाग है उसीप्रकार यह जम्बूद्वीप भी समस्तद्वीपोंमें तथा तीनलोकके मध्यभागमें है ऐसा बडे बडे यतीश्वर कहते है। इस जम्बूद्वीपके मध्यमें अनेक शोभाओंसे शोभित, गले हुवे सोनेके समान देह वाला, देदीप्यमान. अनेक कान्तियोंसे व्याप्त, सुवर्णमय मेरु पर्वत है। यह मेरु साक्षात् विष्णुके समान माऌम पड़ता है। क्योंकि जिसप्रकार विष्णुके चार भुजा है, उसीप्रकार इसमेरुपर्वतके भी चार गजदत रूपी चार भुजा है और जिसप्रकार विष्णुका नाम अच्युत है उसीप्रकार यह भी अच्युत अर्थात् नित्य है। जिसप्रकार विष्णु श्रीसमन्वित अर्थात् लक्ष्मीसाहित हैं. उसीप्रकार यह मेरुपर्वत भी श्रीसमन्वित अर्थात् नानाप्रकारकी शोभाओंसे युक्त है। इस मेरु पर्वतपर सुभद्र, भद्रशाल, तथा स्वर्गके नदंन वनके समान नदनवन, और अनेकप्रकारके पुष्पोंकी सुगंधिसे सुगंधित करनेवाले सौमनस्य वन. है। यह मेरु अपांडु अर्थात् सफेद न होकर भी पाण्डुकशिलाका धारक सोलह अकृत्रिम चैत्यालयोंकसे युक्त अपनी प्रसिद्धिसे सबको व्याप्त करनेवाला अर्थात् अत्यंत प्रसिद्ध और नानाप्रकारके देवोंसे युक्त है। बड़े भारी ऊचे परकोटेका धारण करने वाला, सुवर्ण मय और नाना प्रकारके रत्नोंसे शोभित, यह मेरु, निराधार स्वर्गके टिकनेके लिये मानो एक ऊचा खंभा ही है ऐसा जान पड़ता है। यह

मेरुपर्वत तीनोंलोकमें अनादिनिधन. अकृत्रिम, स्वभावसे ही सिद्ध और अनेकपर्वतोंका स्वामी अपने आपही सुशोभित है। यह पर्वत अत्युतम शोभाको धारण करनेवाले जम्बूद्वीपके मध्यभागमें अनुपम सुख मोक्षको जानेकी इच्छाकरनेवाले भव्यजीवों को मोक्षके मार्गको दिखाता हुवा. और जिनेन्द्रभगवानके गंधोदक से पवित्र हुवा. एक महान तीर्थपनेको प्राप्त हुवा है। चारण ऋद्धिके धारण करनेवाले मुनियोंसे सदा सेवनीय है, समस्त पर्वतों का राजा है। श्रेष्ठ कल्पवृक्षोंके फूलोंसे स्वर्गलोकको भी जतिने वाले इस मेरुपर्वतपर स्वर्गको छोड़कर इन्द्र भी अपनी इन्द्राणियों के साथ क्रीड़ा करने को आते है। यह मेरुपर्वत अधिक ऊंचा होनेके कारण अत्युच्च कहा गया है. स्वयसिद्ध होनेसे अकृत्रिम कहा गया है. और पृथ्वीका धारण करनेवाला होने के कारण धराधीश. अर्थात् पृथ्वीका स्वामी कहा गया है। इस मेरुपर्वतके ऊपर विराजमान चैत्यालयोंके और स्तुतिकरनेयोग्य परमात्माके ध्यान करनेवाले योगिन्द्रोंके स्मरणसे मनुष्योंके समस्त पाप नष्ट होजाते है। इस मेरुपर्वतके माहात्म्यका हम कहांतक वर्णन करै इस मेरुपर्वतके महात्म्यका विस्तार वड़े वड़े करोड़ों ग्रन्थोंमें भले प्रकार वर्णन किया गया है॥

इसी मेरुपर्वतकी दक्षिणदिशामें जहां उत्ताम धान्य उपजाते है मनोहर. अनेकप्रकारकी विद्याओंसे पूर्ण. और

सुखोंका स्थान **भरतक्षेत्र** है। यह भरतक्षेत्र साक्षात् धनुष के समान है क्योंकि जिसप्रकार धनुषमें वाण होते है उसी प्रकार इसमें गंगा सिन्धु दो नदी रूपी वाण है। इस भरतक्षेत्रके मध्यभागमें रूपाचल नामका विशाल पर्वत है जो चारो ओरसे सिंधुनदीसे वेष्ठित है और जिसकी दोनो श्रेणी सदा रहने वाले विद्याधारोंसे भरी हुई है। यह भरतक्षेत्र, अत्यंत पवित्र है और गंगा सिंधु नामकी दो नदियोंसे तथा विजयार्द्ध पर्वतसे छे खडोंमें विभक्त अतिशय शोभा को धारण करता है।

इसी भरतक्षेत्रमें तीन खंडोंसे व्याप्त, पुण्यात्मा भव्य-जीवोंसे पूर्ण, दक्षिण भागमें **आर्यखंड** शोभित है। इस देदीप्यमान आर्यखडमें सुख तथा दु:खसे व्याप्त, पुण्य पापरूपी फलको धारण करनेवाला, सुखमासुखमादि छै कालोंका समूह सदा प्रवर्तमान रहता है। इन छै प्रकारके कालोंमें प्रथमकाल **सुखमा सुखमा** है, जोकि शरीर आहार आदिकसे देवकुरू भोगभूमिके समान है। दूसराकाल **सुखमा** नामका है जिसमें मनुष्यके शरीरकी उचाई दो कोशके प्रमाण की रहती है, यह काल, स्थिति आहार आदिकसे हरिवर्ष क्षेत्रके समान है तथा शुभ है। तथा तीसराकाल **दुखमासुखमा** नामक है, इसमें मनुष्योंके शरीरकी उचाई एक कोशके प्रमाण है। इसकी रचना जघन्य भोगभूमिके समान होती है। चौथा काल

दुखमासुखमा है जिसकी रचना विदेह क्षेत्रके समान होती है;
तीर्थंकर चक्रवर्ती बलभद्र नारायण आदि महापुरुषोंकी
उत्पत्ति भी इसी कालमें होती है । पांचवां काल **सुखमा** है
जिसमें पुण्य तथा पापसे शुभाशुभगतिकी प्राप्ति होती है,
यह दुःखोंका भंडार है तथा इस पंचमकालमें मनुष्योंकी
आयु शरीर धर्म सब कम होजाते है । इसके पश्चात्
धर्मकर रहित. पापस्वरूप, दुष्टमनुष्योंसे व्याप्त. और थोड़ी
आयुवाले जीवोंसाहित, छठवां **दुःखमदुःखम** काल
आता है । इसप्रकार मोक्षमार्ग साधन करनेकेलिये दीपकके
समान, नानाप्रकारकी शुभ क्रियाओंसहित, और पुण्यके
स्थान, इस आर्यखडमें उक्त प्रकारके काल सदा प्रवर्तमान
रहते हैं ।

ऐसा यह अर्यखंड नानाप्रकारके वड़े २ देशोंसे व्याप्त, पुर
और ग्रामोंसे सुशोभित, बहुतसे मुनियोंसे पूर्ण, और पुण्यकी
उत्पत्तिका स्थान, अत्यंत शोभायमान है। इस आर्यखंडके
मध्यमें जिसप्रकार शरीरके मध्यभागमें नाभि होती है उसीप्रकार इस
पृथ्वीतलके मध्यभागमें **मगध** नामक एक देश है जो अनेक जनोंसे
सेवित, और विशेषतया भव्यजनोंसे सेवित, है। इस मगधदेशमें
धन धान्य और गुणोंके स्थान मनुष्योंसे व्याप्त, प्रकट रीतिसे
संपत्तिके धारी, अनेक ग्राम पास पास वसे हुये है ।
इस मगधदेशमें, फलकी इच्छा करनेवाले मनुष्योंको

उत्तमोत्तमफलोंको देनेवाले उत्कृष्ट वृक्ष, कल्पवृक्षोंकी शोभाकी धारण करते है। उसदेशमें वहांके मनुष्य, पके हुये धान्योंके खेतोमें गिरते हुये सूवोंको कल्पवृक्षके फलोंके समान जानते है। वहा अत्यंत निर्मल जलसे भरे हुये, काले काले हाथियोंसे व्याप्त, सरोवर ऐसे मालूम पडते है मानो स्वय मेघ हीं आकर उनकी सेवा कर रहे है। वहांके तालाव साक्षात् कृष्णके समान मालूम पड़ते है क्योंकि जिसप्रकार श्रीकृष्ण कमलाकर अर्थात् लक्ष्मीके (कर) हाथ सहित है,उसीप्रकार तालाव भी कमलाकर अर्थात् कमलोंसे भरेहुये हैं। जिसप्रकार श्रीकृष्ण सुमनसों (देवों) से मंडित है, उसीप्रकार तालाव भी(सुमनस)अर्थात् नाना प्रकारके फूलोंसे पूर्ण है। जिसप्रकार श्रीकृष्ण हस्तियों के मदको चकना चूर करनेवाले है उसीप्रकार तालाव भी हस्तियोंके मदको चकनाचूर करनेवाले है अर्थात् इनके पास आते ही हस्ती शांत होजाते है। और जिसदेशमें वनमें, पर्वतके मस्तकोंपर, ग्राममें, देशमें, पुरमें, खेलारोंमें, नादियोंके तटोंपर, सदा मुनिगण देखनेमें आते हैं और धर्मके उपदेशमें तत्पर, निर्मल, असंख्याते गणधर, बड़े बडे सघोंके साथ दृष्टिगोचर होते हैं उसदेशमें कहींपर अनेक प्रकारके विमानोंमें बैठे हुवे उत्तमदेव, अपनी अपनी अत्यंत सुंदरी देवांगनाओं केसाथ केवलीभगवानकी पूजाकरनेकेलिये आते है और

कहींपर मनोहर बागोंमें, पुण्यात्मा पुरुषोंद्वारा प्राप्त करने योग्य, अपनी मनोहर स्वर्गपुरीको छोड़ देवतागण अपनी देवांगनाओंके साथ क्रीडा करते है। वहां गोपालोंकी रमणियों द्वारा गायेहुवे मनोहर गीतरूपी मंत्रोंसे मंत्रित तथा उनके गीतोंमें दत्तचित्त, और भयरहित हिरणोंका समूह निश्चल खड़ा रहता है और भगानेपर भी नहीं भागता है। और वहां जब तलावोंमें प्याससे अत्यंत व्याकुल हो अनेक हाथी पानी पीने आते है तब हथिनियोंको देखकर उनके विरहसे पीडित होकर अपना जीवन छोड़देते है। यह मगधदेश नानाप्रकारके उत्तमोत्तम तीर्थोंकर सहित, नानाप्रकारके देव विद्याधरोंसे सेवित, और विशेषरीतिसे अनेक मुनिगणोंकर शोभित है इसका कहां तक वर्णन करै।

इसी मगधदेशमें राजघरोंसे शोभित, अनेक प्रकारकी शोभाओंसे मंडित, धनसे पूर्ण तथा अनेक जनोंसे व्याप्त, **राजग्रह** नामक एक नगर है। राजग्रहनगरमें न तो अज्ञानी मनुष्य है, और न शीलरहित स्त्रियां है, और न निर्धन पुरुष बसते है। वहांके पुरुष उत्तम कुवेरके समान ऋद्धिके धारणकरनेवाले और स्त्रियां देवांगनाओंके समान है। जगह २ पर कल्प वृक्षोंके समान वृक्ष है। और स्वर्गोंके विमानोंके समान सुवर्णसे घर बने हुये है। वहांका राजा इन्द्रके समान अत्यंत बुद्धिमान है। वहां ऊचे २ धान्योंके

वृक्ष, ऐसे मालम पड़ते है मानो वे मूर्त्तिमान अत्यंत शोभा है और अपने पराक्रमसे इस लोकको भलीभाति जीतकर स्वर्ग-लोकके जीतनेकी इच्छासे स्वर्गलोकको जारहे है।उसनगरके रहने वाले भव्यजीव मनुष्य नानाप्रकारके व्रतोंसे भूषित होकर केवल-ज्ञानको प्राप्तकर तथा समस्तकर्मोंको निर्मूलनकर परमधाम मोक्ष-को प्राप्त होते है । और वहांकी स्त्रियोंके प्रेमी अनेक पुरुष भी व्रतोंके संबंधसे श्रेष्ठ चारित्रको प्राप्त कर स्वर्गको प्राप्त होते है क्योंकि पुण्यका ऐसा ही फल है । वहांके कितने एक सुखके अर्थी भव्यजीव, उत्तम, मघ्यम, जघन्य, तीनप्रकारके पात्रोंको दांनदेकर भोगभूमिनामक स्थानको प्राप्त होते है और जीवन पर्यंत सुखसे निवास करते है । राजग्रहनगरके मनुष्य ज्ञानबान है इसीलिये वे विशेषरीतिसे दान तथा पूजामें ही ईर्षा द्वेष करना चाहते है और ज्ञानमें (कला कौशलोंमें) कोई किसीके साथ ईर्षा तथा द्वेष नहीं करता । उसमें जिनमंदिर तथा राजमंदिर सद जय जय शब्दोंसे पूर्ण, उत्तम सभ्यमनुष्योंसे आकीर्ण, याचकोंको नानाप्रकारके फल देनेवाले, शोभित होते है ।

राजग्रहनगरका स्वामी नानाप्रकारके शुभ लक्षणोंसे युक्त शरीर और देदीप्यमान यशका धारण करनेवाला, **उपश्रेणिक** नामका राजा था। वह उपश्रेणिकराजा अत्यंतज्ञानवान, कल्प-वृक्षके समान दानी, चंद्रमाके समान तेजस्वी, सूर्यके समान

प्रतापी, इन्द्रके समान परम ऐश्वर्यशाली, कुवेरके समान धनी, तथा समुद्रके समान गंभीर था । इनके अतिरिक्त उसमें और भी अनेक प्रकारके गुण थे, त्यागी था, वह भोगी था, सुखी था, धर्मात्मा था, दानी था, वक्ता था. चतुर था, शूर था, निर्भय था, उत्कृष्ट था, धर्मादि उत्तम कार्योंमें मान करनेवाला ज्ञानवान और पवित्र था, इसीलिये अनेक राजाओंसे सेवित उपश्रे-णिक महाराजको न तो चतुरंग सेनासे ही कुछ काम था और न अपने बलसे ही कुछ प्रयोजन था ।

महाराज उपश्रेणिकके साक्षात् इन्द्रकी इन्द्राणीके समान. जो उत्तमरूप तथा लावण्यसे युक्तथी. **इन्द्राणी** नामकी पटरानी थी । वह तनूदरी इन्द्राणी, अनेकप्रकारके गुणोंसे युक्त होनेके कारण अपने पतिको सदा प्रसन्न रखती रहती थी । उसके स्तन, अमृत कुमके समान मोटे, कामदेवको जिलानेवाले, उत्तम हाररूपी सर्पसे शोभित, दो कलशोंके समान जान पड़ते थे । और उस के उत्तम स्तनोंके संबंधसे मदन ज्वर तो कभी होता ही नहीं था । जैसे रसायनके खानेसे ज्वरदूर होजाता है वैसेही उसके स्तनोंके रसायनसे मदन ज्वर भी नष्ट होजाता था । वह इन्द्राणी अत्यत पवित्र, और नानाप्रकारकी शोभाओंकर सहित, उपश्रेणिक राजाको आनन्द देती थी तथा वह राजा भी इस पटरानीके साथ सदा भोगविलासोंको भोगता हुआ

इसप्रकार परस्पर अतिशय प्रेमयुक्त, अत्यंत निर्मल सुख रूपी सरोवरमें मग्न, अत्यत पवित्र और महान्, जिनके चरणों की बंदना बड़े बड़े राजा आकर करते थे, चारों ओर जिन की कीर्ति फैल रही थी, और समस्त प्रकारके दुःखोंसे रहित, तथा पुण्य मूर्ति वे दोनो राजा रानी इंद्रके समान पुण्यके फलस्वरूप राज्यलक्ष्मीको भोगते थे। राजा उपश्रेणिकने राज्यको पाकर उसे चिरकाल पर्यत भोग किया और समस्त पृथ्वीको उपद्रवोंसे रहित कर दिया, और उसकेराज्यमें किसी प्रकार के वैरी नहीं रहगये। उनकेलिये ऐसे राज्यमें महाराणी इन्द्रीणीके साथ स्थित होना ठीक ही था क्योंकि भव्यजीवोंको धर्मकी कृपा से ही राज्यसपदाकी प्राप्ति होती है, धर्मसे ही अनेक प्रकारके कल्याणोंकी प्राप्ति होती है, धर्मसे उत्तमोत्तम स्त्रियां तथा चक्रवर्तिलक्ष्मी मिलती है और धर्मसेही स्वर्गके विमानोंके समान उत्तमोत्तम घर, आज्ञाकारी उत्तम पुत्र भी मिलते है, इसलिये भव्यजीवोंको श्री जिनेद्र भगवानके सारभूत उत्कृष्ट धर्मकी अवश्यही आराधना करनी चाहिये।

इसप्रकार भविष्यत् कालमें होनवाले श्रीपद्मनाभ
तीर्थंकरके पूर्वभवके जीव महाराज श्रेणिक-
के चरित्रमें महाराज उपश्रेणिकको
राज्यकी प्राप्तिका वर्णन करने
वाला प्रथम सर्ग
समाप्त हुवा।

पद्मकी शोभाको धारण करनेवाले जिनेश्वर, तथा भविष्यमें तीर्थोंकी प्रवृतिकरनेवाले ईश्वर, श्री पद्मनाभभगवानको मैं मस्तक झुकाकर नमस्कार करता हूं।

अनंतर इसके उन दोनो राजा रानीके महान् पुण्यके उदयसे, अनेक सुखोंका स्थान, भलेप्रकार मातापिताको संतुष्ट करनेवाला, परम ऋद्धिधारक, श्रेणिक नामका पुत्र उत्पन्न हुवा। कुमार श्रेणिकमें सर्वोत्तम गुण थे, उसका रूप शुभ था और अतिशय निर्मल था। वह अत्यत भाग्यवान् और लक्ष्मीवान् था। कुमार श्रेणिकके कामिनी स्त्रियोंके मनको लुभानेवाले काले काले केश ऐसे जान पड़ते थे मानो उसके मुख कमलकी सुगंधिसे सर्पही आकर इकट्ठे हुवे है। उसका विस्तीर्ण सुदर और अतिशय मनोहर तिलकसे शोभित ललाट, ऐसा मालूम पडता था मानों ब्रह्माने तीनोंलोकके आधिपत्यका पट्टकही रचा है। बालकके दोनो नेत्र नीलकमलके समान विशाल अतिशय शोभित थे। दोनों नेत्रोंकी सीमा बाँधनेके लिये उन के मध्यमें अतिशय मधुर सुगधिको ग्रहणकरनेवाली नासिका शोभित थी। स्फुरायमान दीप्तिधारी बालक श्रेणिकका मुख यद्यपि चंद्रमाके समान देदीप्यमान था तथापि निर्दोष, सदा प्रकाशमान, और समस्त प्रकारके कलंकोंसे रहित ही था। विशाल एव अतिशय मनोहर हारोंसे भूषित उसका वक्षःस्थल राज्य भारके धारण करनेके लिये विस्तीर्ण

था और अनेकप्रकारकी शोभाओंसे अत्यत सुशोभित था। कामिनी स्त्रियोंके फँसानेके लिये ज़ालके समान उसकी दोनों भुजाएँ ऐसी जान पडती थी मानों याचकोंको अभीष्ट दानकी देनेवाली दो मनोहर कल्पवृक्षकी शाखा ही है। उस के कटिरूपी वृक्षपर, करधनीमें लगीं हुई छोटी २ घंटियोंके व्याजसे शब्द करता हुवा, कामदेव सहित, करधनी रूपी महासर्प निवास करता था। श्रेणिकके शुभ आकृतिके धारक, अनेकप्रकारके उत्तमोत्तम लक्षणोंसे युक्त, और अतिशय कांतिके धारण करने वाले, दोनों चरण अत्यत शोभित थे। तथा उस पुण्यात्मा एवं भाग्यवान कुमार श्रेणिकके अतिशय मनोहर शरीररूपी महलमें सपत्तिके साथ विवेक बढ़ता था, और अनेकप्रकारकी राजसबधी कलाओंके साथ ज्ञान वृद्धिको प्राप्त होता था। यद्यपि कुमार श्रेणिक बालक था तथापि बुद्धिकी चतुराईसे वह वडा ही था और सज्जनोंका मान्य था वह हर एक कार्यमें चतुर, और सौभाग्य, बुद्धि आदि असाधारण गुणोंका भी आकर था। इसने विना परिश्रमके शीघ्र ही शास्त्ररूपी समुद्रको पार करलिया था और क्षत्रिय धर्मकी प्रधानताके कारण अनेक प्रकारकी शस्त्रविद्याएँ भी सीखलीं थीं। तथा भाग्य शाली जिसबालक श्रेणिकके अनेक प्रकारके गुणोंसे मडित उत्तम ज्ञान; बुद्धिसे भूषित था, उसके हाथ दानसे शोभित थे। इसप्रकार यौवन अवस्थाको प्राप्त, अत्यंत वलवान

श्रेणिक अपनी सुन्दरता आदि संपदाओंसे संपन्नथा। जिसे देख उसके माता पिता अत्यंत तुष्ट रहते थे। श्रेणिकके अतिरिक्त महाराज उपश्रेणिकके पाँच सो पुत्र और भी थे जो अत्यन्त पुण्यात्मा और उमत्तोत्तम शुभ लक्षणोंसे भूषित थे।

महाराज उपश्रेणिकके देशके पासही उस का शत्रु चन्द्रपुरका राजा **सोमशर्मा** रहता था जो अपने पराक्रमके सामने समस्तजगतको तुच्छ समझता था । जिस समय महाराज उपश्रेणिकको यह पता लगा कि चन्द्रपुरका स्वामी सोमशर्मा अपने सामने किसीको पराक्रमी नहीं समझता, तो उन्होंने शीघ्रही उसे अपने अधीन करनेका विचार कर अनेक उपायों से उसे अपने अधीन तो करलिया पर उसे पुनः ज्योंका त्यों राज्या धिकार दे दिया । सोमशर्मा जब महाराज उपश्रेणिकसे हारगया तो उसको वहुत दुःख हुवा और उसने मनमें यह वात ठानली कि महाराज उपश्रेणिकसे इस अपमान का वदला किसी न किसी समय पर अवश्य लूंगा । तदनुसार उसने एकदिन यह चालकी कि सुवर्ण धन धान्य मनोहर वस्त्र और उत्तमोत्तम आभूषणकी भेट महाराज उपश्रेणिककी सेवामें भेजी उसकेसाथ एक वीतनामका घोड़ाभी भेजा। यह घोडा देखनेमें सीधा पर सर्वथा अशिक्षित अतिशय दुष्ट एवं अत्यंत ही धोखेबाज था।

जिससमय महाराज उपश्रेणिकने चन्द्रपुरके राजा

सोमशर्माकी भेजी हुई भेंटको देखा तो वे सोमशर्मा के मनके भीतरी अभिप्रायको न समझ उसके विनय भाव पर अतिशय मुग्ध होकर उसकी बारबार प्रशसा करनेलगे और भेंटसे अपनेको धन्यभी मानने लगे।

ऊपरसे ही मनोहर घोड़ाको देख वे मुक्त कंठसे यह कहने लगे कि अहा यह राजा सोमशर्मा का भेजाहुआ घोड़ा सामान्य घोडा नहीं है किंतु समस्त घोड़ाओंका शिरोमणि अश्वरत्न है। मेरी घुड़सालमें ऐसा मनोहर घोड़ा कोई है ही नहीं। ऐसा कहते कहते उस घोड़ाकी परीक्षा करनेकेलिये वे अपने आप उसपर सवार होगये, और चढकर मार्गमें अनेक प्रकारकी शोभाओको देखते हुवे एक वनकी ओर रवाने हुये।

जिससमय महाराज उपश्रेणिक बनके मध्यभागमें पहुंचे और आनंदमें आकर घोड़ेके कोड़ा लगाया फिर क्या था? कोड़ा लगते ही वह अशिक्षित एवं दुष्ट घोड़ा उछलकर बातकी बातमें ऐसे भंयकर वनमें निर्भयतासे प्रवेश करगया जहां अजगरोंके फूत्कार शब्द होरहे थे, रीछभी भंयकर शब्द कर रहे थे, बड़े बड़े हाथी भी चिंघार रहे थे और वंदर वृक्षोंसे गिरपड़नेपर भयकर चीत्कार शब्द कररहे थे एवं जहां तहा भांति भातिके पक्षियोंके भी शब्द सुनाई पडते थे। घोडेने उसवनमें प्रवेशकर, महाराज उपश्रेणिकको

ऐसे अंधकार मय भयकरगड्ढेमे, जहा सूर्य्यकी किरण प्रवेश नहीं कर सकती थी पटकादिया और बातकी बातमें दृष्टिसे लुप्त होगया।

अतिशय वलवान पुरुषोंको भी दुर्वल मनुष्योंके साथ कदापि वैर नहीं करना चाहिये क्योंकि दुर्वलके साथ भी किया हुवा वैर मनुष्योको इससंसारमें अनेक प्रकारका अचिंतनीय कष्ट देता है।

अहा! दुखोंका समूह कैसा आश्चर्यका करनेवालाहै। देखो! कहातो मगधदेशका स्वामी राजा उपश्रेणिक? और कहां अनेकप्रकारके भयंकर दु खोंका देनेवाला महानवन? तथा कहां अतिशय मनोहर राजग्रहनगर? कहां अंधकार मय भयंकर गड्ढा? क्या कियाजाय वैरका फलही ऐसाहै, इस लिये उत्तमपुरुषोंको चाहिये कि वे उभयलोकमें दु.ख देनेवाले इस परमवैरी वैर विरोधको अपने पास कदापि न फटकने दें।

जव लोगोंने महाराज उपश्रेणिकके लापता होनेका समाचार सुना तो सेनामें, देशमें, अनेक जनोंसे सर्वथा पूर्ण राजग्रह नगरमें, एवं अन्यान्यनगरोंमें भी शोक और चिंता छागई और हाहाकार मच गया। रनवांसकी समस्त रानियां यह समाचार सुनते ही मुर्छित होगई और महाराजके वियोगमें एकदम करुणा जनक रोदन करने लगीं। जितने केशविन्यास हार आदिक शृगार थे उन सवको उन्होंने तोड़कर

अलग फैकदिया। चतुरगिनीसेनाने और महाराज उपश्रेणिकके पुत्रोंने महाराजके ढूडनेके लिये अनेक प्रयत्न किये किंतु कहीं परभी उनका पता न लगा। किंतु '**णमोअरिहंताणं णमोसिद्धाणं**' इत्यादि महामन्त्रको ध्यान करते हुवे महाराज उपश्रेणिक अंधकार मय एव दुःखोंके देनेवाले उसी गड्ढेमें पडे हुए अनेक प्रकारके कष्टोंको भोगते रहे।

जिसवनके भीतर भयंकर गड्ढेमें महाराज उपश्रेणिक पड़े थे उसी वनमें एक अत्यंत मनोहर भीलोंकी पल्ली थी। उस पल्ली का स्वामी, समस्तभीलोंका अधिपति क्षत्रिय **यमदंड** नामका राजा था। उसकी **विद्युन्मती** पटरानी अतिशय मनोहर और रूप एवं सौभाग्यकी खानि थी। इनदोंनों राजारानीके चंद्रमाके समान उत्तम मुखवाली **तिलकवती** नामकी एक कन्या थी।

क्रीड़ा करनेका अत्यंत प्रेमी राजा यमदंड, इधर उधर अनकेप्रकारकी क्रीड़ाओंको करता हुवा उसी गड्ढेके पास आया जिसगड्ढेमें महाराज उपश्रेणिक पडे नानाप्रकार के कष्टोंको भोग रहे थे। गड्ढेके अत्यंत समीप आकर जब महाराज उपश्रेणिकको उसने भयंकर गड्ढेमें पड़ा देखा तो वह आश्चर्यसे अपने मनमें यह विचार करनेलगा कि यह कौंन है? यह कैसे इसदशाको प्राप्त हुवा? और इसे किसने इसप्रकारका भयंकर कष्ट दिया है? कुछ

समय इसीप्रकार विचार करते करते जब उसको यह बात मालूम होगई कि ये राजग्रहनगर के स्वामी महाराज उपश्रेणिक है तो झट वह अपने घोड़े परसे उतरपड़ा और अत्यंत विनयसे उसने महाराज उपश्रेणिकके दोनों चरणोंको नमस्कार किया और विनयपूर्वक उनके पास बैठिकर यह पूछने लगा–कि हे प्रभो किस दुष्ट वैरीने आपको इस भयंकर गड्ढेमें लाकर गिरा दिया ? और हे मगधेश ऐसी भयंकर दशाको आप किस कारणसे प्राप्त हुवे ? कृपाकर यह समस्त समाचार सुनाकर मुझै अनुगृहीत करै। आपकी इसप्रकार दुःखमय अवस्थाको देखकर मुझे अत्यंत दुःख है। जिससमय महाराज उपश्रेणिकने भीलोंके स्वामी यमदंडका इसप्रकार भक्ति भरा वचन सुना तो उनका चित्त अत्यंत प्रसन्न हुवा और उन्होंने प्रियवचनोंमें राजा यमदंडके प्रश्नका इसप्रकार उत्तर दिया और कहा–मित्र यदि तुमको अत्यंत आश्चर्य करनेवाले मेरे वृत्तांतके सुननेकी अभिलाषा है तो ध्यान पूर्वक सुनो मैं कहता हूं।

मेरे देशके समीपदेशमें रहनेवाला सोमशर्मा नामका एक चंद्रपुरका स्वामी है। वह अपने पराक्रमके सामने किसीको भी पराक्रमी नहीं समझाता था और बड़े अभिमानसे राज्य करता था। जिससमय मुझै उसके इसप्रकारके अभिमानका पता लगा तो मैने अपने पराक्रमसे बातकी बातमै उसका अभिमान ध्वंस करादिया और उसे अपना सेवक बनाकर पुनः

मैने ज्योंका त्यों उसे चद्रपुरका स्वामी वनादिया। यद्यपि उसने मेरी अधीनता स्वीकार तो करली पर उसने अपने कुटिल भावोंको नहीं छोड़ा इसलिये एक दिन उस दुष्टने नानाप्रकारके आभूपण उत्तम वस्त्र एव धन धान्य सुवर्ण आदिक पदार्थ मेरी भेंटकेलिये भेजे, और इनपदार्थों के साथ एक घोडा भी भेजा। यद्यपि वह घोड़ा ऊपरसे मनोहर था पर अशिक्षित एवं अतिशय दुष्ट था। जिससमय उस की भेजी हुई भेंट मैने देखी तो मै उसके कुटिलभावको तो समझ नहीं सका किंतु विना विचारे ही मै उसके इस प्रकारके वर्तावको उत्तम वर्ताव समझकर प्रसन्न होगया। भेंटमें भेजेहुवे उन समस्तपदार्थोंमें मुझे घोडा वहुत ही उत्तम मालूम पडा, इसलिये विना विचारे ही उस घोड़ेकी परीक्षा करनेके लिये मै उसपर सवार होकर वनकी ओर चलपड़ा। जिससमय मै वनमें आया तो मैने तो आनदमें आकर उसके कोड़ा मारा किंतु वह घोड़ा कोड़ेके इशारेको न समझकर एकदम ऊपर उछला और मुझे इसभयकर गड्ढे में पटककर न जाने कहां चला गया। इसी कारण मै इसगड्ढेमें पडा हुआ इसप्रकारके कष्टों को भोगरहा हू।

जव महाराज उपश्रेणिकने अपना समस्त वृत्तांत सुनादिया तो उन्होने राजा यमदडसे भी पूछा कि हे भाई तुम कोन हो? और कैसे तुम्हारा यहां आना हुवा? और तुम्हारी क्या जाति है?

महाराज उपश्रेणिकके समस्त वृत्तांतको जानकर और भले प्रकार उनके प्रश्नको भी सुनकर राजा यमदंडने विनय भावसे उत्तर दिया कि हेप्रभो समस्तभीलोंका स्वामी मै राजा यमदंडहूँ और क्रीड़ा करता २ मै इस स्थान पर आपहुंचा हूं । मेरी जाति क्षत्रिय है और अपने राज्यसे भ्रष्ट होकर मै इस पल्लीमें रहता हूं, इसलिये हे महाभाग कृपाकर आप मेरे घर पधारिये और अपने चरण कमलोंसे मेरे घरको पवित्रकर मुझै अनुगृहीत कीजिये ।

महाराज उपश्रेणिक तो अपने दुःखके दूरकरनेके लिये ऐसा अवसर देखही रही थे इसलिये जिससमय राजा यमदंडने महाराज उपश्रेणिकसे अपने घर चलेनेके लिये प्रार्थना की तो महाराज उपश्रेणिकने उसे विनीत समझकर शीघ्रही उसकी प्रार्थना को स्वीकार करलिया और उसके साथ साथ उसके घरकी ओर चल दिया ।

यद्यपि राजा यमदंड क्षत्रियवंशी राजा था और उसका आचार विचार उत्तम गृहस्थोके समान होना चाहिये था किं तु उसका संबंध अधिक दिनोंसे भीलोंके साथ होगया था इसलिये उसकी क्रिया गृहस्थों की क्रियाओंके समान नहीं रही थीं, भीलोंकी क्रियाओंके समान होगई थीं । महाराज उपश्रेणिकने जब उसके घर जाकर उसके गृहस्थाचारको देखा तो वे एक दम दंग रहगये और राजा यमदंडसे कहा

कि हे यमदंड यद्यपि तुम क्षत्रिय राजा हो तथापि अब तुम्हारा गृहस्थाचार क्षत्रियोंके समान नहीं रहा है ? और मै शुद्ध गृहस्थाचारपूर्वक बनेहुवे ही भोजनको खा सकता हूं । पवित्र एवं विशुद्ध ज्ञानी होकर मै आपके घरमें भोजन नहीं कर सकता ।

जिससमय राजा यमदंडने महाराज उपश्रेणिकके इस प्रकारके वचनोंको सुना तो उसने तत्क्षण इसभाति विनय पूर्वक कहा कि हे प्रभो यदि आप ऐसे गृहस्थाचार संयुक्त मेरे घरमें भोजन करना नहीं चाहते है तो आप घबडायें न गृहस्थाचार पूर्वक भोजनकेलिये- मेरे यहा दूसरा उपाय भी मौजूद है । वह उपाय यही है कि मेरे अत्यत शुभ लक्षणोंको धारणकरनेवाली, भलेप्रकार गृहस्थाचारमें प्रवीण, एक तिलकवती नामकी कन्या है वह कन्या शुद्ध क्रियापूर्वक भोजन पानी आदिसे आपकी सेवा करेगी

भिल्लोंके स्वामी यमदंडके इसप्रकारके विनम्रवचनोंको सुनकर मगधदेशाधिप महाराज उपश्रेणिक अत्यत प्रसन्न हुवे । और उसी दिनसे अपने पिताकी आज्ञासे कन्या तिलकवतीने भी महाराज उपश्रेणिककी सेवाकरनी प्रारंभ करदी । कभी वह कन्या एक प्रकारका और कभी दूसरे प्रकारका मिष्ट भोजन बनाकर महाराजको प्रसन्न करने लगी । कभी महाराजके रोगको भली भाति पहिचान वह उत्तम औषधियुक्त उनको भोजन

कराती और कभी कभी अतिशय मधुर शीतल जलसे महाराजके मनको सतुष्ट करती। इसप्रकार कुछ दिनोंके वाद औषाधिसंयुक्त भोजनोंसे विशेषतया उसकन्याके हाथसे भोजन करनेसे महाराज उपश्रेणिकका स्वास्थ्य ठीक होगया तथा महाराज उपश्रेणिक पूर्वकी तरह ज्योंके त्यों नीरोग होगये।

जब तक महाराज सरोग रहे तव तक तो मैं किसप्रकार नीरोग हूंगा ? मेरा यह रोग किसरीतिसे नष्ट होगा ? इत्यादि चिन्ता सिवाय महाराजके चित्तमें किसी विचारने स्थान नही पाया, किंतु नीरोग होते ही नीरोगताके साथ २ उसकन्याके स्नेह, सेवा, रूप एवं सौदर्यपर अतिशय मुग्ध होकर वे विचारकरने लगे कि इसकन्याका रूप आश्चर्य कारक है। और इसके मनोहर वचन भी आश्चर्य करनेवाले ही है। तथा इसकी यह मंद मंद गतिभी आश्चर्य ही करने वाली है। इसकी वुद्धि अतिशय शुभ है। इसके दोनों नेत्र चकित हरिणीके समान चंचल एवं विशाल है। अर्ध चन्द्रके समान मनोहर इसका ललाट है। और इसका मुख चंद्रमाकी कांतिके समान कांतिका धारण करने वाला है। यह कोकिलाके समान अतिशय मनोहर शव्दोंको वोलने वाली है, रूप एवं सौभाग्यकी खानि है, अतिशय मनोहर इसकन्याके ये दोनो स्तन, खजानेके दो सुवर्णमय कलशोंके समान उन्नत, कामदेवरूपी सर्पसे कलकित, आतिशय स्थूल है, और हरएक

मनुष्यको सर्वथा दुर्लभ है। और इसके दोनों स्तनोंके मध्यमें अत्यंत मनोहर, कामदेवरूपी ज्वरको दमन करनेवाली नदी है। इसके समस्त अगोंकी ओर दृष्टि डालनेसे यही बात अनुभवमें आती है कि इसप्रकार सुन्दराकार वाली रमणीरत्न नतो कभी देखने में आई और न कभी सुननेमें आई, और न आवेगी।

महाराज उपश्रेणिक इसप्रकार कन्याके स्वरूपकी उधेड बुनमें लगे थे कि इतनेमें ही राजा यमदड उनके पास आये और उनसे महाराज उपश्रेणिकने कहा कि हे भिल्लोंके स्वामी यमदड यह तुह्मारी तिलकवती नामकी कन्या नानाप्रकारके गुणोंकी खानि एव अनेक प्रकारके सुखोंको देनेवाली है आप इसकन्याको मुझे प्रदान कीजिये क्योंकि मेरा विश्वास है कि मुझे इसीसे संसारमें सुख मिलसकता है।

महाराज उपश्रेणिकके इसप्रकारके वचनोंको सुनकर राजा यमदडने इस विनयभावसे कहा कि हे प्रभो कहा तो आप समस्त मगधदेशके प्रतिपालक ? और कहां मेरी अत्यंत तुच्छ यह कन्या ? हे महाराज देवांगनाओंके समान अतिशय रूप और सौभग्यकी खानि आपके अनेक रानियां हैं। तथा कुमार श्रेणिकको आदिले आपके अनेकही पुत्र है जो अतिशय वलवान, धीर और समस्त पृथ्वीतलकी भलेप्रकार रक्षा करनेवाले है। इसलिये अत्यत तुच्छ

यह मेरी प्यारी पुत्री प्रथमतो आपके, किसी काम की नहीं। यदि देवयोगसे इसका संबंध आपसे हो भी जाय ? तो हे प्रभो, क्या यह अन्य रानियों द्वारा घृणाकी दृष्टिसे देखीजानेपर उस अपमानसे उत्पन्न हुई पीड़ाको सहन करसकेगी ? और हे प्रजापालक प्रथमतो मुझे विश्वास नहीं कि इसके कोई पुत्र होगा ? कदाचित् दैवयोगसे इसके कोई पुत्र भी उत्पन्न होजाय और श्रेणिक आदि कुमारोंका वह सदा दास बना रहै, तो भी उसकों अवश्य दुःख ही होगा, और पुत्रके दुःखसे दुःखित यह मेरी प्राणस्वरूप पुत्री अन्य रानियों द्वारा अवश्यही अपमानित रहेगी ? इसलिये उपरोक्त दुःखोंके भयसे मै अपनी इस प्यारी पुत्रीका आपके साथ विवाह करना उचित नही समझता। हां यदि आप मुझे इसप्रकारका वचन देवें कि जो इससे पुत्र उत्पन्न होगा वही राज्यका उत्तराधिकारी वनैगा तो मै हर्ष पूर्वक आपकी सेवामें अपनी पुत्रीको समर्पण कर सकता हूं। जो उचित आप न्याय एव अन्याय समझे सो करै आप मेरे स्वामी है और मै आपका सेवक हू।

राजा यमदंडके इसप्रकारके वचन सुनकर महाराज उपश्रेणिकने उसकी समस्त प्रतिज्ञाओंको स्वीकार किया और प्रसन्नता पूर्वक उसकी तिलकवती पुत्रीके साथ विवाहकर, उसके साथ भाति भांतिकी क्रीड़ा करते हुवे महाराज उपश्रेणिक विशाल सपत्तिके साथ राजग्रहनगरको रवाना हुए और

मार्गमें अनेकप्रकार वन उपवनोंकी शोभाओंको देखते राजग्रहनगरके समीप आ पहुचे । महाराज उपश्रेणिकके आनेका समाचार सारे नगरमें फैलगया । महाराज उपश्रेणिकके शुभागमन सुनते ही समस्त नगरनिवासी मनुष्य, राजसेवक एव महाराज के समस्त पुत्र, अपनेको धन्य और पुण्यात्मा-समझकर, उनके दर्शनोंकेलिये अतिशय लालायित होकर शीघ्रही उनके सामने स्वागतकेलिये आये और आकर विनय पूर्वक महाराजके चरणों को नमस्कार किया । चिरकालसे महा-राजके वियोगसे दु.खित उनके दर्शन से संतुष्टहो समस्तजन उप-श्रेणिक महाराजकी और प्रेमपूर्वक टकटकी लगाकर देखने लगे और अतिशय प्रेमपूर्वक वार्तालापकरते हुवे उन लोगोंने कुछ समय तक वहीं ठहरकर पीछे महाराजसे नगरमें प्रवेश करनेके लिये प्रार्थनाकी । तथा महाराजके चलने पर समस्त नगर निवासी जनोंने महाराजके पीछे पीछे राजग्रह नगरकी ओर प्रस्थान किया ।

महाराज उपश्रेणिकके नगरमें प्रवेश करते ही उनके शुभागमनके अपलक्षमें अतिशय उत्सव मनाया गया । पटह शख, काहल, दुदुभि, आदि मनोहर बाजे बाजने लगे, तथा उत्तमोत्तम हावभावोंके दिखानेमें प्रवीण, नृत्यकलामें अतिचतुर देवांगनाओंके मदको चूर करनेवाली, और अति सुदर वेश्यायें अधिक आनंद नृत्यकरनेलगीं।महाराज उपश्रेणिक बहुत दिनोंकेवाद नगरके देखनेसे अति आनदित हुये और सर्वांगसुदरी महाराणी

तिलकवतीके साथ साथ अनेकप्रकारके तोरणोंसे शोभित, नीली पीली आदि ध्वजाओंसे सुशोभित, चित्तको हरणकरनेवाले, नानाप्रकारके चौकोंसे मडित, राजग्रहनगरमें प्रवेशकिया।

राजगृहनगरके राजमार्गमें जातेहुवे महाराज उपश्रेणिकको देखकर अनेक नगरनिवासी अपने मनमें इसप्रकार कल्पना करते कहते थे कि अहा पुण्यका महात्म्य विचित्र है देखो कहां तो अत्यंत धीरवीर महाराज उपश्रेणिक ? और कहां उत्तमांगी, चन्द्रमुखी, मृगाक्षी, लक्ष्मीके समान अतिमनोहर, स्थूल उन्नत स्तनोंसे मंडित, कन्या तिलकवती ? कहां महाराज उपश्रेणिकका विशालवनमें गड्ढेमें गिरना और निकलना ? और कहां पीछे इसकन्याके साथ साथ विवाह ? जानपड़ता है इसीकन्याकी प्राप्तिके लिये महाराज उपश्रेणिकको समस्तपुण्य मिलकर वहां लेगये थे। इसमें सदेह नहीं जो मनुष्य पुण्यवान है उनकेलिये विपत्ति भी सपत्ति स्वरूप और दु.ख भी सुखस्वरूप होजाता है। वुद्धिमान मनुष्योंको चाहिये कि वे सदा पुण्यका ही सचयकरैं।

इसप्रकार नगरवासियोंके कथा कौतूहलोको सुनते महाराज उपश्रेणिकने रानी तिलकवतीके साथ साथ अनेक प्रकारकी शोभाओंसे सुशोभित राजमदिर में प्रवेशकिया। राजमंदिरमें प्रवेशकरने पर महाराज उपश्रेणिकने तिलकवतीके उत्तमोत्तम गुणोंसे मुग्धहो उसे अतिशय मनोहर क्रीड़ा योग्य मकानमें ठहराया और नवोढा तिलकवतीके साथ अनेक

प्रकारकी क्रीड़ा करने लगे। कभी कभी तो महाराज कमलके रस लोलुप भँवरेके समान रानी तिलकवतीके मुखकमलके रसका आस्वादन करते, और कभी कभी चंदन लता पर गंधलोलुप भ्रमर के तुल्य उस के साथ उत्तानक्रीडा करते। जानपड़ाता था कि स्तनरूपी दो मनोहर क्रीड़ा पर्वतोंसे युक्त महाराणी तिलकवतीका वक्षः स्थल वन है और महाराज उपश्रेणिक उस बनमें विहार करनेवाले मनोहर हिरण हैं। जब उपश्रेणिक अपने हाथोंसे महाराणी तिलकवतीके स्तनोंपरसे अति मनोहर वस्त्रको खींचते थे तब जान पडता था कि उसके स्तनरूपी खजानेके कलशोंपर उनकी रक्षार्थ दो सर्पही बैठे थे। महाराणी तिलकवतीके, मैथुनरूपी जलसे युक्त कामदेवरूपी मनोहर कमलके आधारभूत, दोनों जंघारूपी सरोवरके बीच महाराज उपश्रेणिक ऐसे मालूम पड़ते थे मानों सरोवरमें हसही क्रीडा कर रहा है। रानी तिलकवती के साथ अनेक प्रकारकी क्रीडा कर महाराज उपश्रेणिकने उसे केवल क्रीडाके ताड़नोंसे व्याकुल ही नहीं किया था किंतु निंदयताके साथ वे उसे चुम्बनोंसे भी व्याकुल करते थे।

इसप्रकार प्रेमपूर्वक चिरकाल क्रीड़ा करनेसे रानी तिलकवतीके चलाती (चलातकी) नामका उत्तम पुत्र उत्पन्न हुआ और अत्यत भाग्यशाली वह चलातकी थोड़ेहो कालमें बडा होगया। इसरीतिसे पुण्यके माहात्म्यसे अत्यंत मनोहर,

नवीन, स्त्रियोंमें उत्तम, अत्यंत उज्ज्वल, हर एक कलामें प्रवीण, समस्त पुण्योफलोंसे उत्पन्न. उत्तमरूपवाली. और समस्त देवांगनाओंके समान अत्यंत उत्कृष्ट. भाग्यवती तिलकवतीको महाराज उपश्रेणिक नानाप्रकारकी क्रीड़ाओं से तुष्ट करते। थे तथा मोहसे नानाप्रकारकी काम को पैदा करनेवाली चेष्टाओंको करनेवाली. अत्यंत मनोहर, अपने शरीरको दिखानेवाली. अत्यंत प्रौढा. देदीप्यमान वस्त्रोंसे शोभित, मुकट जडित मणियोंकी किरणोंसे अधिक शोभायमान, अत्यंत निर्मलरूपवाली और पुण्यकी मूर्ति, तिलकवती भी अपने हाव भावोंसे. नानाप्रकारके भोग विलासोंसे महाराज उपश्रेणिकके साथ क्रीड़ा कर उन्हें तृप्त करती थी। सच है.—धर्मात्मा प्राणियोंको धर्मकी कृपासे ही उत्तम कुलमें जन्म मिलता हैं. धर्मकी कृपासे ही उत्तमोत्तम राजमंदिर मिलते है, धर्मके महात्म्यसे ही मनोहर रूपवाली भाग्यवती सती सर्वोत्तम स्त्रीरत्न की प्राप्ति होती है, धर्मसे ही समस्त प्रकारकी आकुलता-रहित विभूति प्राप्त होती है, एवं अत्यंत आनन्दको देने वाले धर्मसे ही मोक्ष सुख भी मिलता है। इसलिये उत्तम मनुष्योंको उचित है कि वे उत्तमोत्तम राज्य, स्वर्ग, मोक्ष इत्यादि सुखों के प्राप्तकरानेवाले धर्मके फलोको भलीभांति जानकर धर्ममे अपनी बुद्धिको स्थिरकर धर्मको धारण करै।

इसप्रकार महाराज श्रेणिकके जीव भविष्यत्कालमें
होनेवाले श्री पद्मनाभतीर्थंकरके
चरित्रमें महाराज उपश्रेणिक
के नगरप्रवेशको कहने
वाला द्वितीय सर्ग
समाप्त हुवा

तीसरा सर्ग

समस्त कर्मोंसे रहित, प्राचीन, मनोहर, अखंड केवलज्ञान रूपी सूर्यके धारक, प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान को मै मस्तक झुकाकर नमस्कार करता हू।

अनंतर इसके महाराज मगधेश्वर उपश्रेणिकके मनमें इसप्रकार की चिंता हुई कि मेरे वहुतसे पुत्र है इनमेंसे मै किस पुत्रको राज्यका भार दू? इसप्रकार अतिशय दूरदर्शी महाराज उपश्रेणिकने इसबातको चिरकाल तक विचारकर, और इसबातको भी भली भांति स्मरणकर कि तिलकवतीके पुत्र चलातकीको मैने राज देदिया है। किसी ज्योतिषीको एकातमें बुलाकर पूछा

हे नैमित्तिक तू ज्योतिष शास्त्रका जाननेवाला है इसबातको शीघ्र विचार कर कह कि मेरे वहुतसे पुत्रोंमें राज्यका भोगनेवाला कौन पुत्र होगा?

महाराजकी इसबातको सुनकर ज्योतिर्विद नैमित्तिक अष्टाग निमित्तोंसे भलीभांति महाराजके प्रश्नको विचारकर बोला महाराज मैं ज्योतिषशास्त्रके बलसे "आपके पुत्रोंमेंसे राज्यका भोगनेवाला कौनसा पुत्र होगा" कहता हूं आप ध्यान लगाकर सुनिये

उसके जाननेका पहिला निमित्त तो यह हैं·-- कि आपके जितने पुत्र है सब पुत्रोंको आप एक एक घड़ेमें शक्कर भरके दीजियें उनमें जो पुत्र किसी दूसरे मनुष्य पर उस घड़ाको रखकर निर्भय सिंहके द्वारमें प्रवेशकर अपने घरमें खेलता हुवा चला आवे जानिये कि वही पुत्र राज्यका अधिकारी होगा।

दूसरा निमित्त यह है:—कि आप अपने सब कुमारोंको एक एक नवीन घड़ा दीजिये और उनसे कहिये कि हरएक ओसके जलसे उस घड़ेको भरकर ले आवे जो पुत्र ओससे घड़ाको भरकर लेआवेगा अवश्य वही पुत्र राजा होगा।

तीसरा निमित्त यह भी है -- कि आप अपने सब पुत्रोंको एकसाथ भोजन करनेकेलिये बैठालिये और आप उन पुत्रोंको खीर सक्कर पूवे और दाल भात आदि सर्वोत्तम स्वादिष्ट पदार्थोंको एक साथ बैठाकर खिलाइये जिस समय वे भोजनके स्वादमें अत्यत लीन हो जावें उस समय भयकर डाढोवाले अत्यंत क्रूर तथा वाघोंके समान मत्त कुत्तोंको धीरेसे छुड़वादीजिये। उससमय जो पुत्र उन भयंकर कुत्तों को हटाकर आनंदपूर्वक

निर्भयतासे भोजन करैगा वही पुत्र आपके समान इस मगधदेश का नि.सन्देह राजा हो सकैगा।

चौथा निमित्त यह समझिये:—जिससमय नगरमें आग लगे उससमय जो पुत्र सिंहासन छत्र चवर आदि पदार्थोंको अपने सिरपर रखकर नगरसे वाहिर निकले समझ लीजिये कि मुकुटका धारण करनेवाला वही राज्यका भोगनेवाला होगा।

और हे महाराज राज्यकी प्राप्तिका पांचवा निमित्त यह भी है - कि थोड़े से पिटारोंको उत्तमोत्तम लड्डू तथा खाजे आदि मिष्टान्नों से भरवाकर, उनके मुँह को अच्छी तरहसे वद करा कर और मुहर लगवाकर हर एक के घरमें रखवादीजिये तथा उनपिटारोंके साथ शुद्ध निर्मल मधुर जलसे पूर्ण एक एक उत्तम घडेको भी मुँह वंदकर उसी तरह प्रत्येकके घरमें रखवा दीजिये फिर प्रत्येककुमारको एक एक घड़ेमेंसे पानी तथा एक२ पिटारेमें से लड्डु आदिके खानेकी आज्ञा दीजिये। उनमें से जो कुमार जलसे भरे हुवे घड़ेके मुखको खोलेही विना पानी पीलेवे तथा पिटारे से विनाखोले ही लड्डु आदि पदार्थोंको खा लेवे समझ लीजिये कि वही पुत्र राज्यका भोगनेवाला होगा।

इस प्रकार नैमित्तिकके वताये हुवे पाच निमित्तोंको सुनकर महाराजने उस नैमित्तिकको विदा किया और ज्योतिषी के वतलाये हुवे उननिमित्तोंसे कुमारोंकी परीक्षा करनेकेलिये

स्वय ऐसा विचार करने लगे कि आश्चर्यकी बात है कि राज्यतो मैंने चलातकीको देनेकेलिये दृढ़ संकल्प करलिया है लेकिन अब नहीं जानसकता कि इननिमित्तोसे परीक्षा करने पर राज्यका कौन भोगनेवाला ठहरैगा ?

कुछ समय बीतजानेपर महाराजने एकसमय अपने समस्तपुत्रोंको सभामें बुलाया और सरलस्वभावसे वे लोग महाराजकी आज्ञाके अनुसार सभामें आकर अपने २ स्थानोंपर बैठगये। उनको भलीभाति बैठेहुवे देखकर महाराजने कहा हे पुत्रों मै जो कहता हूं सुनो:- आप लोग एक २ शक्करका घडा लेकर सिंह द्वारकी ओर जाइये।

महाराजके इसवचनको सुनकर महाराजकी आज्ञाके पालन करनेवाले सब कुमार महाराजकी आज्ञासे एक एक शक्करके घडेको स्वय लेकर सिंहद्वारकी ओर गये तथा थोडी देर वहांपर ठहरकर अपने अपने घरोंको चले आये। पर चतुर कुमार श्रेणिक किसी अन्यसेवकके सिरपर घड़ेको रखवाकर सिंहद्वार में गया तथा पीछे खेलता हुवा अपने घरको चला आया। जब महाराज उपश्रेणिकने यहबात सुनी तब वे चकित होकर रहगये और अपने मनमें विचार करने लगे निःसन्देह भाग्यशाली श्रेणिककुमार ही राज्यका अधिकारी होगा अब मैं अपने राज्यको चलाती कुमारकेलिये कैसे देसकूंगा ?

इस प्रकार कुछ समय तक विचार करते २ महाराजने

दूसरे निमित्तकी परीक्षाकरनेके लिये अपने पुत्रोंको बुलाया और कहा हे पुत्रों, तुम सब आज फिर मेरी बातको सुनो सब लोग एक २ नवीन घडा लो और उसको अपनी चतुरतासे ओसके जलसे मुहतक भरकर लाओ।

महाराजका वचन सुनते ही वे समस्त राजकुमार सवेरा होते ही बड़े उत्साहके साथ ओसके जलसे घडोंको भरने के लिये अनेक प्रकारके तृणयुक्त जगहोंपर गये और वहापर ओसके जल से भीगे तृणोंको देखकर अत्यंत प्रसन्न हो बड़े प्रयत्नसे तृणोंके जलको ग्रहणकरनेके लिये अलग अलग वैठिगये। जिससमय वे उस ओसके पानीको नवीन घड़ामें भरते थे घडेके भीतर जाते ही क्षणभरमें वह ओस का पानी सूख जाता था। इस तरह ओसके जलसे घड़ा भरनेके लिये उन्होंने यथाशक्ति वहुत परिश्रम किया और भाति भाति के प्रयत्न किये किंतु उनमेंसे एकभी कुमार घड़ाको न भरसका किंतु एकदम घवड़ाकर सव के सव कुमार अपने २ स्थानोंमे चुपचाप वैठिगये॥ वहुतकाल वैठनेपर जव उन्होंने यह वात निश्चय समझिली कि घडा नहीं भरे जा सकते तव चलाती आदि सव राजकुमार महाराज की इसपरीक्षामें अनुत्तीर्ण हो लज्जाके मारे मुखनीचे किये हुवे अपने अपने घरोंको चलेगये। परंतु अत्यंत बुद्धिमान कुमार श्रेणिक महाराजकी आज्ञा पालन करनेके लिये जिस प्रदेशमें ओसके जलसे भीगे हुवे वहुत तृण थे गया औ उन तृणोंपर

उसने एक कपड़ा डालदिया। जिस समय वह कपड़ा ओसके जलसे भींगगया तब उस भींगे कपड़ेको निचोड़२कर उस जलसे घड़ाको अच्छी तरह भरकर वह अपने घरले आया और ओसके जलसे भरे हुवे उसघड़ेको महाराज उपश्रेणिकके सामने रख दिया। महाराजने जिससमय कुमार श्रेणिक द्वारा लाये ओसके जलसे भरे हुवे घड़ेको देखा तो श्रेणिकको अत्यंत बुद्धिमान समझकर चिंतासे व्याकुल होगये और मनमें विचार करने लगे कि अवश्य यह श्रेणिकही राज्यका भोगने वाला होगा, किंतु मैंने जो यह वचन देदिया है कि राज्य चलाती कुमारको ही दिया जायगा, न जाने इस वचनकी क्या गति होगी!

इसप्रकार कुमार उपश्रेणिकको दोनो परीक्षा में उत्तीर्ण देखकर पुनः राज्यकार्यकी परीक्षाके लिये महाराज उपश्रेणिकने श्रेणिक आदि समस्तपुत्रोंको भोजनके लिये अपने घरमें बुलाया। जिससमय समस्तकुमार एकसाथ भोजन करनेलिये बैठिगये तब बड़े आदरके साथ उनके सामने सुवर्णोंके बड़े बड़े थाल रखदिये गये और उन थालमें उनके लिये खाजे घेवर मोदक खीर मीठामाड़ घी मूगका मिष्ट स्वादिष्ट चूरा उत्तम दही और अनेकप्रकारके पके हुवे अन्न तथा मीठाभात और भी अनेक प्रकारके भोजन तथा पूवा मिगोड़े आदिक अनेक मनोहर मिष्टान्न परोसे गये। जिससमय क्षुधासे पीड़ित तथा स्वादके लोलुप सब कुमार भोजन करने लगे और भोजनके

स्वादके आनन्द में मग्न हुये, तब महाराज उपश्रेणिककी आज्ञासे राज सेवकोंने भयकर कुत्तोको छोडदिया फिर क्या था? वे भयकर कुत्ते सुगंधित उतम भोजनको देखकर उसी ओर झुके और भोंकतें हुवे समस्त कुत्ते राजकुमारोंके भोजनपात्रोंपर वातको वातमें टूटपडे । भोजनपात्रोंके ऊपर उनकुत्तोंको टूटते हुवे देखकर मारे भयके कापते हुए राजकुमार अपने अपने भोजनेके पात्रोंको छोड़कर एक दम वहासे भगे और आपसमें हंसी करते हुवे तितर वितर होकर अपने २ घरोंको चले गये। बुद्धिमान कुमार श्रेणिकने जव यह दृश्य देखा कि ये कुत्ते आगे वढ़े चले ही आरहे है और काटनेके लिये उद्यत है तव उसने अपनी वुद्धि से उन सव कुत्तोंको दूर हटाया और दूसरे २ कुमारोंकी पत्तरोंको उन कुत्तोंके सामने फेककर उन्हे बहुत दूर भगादिया और आनदसे भोजन करने लग गया।

इसवातको सुनकर महाराज उपश्रेणिक फिर भी अत्यत चिंतासागरमें निमग्न होगये और विचारने लगे कि मै अव इस उत्तम राज्यको चलातीकुमारको किस रीतिसे प्रदान करू?

एक समय जव नगरमें भयंकर आगलगी तथा ज्वालासे समस्त नगर जलने लगा और नगरके लोग जहां तहा भागनेलगे तब कुमार श्रेणिक तो झट सिंहासन छत्र आदि सामानको लेकर वनको चलागया। शेष राजकुमार कोई हाथ में भाला लेकर वनको गया और कोई खड्गलेकर कोई घोड़ा

आदि लेकर वनको गये। इसवातको सुनकर फिरभी महाराज उपश्रेणिक मनमें अत्यंत दु:खित हुवे तथा सोचने लगे कि चलाती पुत्र किसरीतिसे इसराज्यका भोगनेवाला वने ?

ज्योतिषी के वतलाये हुवे इतनी पराक्षाओं में कुमार श्रेणिकको उत्तीर्ण देख महाराज उपश्रेणिकको संतोष न हुवा अतएव उन्होंने ज्योतिषी के वतलाये हुवे अंतिम निमित्तकी परीक्षाकेलिये फिर भी किसी समय अपने राजकुमारोंको बुलाया तथा प्रत्येक घरमें महाराज उपश्रेणिकने अत्यत मधुर लड्डुओंसे भरे हुवे एक २ पिटारेका मुख वद कर रखवा दिया और उसके साथमें अत्यत निर्मल जलसे भरा हुवा एक २ नवीन घड़ा भी रखवा दिया। इन सब वातों के पीछे लड्डुओंके खानेके लिये और पानी पीनेके लिये समस्त राजकुमारों को महाराज उपश्रेणिकने आज्ञा भी दी। कुमार श्रेणिकके अतिरिक्त जितने राजकुमार थे सबने उन लड्डुओंसे भरे हुवे पिटारेको एकदम हाथमेंलेकर विनाविचारेही शीघ्र खोलडाला और अपनी भूखकी शांतिकेलिये लड्डू खाना प्रारंभ करदिया तथा प्यास लगने पर घडोंके मुंह खोल कर उनसे पानी पिया। परंतु कुमार श्रेणिक, जो उनसवकुमारोंमें अत्यंत वुद्धिमान था चट महाराजके मनका तत्पर्य समझ पिटारेके मुखको विनाही उघाड़े उसको लेकर इधर उधर हिलाने लगा और इस प्रकार उसपिटारेसे निकले हुवे चूर्णको खाकर उसने अपनी क्षुधाकी शान्तिकी तथा जहांपर घड़ा

रक्खा था वहां जोजल घडेसे वाहिर एकठा हुवा था उसीसे अपनी प्यास वुझाई किंतु घड़ेके मुखको खोलकर पानी नहीं पीया। अनंतर महाराज उपश्रेणिकने समस्तराजकुमारोंको अपने २ घर जानेके लिये आज्ञादी। परीक्षासे राज्यकी प्राप्तिके सब चिन्ह धीर वीर भाग्यशाली कुमार श्रेणिकमें देखकर महाराज श्रेणिक अपने मनमें इसप्रकार चिंता करनेलगे, कि ज्योतिषी के वतलाये निमित्तोंसे कुमार श्रेणिक सर्वथा राज्यके योग्य सिद्ध होचुका अव मै किस रीतिसे चलाती पुत्र को राज्यदूं ? मै पहिले यह वचन देचुका हूं कि यदि राज्य दूगा तो चिलातीको ही दूंगा, किंतु ज्योतिषीद्वारा वतलाये हुवे निमित्तोंसे राज्यकुमार श्रेणिक ही उपयुक्त ठहता है। अवमै पहिले दिये हुवे अपने वचनकी कैसे रक्षा करूं ? हा यह वात विलकुल ठीक है कि जिसका भाग्य वलवान होता है उसको राज्य मिलता है इसमें जराभी सदेह नहीं। इसप्रकार अत्यत भयंकर चिंता सागरमे गोतालगाते हुवे महाराज उपश्रेणिकने अत्यंत वुद्धिवान सुमति तथा अतिसागर नामके मंत्रियोंको तथा इनसे अतिरिक्त अन्य मत्रियों को भी वुलाया और उनसे इस प्रकार अपने मनका भाव कहा:—

हे मन्त्रियो आप सब लोग अत्यत वुद्धिमान तथा श्रेष्ठ है। मेरे मनमें एक वड़ी भारी चिंता है जिससे मेरा सवशरीर सूखाजाता है उसचिंताकी निवृत्ति किस रीतिसे होगी इसपर विचारकरो।

महाराजकी इस विचित्र वातको सुनकर अन्य मन्त्रियाने तो कुछ भी उत्तर न दिया पर अत्यत बुद्धिमान सुमतिनामके मत्रीने कहा। हे प्रभो! हे राजन्! हे समस्त प्रथ्वीकेस्वामी! हे समस्त वैरयोकेमस्तकोंको नीचे करनेवाले! महाभाग! आप सरीखे नरेंद्रोंको किस वातकी चिंता होसकती है। हे प्रभो देवोंके घोड़ोंको भी अपने कला कौशलसे जीतनेवाले अनेक घोडे आपके यहां मोजूद है, जो कि अपने खुरोंके वलसे तमाम पृथ्वीका चूर्णकरसकते है. और आपकी भक्तिमें सदा तत्पर रहते है। अपने दातरूपी खड्गोसे तमाम पृथ्वीको विदारण करनेवाले अंजन पर्वतके समान लम्वे चोड़े आपके यहां अनेक हाथी मोजूद है। हे राजेन्द्र आपके मंदिरमें भली भांति आपकी आज्ञाके पालनकरने वाले अनेक पदाति सेना) भी मोजूद है। और रथी शूरवीर भी आपके यहां वहुत हैं. जो कि सग्राममें भली भांति आपकी आज्ञाके पालन करनेवाले हैं। आपको किसी वैरीकी भी चिंता नहीं है क्योंकि आपके देशमें आपका कोई वैरीभी नजर नहीं आता, आपके धन तथा राज्यका कोई वांटने वाला (दायाद) भी नहीं है और आपके पुत्रभी आपकी आज्ञाके पालन करनेवाले है। आपके राज्यमें कोई आपको विरोधी कुटिल भी दृष्टिगोचर नहीं होता फिर हे प्रभो आपके मनमें किस वात की चिंता है ? आप उसे शीघ्र प्रकाशित करै उसके दूरकरनेके

लिये अनेक उपाय मोजूद हैं उसकी शीघ्र ही निवृत्ति हो सकती है । यदि आप इससमय उसको नहीं वतलायगे तो ठीक नहीं, क्योंकि राजाके चिंताग्रस्तहोनेसे पुरवासी-मत्री आदिक सवही चिंताग्रस्त होजाते है उनको भी दुःख उठाना पड़ता है क्योंकि **यथा राजा यथा प्रजा** अर्थात् जिस प्रकारका राजा हुवाकरता है उसकी प्रजाभी उसी प्रकारकी हुआकरती है । इसप्रकार अत्यंत बुद्धिमान सुमतिनामक मत्रीकी इस वातको सुन महाराज उपश्रेणिक वोले कि हे सुमते मुझै देश आदि अथवा पुत्र आदिकी ओरसे कुछ भी चिंता नहीं है, किंतु चिंता मुझै इसीबातकी है कि मै इस राज्यको किस पुत्रको प्रदान करू । मंत्रीनें उत्तर दिया । हे अत्यंत बुद्धिमान महाराज आपका सुयोग्य पुत्र कुमार श्रेणिक है उसीको वेधडक राज्यदेदीजिये । मंत्रीकी इसबातको सुनकर महाराज उपश्रेणिकने कहा हे मन्त्रिन् जिस समय मेरे शत्रुद्वारा भेजेहुवे घोडा ने मुझै वनमें गढ़ेमें पटकादिया था उससमय यमदड नामक भिल्लराजाने वनमें मेरी सेवाकी थी, तथा उसकी पुत्री तिलकवतीने अपनी अतुल्नीय सेवासे एकतरह मुझै पुन. जीवितकिया था । अकस्मात उसी पुत्रीके साथ मेरा विवाहहोगया । विवाहके समय तिलकवती के पिताने यह मुझसे कौल करालिया था कि, यदि आप इस पुत्रीके साथ अपना विवाहकरनाचाहते है तो मुझे यह वचन

देदीजिये कि, इससे जो पुत्र होगा वही राज्यका अधिकारी होगा, नहीं तो मै अपनी इस पुत्रीका विवाह आपके साथ नहीं करूंगा। मै ने उस तिलकवतीके सौंदर्य एवं गुणोंपर मुग्ध होकर उसके पिताको उसप्रकारका वचन देदिया था कि मैं इसीके पुत्रको राज्य दूगा। किंतु मैने राज्यकिसको देना चाहिये, यहवात जिससमय ज्योतिषीसे पूछी तो उसने अपनी ज्योतिषविद्यासे यही कहा कि इस महाराज्यका अधिकारी कुमार श्रेणिकही है। अब बताइये ऐसी दशामें मै क्याकरूं और राज्य किसको दू। यदि मै चलाती कुमारको राज्य न देकर कुमार श्रेणिकको राज्यप्रदानकरूं और अपने वचनका खयाल न रक्खू-- तो ससारमें मेरा जीवन सर्वथा निष्फल है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि यदि मै अपने वचनका पालन न करसकूंगा तो मेरा पहिले कमाया हुवा सब पुण्यभी विना प्रयोजन का है क्योंकि मल मूत्र आदि सातधातुओंसे बनाहुवा यह शरीर पुण्यरहित निस्सार है अर्थात् किसीकामका नहीं। इसमें किसीप्रकारका संदेह नहीं कि चंचलजीवनकी अपेक्षा इसशरीरमे सत्य वचनही सार है, अर्थात् जो कहकर वचन का पालन करता है वही मनुष्य आर्य है और उत्तम है किंतु जो अपने वचन को पालन नहीं करता है वह उत्तम नहीं क्योंकि जिसमनुष्य ने ससारमें अपने वचनकी रक्षा नहीं की उसने उपार्जन किये हुवे पुण्यका सर्वथा नाश करदिया। और यहवात भी है कि संसारमें

शरीर सर्वथा विनाशीक है जीवन विजलीके समान चंचल है और सब प्रकारकी सपदायेंभी पलभरमें नष्ट होने वाली है, यदि स्थिर है तो एक वचनही है ऐसा सब स्वीकार करते हैं। ऐसा समझकर हे मंत्रिन् तुमते मैने जो वचन कहा है उस वचन पर तुझे भली भांति विचारकरना चाहिये जिससे कि संसारमें मेरा जीवन सार्थक समझा जावे निरर्थक नहीं। इसप्रकार जब महाराज उपश्रेणिकने कहा तब मतिसागर नामक मंत्री बोला, कि हे महाराज इस थोडी सी वातके विचारनेमें आप क्यों चिंता करते है? क्योंकि चिंता स्वर्गराज्यकी लक्ष्मी को विकारयुक्त वना सकती है फिर इस थोडीसीबातके लिये चिंता करना क्या वडी वात है? मै अभी कुमार श्रेणिकको देशसे बाहिर निकाले देता हू आप चिंता छोडिये इस चिंतामें क्या रक्खा है। मतिसागर मंत्रीकी अपने अनुकूल इस बातको सुनकर महाराज उपश्रेणिक मनमें अत्यत प्रसन्न हुवे तथा उसमत्रीसे यह बात भी कहते हुवे कि

हे मंत्रिन इसकार्यको तुम शीघ्र करो इसमें देरी करना ठीक नहीं है इसप्रकार महाराज उपश्रेणिककी आज्ञाको शिर पर धारणकर वह मति सागर नामका मत्री कुमारश्रेणिकके समीपमें गया जिससमय वह कुमारके पास गया तो अपने पास बुद्धि-मान मतिसागरमत्री को आते देखकर अत्यत चतुर कुमार श्रेणिकने उसका बडा भारी सन्मान किया और परस्परमें वड़े

स्नेहसे उनदोनोंने कुशल भी पूछा थोडी देर तक कुमार उप-श्रेणिकके पास बैठिकर तथा कुमारको भलीभांति प्रणामकर मंत्री मतिसागरने यह बचन कहा कि

हे कुमार आप मेरे मनोहर तथा हितकारी बचनको सुनिये आपके अपराधसे महाराज उपश्रेणिकको बड़ा भारी क्रोध उत्पन्न हुवा है वे आप पर सख्त नाराज है न जाने वे आप को क्या दंड न देवेंगे ? और क्या अहित न करपाड़ेंगे क्यों कि राजाके कुपित होनेपर आपको यहा पर नहीं रहना चाहिये मंत्री मतिसागरके इसप्रकार अश्रुत पूर्व बचन सुनकर कुमार श्रेणिकने उत्तर दिया कि

कृपाकर आप बतावें मेरा क्या अपराध हुवा है इसप्रकार कुमारके बोलने पर मंत्री मतिसागरने उत्तरदिया कि

जिससमय तुम सब कुमारोंके भोजन करते कुत्ते छोड़े गये थे और जिससमय समस्त पात्रोंको झूठा करादिया था उससमय तुमसे भिन्न सबकुमारतो भोजन छोडकर चले गये थे और यह कहो तुम अकेले क्यों भोजन करते रहगये थे ? इसलिये ऐसा मालूम होता है कि महाराज की नाराजीका यही कारण है और यह वात ठीक भी है क्योंकि नीचताका कारण कुत्तोंसे छुवा हुवा भोजन अपवित्र भोजननहीं कहलाता है मंत्री मतिसागर की इसबातको सुनकर और कुछ हंसकर कुमारने मनोहर शब्दोंमें उत्तरदिया कि

हे मन्त्रिन् कुत्ताओंको बुद्धिपूर्वक हटाकर मुझे यत्नसे भलेप्रकार रक्षित भोजन करना ही योग्य था इसीलिये मैंने ऐसा किया था क्योंकि जो कुमार अपने भोजनपात्रोंकी, न कुछ वलवान कुत्तोंसे भी रक्षा नहीं करसकते वे कुमार राजसतान अर्थात् प्रजाकी क्या रक्षाकरसकते है। इसालिये जो आपने यह वात कही है कि तुमने कुत्तोंका छूवाहुवा भोजनकिया इसलिये महाराज तुम पर नाराज है यह वात तुम्हें बुद्धिमान नहीं सूचित करती। कुमारके इसप्रकार न्याययुक्त वचन सुनकर समस्तदुष्कार्योंका भलेप्रकार जानकार भी वह मन्त्री फिर अतिशय बुद्धिमान श्रेणिक कुमारसे वोला।

हे बुद्धिमान कुमार तुम्हें इससमय न्याय एवं अन्यायके विचारनेकी कोई आवश्यकता नहीं। महाराज का क्रोध इससमय अनिवार्य और आश्चर्यकारी है अब तुम यही काम करो कि थोड़े दिनके लिये इसदेशसे चलेजाओ और राजमंदिरमें न रहो क्योंकि यह नियम है कि संसारमें राजाके क्रोधके सामने, कुलीन भी नीच कुलमें उत्पन्न हुवा कहलाता है। नीतियुक्त अनीतियुक्त कहाजाता है। और पंडितभी बज्रमूर्ख कहाजाता है। प्यारे कुमार श्रेणिक। यदि तुम राज्य ही प्राप्तकरना चाहते हो तो न तो तुम्हें देशसे अलगहोनेमें किसीवातका विचार करनाचाहिये, और न किसी प्रकारकी भावना ही करनी चाहिये किंतु जैसे वने वैसे इससमय शीघ्र ही इस देश से तुम्हें चलाजाना

चाहिये । हे कुमार ! परदेशमें कुछदिन रहकर फिर तुम इसी देशमें आजाना पीछै राज्य आपको जरूर ही मिलेगा क्योंकि राज्य आपका ही है ।

मत्री मतिसागरके ऐसे कपटभरे वचन सुनकर, राजाका क्रोध परिणाममें दु.खदेनेवाला है इसवातको जानकर, और अपनी माता आदिको भी न पूछकर, अत्यंतदु खित हो कुमार श्रेणिक राजग्रहनगरसे निकल पड़े। तथा महाराज उपश्रेणिक द्वारा भेजेहुवे रक्षाके वहानेसे गूढवेष धारणकरने वाले पांच हजार जासूस योधाओंके साथ साथ एकदम नगरसे वाहिर होगये ।

कुमारकी माता महाराणी इन्द्राणीके कानतक यहवात पहुंची कि कुमार श्रेणिकको देशनिकाला हुवा है सुनते ही वह इसप्रकार भयंकर रुदन करने लगी—हा पुत्र ! हा महाभाग ! हे कमलके समान नेत्रोंको धारणकरनेवाले ! हा कामदेवके समान ! हा अत्यंत पुण्यात्मा ! हा अत्यंतशुभलक्षणोंको धारणकरनेवाले ! हा गजेन्द्रकी सूड़के समान लम्बे २ हाथोंके धारक ! हा कोकिलके समान प्यारी वोलीके वोलनेवाले ! हा कमलके समान उत्तम मुखके धारक ! हा उत्तम एव ऊंचे ललाटसे शोभित ! हा कामदेवके समान मनोहर शरीरके धारक ! हा कामदेवके समान विलासी । हा सुंदर ! हा शुभाकर ! हा नेत्रप्रिय ! हा संतोषके देनेवाले ! हा शुभ ! हा राज्यके धारणकरनेमें शूरवीर ! हा प्रिय ! हा सुंदर आकृतिके धारणकरनेवाले ! कुमार, मुझ दु.खिनी

माको छोड़कर तू कहां चलागया ? जो वन अनेकप्रकारके भयकर सिंह व्याघ्रोंसे भराहुआ है उस बनमें तू कहांपर होगा ? । हाय पूर्वभवमें मैंने ऐसा कोंनसा घोरपाप किया था ? जिससे इस भवमें मुझै ऐसे उत्तम पुत्ररूपी रत्नका वियोग सहना पड़ा । हाय क्या पूर्वभवमें मैंने किसी मातासे पुत्रका वियोग करादिया था ? । अथवा श्रीजिनेंद्र भगवानकी आज्ञाका मैंने उल्लघनकिया था ? । वा मैंने अपने शीलका मर्दन किया था— व्यभिचारका आश्रय किया था ? । अथवा मैंने किसी तालावका पुल नष्टकिया था ? । वा मलिनजलसे मैंने वस्त्र धोये थे ? । किं वा अग्निसे मैंने किसी उत्तम वनको भस्म किया था ? वा मैंने व्रतका भंग करादिया था ? अथवा मैंने रातमें भोजन किया था ? अथवा मुझसे किसी दिगम्बर मुनिकी निंदा होगई थी ? किं वा मैंने किसीसे द्रोह किया था ? वा परके वचनकी मैंने अवज्ञाकरदीथी ? अथवा मैंने इसभवमें पाप किया है ? जिससे मुझै ऐसे उत्तम पुत्ररत्नसे जुदा होना पड़ा । इसप्रकार वारवार कुमारश्रेणिककी माता इन्द्राणी का करुणाजनक भयकर रुदन सुनकर समस्त नगरमें हाहाकार मचगया । समस्त पुरवासी लोग करुणा जंनकस्वरसे कुमारश्रेणिककोलिये रोनेलगे और परस्परमें कहने लगे किं

राजाने जो कुमारको नगरसे निकालदिया है सो अज्ञानसे ही निकाला है क्योंकि बड़े खेदकी बात है कि कुमार श्रेणिक तो अद्वितीयभाग्यवान सर्वथा राज्यके योग्य, अद्वितीय दाता

और भोक्ता था विना विचारे महाराज उपश्रेणिकने उसै कैसे नगरसे निकालदिया ? इसप्रकार कुमार श्रेणिकके नगरसे चले जाने पर अत्यत उन्नत कोलाहलयुक्तभी नगर शांत होगया। कुमारके शोकसे समस्तपुरवासी दुःखसागरमें गोता लगाने लगे। वह कौनसा दुःख न था जो कुमारके वियोगमें पुरवासियों को न सहना पड़ा हो।

इधर पुरतो कुमारके शोक सागरमें मग्न रहा उधर कुमार श्रेणिक मार्गमें जाते २ कुछ दूर चलकर अत्यंत दुःखित, एव अपमान जन्य दु खके प्रवाहसे जिनका मुखफीका होगया है, माको स्मरण करने लगे। तथा और भी आगे कुछ धीरे धीरे चलकर बुद्धिमान कुमार श्रेणिक, मयूरशव्दोंसे शोभित किसी निर्जन अटवी में जा पहुचे। वहांसे अनेकप्रकारके धान्योंसे शोभित, चित्र विचित्र ध्वजाओंसे मंडित, एव राजमंदिरसे भी शोभित कोई मनोहर **नंदिग्राम** उन्हे दीख पड़ा। महाधीर वीर कुमार धीरे धीरे उसी नगरकी ओर रवाने होकर उसनगरके द्वार पर आ पहुँचे। द्वारकी अपूर्व शोभा निरखते हुवे वहांपर ठहरगये पीछे उसनगरमें प्रवेशकर कुमार श्रेणिक अनेकप्रकारके माला घटा तोरण आदिकर शोभित, अत्यतमनोहर, श्रेष्टसपत्तिके धारक राजमंदिरके पास पहुचे और वहां उन्होंने अत्यंतवृद्ध नानाप्रकारके गुणोंकरमंडित, मनोहर, अतिशय प्रीतिकरनेवाले, उत्कृष्ट, किसी इन्द्रदत्तनामके सेठिको देखा और उससे कहा।

हे श्रेष्ठिन आप यहां न बैठिये मेरे साथ आइये' यहांपर कोई नंदिग्रामका स्वामी ब्राह्मण निश्चयसे रहता है। हमदोनों भोजनकी प्राप्तिकेलिये भ्रमण कररहे है आइये उसके पास चलै वह हमै अवश्य भोजनादि देगा। ऐसा कहकर कुमार श्रेणिक और सेठि इन्द्रदत्त दोनों उसब्राह्मणके पासगये और उससे कहा कि

हे विप्र नंदिनाथ तू महाराज उपश्रेणिकके सन्मानका पात्र राज्यसेवाके योग्य है और तू राज्यकार्यकेलिये महाराज द्वारा दिये हुवे मालका मालिक है इसलिये हमदोनोंको पीनेकेलिये कुछ जल और भोजनकेलिये कुछ धान्यदे क्योंकि राज्यके कार्यमें चतुर हम दोनों राजदूत है और भ्रमण करते २ यहांपर आपहुचे है। कुमार श्रेणिकके इसप्रकार वचन सुनकर क्रोधसे नेत्रोंको लाल करता हुवा एव सदा परके ठगनेमें तत्पर उस ब्राह्मणने क्रोधसे उत्तर दिया।

कहांके राजसेवक ? कौन ? किसकारणसे कहासे यहां आगये ? मै तुम्हें पीनेकेलिये पानीतक न दूंगा भोजनादिककी तो बातही क्या है जाओ २ शाग्रही तुम मेरे घरसे चले जाओ जरा भी तुम यहांपर मत ठहरो यदि तुम राजसेवकभी हो तोभी मुझै कोई परवा नहीं। ब्राह्मणके इसप्रकार मूर्खता भरे वचन सुनकर कोपसे जिनका गात्र कपरहा है कुमार श्रेणिकने कहा--

अरे दयाहीन भिक्षुक हम कौन है ? तुझै इससमय कुछभी मालूम नही तुझै पीछै मालूम होगा। तेरे ऐसे दया रहित वचनोंपर मै पीछे विचार करूगा जो कुछ तुझै उससमय

दंड दियाजायगा इससमय उसके कहनेकी विशेष आवश्यकता नहीं। ऐसा कहकर कुमार श्रेणिक और सेठि इन्द्रदत्त जहां बौद्धसन्यासी रहते थे वहां गये और वहांपर उन्होंने रक्त-वस्त्रोंको धारणकरनेवाले अनेक बौद्धसंन्यासियोंको देखा। कुमार श्रेणिकके लक्षणोंको राजाके योग्य देखकर, यह राजकुमार है इस बातको जानकर और यह शीघ्रही राजा होगा यह भी समझ कर उनमेंसे एक सन्यासीने राजकुमार श्रेणिकसे पूछा।

हे मगध देशके स्वामी महाराज उपश्रेणिकके पुत्र, बुद्धिमान कुमार श्रेणिक तुम कहां जा रहे हो? अकेले यहांपर आप कैसे आये ?।

कुमारने उत्तर दिया राजानें कोपकर हमे देशसे निकाल दिया है। फिर बौद्धसन्यासियोंके आचार्यने कहा हे कुमार अब आप पहले भोजनादि कीजिये फिर मेरे हितकर वचनोंको सुनिये। कुमार! आप कुछ दिनबाद नियमसे मगध देशके राजा होवेंगे इसमें आप जरा भी संदेह न करें। मेरे वचनों पर आप विश्वास कीजिये और आप सुखकी प्राप्तिके लिये शीघ्रही बौद्ध धर्मको ग्रहण कीजिये। इसबौद्ध धर्मकी कृपासे ही आपको निस्संदेह राज्यकी प्राप्ति होगी। विश्वास कीजिये व्रतोंकें करनेसे तथा उपवासोंके आचरण करनेसे हमारे समस्त कार्योंकी सिद्धि होती हैं हमारा यह उपदेश है कि आप राज्यकी प्राप्तिके लिये निश्चल रीतिसे बौद्ध धर्मको धारण करैं॥

हे कुमार किसीसमय जब ससारमें यह प्रश्न उठा था कि धर्म क्या है ? उससमय समस्त विज्ञानके पारगामी महादेव भगवान बुद्धने यह वचन कहा था कि हे चतुराय, जो धर्म वास्तविकरीतिसे सच्चे आत्माके स्वरूपको वतलाने वाला है, और समस्त पदार्थोंके क्षणिकत्वको समझानेवाला है वही धर्म वास्तविक धर्म है। एव वही सेवन करने योग्य है उससे भिन्न कोई भी धर्म सेवने योग्य नहीं। हे राजकुमार विज्ञान वेदना संस्कार रूप नाम ये पांच प्रकारकी सज्ञायें ही तीनों लोकमें दु:ख स्वरूप हैं पांचप्रकारके विज्ञान आदिक मार्गसमुदाय और मोक्ष ये तत्त्व हैं अष्टाग मोक्षकी प्राप्ति केलिये इन्ही तत्त्वोंको समझना चाहिये । यह समस्तलोक क्षणभंगुर नाशमान है, कोई पदार्थ स्थिर नहीं । चित्त में जो पदार्थ सदाकाल रहनेवाला नित्य मालूम पड़ता है वह स्वप्नके समान भ्रम स्वरूप है। तथा जो ज्ञान समस्तप्रकार की कल्पनाओंसे रहित निर्भ्रांत अर्थात् भ्रम भिन्न और निर्विकल्पक हो, वही प्रमाण है किंतु सविकल्पक ज्ञान प्रमाण नहीं है वह मृगतृष्णाके समान भ्रम जनक ही है । जिन तत्त्वोंका वर्णन बौद्ध धर्ममें किया है वे ही वास्तविक तत्त्व हैं। इसलिये यदि तुम अपने पिताके राज्यकी प्राप्तिके लिये उत्सुक हो--मगध देशके राजा वनना चाहते हो तो आप समस्त इष्ट पदार्थों का सिद्ध करनेवाला बौद्धधर्म शीघ्रही ग्रहण करैं। हे कुमार ! यदि आप

को राजा वनने का इच्छा है तो आप वौद्ध धर्मको ही अपना मित्र वनायें क्योंकि इस धर्मसे वढ़कर दुनियांमें दूसरा कोई भी मित्र नहीं है। वौ ाचार्यके इनवचनोंने कुमार श्रेणिकके पवित्र हृदयपर पूरा प्रभाव जमादिया, कुमार श्रेणिकने वौद्धाचार्यके कथनानुसार वौद्धधर्म धारण किया एवं उसवौद्धाचार्यके चरणोंको भक्ति पूर्वक नमस्कार कर वौद्ध धर्मके पक्के अनुयायी वन गये। अतिशय निर्मल चित्तके धारक कुमार श्रेणिकने उसी वौद्धाश्रमम इन्द्रदत्त सेठिके साथ साथ स्नान अन्न पानादस मार्गका थकावट दूरकी। तथा राज्यकी ओरसे जो उनका अपमान हुवा था और उस अपमानसे जो उनके चित्तपर आघात हुवा था उस आघातको भी वे भूलने लगे और उस वौद्धाचार्यके साथ कुछ दिन पर्यंत वहीं पर रहे।

अनंतर इसके अव यहांपर अधिक रहना ठीक नहीं यह विचारकर, अतिशय हर्षितचित्त, वौद्धधर्मके सच्चे अनुयायी, कुमार श्रेणिक उसस्थान से चले। यह समाचार सेठि इन्द्रदत्त ने भी सुना सेठि इद्रदत्त भी यह जानकर कि कुमार श्रेणिक अत्यंत पुण्यात्मा है कुमारके पीछे पीछे चल दिये। इसप्रकार वनमार्गों को देखते हुवे, अनेकप्रकारकी पर्वत गुफाओंको निहारते हुवे, मत्तमयूरोंके नृत्यको आनंदपूर्वक देखते हुवे वे दोनों महादय जव कुछ थकगये तव कुमार श्रेणिकने अति मधुर वाणीसे सेठि इन्द्रदत्तसे कहा।

हे श्रेष्ठिन (मातुल) चलते चलते इस मार्गमें मै और आप थकगये है इसलिये चलिये जिह्वारूपी रथपर चढकर चल। कुमारकी इस आकास्मिक बातको सुनकर अचभे में पडकर सेठि इद्रदत्तने विचारा कि ससारमें कोई जिह्वारथ है? यहबात न तो हमने आजतक सुनी और न साक्षात् जिह्वारूपी रथ ही देखा मालूम होता है यह कुमार कोई पागल मनुष्य है ऐसा थोडी देर तक विचारकर सेठि इन्द्रदत्त चुप होगये उन्होंने कुमार श्रेणिकसे बात चीत करना भी वद करदिया एवं दोनों चुपचापही आगेको चलने लगे।

थोडी दूर आगे जाकर, अपने निर्मल जलसे पथिकों के मन तृप्त करनेवाली, अत्यंत निर्मल जलसे भरीं हुई एक उत्तम नदी उन दोनोंने देखी, नदीको देखते ही कुमार श्रेणिक ने तो अपने जूते पहिनकर नदीमें प्रवेश किया। और सेठि इन्द्रदत्ताने पैरोंसे दोनों जूतोंको पहिले उतारकर हाथ में लेलिया वाद वे नदीमें घुसे। मगध देशके कुमार श्रेणिकको जूते पहिनकर जब उन्होंने नदीमें प्रवेश करते हुवे देखा तो सेठि इन्द्रदत्त और भी अचंभा करनेलगे और उनको इसबात का पक्का निश्चय होगया कि कुमार श्रेणिक ज़रूर कोई पागल पुरुष है। तथा कुमार श्रेणिकके कामसे उन्होंने अपने मनमें यह विचार किया कि अन्यबुद्धिमान पुरुष तो यह काम करते है कि जलमें जूता उतारकर घुसते है किंतु कुमार श्रेणिकने

जूता पहिने ही नदीमें प्रवेश किया मालूम होता है कि यह साधारण मूर्ख नहीं वड़ा भारी मूर्ख है

इसप्रकार विचार करते२ सेठि इन्द्रदत्त फिर कुमार श्रेणिक के पीछे पीछे आगे चले। कुछदूर चलकर उन्होंने अत्यंत शीतल छाया युक्त एक वृक्ष देखा मार्गमें धूप आदिसे अतिशय श्रांत कुमार श्रेणिक और सेठि इन्द्रदत्त दोनो ही उस वृक्षके पांस पहुंचे। कुमार श्रेणिक तो उस वृक्षकी छायामें अपने शिरपर छत्री तानकर बैठे और सेठि इंद्रदत्त छत्री बंदकर। कुमारको छत्री ताने हुवे बैठा देखकर सेठि इंद्रदत्त फिर भी मनमें गहरा विचार करनेलगे कि संसारमें और और मनुष्य तो छत्रीको धूपसे बचनेके लिये शिरपर लगाते है किंतु यह कुमार अत्यंत शीतल वृक्षकी छायामें भी छत्री लगाये बैठा है यह तो वड़ा मूर्ख मालूम पडता है॥

इसप्रकार विचार करते करते फिरभी सेठि इन्द्रदत्त कुमारके साथ आगे चले आगे चलकर उन्होंने अनेकप्रकारके उत्तमाधममनुष्योंसे व्याप्त, अनेकप्रकारके हाथी घोड़ा आदि पशुओंसे भराहुवा अतिशय मनोहर, एक नगर देखा। नगरको देखकर कुमारश्रेणिकने सेठि इन्द्रदत्तसे पूछा कि हे मामा कृपाकर कहै यह उत्तम नगर वसाहुवा है कि उजड़ाहुवा? कुमारके इन वचनोंको सुनकर सेठि इन्द्रदत्तने उत्तर नहीं दिया किंतु अति शय चतुर कुमारश्रेणिक और इन्द्रदत्त फिरभी आगेको चलदिये

आगे कुछही दूरजाकर उन्होंने एक अत्यतसुंदर पुरवासी मनुष्य अपनी स्त्रीको मारामार मारते हुवे देखा देखकर फिरि कुमारश्रेणिकने सेठि इन्द्रदत्तसे प्रश्नकिया कि हेश्रेष्टिन बताइये कि जिसस्त्रीको यह सुंदरमनुष्य माररहा है वह स्त्री बंधीहुई है अथवा खुलीहुई कुमारके इसप्रकारके वचन सुनकर इन्द्रदत्त ने विचारा कि यह कुमार अवश्य पागल है इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं ।

इसप्रकार अपने मनमें कुमारके पागलपनेका दृढ़विश्वास कर फिरभी दोनों आगेको बढ़े आगे चलते चलते उन्होंने जिसको मनुष्य जलानेकेलिये लेजारहथे एक मरे हुवे मनुष्यको देखा। मृतमनुष्यको देखकर फिरभी कुमारश्रेणिकको शंकाहुई और शीघ्रही उन्होंने सेठि इद्रदत्तसे धरपूछा कि हेमाम मुझे शीघ्र बतावें कि यह मुर्दा आज मरा हैं कि पहिले का मराहुवा है ।

आगे बढ़कर कुमार श्रेणिकने भलेप्रकार पके हुवे फलों से रम्य, फलोंकी उत्तमसुगधिसे जिसके ऊपर भौंरा गुंजार शब्द कर रहे है। जो जलसे भीगे हुवे फलोंसे नीचेको नव रहा है एक उत्तम शालिक्षेत्र देखा। शालिक्षेत्र देखकर कुमार ने फिर सेठि इन्द्रदतसे प्रश्न किया कि हेमाम शीघ्र बताइये इसक्षेत्रका मालिक इसक्षेत्रके फलोंको खावेगा कि खाचुका ? ।

आगे चलकर किसी एक नवीन क्षेत्रमें हल चलाता हुवा एक किसान मिला उसको देखकर फिर कुमार श्रेणिकने प्रश्न किया

कि हे श्रेष्ठिन् जल्दी बताइये इस हलपर हलके स्वामी कितने है।

तथा आगे बढकर एक बदरी वृक्ष, दृष्टि गोचर हुवा उसै देखकर फिर भी कुमारने सेठि इन्द्रदत्तसे पूछा कि हे मातुल कृपाकर मुझै बताइये कि इस बेरियाके पेड़में कितने काटे है।

इसप्रकार कुमार श्रेणिक तथा सेठि इद्रदत्त दोनों जनों की जिह्वारथ, जूता, छत्री, ग्रामका निश्चय, स्त्री, मुर्दा, शालिक्षेत्र, हल, काटेके विषयमें बातचीत हुई। पुण्यके फलसें अत्यंत विशदबुद्धिके धारक कुमार श्रेणिकने अपने स्नेह युक्त बचनों से, शब्दोंके अर्थको भली भांति नहीं समझने वाले भी सेठि इन्द्रदत्तके कानोंको तृप्तकर दिया। और उत्तम बुद्धिको प्रकट करनेवाले बचन कहे। तथा नानाप्रकारकी शास्त्र कथाओंमें प्रवीण, चंद्रमाके समान शोभा को धारण करनेवाला, तेजस्वी, लक्ष्मीवान. अपने पुण्यसे जितेन्द्रिय पुरुषोंको भीं अपने अधीन करनेवाला, पृथ्वीमें सुदर, कुमार श्रेणिकने सेठि इन्द्रदत्तके साथ उत्तमोत्तम तलावोंसे शोभित **वेणपद्म** नगरमें प्रवेश किया। देखो कर्मका फल कहा तो मगधदेश? कहां राजगृहनगर ? और नंदिग्राम कहा! तथा कहां वौद्धमतका सेवन? और कहां सेठि इन्द्रदत्तके साथ मित्रता! ससारमें कर्मोंका फल विचित्र और अलक्ष्य है, किंतु यह नियम है कि जीवोंके समस्त अशुभ कार्योंका नाश धर्मसे ही होता है, धर्मसे ही शुभ कर्मोंको प्राप्ति

होता है। ससारमें धर्मसे प्रिय वस्तुओंका समागम होता है इसलिये जिन मनुष्योंकी उपर्युक्त वस्तुओंके पानेकी अभिलाषा है उन्हें चाहिये कि वे सदा अपनी बुद्धिको धर्ममें ही लगावें

इसप्रकार भविष्यत् कालमें होनेवाले श्रीपद्मनाम तीर्थकरके जीव श्रीमहाराज श्रेणिकके चरित्रमें कुमार श्रेणिकका राजग्रहनगरसे निष्कासन कहनेवाला तीसरा सर्ग समाप्त हुवा

अनंतर इसके जिससमय सेठि इंद्रदत्त वेणपद्म नगरके तलावके पास पहुचे तो वहीं से उन्होंने वेणपद्म नगरको देखा। तथा जिस वेणपद्म नगरकी स्त्रियोंके मुखचद्रमा मनोहर, कामीजनोंके मन तृप्तकरनवाले थे, उनकी मनोहरताके सामने चद्रमा अपनेको कुछ भी मनोहर नही मानता था और लज्जित हो रात दिन जहा तहां घूमता फिरता था। तथा जिसनगरके निवासी मनुष्य सदा पुण्यकर्ममें तत्पर, दानी, भोगी, धीर वीर, और जिनेन्द्र भगवानकी आज्ञाके भलीभाति पालन करने वाले थे, ऐसे उस सर्वोत्तम नगरकी शोभा देखकर वे अति प्रसन्न हुवे। और कुमार श्रेणिकसे कहने लगे हे कुमार इसनगरमें आप क्या करैंगे ? कहा पर निवास करैंगे ? मुझै कहै।

इन्द्रदत्तकी यहबात सुनकर कुमार श्रेणिकने उत्तर दिया कि हे वणिकस्वामी इन्द्रदत्त, मैं भांति भांतिके कमलोंसे

शोभित इसी तलाबके किनारे रहूंगा आप अपने मनोहरपुरमें जाकर निवास करें।

कुमारके मुखसे ऐसे उत्तम बचन सुनकर सेठि इन्द्रदत्तने फिर कहा कि हे राजकुमार यदि आप यहां रहना चाहते है तो मेरा एक निवेदन है, वह यही है कि जब तक मेरी आज्ञा न होवे आप इसतालाबको छोड़कर कहीं न जाय।

इन्द्रदत्तके उसप्रकारके बचनोंको सुनकर कुमार श्रेणिक तो तालाबके किनारे वैठि गये और सेठि इन्द्रदत्तने अपने नगर की ओर गमन किया। ज्योंही इद्रदत्त अपने घरमें पहुंचे और जिससमय वे अपने कुटुम्बियोंसे मिले तो उनको अति आनद हुवा, मारे आनदके उनके दोनो नेंत्र फूलगये, अगरो मांचित होगया और मुख भी कांति मान होगया। तथा जिससमय स्त्री पुत्र पुत्रियोंने उनका सन्मान किया और प्रेम की दृष्टिसे देखा तो उन्होने पूर्वोपाजित धर्मके प्रभावसे अपना जन्म सार्थक जाना और अपनेको कृतकृत्य समझा।

महोदय सेठि इद्रदत्त के पीन एव उन्नत स्तानोंसे शोभित, चद्रमुखी कोकिलाके समान मधुर बोलनेंवाली--पिकवैनी **नंदश्री** नामकी कन्याथी। उसकन्यानें अपने गनोहर कंठसे कोकिलाको जीत लिया था वह मुखसे चंद्रमाको नेत्रोंसे कमल पत्रको और हाथसे कमल पल्लवको जीतनेवाली थी। उसके केशोंके सामने मनोहर नीलमणिभी तुच्छ मालूम पड़ती थी गतिसे

वह हंसिनीकी चाल नीची करनेवाली थी। एवं स्तनोंसे उसने सुवर्णकलशोंको नितवोंसे उत्तमोशिलाको, रूपसे कामदेवकी स्त्री रतिको निरस्कृत कर दिया था। जिससमय इस कन्याने अपने पिता इन्द्रदत्तको देखा तो शीघ्रही उसने प्रमाण पूर्वक कुशल क्षेम पूछी। तथा कुशल क्षेम पूछनेके वाद अपनी मनोहर वाणीसे यह कहा कि हे पूज्यपिता आपके साथ कोई भी उत्तम बुद्धिमान मनुष्य आयाहुवा नहीं दीखता। परदेशसे आप किसी मनुष्यके साथ२ आये है अथवा अकेले? पुत्री के ऐसे वचन सुनकर एवं उन बचनोंके तात्पर्य को भी भलीभांति समझकर सेठि इन्द्रदत्तने हर्षपूर्वक उत्तर दिया कि हे पुत्री मेरे साथ एकमनुष्य अवश्य आया है और वह अत्यंतरूपवान युवा गुणी मनोहर तेजस्वी और बुद्धिमान है। तथा वह मनुष्य अपनेको मगध देशके स्वामी महाराज उपश्रेणिकका पुत्र कुमारश्रेणिक वतलाता है यद्यपि वह तेरेलिये सर्वथा वरके योग्य है तथापि उसमें एक वडाभारी दोष है कि वह विचार रहित वचन वोलनेके कारण मूर्ख मालूम पडता है।

ध्यान पूर्वक पिताके इसप्रकारके वचन सुनकर मनोहरांगी, दांतोंकी दीप्तिसे सर्वत्र प्रकाश करनेवाली, कठिनस्तनी नताङ्गी कुमारी नदश्रीने कहा कि हे पिता कृपाकर आप मुझसे कहैं जो मनुष्य आपके साथ आया है उसकी आपने क्या क्या चेष्टा देखी है? उसकी उम्र क्या है? और किसलिये वह यहापर आया है?

पुत्रीके इसप्रकार वचन सुनकर सेठि इन्द्रदत्तने कहा कि हे पुत्रि यदि तेरी लालसा उसके विषयमें कुछ जानने की है तो मै उस मनुष्यके सब वृत्तांतको कहता हूं तू ध्यान पूर्वक सुन--मै लौटकर घर आरहाथा वीचमार्गमें नदिग्रामके समीप मेरी उससे भेंट हुई उसीसमयसे उसने मुझे मामा वनालिया और मार्गमे भी मामा कहकरही मुझे पुकारा सो यह वता कि कौन ? और कहां का रहने वाला तो वह ? और मै कहाके रहने वाला ? फिर उसने मुझे मामा कहकर क्यों पुकारा ? । दूसरे कुछ चलकर फिर उसने कहा कि हम दोनों थकगये है इसालिये चलो अब जिह्वारूपी रथपर सवार होकर गमन करै हे पुत्रि यह बात विलकुल उसने मिथ्या कही थी क्योंकि जिह्वारथ संसारमें कोई है यह बात आजतक न सुनी न देखी । पुन. कुछ चलकर एक नदी पड़ी उसमें इसने जूते पहिन कर प्रवेश किया । तथा अत्यंत शीतल वृक्ष की छायाके नीचे यह छत्री तानकर बैठा । तथा आगे चलकर एक अनेकप्रकारके मनोहर घरोंसे शोभित, मनुप्य एव हाथी घोड़ा आदि पशुओंसे व्याप्त, एक नगर पड़ा उस नगरको देख कर इसने मुझसे पूछा कि हे मातुल यह नगर उजड़ा हुवा है कि वसा हुवा ? हे पुत्रि यह प्रश्न भी उसका मनको आनंद देनेवाला नहीं होसकता। आगे चलकर मार्गमें कोई एक मनुप्य किसी स्त्री को माररहा था उस स्त्री को दखकर फिर उसने

मुझे पूछा कि हे मामा यह स्त्री बधी हुई है कि खुली हुई ?। उसी-प्रकार आगे चलकर एक मरा हुवा मनुष्य मिला उसे देखकर फिर उसने पूछा कि यह आज मरा है अथवा पहिलेका ही मरा हुवा है ?। आगे चलकर अतिशय पके हुवे उत्तम धान्योंसे व्याप्त एक क्षेत्र पड़ा उसे देखकर उसने यह कहा कि हे मामा इस खेतका मालिक इसके फलोंको खावेगा या खाचुका ?। इसीप्रकार हल चलाते हुवे किसी एक किसान को देखकर उसने पूछा कि इस हलपर हलके चलाने वाले कितने मनुष्य है ?। तथा आगे चलकर एक बेरीका वृक्ष पड़ा उसको देखकर उसने यह कहा कि हे मातुल इसमें कितने कांटे हैं इत्यादि उसके द्वारा किये हुवे अयोग्य, पूर्वापर विचार रहित प्रश्नोसे मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह कुमार अवश्य पागल है।

पिताके मुखसे कुमार श्रेणिक द्वारा की हुई चेष्टाओंको सुनकर बुद्धिमती नदश्रीने जवाव दिया कि हे पिता उस कुमार को, जो उपर्युक्त चेष्टाओंसे आपने पागल समझ रक्खा है सो वह कुमार पागल नहीं है, किं तु वह अत्यत चतुर एव अनेक कलाओंमें निपुण है ऐसा निस्सशय समझिये क्योंकि—जो उस कुमारने आपको मामा कहकर पुकारा था उसका मतलब यह था कि संसारमें भानजा अत्यत माननीय एवं प्रिय होता है इसलिये मामाके कहनेसे तो उस कुमारने आपके प्रेमकी आकांक्षाकी थी। तथा जिह्वारथका अर्थ कथा कौतूहल है। कुमारने जो जिह्वारथ

कहा था वह भी उसका कहना बहुतही उत्तम था क्योंकि जिससमय सज्जन पुरुष मार्गमें थकजाते है उससमय वे उस थकावटको अनेक प्रकारके कथा कौतूहलोसे दूर करते हैं। कुमारका लक्ष्यभी उससमय थकावटके दूरकरनेकोलियेही था। तथा जो कुमार नदीके जलमें जूते पहिनकर घुसाथा वह कामभी उसका एक वड़ी भारी बुद्धिमानी का था क्योंकि जलके भीतर बहुतसे कटक एवं पत्थरोंके टुकड़े पड़े रहते हैं, सर्प आदिक जीव भी रहते है। यदि जलमें जूता पहिनकर प्रवेश न किया जाय तो कटक एवं पत्थरोंके टुकड़ों के लगजानेका भयरहता है। सर्प आदि जीवोंके काटने का भी भयरहता है। इसलिये कुमारका जलमें जूता पहिनकर घुसना सर्वथा योग्यही था। तथा हे पिता! कुमार, वृक्षकी छायामें जो छत्री लगाकर वैठा था उसका वह कार्यभी एक वडी भारी बुद्धिमानीको प्रकट करने वाला था क्योंकि वृक्ष की छायामें छत्रीलगाकर न वैठे जाने पर पक्षी आदि जीवोकी वीट गिरनेकी सभावना रहती है इसलिये वृक्षकी छायामें छत्री लगाकर वैठना भी कुमारका सर्वथा योग्य था। तथा अति मनोहर नगरको देखकर कुमारने जो आपसे यह प्रश्नकिया था कि 'हे मातुल यह नगर उजड़ा हुवा है कि वसा हुवा'? उसका आशय भी बहुत दूरतक था क्योंकि भले-प्रकार वसा हुवा नगर वही कहाजाता है, जो नगर उत्तम धर्मात्मा मनुष्योंसे जिन प्रतिबिम्ब, जिन चैत्यालय, एवं उत्तम

यतीश्वरोंसे अच्छीतरह परिपूर्ण हो। किंतु उससे भिन्न नगर उजडा हुवा कहा जाता है। 'इसलिये यह नगर वसाहुवा है अथवा उजडा हुवा' ? यह प्रश्नभी कुमारका विचार परिपूर्ण था। तथा हे पिता स्त्रीको मारते हुवे किसी पुरुषको देखकर जो कुमारने, 'यह स्त्री बंधी हुई है अथवा खुली हुई है?' आपसे यह प्रश्न किया था वह प्रश्नभी उसका अत्युत्तम प्रश्न था। क्योंकि बधी हुई स्त्री विवाहिता कही जाती है और छूटी हुई का नाम अविवाहिता है। कुमारका प्रश्न भी इसी आशयको लेंकर था कि यह स्त्री इसपुरुषकी विवाहिता है अथवा अविवाहिता है ? अतः कुमारका यह प्रश्नभी उसकी चतुरताको ज़ाहिर करता है। तथा मरे मनुष्यको देख कर जो कुमारने यह प्रश्न किया था कि "यह मराहुवा मनुष्य आजका मरा हुवा अथवा पहिलेका मराहुवा है" ? यह प्रश्नभी उसका वडी चतुरता परिपूर्ण था। क्योंकि हे पूज्य पिता ! जो मनुष्य धर्मात्मा, दयावान, ज्ञानवान् विनयसे उत्तमपात्रोंको दान देनेवाला, एव समस्त जगतमें यशस्वी होता है और वह मरजाता है उसको तो हालका मराहुवा कहते है। और इससे भिन्न जो मनुष्य दानरहित कामी पापी होता है उसको ससारमें पहिलेसे ही मरा हुआ कहते है। कुमारका यह जो प्रश्न था कि "यह मराहुवा मनुष्य हालका मराहुवा है अथवा पहिलेका ? वह प्रश्न भी कुमारको अत्यत बुद्धिमान एव चतुर वतलाता है" तथा हे पिता कुमारने धान्यपरिपूर्ण खेतको

देखकर आपसे जो यह पूछा था कि इसक्षेत्रके स्वामीने इस क्षेत्रके धान्यका उपभोग कर लिया है अथवा करेगा? वह प्रश्नभी कुमारका बड़ी बुद्धिमानीका था। क्योंकि कर्ज लेकर जो खेत बोया जाता है उसके धान्यका तो पहिले ही उपभोग करलिया जाता है। इसलिये वह भुक्त कहाजाता है। और जो खेत विना कर्जके बोया जाता है उसखेतके धान्यको उस खेतका स्वामी भोगेगा ऐसा कहा जाता है। कुमारके प्रश्नका भी यही आशय था कि यह खेत कर्जलेकर बोया गया है अथवा विनाकर्जके? इसलिये इस प्रश्नसेभी कुमारकी बुद्धिमानी वचनागोचर जानपड़ती है। तथा हे तात कुमारश्रेणिकने जो यह प्रश्न किया था कि हे मातुल इस वेरीके वृक्षके ऊपर कितने कांटे हैं? सो उसका आशय यह है कि कांटे दो प्रकारके होते हैं एक सीधे दूसरे टेड़े। उसीप्रकार दुर्जनोंके भी वचन होते हैं इसलिये यह प्रश्नभी कुमारश्रेणिका सर्वथा सार्थक ही था। इसलिये उक्त प्रश्नोंमे कुमार श्रेणिक अत्यंत निपुण, विद्वानोंके मनोंको हरण करनेवाला. समस्तकलाओंमें प्रवीण, और अनेकप्रकारके शास्त्रोंमें चतुर है ऐसा समझना चाहिये। हे तात आप धैर्यरक्खें कुमार श्रेणिककी बुद्धिकी परीक्षा मैं और भी करलेती हू किंतु कृपाकर आप मुझे यह वतावें—अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम विचारोंसे परिपूर्ण. सर्वोत्तम गुणोंको मंदिर, वह कुमार ठहरा कहां है?

नंदश्रीके इसप्रकार संतोष भरे बचन सुनकर इन्द्रदत्तने उत्तर

दिया है सुते ! जिसकुमारके विषयमें तूने मुझे पूछा है अतिशय रूपवान एव युवा वह कुमार इसनगरके तलावके किनारे पर ठहरा हुवा है । पिताके मुखसे ऐसे बचन सुनतेही कुमारको ताला- वके किनारे ठहरा हुवा जानकर नदश्री शीघ्रही भगती भगती जो पर मनुष्यके मनके अभिप्रायोंके जाननेमें अतिशय प्रवीण थी अपनी प्यारी सखी निपुणमतीके पासगई । और निपुणमतीके पास पहुंचकर यह कहा कि हे लम्बे लम्बे नखोंको धारण करने वाली प्रियसखी निपुणमती ! जहांपर अत्यत रूपवान कुमार श्रेणिक वैठे हैं वहांपर तू शीघ्र जा । और उनको आनंद पूर्वक यहा लिवाले आ । प्रियतमा सखी ! इसबातमें जरा विलम्ब न हो । कुमारी नंदश्रीकी यह बात सुनकर प्रथमतो निपुणमती सखीने खूब अपना श्रृंगार किया । पश्चात् वह नखोंमे तेलभरकर कुमारीकी आज्ञा नुसार जिसस्थानपर कुमार श्रेणिक विराजमानथे वहां पर गई । वहां कुमारको बैठे हुवे देखकर एवं उनके शरीरकी अपूर्व शोभाको निहारकर उसने अति मधुर वाणीसे कुमारसे कहा हे कुमार आप प्रसन्न तो है ? क्या पूर्णचद्रमाके समान मुखको धारण करनेवाले आपही सेठि इंद्रदत्तके साथ आये है ? ।

निपुणमतीके इसप्रकार चित्ताकर्षक वचन सुन कुमार चुप न रहसके । उन्होने शीघ्रही उत्तर दिया कि हे चन्द्रवदनी ! अवले ! मैं ही सेठि इन्द्रदत्तके साथ आया हू जो कुछ कामहोवे वे रोकटोक आप कहै और किसी बातका विचार न करैं ।

कुमारके इसप्रकार आनंद प्रद एव मनोहर वचन सुन निपुणमती ने उत्तर दिया हे कुमार जिस सेठि इन्द्रदत्तके साथ आप आये हैं उसी सेठिको अपने रूपसे रतिको भी तिरस्कार करनेवाली सर्वोत्तम **नंदश्री** नामकी पुत्री है। उस पुत्रीका कटिभाग, दोनों स्तनोंके भारसे अत्यत कृश है। अतिशय कृश कटिभागकी रक्षार्थ उसके दो स्थूल नितम्ब हैं. जोकि अत्यंत मनोहर हैं। भांति भातिके कौशलों से अनेक स्त्रियोंका विधाता ब्रह्माभी इस नंदश्रीकी रूप आदि संपदा देखकर इसके समान दूसरी किसी भी स्त्री को उत्तम नहीं मानता है। उसका मुख कामी जनोंके चित्तरूपी रात्रिविकासी कमलोंको विकास करने वाला एव समस्त अधकारके नाश करने वाला पूर्णचंद्रमा है। और वह अतिशय देदीप्यमान नखोंसे शोभित है। हे कुमार! उसी समस्त कामीजनोंके चित्तको हरण करनेवाली कुमारी नदश्रीने, अपनी सुगंधिसे भ्रमरोंको लुभानेवाला, सर्वोत्तम, एव आनंदका देनेवाला यह नखभर तेल मेरे द्वारा आपके लगानेके लिये भेजा है हे महाभाग! जितनी जल्दी होसके इसको लगाकर आप सुखपूर्वक स्नानकरें। तथा मेरे साथ अनेक प्रकारकी शोभाओंसे व्याप्त सेठि इंद्रदत्तके घर शीघ्र चलें।

जिससमय कुमारने निपुणवतीके वचन सुने और जब नखभर तेल देखा तो उनके मनमें गहरी चिंता होगई। वे मन ही मन यह कहने लगे कि यह न कुछ तेल है इसको सर्वा-

गमें लगाकर स्नान कैसे किया जा सकता है ? मालूम होता है सुगंधके लोभी भ्रमरोंसे चुम्बित, एव उत्तम, यह थोड़ा तेल मेरी बुद्धिकी परीक्षाके लिये कुमारी नंदश्रीने भेजा है। तथा ऐसा क्षण एक भले प्रकार विचारकर गुरुओंके भी गुरु कुमारेन अपने पांव के अंगूठेसे जमीनमें एक उत्तम गढ़ा खोदा। और मुंह तक उसको जलसे भरकर दीर्घ नख धारणकरनेवाली सखी निपुणवतीसे कहा कि हे उन्नतस्तनी सुभगे! तू इस जलके भरे हुवे गढ़ेमें नखमें भरे हुवे तेलको डाल दे।

कुमार श्रेणिककी इसप्रकार आज्ञा पाते ही अतिस्नेहकी दृष्टिसे कुमारकी ओर देखकर और मन ही मनमें अति प्रसन्न होकर निपुणवतीने जलसे भरेहुवे उस गढ़ेमें तेल छोड दिया। और अनेक प्रकारकी कलाओंमें प्रवीण वह चुप चाप अपने घरकी ओर चलदी। निपुणवतीको इसप्रकार जाते हुवे देखकर कुमारने पूछा कि हे अवले! सेठि इन्द्रदत्तका घर कहां और किस जगह पर है? किंतु कुमारके इसप्रकारके उत्तम प्रश्नको सुनकर भी निपुणवतीने कुछ भी जवाब नहीं दिया और विनययुक्त वह निपुणवती कानमें स्थित तालवृक्ष के पत्तेका भूषण दिखाकर चुपचाप चलीगई।

कुमारके चातुर्यके देखनेसे प्रफुल्लित कमलोंके समान नेत्रोंसे शोभित सखी निपुणमतीने शीघ्र ही अत्यंत मनोहर सेठि इन्द्रदत्तके घरमें प्रवेश किया और कुमारी नदश्रीके पास

जाकर जो जो कुमार श्रेणिकका चातुर्य उसने देखा था । सब कह सुनाया । कुमारी नंदश्री निपुणवतीसे कुमारके चातुर्यकी प्रशंसा सुनकर शीघ्रही अपने पिताके पासगई और जो कुमार श्रेणिकका चातुर्य उसके पिताका आश्चर्यका करने वाला था उसै सेठि इद्रदत्तको जा सुनाया। और यह कहा कि हे तात कुमार श्रेणिक अत्यंत गुणी है, ज्ञानवान है, समस्त जगतके चातुर्योंमे प्रवीण है, कोक शास्त्रके भी ज्ञाता है और अनेक प्रकारकी कलाओं को भी जानने वाले है इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं । इसलिये आप कुमारके पास जांय और शीघ्रही यहांपर उनको लिवाकर लेआवे । आप उन्हे पागल न समझै क्योंकि जिससमय आप कुमारके साथ साथ आये थे उससमय जिह्वारथ आदि वाक्योंसे कुमार क्रीड़ा करते हुवे आपके साथमें आये थे। और उन वाक्योंसे कुमारने अपना चातुर्य आपको जतलाया था। उनमें स्वाभाविक, मनोहर, एवं अनेक प्रकारके कल्याणोंको करनेवाले अनेक गुण विद्यमान है.।

इधर कुमारके विषयमें नदश्री तो यह कह रही थी उधर कमारने तिलकमतीके चले जानेपर पहिले तो उस तेलसे अपने शरीरका अच्छी तरह मर्दन किया । अंजनके समान काले वालोंमें उसे अच्छी तरह लगाया। और इच्छा पूर्वक उस तलावमें स्नान किया पीछे वहासे नगरकी और चल दिये। स्वर्ग

पुरके समान उत्तम शोभा धारण करनेवाले उसपुरमें घुसकर वे यह विचारने लगे कि सेठि इन्द्रदत्तका घर कहा? और किस ओर है! मुझे किस मार्गसे सेठि इन्द्रदके घर जाना चाहिये? इसीविचारमे वे इधर उधर वहुत घूमे। अनेक घर देखे। वहुतसी गलियोंमें भ्रमण किया। किंतु इन्द्रदत्तके घरका उन्हें पता न लगा अतमें घूमते घूमते जब वे श्रांत होगये और ज्योंही उन्होंने श्रम दूर करनेके लिये किसी स्थानपर बैठना चाहा त्योंही उन्हे निपुणवती के इशारेका स्मरण आया। वे अपने मनमें विचारने लगे कि जिससमय निपुणवती तलावसे गई थी उससमय मैंने उसे पूछा था कि सेठि इन्द्रदत्तका घर कहा है? उससमय उसने कुछ भी जवाव नहीं दिया था। किंतु तालवृक्षके पत्तेसे वने हुवे भूषणसे मडित वह अपना कान दिखाकर ही चली गई थी। इसलिये जान पड़ता है कि जिस घरमें तालका वृक्ष हो निस्संशय वही सेठि इन्द्रदत्तका घर है। अव कुमार तालवृक्ष सहित घरका पता लगाने लगे। लगाते लगाते उन्हे एक ताल वृक्षसे मडित सनखना महल नजर पड़ा। तथा लालसा पूर्वक वे उसीकी ओर झुक पडे।

इधर कुमारके आनेका समय जानकर कुमारकी और भी बुद्धिकी परीक्षाकेलिये कुमारी नदश्रीने द्वारके सामने घोटू पर्यंत कीचड़ डलवा रक्खी थी। और उसमें एक एक पैरके फासलेसे एक एक इंट भी रखवादी थी तथा अपनी प्रिय सखीसे वह

यों अपना विचार प्रकटकर कह रहीथी कि हे आलि अब मै कुमारकी बुद्धिकी परीक्षा जब स्वय अपने नेत्रोंसे करलूंगी तब मै उस कुमारके साथ अपने विवाहकी प्रतिज्ञा करूंगी। नदश्रीकी यहबातसुनकर कुमारके बुद्धिचातुर्यके देखनेकेलिये वह त्रिगु-णवती सुदरीभी उसके पासवैठिगई। इसप्रकार अनेक कथा कौतूहलोंको करतीहुई वे दोनों कुमारके आगमनका इतजार करही रहीं थी कि इतने में कुमार श्रेणिकभी दरवाजेके पास आ पहुचे। आतेही जब उन्होंने द्वारपर घोंटूपर्यंत भरीहुई कीचड़ देखी और उसकीचड़के ऊपर एक एक पैरके फासलेसे रक्खीहुई ईंटे भी जब उनके नजर पड़ी तो यह विचित्रदृश्य देखकर वे एकदम दग रहगये; और अपनेमनमें विचारनेलगे कि बड़े आश्चर्यकी बात है कि नगरभरमें और कहींपर भी कीचड देखनेमें नहीं आई। कीचड़ वर्षा कालमें होती है। वर्षाका मोसमभी इससमय नहीं। फिर इस द्वारके सामने कीचड़ कहांसे आई? । मालूम होता है नंदश्रीने मेरी बुद्धिकी परीक्षाकेलिये यह द्वारपर कीचड़ भरवाई है। और कीचडके मध्यमे ईंटे रखवाई हैं। दूसरा कोईभी प्रयोजन नजर नहीं आता। मुझे अब इसघरके भीतर जाना आवश्यकीय है यदि मैं इनईंटोंपर पांवरखकर भीतर जाता हूं तो अवश्य गिरता हूं। और कीचड़मे गिरनेपर मेरी हसीं होती है। हंसी संसारमें अत्यंत दु:खकी देनेवाली है। इसलिये मुझे कीचड़में होकरही जाना चाहिये यदि मेरे पाव कीचड़में जानेसे लिथड़ भी जांय तो

भी मेरा कोई नुक्सान नहीं। ऐसा क्षण एक अपने मनमें पक्का निश्चय कर अतिशय बुद्धिमान, भलेप्रकार लोकचातुर्यमें पडित, कुमार श्रेणिकने, उसकीचडमें होकर ही महलमें प्रवेश किया।

कुमारके इस उत्तम चातुर्यको देखकर कुमारी नंदश्री दग रहगई। किंतु कुमारकी बुद्धिकी परीक्षाका कौतूहल अभीतक उसका समाप्त नही हुवा। इसलिये जिससमय कुमार उस कीचडको लांघकर महलमें घुसे। और जिससमय नंदश्रीने उनके पाव कीचडसे लिथडे हुवे देखे। तो फिरभी उसने किसी सखी द्वारा कीचड धोनेकेलिये एक चुल्लू पानी कुमारके पास भेजा।

कुमारने जिससमय कुमारी नदश्रीद्वारा भेजा हुवा थोड़ासा पानी देखा तो देखकर उनको बडा आश्चर्य हुवा। वे अपने मनमें पुन विचारने लगे कि कहांतो इतना अधिक कीचड़ ! और कहा यह न कुछजल ? इससे कैसे कीचड़ धुल सकताहै ?। तथा क्षण एक ऐसा विचार कर। और एक वासकी फच्चटलेकर पहिले तो उससे उन्होंने पैरमें लगे हुवे कीचडको खुर्चकर दूरकिया पश्चात् उसनंदश्री द्वारा भेजेहुवे पानीके कुछ हिस्सेमें एक कपडा भिगोकर उस थोडेसे जलसे ही उन्होने अपने पांव धोलिये और अपने महनीय बुद्धिवलसे अनेक आश्चर्य करानेवाले कुमारने उसमेंसे भी कुछजल वचाकर कुमारीके पास भेजदिया।

कुमारके इस चातुर्यको अपनी आखोंसे देख कुमारी नदश्रीसे चुप न रहा गया वह एक दम कहने लगी-अहा जैसा कौ-

शल एवं ऊचे दर्जेका पांडित्य कुमार श्रेणिकमें है वैसा कौ-
शल पाडित्य अन्यत्र नहीं। तथा ऐसा कहती कहती अपने रूपसे
लक्ष्मीकोभी नीचैकरने वाली, कुमारके गुणोंपर अतिशय मुग्ध,
कुमारी नदश्रीने कामदेवसे भी अतिमनोहर, कुमार श्रेणिको भी-
तर घरमें जाकर ठहरादिया और विनयपूर्वक यह निवेदनभी
किया कि हे महाभाग कृपाकर आज आप मेरे मंदिरमें ही
भोजन करें। हे उत्तमकांतिको धारणकरनेवाले प्रभो आज आप
मेरे ही अतिथि वने। मुझपर प्रसन्न हों। अयि प्राज्ञवर हमारे अ-
त्यंत शुभभाग्यके उदयसे आपका यहां पधारना हुवा है। हे
मेरी समस्त अभिलाषाओंके कल्पद्रुम ! आप मेरे अतिथि व-
नकर मुझपर शीघ्र कृपाकरै। ससारमें वड़े भाग्यके उदयसे इष्ट-
जनोंका सयोग होता है। जो मनुष्य अत्यंत दुर्लभ इष्टजनको
पाकर भी उनकी भलेप्रकार सेवा सत्कार नहीं करते उन्हे भा-
ग्यहीन समझना चाहिये इसलिये हे पुण्यात्मन् भोजनके लिये
मेरे ऊपर आप प्रसन्न होवे मै आपसे भोजनके लिये आदर-
पूर्वक आग्रह कर रही हूं।

कुमारीके ऐसे अतिशय आदर पूर्ण वचन सुन कुमार
श्रेणिकने अपनी मधुरवाणीसे कहा—सुभगे! संसारमें तू अति
चतुर सुनी जाती है हे उत्तमलक्षणोंको धारणकरनेवाली पडिते!
हे वाले! तथा हे मनोहरांगी ! मै भोजन जव करूगा जव मेरी
प्रतिज्ञानुसार भोजन वनेगा। वह मेरी प्रतिज्ञा यहीहै मेरे हाथमें ये

वत्तीस ३२ चावल है इनवत्तीसचावलोंसे भांतिभांतिकेपकेहुवे अन्नसे मनोहर भोजन वनाकर, दूध दही हवि आदिसे परिपूर्ण, औरभी अनेक प्रकारके व्यजनोंकरयुक्त, सरस, स्वादिष्ट, पूवा आदिपदार्थ सहित, उत्तम भोजन जो मुझे खवावेगा उसीके यहा मै भोजन करूंगा दूसरी जगह नहीं।

कुमारके ऐसे प्रतिज्ञा परिपूर्ण एवं अपनी परीक्षा करनेवाले वचन सुनकर कुमारी प्रथमतो एकदम विस्मित होगई। पश्चात् उसने वड़े विनयसे कहा कि लाइये, अपने चावलोंको कृपाकर मुझे दीजिये।

कुमारीके आग्रहसे कुमारको चावल देने पड़े। तथा कुमार से वत्तीस चावल लेकर उनको पीसकूट कर कुमारीने उनके पूवे वनाये। उनपूवोंको वेचनेकेलिये अपनी प्रियसखी निपुणमती को देकर वजार भेजदिया। कुमारीकी आज्ञानुसार सखी निपुणमती उनपूवोंको लेकर सफेद वस्त्रपहिनकर वजारकी ओर गई। और जहांपर जूवा खेला जाता था वहा पहुचकर और किसी ज्वारीके पास जाकर उनपूवोंकी उसने इसप्रकार तारीफ करना प्रारभ किया कि ये पूवे अति पवित्र देवमयी है। जो भाग्यवान मनुष्य इनको खरीदेगा उसै अवश्य अनेक लाभ होंगे। सर्व खिलाड़ियों मै ये पूवे खाने वालाही विशेष रीतिसे जीतेगा इसमें सदेह नहीं।

निपुणमतीके इसप्रकार आश्चर्य भरे बचनों पर विश्वास

कर एवं उन पूवों को सच ही देवमयी जानकर ज्वारियोंके मनमें उनके खरीदने की इच्छा हुई। और खेलमें विजय एवं अधिक धनकी आशासे उनमें से एक ज्वारीने मुहमांगी कीमत देकर पूवोंको तत्काल खरीद लिया। और कीमत अदाकरदी। कीमतका रूपया लेकर, और कुमारकी प्रतिज्ञानुसार भोजनकेलिये उसे पर्याप्त जानकर निपुणमतीने उसीसमय नंदश्रीको जाकर चुपचाप दे दिया।

जिससमय नंदश्रीने पूवोंकी कीमतको देखा तो उस को बड़ी प्रसन्नता हुई। और उसने भाति भातिके मधुर भोजन बनाना प्रारंभ कर दिया। जिससमय वह भोजन बना चुकीं उसने भोजनके लिये कुमारको बुला भी लिया। भोजनका बुलावा सुन नंदश्रीका रूप देखनेके अति लोलुपी. अपने मनमें अति प्रसन्न, कुमार पाकशालामे चटः जा धमके। कुमारीने कुमार को देखतेही आदर पूर्वक आसन दिया और प्रेम पूर्वक भोजन कराना आरंभ कर दिया। कभी तो वह कुमारी भोजन में भग्न कुमार को खैरि आदि पदार्थोंके उतम रसोंसे परिपूर्ण, अनेक मसालोंसे युक्त, अति मधुर बेरों के टुकडों को खिलाती हुई। और कभी अपनी चतुरता से भांति भांतिके फलोका उसने भोजन कराया। तथा कभी कभी उसने दूध दही मिश्रित नानाप्रकार के व्यंजन बनाकर कुमार को खिलाये। एवं कुमार भी उसके चातुर्यपर विचार करते करते भोजन करते

रहे । तथा जिससमय कुमार भोजन करचुके उससमय कुमारने पान खाया । इस प्रकार कुमारके चातुर्यसे अतिप्रसन्न, उनके गुणोंमें अतिशय आसक्त, कुमारी नंदश्री जिसप्रकार राज हंसके पास बैठी हुई राजहंसी शोभित होती है कुमारके समीपमें बैठी हुई अत्यंत शोभित होने लगी ।

इन समस्त बातोंके बाद कुमारीके मनमें फिर कुमार की बुद्धिकी परीक्षाका कौतूहल उठा उसने शीघ्र एक अति टेड़े छेद का मूगा कुमारको दिया और उसमें डोरा पोने के लिये निवेदन किया, कुमारी द्वारा दियेहुवे इस कार्यको कठिन कार्य जान क्षणभर तो कुमार उसके, पोनेकेलिये विचार करते रहे पीछै भले प्रकार सोचविचार कर उस डोरे के मुख पर थोड़ा गुड़ लपेट दिया और अपनी शक्ति के अनुसार मूगाके छेदमें उसको प्रविष्ट कर चींउटियोंके बिलपर उसे जाकर रख दिया । गुड़की आशासे जब चींटियोंने डोरे को खींचकर पार कर दिया तब डोरा पार हुवा जान कर कुमार श्रेणिकने मूंगेको लाकर नंदश्रीको दे दिया । कुमारी नंदश्री कुमार श्रेणिकका यह अपूर्व चातुर्य देख अति प्रसन्न हुई उसका मन कुमारमें आसक्त होगया । यहांतक कि कुमारके श्रेष्ठगुणोंसे, उनकी रूप संपदासे कामदेव भी बुरीरीतिसे उसे सताने लग गया ।

सेठि इन्द्रदत्तको यह पता लगा कि कुमारी नंदश्री कुमार श्रेणिक पर आसक्त है । कुमार श्रेणिक को वह अपना वल्लभ बना चुकी ।

शीघ्र हीं राजा के समान संपात्तिके धारक इन्द्रदत्तने कुमारी के विवाहार्थ बड़े आनंदसे उद्योग किया।

कुमार कुमारीके विवाहका उत्सव नगरमें बडे जोर शोरसे प्रारंभ हुवा समस्त दिशाओंको वधिर करने वाले घंटे बजने लगे, नगर अनेकप्रकारकी ध्वजाओंसे व्याप्त, मनोहर तोरणों सें शोभित, कल्याणको सूचन करनेवाले शुभ शब्दोंसे युक्त हो गया। उससमय भेरियों के बड़े बड़े शब्द होने लगे। शख काहल अदि वाजे वजने लगे। नक्काड़ोंके शब्द भी उससमय खूब जोर शोरसे होने लगे समस्तजानोंके सामने भांति भाति की शोभाओंसे मंडित कुमार कुमारीका विवाह मडप प्रीतिपूर्वक वनाया गया। वंदीगण कुमार श्रेणिकके यशको मनोहर पद्योंमें रचनाकर गान करने लगे। कुमार श्रेणिक और कुमारी नदश्रीके विवाहके देखनेसे दर्शकजनोंको वचनागोचर आनदं हुवा। उन दोनोंके रूप देखनेसे दोनोंके गुणों पर मुग्ध दोनोंकी सवलोग मुक्तकठ से तारीफ करने लगे। दंपती का रूप देख समस्त लोक इस भांति कहने लगा कि आश्चर्य कारी इनकी गति है तथा आश्चर्यकारी इनका रूप और मधुरवचन हैं ये सव वात पुर्व पुण्यसे प्राप्त हुई है। नंदश्रीको देखकर अनेक मनुष्य यह कहने लगे कि चन्द्रके समान कांतिको धारणकरनेवाला तो यह नंदश्री का मुख है। फूले कमलके समान इसके दोनों नेत्र है। और अत्यंत विस्तीर्ण

इसका ललाट है। कुमार श्रेणिकका संसारमें अद्भुत पुण्य मालूम पडता है जिससे कि इस कुमारको ऐसे स्त्रीरत्नकी प्राप्ति हुई है। तथा कुमारको देखकर लोग यह कहने लगे कि इस नंदश्रीने पूर्व जन्ममें क्या कोई उत्तम तप किया था ! अथवा किसी उत्तम व्रतको धारण किया था ! वा इष्टपदार्थोंके देनेवाले शीलका इसने परभवमें आश्रय किया था ! अथवा इसने उत्तम पात्रोंमें पवित्र दान दिया था ! जिससे इसको ऐसे उत्तम रूपवान गुणवान पतिकी प्राप्ति हुई है। इसप्रकार धर्मके प्रभावसे समस्तलोक द्वारा प्रशंसित, अतिशय हर्षितचित्त अत्यंत दीप्ति युक्त देहके धारक, वे दोनों स्त्री पुरुष भली भांति सुखका अनुभव करने लगे।

इसप्रकार होनेवाले श्रीपद्मनाभभगवानके पूर्वभवके जीव महाराज श्रेणिकका कुमारी नंदश्रीके साथ विवाह-वर्णनकरनेवाला चौथा सर्ग समाप्त हुवा।

पांचवां सर्ग

जिस उत्तम धर्मकी कृपासे संसारमें उनदोनों दंपतीको अतिशय सुख मिला। धर्मात्मा पुरुषोंको अनेक विभूतिदेनेवाले उस परम पवित्र धर्मको मैं मस्तक झुका कर नमस्कार

करता हूं ।

इसप्रकार विवाहके अनंतर कुमार श्रेणिकने पकें हुवे ताल फलके समान उत्तम स्तनोंसे मंडित, मनको भले प्रकार संतुष्ट करनेवाली, कांता नंदश्रीके साथ क्रीड़ा करनी प्रारंभ कर दी । कभी तो कुमार उसके साथ मनोहर उद्यानोंके लता मंडपोंमे रमनेलगे।कभी उन्होने नदियोंकेतट अपने क्रीड़ास्थल वनाये। तथा कभी कभी वे उत्तम स्तनोंसे विभूषित नदश्रीके साथ महलकी अटारियोंमे क्रीड़ा करने लगे । जिसप्रकार दरिद्री पुरुष खजाना पाकर अति मुदित हो जाता है और उसे अपने तन वदनका भी होश हवास नहीं रहता । उसीप्रकार कुमार उस नंदश्रीके देहस्पर्शसे अतिशय आनद रसका अनुभव करने लगे । मनोहरांगी नंदश्री भी सूर्यकी किरणस्पर्शसे जैसे कमलिनी आनंदित होती है उसीप्रकार कुमारके हाथके कोमलस्पर्शसे अनन्यप्राप्त सुखका आस्वादन करने लगी।कभी तो वे दोनों दपती चुंवन जन्य सुखका अनुभव करने लगे। और कभी स्वाभाविक रसका आस्वा-दन करने लगे। तथा कभी कभी दानोने परस्पर रूपदर्शन एवं रतिसे उत्पन्न आनंदका अनुभव किया।और कभी हास्योत्पन्न रस चा-खा। कभी कभी स्तनस्पर्शसे उत्पन्न एवं कथाकोतूहलसे जानित सुखका भी उन्होंने भोगकिया। इसप्रकार मानसिक कायिक वाच निक अभीष्ट सुखको अनुभव करने वाले, भांति भांतिकी क्रीड़ाओंमें मग्न, सुखसागरमें गोते मारने वाले, कुमार श्रेणिक

और नदश्रीको जातेहुवे कालका भी पता न लगा।

बाद कुछ दिनके उत्तमगुणयुक्त कुमारके साथ क्रीडा करते करते रानी नंदश्रीके धर्मके प्रभावसे गर्भ रह गया।तथा सुदर आकारका धारक शुभलक्षणोंकर युक्त वह उदरमें स्थित जीवदिनों दिन वढ़ने लगा।गर्भके प्रभावसे रानी नदश्रीके अतिशय मनोहर अंग पर कुछ सफेदी छागई।स्तनोंके अग्रभाग (चूचुक)काले पड़ गये।उसे किसी प्रकारके भूषण भी नहीं रुचने लगे।तथा भूषण रहित वह ऐसी शोभित होने लगी जैसा नक्षत्रोंके अस्त होजानेपर प्रभात शोभित होता है। एव गर्भके भारसे नदश्रीको गतिभी अधिक मद होगई। भोजन भी वहुत कम रुचने लगा। और उसको अपने अंगमें ग्लानिभी होने लगी। एवं मतवाले हाथीके समान गमनकरनेवाली, मुखरूपी चद्रमासे शोभित, मनोहरागी नदश्रीके अंगमें गर्भसे होनेवाले मनोहरचिह्नभी प्रकटित होनेलगे। कदाचित् नदश्रीको सात दिन पर्यत अभयदानका सूचक उत्तम दोहला हुवा।अपने घरकी स्थिति देख उस दोहलाकी पूर्ति अतिकठिन जानकर वह भारी चिता करने लगी।और जैसी पानीके अभावसे उत्तम लता कुह्मला जाती है उसीप्रकार उसका अंग भी चिंता से सर्वथा कुम्हलाने लगा।

किसीसमय कुमार श्रेणिककी दृष्टि नदश्री पर पड़ी।उदास एवं कांति रहित रानी नंदश्रीको देख उन्हे अति दुःख हुवा।वे अपने मनमें विचार करने लगे—अतिशय मनोहर एव देदीप्यमान

सुंदरी नंदश्रीके शरीरमें अति वाधा देनेवाला यह दुःख कहासे टूट पड़ा?इसकी यह दशा क्यों और कैसे हो गई? तथा क्षण एक ऐसा विचार उन्होंने पास जाकर नंदश्रीसे पूछा, हे प्रिये! जिस कारणसे आपका शरीर सर्वथा खिन्न कृश और फीका पड़ गया है वह कौनसा कारण है मुझे कहो?

कुमारके ऐसे हितकारी एवं मधुर बचन सुनकर और दोहलेके पूर्ति सर्वथा कठिन समझकर पहिले तो नंदश्रीने कुछ भी उत्तर न दिया। किं तु जब उसने कुमारका आग्रह विशेष देखा तो वह कहने लगी हे कात! मै क्या करू मुझे सात दिन पर्यंत अभयनामक दानका सूचक दोहला हुवा है। इस कार्यकी पूर्ति अति कठिन जान मै खिन्न हूं। मेरी खिन्नताका दूसरा कोई भी कारण नहीं। प्रियतम! नंदश्रीके ऐसे वचन सुन कुमारने गंभीरतापूर्वक कहा।

प्रिये! इसबातकेलियें तुम जरा भी खेद न करो। मत व्यर्थ खेदकर अपने शरीरको सुखाओ। सुन्नते! मै शीघ्र ही तुम्हारी इस अभिलषाको पूरण करूंगा। चतुरे! जो तुम इस कार्यको कठिन समझ दु खित हो रहीं हो। एव अपने शरीरको विना प्रयोजन सुखा रहीं हो सो सर्वथा व्यर्थ है। तथा मधुर भाषिणी एव शुभांगी नदश्रीको ऐसा आश्वासन देकर-भलेप्रकार समझा बुझाकर. कुमार श्रेणिक किसी वनकी ओर चलपड़े। और वहां पर किसी नदीके किनारे वैठि नदश्रीकी इच्छा पूरण करनेके

लिये विचार करने लगे।

उससमय उसी नगरके राजा वसुपालका ऊंचे ऊंचे दांतको धारणकरनेवाला एक मतवाला हाथी नगरसे बडे झपाटेसे बाहिर निकला। तथा प्रत्येक घरके द्वारको तोडता हुवा, बहुतसे नगरके खंभोंको उखाडता हुवा, अनेकप्रकारके वृक्षोंको नीचे गिराता हुवा, उत्तमोत्तम लतामडपोंको निर्मूल करता हुवा, अनेक सज्जन वीरों द्वारा रोकनेपर भी नही रूकता हुवा, अपने चीत्कार से समस्तादिशाओंको बधिर करता हुवा, एव अपनी सूडको ऊपर उठा दिग्गजोंको भी मानों युद्धकरनकोलिये ललकारता हुवा, और समस्त नगरको व्याकुल करता हुवा वह मत्त हाथी उसी नदीके ओर झपटा जहा कुमार बैठेथे। जिससमय पर्वतके समान विशाल, अति मत्त, अपनी ओर आता हुवा, वह भयकर हाथी कुमारकी नजर पडा तो कुमार शीघ्रही उसके साथ युद्ध करनेके लिये तयार होगये। तथा उस मतवाले हाथीके सन्मुख जाकर अनेकप्रकारसे उसके साथ युद्ध कर, मारे मारे मुकोंके उसे मदरहित कर दिया। और निर्भयतापूर्वक की-ड़ार्थ उसकी पीठपर चट सवार हो राज द्वारकी ओर चल दिये।

मतवाले हाथी पर बैठे हुवे कुमारको देखकर हाथीके कर्मोंसे भयभीत, कुमारका हाथीके साथ युद्ध देखने वाले, कुमारकी वीरतासे चकित, अनेक मनुष्य जय जय शब्द करने लगे। एवं परस्पर एक दूसरेसे यहभी कहने लगे—सेठि इन्द्रदत्तके

जमाई का पराक्रम आश्चर्य कारक है। रूप और नवयौवन भी वड़ाभारी प्रशसनीय है। शक्तिभी लोकोत्तर मालूम पड़ती है। देखो जिस मत्त हाथीको वलवानसे वलवानभी कोई मनुष्य नहीं जीतसकता था उस हाथी को इस कुमारने अपने वुद्धिवल और पुण्यके प्रभावसे वातकी वात में जीतलिया। तथा इधर मनुष्य तो इस भांति पवित्र शब्दोंसे कुमारकी स्तुती करने लगे उधर गजसे भी अतिशय पराक्रमी कुमारने अनेक प्रकारकी लोली पीली ध्वजाओंसे शोभित क्रीड़ापूर्वक नगरमें प्रवेश किया।

सुन्दर आकारके धारक असाधरण उत्तम गुणोंसे मंडित कुमार श्रेणिकको हाथी पर चढ़े हुवे देख महाराज वसुपाल मनमें अति हर्षितहुवे। और वड़ी प्रीति एवं हर्षसे उन्होंने कुमारसे कहा।

हे वीरोंके शिरताज! हे अनेक पुण्य फलोंके भोगने वाले! कुमार जिसबातकी तुम्हें इच्छा हो शीघ्र ही मुझे कहो हे उत्तमोत्तम गुणोंके भंडार कुमार! शक्त्यनुसार मै तुम्हारी इच्छा पूर्ण करूंगा। किंतु महाराजके सतोषभरे वचन सुनकर अन्य मनुष्यों द्वारा कुछ मागनेके लिये प्रेरित भी कुमारने लज्जा एवं अहंकारसे कुछ भी जवाव नहीं दिया महाराजके सामने वे चुपचाप ही खड़े रहे।

सेठि इन्द्रदत्त भी ये सब वातें देख रहेथे। उन्होंने शीघ्रही कुमारके मनके भावको समझ लिया और इस भांति महाराज

से निवेदन किया महाराज!यदि आप कुमारके कामको देखकर प्रसन्न हुवे है। और उनकी अभिलाषा पूर्ण करना चाहते है तो एक कामकरै सात दिन तक इस नगर और देशमें सब जगह पर आप अभय दानकी ड्योड़ी पिटवादें। सेठि इन्द्रदत्तके ऐसे कुमारके अनुकूल वचन सुन राजा वसुपाल अति सतुष्ट हुवे और उन्होंने बेधडक कह दिया । आपने जो कुमारके अनुकूल कहा हैं वह मुझे मजूर है। मैं सात दिनतक नगर एवं देशमें सब जगह अभयदानके लिये तयार हू। तथा ऐसा कह कर उन्होंने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार अभयदानके लिये नगर एव देशमें सर्वत्र डंका भी पिटवा दिया।

रानी नंदश्रीने यह बात सुनी कि कुमारकी वीरता पर मोहित होकर महाराज वसुपालनने सात दिन तक अभयदान देना स्वीकार किया है। सुनते ही वह अपने मनोरथको पूर्ण हुवा समझ, बहुत प्रसन्न हुई। और जैसी नवीनलता दिनोंदिन प्रफाल्लित होती जाती है वैसी वह भी दिनोंदिन प्रफुल्लित होने लगी। शुभ लग्न शुभवार शुभनक्षत्र शुभदिन एवं शुभयोगमें किसीसमय रानी नदश्रीने अतिशय आनंदित, पूणचद्रमा के समान मनोहर मुखका धारक, कमलके समान मनो-हर नेत्रोंसे युक्त, उत्तम पुत्रको जना। पुत्रकी उत्पत्तिसे मारे आनंदके रानी नंदश्रीका शरीर रोमाचित होगया और वह सुख सागर में गोता लगाने लगी ।

सेठि इद्रदत्तके घर पुत्री नंदश्रीसे धेवता हुवा है यह समाचार सारे नगर में फैलगया।सेठि इद्रदत्तके घर कामिनी मनोहर गीत गाने लगीं । बदीजन पुत्रकी स्तुति करने लगे । पुत्रके आनंद में मनोहर शब्द करनेवाले अनेक बाजे भीं बजने लगे। बालकके गर्भस्थ होनेपर नंदश्रीको अभयदानका दोहला हुवा था । इसलिये उस दिनको लक्ष्यकर सेठि इंद्रदत्तके कुटंबी मनुप्योंने बालकका नाम अभय कुमार रखदिया । एवं जैसा रात्रि विकासी कमलोंको आनन्द देनेवाला चद्रमा दिनों दिन बढ़ता चला जाता है वैसा ही अतिशय देदीप्यामान शरीरका धारक समस्त भूमडलको हर्षायमान करनेवाला वह कुमार भी दिनोंदिन बढ़ने लगा । कुटंबीजन दूध पान आदिसे बालक की सेवा करने लगे । आनंदसे खिलाने लगे । इसलिये उस बालकसे उसके पिता माताको और भी बिशेष हर्ष होने लगा। कुछ दिनवाद अभय कुमारने अपनी बालक अवस्था छोड कुमार अवस्था में पदार्पण किया । और उससमय तेजस्वी कुमार अभयने थोड़ेही कालमें अपने बुद्धिबलसे बातकी बातमें समस्त शास्त्रोंका पार पालिया । वह असधारण विद्वान होगया । इसप्रकार कुमार श्रेणिकके साथ रानी नन्दश्री नाना प्रकारके भोग विलास करने लगी । एव कुमार भी कांता नन्दश्रीके साथ भांति भातिके भोग भोगने लगे तथा भोग विलासोंमें मस्त, वे दोनों दपती जाते हुवे कालकी भी परवा नहीं करने लगे ।

इधर कुमार श्रेणिक तो सेठि इन्द्रदत्तके घर नन्दश्रीके साथ नानाप्रकारके भोग भोगतेहुवे सुखपूर्वक रहने लगे। उधर महाराजउपश्रेणिक अतिशय मनोहर, अनेकप्रकारकी उत्तमोत्तमशोभा शोभित राजगृह नगरमें आनन्द पूर्वक अपना राज्य कर रहे थे। अचानक ही जब उनको यह पता लगा कि अब मेरी आयु में वहुत ही कम दिन बाकी है—मेरा मरण अब जल्दी होने वाला है। शीघ्रही उन्होंने चक्रवर्तीके समान उत्कृष्ट, बड़े बड़े सामतोंसे सेवित, विशाल राज्य चिलाती पुत्रको देदिया। तथा राज्यकार्यसे सर्वथा ममतारहित होकर पारमार्थिक कर्मोंमें वे चित्त लगाने लगे।

कुछ दिनके बाद आयुकर्मके समाप्त होजानेपर महाराज उप श्रेणिकका शरीरांत हो गया। उनके मरजानेसे सारे नगरमें हाहाकार मच गया। पुरवासी लोग शोक सागरमें गोता मारने लगे। रनवासकी रानियाभी महाराजका मरण समाचार सुन करुणा जनक रोदन करने लगीं। जितने भर सौभाग्य चिन्ह हार आदिक थे सव उन्होंने तोड़कर फैक दिये। और महाराजके मरनसे सारा जगत उन्हें अधकार मय सूझने लगा।

महाराज उपश्रेणिकके बाद रहा ठ्हा भी अधिकार राजा चलातीको मिल गया। महाराज उपश्रेणिकके समान वहभी मगध देशका महाराज कहा जाने लगा। किं तु राजनीतिसे सर्वथा अनभिज्ञ राजा चलातीने सामंत मन्त्री पुरवासी जनोंसे

भलेप्रकार सेवित होनेपर भी राज्यमें अनेकप्रकारके उपद्रव करने प्रारभ कर दिये। कभी तो वह विनाही अपराधके धनिकोंके धन जप्त करने लगा । और कभी प्रजाको अन्यप्रकारके भयकर कष्ट पहुचाने लगा । जिनके आधारपर राज्य चल रहा था उन राजसेवकोंकी आजीविका भी उसने बद करदी । राज्यमें इसप्रकार भयंकर आन्याय देख पुरवासी एवं देशवासी मनुष्य त्रस्त होने लगे । और खुले मैदान उनके मुखसे ये ही शब्द सुननेमें आने लगे—राजा चिलाती बड़ा भारी पापी है।अन्यायी है। और राज्य पालन करनेमें सर्वथा असमर्थ है । राजाका इस प्रकार नीच वर्ताव देख राजमंत्री भी दातोंमें उंगली दवाने लगे—राज्यको संभालनेके लिये उन्होंने अनेक उपाय सोचे किं तु कोई भी उयाय उनको कार्यकारी नजर न पडा । अंतमें विचार करते करते उन्हे कुमार श्रेणिककी याद आई। याद आते ही चट उन्होंने यह सलाह की—राजा चलाती पापी दुष्ट एव राजनीतिसे सर्वथा अनभिज्ञ है । यह इतने विशालराज्यको चला नहीं सकता । इसलिये कुमार श्रेणिकको यहां वुलाना चाहिये और किसी रीतिसे उन्हे मगधदेशका राजा वनाना चाहिये।

समस्त पुरवासी एव मंत्री आदिक कुमारके गुणोंसे भली भांति परिचित थे इसलिये यह उपाय सबको उत्तम मालूम हुवा। एव तदनुसार एक दूत जोकि राज्यकार्यमें अति चतुरथा, शीघ्रही

कुमारके पास भेज दिया और व्योरे वार एक पत्रभी उसे लिख कर दे दिया। जहां कुमार श्रेणिक रहते थे दूत उसी देशकी ओर चल दिया। और कुछ दिन पर्यंत मजल दर मंजलकर कुमारके पास जा पहुचा । कुमारको देखकर दूतने विनयसे नमस्कार किया। और उनके हाथमें पत्र देकर जवानी भी यह कह दिया कि हे कुमार। अब तुम्है शीघ्र मेरे साथ राजगृह नगर चलना चाहिये।

दूतके मुखसे ऐसे वचन सुनकर एव पत्र बाच उसके वचनों पर सर्वथा विश्वास कर, कुमार श्रेणिक अपने मनमें अति प्रसन्न हुवे। मारे हर्षके उनका शरीर रोमांचित हो गया। तथा पत्र हाथमें लेकर वे सीधे सेठि इंद्रदत्तके समीप चल दिये। वहां जाकर उन्होंने सेठि इंद्रदत्तको नमस्कार किया और यह समाचार सुनाया कि हे महनीय! राजगृहपुरसे एक दूत आया है उसने यह पत्र मुझै दियाहै इससमय वहां जाना अधिक आवश्यक जान पडता है कृपा कर आप मुझै वहां जानेकेलिये शीघ्र आज्ञा दें। बिना आपकी आज्ञाके मै वहां जाना ठीक नहीं समझता.

यकायक कुमारके मुखसे ऐसे वचन सुन सेठि इंद्रदत्त आश्चर्य सागरमें निमग्न हो गये। 'अब कुमार यहासे चले जांयगे, यह जान उन्हे बहुत दुःख हुवा। किं तु कुमारने उन्हे अनेक प्रकारसे आश्वासन दे दिया।इसालिये वे शांत होगये। और उन्हें

जवरन कुमारको जानेके लिये आज्ञा देनी पडी

सेठि इंद्रदत्तसे आज्ञा लेकर कुमार प्रियतमा नंदश्रीके पास गये। उससे भी उन्होने इसप्रकार अपनी आत्मकहानी कहनी प्रारभ करदी। हे प्रिये! हे वल्लभे! हे मनोहरे! हे चद्रमुखि! हे गजगामिनि! मेरे परपरासे आया हुवा राज्य है अचानक मेरे पिताके शरीरांत होजानेसे मेरा भाई उस राज्यकी रक्षा कर रहा है। किं तु प्रजा उसके शासनसे सतुष्ट नहीं है। इसलिये अव मुझे राजगृह जाना जरूर है। हे सुदरि जव तक मै वहां न पहुचूंगा, राज्यकी रक्षा भलेप्रकार नहीं हो सकेगी। इससमय मै तुझसे यह कहे जाता हूं जवतक मै तुझे न बुलाऊं कुमार अभयके साथ तू अपने पिताके घर ही रहना। राज्यकी प्राप्ति होने पर तुझे मै नियमसे वुलाऊगा इसमें सदेह नहीं।

अचानक ही कुमारके ऐसे वचन सुन रानी नंदश्रीके आखोंसे टप टप आंसू गिरने लगे। मारे दुःखके, कमलके समान फूला हुवा भीं उसका मुख कुम्हला गया। और कुमारको कुछ भी जवाव न देकर वह निश्चल काष्ठकी पुतलीके समान खड़ी रहगई। किन्तु उसकी ऐसी दशा देख कुमारने उसे वहुत कुछ समझा दिया। और संतोष देने वाले प्रिय वचन कहकर शांतकर-दिया। इसप्रकार प्रियतमा नदश्रीसे मिलकर कुमार वहासे चल दिये। और राजगृह जाने के लिये तयार होगये।

कुमार अब जारहे है सेठि इद्रदत्तको यह पता लगा

उन्होंने कुमारको न मालुम पडे इसरीतिसे पाच हजार वलवान योधा कुमारके साथ भेजदिये। एवं पाच हजार सुभटोंके साथ कुमार श्रेणिकने राजगृह नगरकी ओर प्रस्थान करदिया। जिससमय वे मार्गमें जाने लगे उससमय उत्तमोत्तम फलोंके सूचक उन्हें अनेक शकुन हुवे। और मार्गमें अनेक वन उपवनोंको निहारते हुवे कुमार श्रेणिक मगध देशके पास जा पहुंचे।

कुमार श्रेणिक मगध देशमें आगये यह समाचार सारे देशमें फैलगया। समस्त सामत मंत्री एवं अन्यान्य देशवासी मनुष्य बडे विनयभावसे कुमार श्रेणिकके पास आये। और भक्ति पूर्वक नमस्कार किया। कुछ समय वहा ठहर कर प्रेम पूर्वक वार्तालाप कर कुमार फिर आगेको चल दिये। मेरु पर्वतके समान लंबे चौडे हाथी, अनेक बडे बडे रथ. और पयादे कुमारके पीछे पीछे चलने लगे। कुमारके आगमनके उत्सवमें सारा देश बाजोंकी आवाजसे गूंज उठा. एव कुछ दिन और चलकर कुमार राजगृह नगरके निकट जा दाखिल हुवे।

इधर राजा चिलाताको यह पता लगा कि अब श्रेणिक यहां आगये हैं। उनके साथ विशाल सेना है। समस्त देशवासी और नगरवासी मनुष्य भी कुमार श्रेणिकके ही, अनुयायी हो गये है। मारे भयके वहतो कपने लगा। तथा अब मै लडकर कमार श्रेणिकसे विजय नहीं पासकता यह भले प्रकार सोच विचार कर अपनी कुछ संपात्ति लेकर किसी किलेमें जा छिपा। उधर

सूर्यके समान प्रतापी, बड़े बड़े सामतोंसे सेवित, पुण्यात्मा, जिनके ऊपर क्षीरसमुद्रके समान सफेद चमर ढुलरहे है, जिनका यश चौतर्फा वदीजन गान कर रहे है, कुमार श्रेणिकने बड़े ठाठ वाटसे नगर में प्रवेश किया। नगरमें कुमारके घुसते ही बाजोंके गभीर शब्द होने लगे । बाजोंकी आवाज सुन जैसे समुद्रसे तरग बाहिर निकलती है नगरकी स्त्रिया महाराजके देखनेके लिये घरोंसे निकल भगीं । कोई स्त्री अपने स्वामी को चौकेमें ही बैठा छोड़ उसे विनाही भोजन परोसे कुमारके देखने के लिये घर भगी। कोई स्त्री मठा बिलोड़ रही थी कुमारके दर्शनकी लालसासे उसने मठा विलोड़ना छोड़दिया । कोई कोई तो कुमार के देखनेमें इतनी लालायित हो गई कि शृंगार करते समय उसने ललाटका तिलक आखोंमे लगालिया और आखोंका काजल ललाट पर आज लिया,एवं विना देखे भालेही घरभगी.तथा किसी स्त्रीने शिरके भूषणको गलेमें पहिनकर गलेके भूषणको शिरमें पहिनकर ही कुमारके देखनेके लिये दौड़ना शुरू कर दिया। और कोई स्त्री हारको कमरमें पहिनकर और करधनीको गलेमें डाल कर ही दौड़ी । कोई स्त्री अपने काममें लग रही थी जिससमय सखियोंने उससे कुमारके देखनेके लिये आग्रह किया तो वह एक दम घरभगी जल्दीमें उसे चोलीके उल्टे सीधेका भी ज्ञान नहीं रहा । वह उल्टी चोली पहिन करही कुमारको देखने लगी । तथा कोई स्त्री तो कुमारके देखनेकेलिये इतनी बेसुध हो गई

कि अपने बालकको रोता हुवा छोड़कर दूसरे बालकको ही गोदमें लेकर घरभगी । तथा कोई कोई स्त्री जो कि नितबके भारसे सर्वथा चलनेके लिये असमर्थ थी उसने दूसरी स्त्रियोंके मुखसे ही कुमारकी तारिफ सुन अपनेको धन्य समझा । कोई वृद्धा जो कि चलनेके लिये सर्वथा असमर्थ थी दूसरी स्त्रियोंसे यह कहने लगी कि ऐ बेटा ! किसी रीतिसे मुझे भी कुमारके दर्शन करादे मैं तेरा यह उपकार कदापि नहीं भूलूगी।तथा कोई कोई स्त्री तो कुमार को देख ऐसी मत्त हो गई कि कुमारके दर्शनकी फूलमें दूसरी स्त्रियों पर गिरने लगी और जिस ओर कुमारकी सवारी जारही थी बेसुध हो उसी ओर दोड़ने लगी । तथा किसी किसी स्त्रीकी तो ऐसी दशा हो गई कि एक समय कुमारको देख घर आकर भी वह फिर कुमारके देखनेके लिये घर भागी । अनेक उत्तम स्त्रिया तो कुमारको देख ऐसा कहने लगीं कि ससारमें वह स्त्री धन्य है जिसने इस कुमारको जना है, और अपने स्तनोंका दूध पिलाया है । तथा कोई कोई ऐसा कहने लगी हे आलि ! यह बात सुननेमें आई है कि इन कुमारका विवाह वेणुतट नगरके सेठि इद्रदत्तकी पुत्री नदश्रीके साथ हो गया है संसारमें वह नदश्री धन्य है । तथा कोई कोई यह भी कहने लगी कि कुमार श्रेणिकके सबंधसे रानी नंदश्रीके अभय कुमार नामका उत्तम पुत्र भी उत्पन्न हो गया है।इत्यादि पुरवासी स्त्रियोंके शब्द सुनते हुवे तथा पुरवासियोंके मुखसे जय जय शब्दोंको भी सुनते हुवे कुमार श्रेणिक, लीली

पीली ध्वजा एवं तोरणोंसे शोभित राजमंदिरके पास जा पहुंचे ।

राज मंदिरमें प्रवेशकर कुमारने अपनी पूज्य माता आदिको भक्ति पूर्वक नमस्कार किया। तथा अन्य जो परिचित मनुष्य थे उनसे भी यथा योग्य मिले भैटे । कुछ दिन बाद मंत्रियोंकी अनुमति पूर्वक कुमारका राज्याभिषेक किया गया । कुमार श्रेणिक अब महाराज श्रेणिक कहे जाने लगे । तथा अनेक राजाओंसे पूजित, अतिशयप्रतापी, समस्त शत्रुओंसे रहित, महाराज श्रेणिक, मगध देशका नीति पूर्वक राज्य करने लग गये । इस प्रकार अपने पूर्वोपार्जित धर्मके माहात्म्यसे राज्य विभूतिको पाकर समस्तजनोंसे मान्य, अनेक उत्तमोत्तम गुणोंसे भूषित,नीति पूर्वक राज्य चलाने वाले,अतिशय देदीप्यमान शरीरके धारक, महाराज श्रेणिक अतिशय आनदको प्राप्त हुवे,

जीवोंका संसारमें यदि परममित्र हैं तो धर्म है देखो कहां तो महाराज श्रेणिकको राजगृह नगर छोड़कर सेठि इद्रदत्तके यहां रहना पड़ा था और कहां फिर उसी मगधदेशके राजा बन गये । इसलिये उत्तम पुरुषोंको चाहिये कि वे किसी अवस्थामें धर्मको न छोड़े क्यों कि ससारमें मनुष्योको धर्मसे उत्तम बुद्धिकी प्राप्ति होती है । धर्मसे ही अविनाशी सुख मिलता है । देवेंद्र आदि उत्तम पदोंकी प्रप्ति भी धर्मसे ही होती है और धर्मकी कृपासे ही उत्तम कुलमें जन्म मिलता है ।

इसप्रकार भविष्यत् कालमें होनेवाले भगवान श्रीपद्मनाभके
जीव महाराज श्रेणिकको राज्यकी प्राप्ति बतलानेवाला
पांचवा सर्ग समाप्त हुवा

छठवा सर्गः

केवलज्ञानकी कृपासे समस्त जीवोंको याथार्थ उपदेश देनेवाले, परम दयालु, भलेप्रकार पदार्थोंके स्वरूपको प्रकाश करनेवाले, अतिम तीर्थंकर श्रीवर्द्धमान स्वामीको नमस्कार है—

अनतर इसके समस्त शत्रुओंसे रहित, प्रजाके प्रेमपात्र, अनेक उत्तमोत्तम गुणोंसे मंडित, वे महाराज श्रेणिक भलेप्रकार नीतिपूर्वक प्रजाका पालन करने लगे। उनके राज्य करते समय न तो राज्यमें किसीप्रकारकी अनीति थी । और न किसी प्रकारका भय ही था। किं तु प्रजा अच्छीतरह सुखानुभव करती थी । पहिले महाराज बौद्धमतके सच्चे भक्त हो चुके थे। इसलिये

वे उससमय भी बुद्ध देवका वरावर ध्यान करते रहते थे। और बुद्धदेवकी कृपासे ही अपनेको राजा हुवा समझते थे।

किसीसमय महाराज राजसिंहासनपर विराजमान होकर अपना राज्यकार्य कर रहे थे। अचानक ही एक विद्याधर जो कि अपने तेजसे समस्त भूमंडलको प्रकाशमान करता था, सभामें आया और महाराज श्रेणिकको विनय पूर्वक नमस्कार कर यह कहने लगा।

हे देव! इसी जंबूद्वीपकी दक्षिणदिशामें एक **केरला** नामकी प्रसिद्ध नगरी है। उस नगरीका स्वामी विद्याधरोंका अधिपति राजा **मृगांक** है। राजा मृगांककी रानीका नाम **मालतीलता** है जो कि समस्त रानियोमें शिरोमणि, एवं रूपादि उत्तमोत्तम गुणोंकी खानि है। और महाराणी मालती लतासे उत्पन्न अनेक शुभलक्षणोंसे युक्त **विलासवती** नाम की उसके एक पुत्री है। किसीसमय पुत्री विलासवतीको यौवनावस्थापन्न देख राजा मृगांकको उसकेलिये योग्य वरकी चिंता हुई। वे शीघ्रही किसी दिगम्बर मुनिके पास गये। और उनसे इसप्रकार विनय भावसे पूछा।

हे प्रभो! मुने! आप भूत भविष्यत वर्तमान त्रिकाल-वर्ती पदार्थोंके भलेप्रकार जानकर हैं। संसारमें ऐसा कोई पदार्थ नहीं जो आपकी दृष्टिसे वाह्य हो। कृपाकर मुझे यह वतावें पुत्री विलासवतीका वर कौन होगा?

राजा मृगाकके ऐसे विनयभरे वचन सुन मुनिराजने कहा-राजन् ! इसीद्वीपमें आतिशय उत्तम एक राजगृह नामका नगर है। राजगृह नगरके स्वामी, नीति पूर्वक प्रजाका पालन करनेवाले, महाराज श्रेणिक है। नियमसे उन्हीके साथ यह पुत्री विवाही जायगी।

मुनिराजके ऐसे पवित्र वचन सुन, एवं उन्हे भक्तिपूर्वक नमस्कारकर, राजा मृगाक अपने घर लोट आये। और हे महा-राजश्रेणिक ! तवसे राजा मृगाकने आपको देनेके लिये ही उस-पुत्रीका दृढ़ सकल्प करलिया। अनेकवार मनाई करने परभी **हंसद्वीप**का स्वामी राजा **रत्नचूल** यद्यपि उस पुत्रीके साथ जवरन विवाह करना चाहता है। राजा मृगाकसे जवरन विलासवती-को छीन लेनेकेलिये रत्नचूलने अपनी सेनासे चौतर्फा नगरी-को भी घेर लिया है। तथापि राजा मृगाक उसे पुत्री देना नहीं चाहता। मैने ये वाते प्रत्यक्षदेखीं है। मै यह समाचार सब आपको सुनाने आया हू' अधिक समय तक मै यहां ठहर भी नहीं सकता। अव आप जो उचित समझे सो करै।

विद्याधर **जंवुकुकारके** वचन सुनते ही महाराज चुप चाप न वैठ सकै। उन्होंने केरला नगरीको जानेकेलिये शीघ्र ही तयारी करदी। एव सेनापतिको वुला उसे सेना तयार करनेकेलिये आज्ञा भी देदी।

जवुकुमारका उद्देश यह न था कि महाराज श्रेणिक

केरला नगरी चलें। और न वह महाराजको लिवानेकेलिये राज गृह आया ही था। किं तु उसका उद्देश केवल महाराजकी विवाह स्वीकारताका था। जिससमय उसने महाराजको सर्वथा चलनेकेलिये तयार देखा तो वह इसरीतिसे विनयसे कहने लगा —हे महाराज! कहां तो आप? और कहां केरला नगरी? आप भूमिगोचरी है। वहां आपका जाना कठिन है। आप यहीं रहैं। मुझे जल्दी जानेकी आज्ञादें। तथा ऐसा कहकर वह शीघ्र ही आकाश मार्गसे चलदिया। और बातकी बातमें केरला नगरी-में जा दाखिल हुवा।

इधर महाराज श्रेणिकने भी केरला नगरी जानेकेलिये प्रस्था-न करदिया। एव ये तो कुछदिन मजल दरमजलकर विंध्याचलकी अटवीमें पहुंच कुरलाचलके पास ठहरगये। उधर विधाधर जंबु-कुमारने केरला नगरीमें पहुंचकर रत्नचूलकी सेनाको ज्योंकी त्यों नगरी घेरे हुवे देखा। और किसीकार्यके वहानेसे रत्नचूलके पास जा उसने यह प्रतिपादन किया।

हे राजन् रत्नचूल! यह विलासवतीतो मगधेश्वर महाराज उपश्रेणिको दी जा चुकी है। आप न्यायवान होकर क्यों राजा मृगांकसे विलासवतीकेलिये जोरावरी कररहे हैं। आपसरीखे नरशोंका ऐसा वर्ताव शोभा जनक नहीं।

रत्नचूलका काल तो शिर पर मड़रा रहा था। भला वह नीति एवं अनीति पर विचार करने कब चला। उसने जबूक-

मारके वचनोंपर रत्तीभर भी ध्यान नहीं दिया। और उल्टा नाराज होकर जबुकुमारसे लडनेकेलिये तयार होगया। जंबुकुमारभी किसी कदर कम न था वह भी शीघ्र युद्धार्थ तयार होगया। और कुछ समयपर्यंत युद्धकर जबुकुमारने रत्नचूलको बांध लिया। उसकी आठ हजार सेनाको काट पीटकर नष्ट करदिया। एव उसे राजा मृगाके चरणोंमें डार जो कुछ वृत्तात हुवा था सारा कह सुनाया। तथा यह भी कहा कि महाराज श्रेणिकभी केरला नगरीकी ओर आ रहे है।

जंबुकुमारका यह असाधारण कृत्य देख राजा मृगाक अति प्रसन्न हुवे। उन्होने जबुकुमारकी वारंवार प्रशंसाकी। एव जबुकुमारकी अनुमति पूर्वक राजा मृगांकने राजा रत्नचूल एव पाचसौ विमानोंके साथ कन्या विलासवतीको लेकर राजगृहकी ओर प्रस्थान करादिया।

महाराज उपश्रेणिक तो कुरलाचलकी तलहटीमें ठहरे ही थे। जिससमय राजा मृगाकके विमान कुरलाचलकी तलहटीमें पहुंचे। जबुकुमारकी दृष्टि राजा श्रेणिक पर पडगई। महाराजको देख राजा मृगांक सबके साथ शीघ्रही वहां उतर पड़े। उन सबने भक्तिभावसे महाराज श्रेणिकको नमस्कार किया। और परस्पर कुशल पूछने लगे। तथा कुशल पूछनेके वाद शुभ मुहूर्तमें कन्या तिलकवती का महाराज श्रेणिकके साथ विवाह भी होगया।

विवाहके वाद राजा मृगाकने केरला नगरीकी ओर लौट-

नेके लिये आज्ञा मागी। एव चलनेकेलिये तयार भी होगये। महाराज श्रेणिकने उन्हे जाते देख उनके साथ बहुत कुछ हित जनाया। और उन्हे सन्मान पूर्वक विदा करदिया। तथा स्वय भी विद्याधर जंबुकुमारके साथ राजगृह आगये। राजगृह आकर महाराज श्रेणिकने विद्याधर जंबुकुमारका बड़ा भारी सन्मान किया। और नवोढ़ा तिलकवतीके साथ अनेक भोग भोगते हुवे वे सुखपूर्वक रहने लगे।

किसीसमय महाराज आनंदमें बैठे हुवे थे। अकस्मात् उन्हें नंदिग्रामके निवासी विप्र नंदिनाथका स्मरण आया। महाराज श्रेणिकका जो कुछ पराभव उसने किया था, वह सारा पराभव उन्हे साक्षात्सरीसा दीखने लगा। वे मनमें ऐसा विचार करने लगे--देखो नंदिनाथकी दुष्टता नीचता एवं निर्दय पना? राजगृहसे निकलते समय जब मै नंदिग्राममें जा निकला था। उससमय विनयसे मागनें पर भी उसने मुझे भोजनका सामान नहीं दिया था। यदि मै चाहता तो उससे जवरन खाने पीनेके लिये सामान ले सकता था। किं तु मैंने अपनी शिष्टतासे वैसा नहीं किया था। और दीन वचन ही बोलता रहा था। मुझे जान पड़ता है जब उसने मेरे साथ ऐसा क्रूरताका वर्ताव किया है, तब वह दूसरोंकी आंवरू उतारनेमें कब चूकता होगा? राज्यकी ओरसे जो उसै दानार्थ द्रव्य दिया जाता है नियमसे उसे वही गटक जाता है। किसी को पाई भरभी दान नहीं देता।

अब राज्यकी ओरसे जो उसे सदावर्त देनेका अधिकार देर-क्खा है उसे छीन लेना चाहिये। और नदिग्रामके ब्राह्मणोंको जो नदिग्राम दे रक्खा है उसे वापिस लेलेना चाहिंये । मै अब अपना बदला विना लिये नहीं मानूगा । नदिग्राममें एक भी ब्राह्मणको नहीं रहने दूगा । तथा क्षण एक ऐसा विचार कर शीघ्र ही महाराज श्रेणिकने एक राजसेवक बुलाया । और उसे यह कहदिया जाओ अभी तुम नदिग्राम चले जाओ और वहाके ब्राह्मणोंसे कह दो शीघ्रही नदिग्राम खाली करदें ।

इधर महाराजने तो नंदिग्रामके विप्रोंको निकालनेकेलिये आज्ञा दी उधर मन्त्रियोंके कानतक भी यह समाचार जा पहुचा । वे दौड़ते दौड़ते तत्काल ही महाराजके पास आये । और विन यसे कहने लगे ।

राजन् आप यह क्या अनुचित काम करना चाहते है ? इससे बड़ी भारी हानि होगी । पीछे आपको पछिताना पडेगा । आप भलेप्रकार सोच विचार कर काम करै । मन्त्रियोंके ऐसे वचन सुन महाराजके नेत्र और भी लाल होगये । मारे क्रोधके उनके नेत्रोंसे रक्तकी धारासी वहने लगी । और गुस्सामें भरकर वे यह कहने लगे ।

हे राजमन्त्रियो ! सुनो नदिग्रामके विप्रोंने मेरा बड़ा पराभव किया है । जिससमय मैं राजगृहसे निकल गया था, उस समय मैं नदिग्राममें जा पहुचा था । नंदिग्राममें पहुचते ही

मूखने मुझै बुरी तरह सताया। मुझे और तो वहां मूखकी निवृत्तिका कोई उपाय नहीं सूझा। मैं सीधा नदिनाथके पास गया। और मैंने विनयसे भोजनकेलिये उससे कुछ सामान मांगा। किं तु दुष्ट नदिनाथने मेरी एक भी प्रार्थना न सुनी वह एक दम मुझ पर नाराज होगया। दो चार गालियां भी दे मारीं। मुझे उससमय अधिक दुःख हुवा था। इसलिये अब मै उनसे विना वदला लिये न छोडूगा।उन्हें नंदिग्रामसे निकालकर मानूंगा। इसप्रकार महाराजके वचन सुनकर, और महाराजका क्रोध अनिवार्य है यह भी समझकर, मंत्रियोंने विनयसे कहा।

राजन् आप इससमय भाग्यके उदयसे उत्तमपदमें विराजमान है। आप सबोंके स्वामी कहे जाते है। आपको कदापि अन्याय मार्गमें प्रवृत्त नहीं होना चाहिये। ससारमें जो राजा न्याय पूर्वक राज्यका पालन करते है। उन्हे कीर्ति धन आदि की प्राप्ति होती है। उनके देश एवं नगरभी दिनोंदिन उन्नत होते चले जाते है। हे प्रजापालक! अन्यायसे राज्यमें पापियों की संख्या अधिक वढजाती है। देशका नाश होजाता है। समस्तलोकका प्रलय होना भी शुरु होजाता है। हे महाराज! जिसप्रकार किसान लोग खेतमें स्थित धान्यकी वाढ़ आदि प्रयत्नोंसे रक्षा करते है। उसीप्रकार राजाको भी चाहिये कि वह न्याय पूर्वक वड़े प्रयत्नसे राज्यकी रक्षा करे। हे दीनबंधो! संसारमें राजाके न्यायवान होनेसे समस्तलोक न्यायवाला होता है।

यदि राजा ही अन्यायी होवे तो कभी भी उसके अनुयायी लोग न्यायवान नहीं होसकते। वे अवश्य अन्याय मार्गमें प्रवृत्त होजाते है। कृपानाथ ! यदि आप नदिग्रामके ब्राह्मणोंको नदि ग्रामसे निकालना ही चाहते है तो उन्हें न्याय मार्गसे ही निकालें। न्याय मार्गके विना आश्रय किये आपको ब्राह्मणोंका निकालना उचित नहीं।

मंत्रियोंके ऐसे नीति युक्त वचन सुन महाराज श्रेणिकका क्रोध शांत होगया। कुछ समय पहिले जो महाराज ब्राह्मणों-को विना विचारे ही निकालना चाहते थे। वह विचार उनके मस्तकसे हट गया। अब उनके चित्तमें ये संकल्प विकल्प उठने लगे। यदि मै योंही ब्राह्मणोंको निकाल दूगा तो लोग मेरी निंदा करैगे। मेरा राज्य भी अनीतिराज्य समझा जायगा। इसलिये प्रथम ब्राह्मणोंको दोषी सिद्ध करदेना चाहिये। पश्चात् उन्हे निकालनेमें कोई दोष नहीं। तथा तदनुसार महाराजने ब्राह्मणों को दोषी बनानेके अनेक उपाय सोचे। उन सबमें प्रथम उपाय यह किया कि एक बकरा मगवाया। और कई एक चतुर सेवकोंको बुला कर, एव उन्हे वकारा सोंपकर, यह आज्ञा दी। जाओ इस बकरे को शीघ्रही नादिग्रामके ब्राह्मणोंको दे आओ। उनसे यह कहना यह बकरा महाराज श्रेणिकने भेजा है। इसे खूब खिलाया पिलाया जाय। किं तु इसबात पर ध्यान रहै। न तो यह लटने पावे और न अवाद ही होवे। यदि यह लटगया वा अवाद

होगया तो तुमसे नंदिग्राम छीन लिया जायगा। और तुम्हें उस से जुदा करदिया जायगा।

महाराजके एसे आश्चर्यकारी वचन सुन सेवकोंने कुछ भी तीन पांच न की। वे बकरेको लेकर शीघ्र ही नदिग्रामकी ओर चलदिये। तथा नदिग्राममें पहुंचकर बकरा ब्राह्मणोंकी सुपुर्द करादिया। और जो कुछ महाराजका सदेशा था। वह भी साफ साफ कह सुनाया।

महाराजका यह विचित्र सदेशा सुन नंदिग्रामके ब्राह्मणों के होश उड़गये। वे अपने मनमें विचार करने लगे। यह वलाय कहासे आपड़ी। महाराजका तो हमसे कोई अपराध हुवा नहीं है। उन्होंने हमारे लिये ऐसा सदेशा क्योंकर भेजादिया। हे ईश्वर! यह बात बड़ी कठिन आ अटकी। कमती बढती खवा नेसे यातो यह वकरा लट जायगा। या मोटा हो जायगा। इसका एकसा रहना असंभव है। मालूम होता है अब हमारा अंत आगया है।

इधर ब्राह्मग तो ऐसा विचार करने लगे। उधर वेणतटमें सेठि इन्द्रदत्तको यह पता लगा कि कुमार श्रेणिक अब मगधदेशके महाराज बन गये है। शीघ्रही वे नंदश्री और कुमार अभयको लेकर राजगृहकी ओर चलदिये। और नंदिग्रामके पास आकर ठहरगये। सेठि इंद्रदत्त आदि तो भोजनादि कार्यमें प्रवृत्त हो गये। और नवीन पदार्थोंके देखनेके अतिप्रेमी कुमार अभय, नंदि

ग्राम देखनेके लिये चलदिये। उन्हें जाते देख परिवारके मनुष्योंने बहुत कुछ मनाई की। किंतु कुमारके ध्यानमें एक न आई। वे शीघ्र ही नदिग्राममें दाखिल होगये। मध्य नगरमें पहुचते ही दैवसे उनकी मुलाकात नदिनाथसे होगई उसे चिंतासे व्याकुल एव म्लान देख कुमारने चट घर पूछा।

हे विप्रोंके सरदार! आपका मुख क्या फीका हो रहा है! आप किस उधेड़ बुनमें लगे हुवे है? इसनगरमें सर्व मनुष्य चिंता ग्रस्त ही प्रतीत होते है यह क्या बात है?। कुमारके ऐसे उत्तम वचन सुन, और वचनोंसे उसे बुद्धिमान भी जान, नदिनाथने विनम्र वचनोंमें उत्तर दिया।

महानुभाव! राजगृहके स्वामी महाराज श्रेणिकने एक बकरा हमारे पास भेजा है। उन्होंने यह कडी आज्ञा भी दी है कि—नदिग्रामके निवासी विप्र इस बकरेको खूब खिलावे पिलावे। किंतु यह बकरा एकासा ही रहे। नतो मोटा होने पावै, और न लटने पावे। यदि यह बकरा लटगया अथवा पुष्ट हो गया तो नदिग्राम छीन लिया जायगा। हे कुमार! महाराजकी इस आज्ञाका पालन हमसे होना कठिन जान पड़ता है। इसलिये इस गावके निवासी हम सब ब्राह्मण चिंतासे व्यग्र हो रहे है।

नंदनाथके ऐसे विनय युक्त वचन सुननेसे कुमार अभय का हृदय करुणासे गद गद हो गया। उन्होंने इस कामको कुछ काम न समझ ब्राह्मणोंको इस प्रकार समझा दिया। हे विप्रो!

आप इस कार्यके लिये किसी वातकी चिंता न करैं। आप धैर्य रक्खें। आपके इस विघ्नके दूरकरनेकेलिये मै भी उपाय सोचता हूं। तथा ऐसा विश्वास देकर वे भी उस चिंताके दूरकरनेका म्वय उपाय सोचने लगे। कुमारकी बुद्धि तो अगम्य थी। उक्त विघ्नके दूरकरनेकेलिये उन्हें शीघ्र ही उपाय सूझ गया। उन्होंने शीघ्रही ब्राह्मणोंको वुलाया। और उनसे इसप्रकार कहा—हे विप्रो! तुम एक काम करो वीच गांवमें एक खभा गढवाओ। उससे कहीं से लाकर एक वाघ बांधदो। जिससमय चरानेसे वकरा मोटा मालूम पड़े। धीरेसे उसे वाघके सामने लाकर खड़ा करदो। विश्वास रक्खो इसरीतिसे वह वकरा न वढेगा और न घटेगा। कुमारकी युक्ति ब्राह्मणोंके हृदयमें जमगई। उन्होंने शीघ्रही कुमारकी आज्ञानुसार वह काम करना प्रारभ करदिया। प्रथम तो वे दिनभर खूब वकरेको चरावें। और पश्चात् सामको उसै वाघके सामने लेजाकर खड़ा करदें। इसरीतिसे उन्होंने कई दिन तक किया। वकरा वैसे का वैसाही वना रहा। तथा जैसा राजगृह नगरसे आया था वैसाही ब्राम्हणोंने जाकर उसै महाराजकी सेवामें हाजिर करदिया.

विघ्नके टलजाने पर इधर ब्राह्मणोंने तो यह समझा कि कुमारकी कृपासे हमारा विघ्न टलगया। हम वचगये। वे वारंवार कुमारकी प्रशंसा करने लगे। तथा कुमार अभयके पास आकर वे उनकी इसप्रकार स्तुति करनेलगे-हे दिव्यपुरुष! हे पुण्यात्मन्! हे समस्त

जीवोंपर दयाकरनेवाले कुमार ! यह हमारा भयंकर विघ्न आपकी कृपासे ही शात हुवा है। आपके सर्वोत्तम बुद्धिबलसे ही इस समय हमारी रक्षा हुई है । आपके प्रसादसे ही हम इससमय आनंदका अनुभव कर रहे है। आपने हमै अमना समग्र जीवन दान दिया है । यदि महाराजकी आज्ञाका पालन न होता तो न मालूम महाराज हमारी क्या दुर्दशा करते—हमैं क्या दड देते । हे कृपानाथ कुमार ! हम आपके इस उपकारके बदलेमें क्या करैं । हम तो सर्वथा असमर्थ है । और आप समस्तलोकके विनाकारण बंधु हैं । हे कुमार! जैसी आपके चित्तमें दया हैं। संसारमें वैसी दया कहीं नहीं जान पडती । हे महोदय! आप संसारमें अलौकिक सज्जन है। आप मेघके समान हैं। क्योंकि जिसप्रकार मेघ परोपकारी, स्नेह (जल) युक्त, आर्द्र, एव उन्नत, होते है उसीप्रकार आपभी परोपकारी है। समस्तजनोंपर प्रीतिके करने वाल हैं । आपका भी चित्त दयासे भींगा हुआ है । और आप जगतमें पवित्र है । हे हमारे प्राणदाता कुमार! आपकी सेवामें हमारी यह सविनय निवेदन है। जबतकराजाका कोप शात न हो-महाराज हमारे ऊपर संतुष्ट नहीं हों आप इस नगरको ही सुशोभित करैं । आप तबतक इस नगरसे कदापि न जांय । यदि आप यहासे चले जायगें तो महाराज हमे कदापि यहां नहीं रहने देगें ।

इधर तो नंदिनाथ एवं अन्य विप्रोंकी इस प्रार्थनाने कुमार

अभयके चित्त पर प्रभाव जमादिया। उन्हें जबरन प्रार्थना स्वीकार करनी पड़ी। और ब्राह्मणोंपर दयाकर नंदिगूाममें कुछ दिन ठहरना भी निश्चित करलिया। उधर जिससमय महाराजने बकरेको ज्योंका त्यों देखा। वे गहरी चिंतामें पड़गये। अपने प्रयत्नकी सफलता न देख उन्हें अति क्रोध आगया। वे सोचने लगे। जब नंदिगूाममें ब्राह्मण इतने बुध्दिमान है। तब उनको कैसे नंदिगूामसे निकाला जाय?। तथा क्षण एक ऐसा सोचकर शीघ्र ही उन्होने फिर एक दूत बुलाया। और उससे यह कहा-तुम अभी नदिगूाम जाओ। और वहाके निवासी ब्राह्मणोंसे कहो कि-महाराजने यह आज्ञादी है कि नंदिगूामनिवासी बूाह्मण शीघ्र एक बावड़ी राजगृह नगर पहुंचादें। नहीं तो उनको कष्टका सामना करना पड़ेगा।

महाराजकी आज्ञा पाते ही दूत चला। और नंदिगूाम में पहुंचकर शीघ्र ही उसने बूाह्मणोंसे कहा। हे विप्रो! महाराजने नदिगूामसे एक बावड़ी राजगृह नगर मगाई है। आपलोगों को यह कडी आज्ञा दी है कि आप उसे शीघ्र पहुचादे। नहीं तो तुम्हें नगरसे जाना पड़ेगा।

दूतके मुखसे महाराजकीऐसी कठिन आज्ञा सुन, नंदिग्राम निवासी विप्र दांतोंमें-उंगली दवाने लगे। वे विचारने लगे कि अवके महाराजने कठिन अटकाई। बावड़ीका जाना तो सर्वथा असभव है। मालूम होताहै महाराजका कोप अनिवार्य है। अव

हमैं नंदिग्राममें रहना कठिन जान पडता है । तथा क्षण एक ऐसा विचार कर वे सव मिलकर कुमार अभयके पास गये । और सारा समाचार उन्हे जाकर कह सुनाया ।

ब्राह्मणोंके मुखसे वावडीका भेजना सुनकर, और नंदिग्राम निवासी ब्राह्मणोंको चिंतासे ग्रस्त देखकर, कुमार अभयने उत्तर दिया । हे विप्रो ! यह कौंन वडी वात है ? आप क्यों इस छोटीसी वातके लिये चिंता करते हैं ? आप किसीवातसे जरा-भी न घवडांय । यह विघ्न शीघ्र दूर हुवा जाता है । आप एक काम करैं । आपके गांवमें जितने भर वैल एवं भैसे हों उन सवको इकट्ठाकरो । सवके कधोंपर जूवा रखवा दो । और नंदिग्रामसे राजगृह तक उनकी लगतार लगादो । जिससमय महाराज अपने राजमंदिरमें गाढ़ निद्रामें सोते हों । वेधड़क हल्ला करतेहुवे राजमंदिरमें घुस जाओ । और खूव जोरसे पुकार कर कहो । नंदिग्रामके ब्राह्मण वावडी लायें है । जो इन्हें आज्ञा होय सो किया जाय । वस महाराजके उत्तरसे ही आपका यह विघ्न टल जायगा ।

कुमारकी यह युक्ति सुन ब्राह्मणोंने गांवके समस्त वैल एवं भैसा एकत्रित किये । उनके कधोंपर जूवा रखादिया । और उन्हें नंदिग्रामसे राजमंदिर तक जोत दिया । जिससमय महाराज गाढ़ निद्रामें वेसुध सो रहे थे । राजमंदिरमें वडे जोरसे हल्ला करना प्रारंभ करदिया । और महाराजके पास जाकर यह कहा महा-

राजाधिराज ! नंदिग्रामके ब्राह्मण बावड़ी लाये है । अब उन्हें जो आज्ञा हो सो करै ।

उससमय महाराजके ऊपर निद्रादेवीका पूरा पूरा प्रभाव पड़ा हुवा था । निद्राके नशेमें उन्हें अपने तन वदनका भी होश हवास नहीं था । इसलिये जिससमय ऊन्होंने ब्राह्मणोंके वचन सुने. तो वेसुधमें उनके मुखसे धीरेसे ये ही शब्द निकल गये कि—जहांसे वावड़ी लाये हो, वहीं पर वावड़ी लेजाके रख दो। और राजमंदिरसे शीघ्रही चले जाओ । वस फिर क्या था, ब्राह्मण तो यह चाहते ही थे कि किसीरीतिसे महाराजके मुखसे हमारे अनुकूल वचन निकलै । जिससमय महाराजसे उन्हें अनुकूल जवाव मिला तो मारे हर्षके उनका शरीर रोमांचित होगया । वे उछलते कूदते तत्कालही नांदिग्रामको लोटगये । और वहां पहुंचकर. विघ्नकी शांतिसे अपना पुनर्जीवन समझ, वे सुख सागरमें गोता मारने लगे । तथा अभयकुमारके चातुर्य पर मुग्ध होकर उनके मुखसे खुले भैदान ये ही शब्द निकलने लगे कि कुमार अभय की बुद्धि अत्युत्तम और आश्चर्य करनेवाली है । इनका हर एक विषयमें पांडित्य सबसे चढ़ा वढा है । सौजन्य आदिगुण भी इनके लोकोत्तर हैं इत्यादि ।

इधर अपने भयंकर विघ्नकी शाति होजानेसे विप्रतो नंदिग्राममें सुखानुभव करने लगे। उधर राजगृह नगरमें महाराज श्रेणिककी निद्राकी समाप्ति होगई । उठते ही उनके मुहसे यही

प्रश्न निकला कि—नंदिग्रामके ब्राह्मण जो बावड़ी लायेथे वह वावडी कहां है ? शीघ्र ही मेरे सामने लाओ--

महाराजके वचन सुनते ही पहरेदारने जवाब दिया महाराजाधिराज ! नंदिग्रामके ब्राह्मण रातको वावडी उठाकर लायेथे । जिससमय उन्होंने आपसे यह निवेदन किया था कि वावडी कहा रखदी जाय ! उससमय आपने यही जवाव दिया था कि 'जहांसे लाये हो वहीं लेजाकर रखदो और शीघ्र राजमदिरसे चले जाओ । इसलिये हे कृपानाथ ? वे वावड़ीको पीछे ही लोटा ले गये ।

दरम्यानोंके ये वचन सुन मारे क्रोधके महाराज श्रेणिकका शरीर भवकने लगा । वे वारवार अपने मनमें ऐसा विचार करने लगे कि -ससारमें जैसी भयकर चेष्टा निद्राकी है, वैसी भयकर चेष्टा किसी की नहीं । यदि जीवोंके सुखपर पानी फेरनेवाली है तो यह पिशाचिनी निद्रा ही है । परमर्षियोंने जो यह कहा है कि जो मनुष्य हितके आकाक्षी हैं-अपनी आत्माका हित चाहते है, उन्हें चाहिये कि वे इस निद्राको अवश्य जीतें सो वहुत ही उत्तम कहा है । क्योंकि जिससमय पिशाचिनी यह निद्रा जीवोंके अतरगमें प्रविष्ट होजाती है।उससमय विचारे प्राणी इसके वश हो अनेक शुभ अशुभ कर्म सचय कर मारते है । और अशुभ कर्मोंकी कृपासे उन्हें नरकादि घोर दु.खोंका सामना करना पड़ता है । वास्तवमें यह निद्रा क्षुधाके समान है।क्यों-

कि जिसप्रकार क्षुधाका जीतना कठिन है। उसीप्रकार इस निद्राका जीतना भी अति कठिन है। क्षुधासे पीड़ित मनुष्य-को जिसप्रकार यह विचार नहीं रहता कौन कर्म अच्छा है कौन बुरा है?। संसारमें कौन वस्तु मुझे ग्रहण करने योग्य है? कौन त्यागने योग्य है?। उसीप्रकार निद्रापीड़ित मनुष्यको भी अच्छे बुरे एवं हेय उपादेयका विचार नहीं रहता। एवं जैसा क्षुधापीड़ित मनुष्य पाप पुण्यकी कुछ भी परवा नहीं करता। वैसे ही निद्रा पीड़ित मनुष्यको भी पाप पुण्यकी कुछभी परवा नहीं रहती। तथा यह निद्रा एक प्रकारका भयंकर मरण है। क्योंकि मरते समय कफके रुकजाने पर जैसा कंठमें घड़ घड़ शब्द होने लगजाता है।निद्राके समय भी उसी प्रकार घड़ घड़ शब्द होता है। मरणकालमें संसारी जीव जैसा खाट आदि-पर सोता है उसीप्रकार-निद्राकालमें भी बेहोशी से खाट आदिपर सोता है। मरणकालमें जैसा मनुष्यके अंगपर प-सीना झमक आता है वैसा निद्राके समय भी अंगपर पसीना आजाता है। एव मरण समयमें जिसप्रकार जीव जराभी नहीं चल सकता शांत पड़जाता है। निद्राकालमें भी उसीप्रकार जीव जराभी नहीं चलता किंतु काठकी पुतलीके समान बेहोश पड़ा रहता है। इसलिये यह निद्रा अति खराब है। तथा क्षण एक ऐसा विचार कर देदीप्यमान शरीरसे शोभित, म-हाराज श्रेणिकने फिरसे सेवकोंको बुलाया। और उनसे कहा

कि जाओ और शीघ्रही नंदिग्रामके ब्राह्मणोंसे कहो। महाराजने यह आज्ञादी है कि नंदिग्रामके विप्र एक हाथीका वजन कर शीघ्र ही मेरे पास भेजदें।

महाराजकी आज्ञा पाते ही सेवक चला। और नंदिग्राममें जाकर उसने ब्राह्मणोंसे, जो कुछ महाराजकी आज्ञा थी सब कह सुनाई। तथा यह भी कह सुनाया कि महाराजकी इस आज्ञाका पालन जल्दी हो। नहीं तो आपको जबरन नंदिग्राम खाली करना पड़ेगा।

सेवकके मुखसे महाराजकी आज्ञा सुनते ही नंदिग्रामनिवासी विप्रोंके मुख फीके पड़गये। मारे भयके उनका गात्र कपने लगगया। वे अपने मनमें सोचने लगे कि बावड़ीका विघ्न टलजानेसे हमने तो यह सोचा था कि हमारे दुःखोंकी शांति होगई। अब यह बलाय फिरसे कहासे आ टूटी ?। तथा कुछ देर ऐसा विचार वे, बुद्धिशाली कुमार अभयके पास गये। और उनसे इसरीतिसे विनय पूर्वक कहा।

माननीय कुमार ! अबके महाराजने बडी कठिन अटकाई है। अबके उन्होंने हाथीका वजन मागा है भला हाथीका वजन कैसे किसरीतिसे होसकता है ? मालूम होता है महाराज अब हमें छोड़ेंगे नहीं।

ब्राह्मणोंके ऐसे दीनता पूर्वक वचन सुन कुमारने उत्तर दिया आप इस जरासी बातकेलिये क्यों इतने घबड़ाते है ?। मैं

अभी इसका प्रतीकार करता हू । तथा ब्राह्मणोंको इसप्रकार आश्वासन दे वे शीघ्र ही किसी तलावके किनारे गये । तलावके पास जाकर उन्होने एक नौका मगाई । और ब्राह्मणों द्वारा एक हाथी मगाकर उस नावमें हाथी खड़ा करदिया।हाथीके वजनसे जितना नावका हिस्सा डूबगया उस हिस्से पर कुमारने एक लकीर खींचदी । एव हाथीको नांवसे वाहिर कर उसमें उतने ही पत्थर भरवा दिये । जिससमय पत्थर और हाथीका वजन वरावर होगया तो कुमारने उनपत्थरोंको भी नावसे निकलवा लिया । तथा उन पत्थरोंकी वरावर दूसरे वडे वडे पत्थर कर महाराज श्रेणिककी सेवामें भिजवा दिये । और नदिग्रामके ब्राह्मणों की ओरसे यह निवेदन करदिया कि—कृपानाथ ! आपने जो हाथीका वज़न मागा था सो यह लीजिये ।

जिससमय महाराज श्रेणिकने हाथीके वजनके पत्थर देखे तो उनको वडा आश्चर्य हुवा । वे अपने मनमें विचारने लगे कि नदिगूामके ब्राह्मण अधिक बुद्धिमान हैं। उनका चातुर्य एव पांडित्य ऊंचे दर्जेपर चढ़ाहुवा है। ये किसीरीतिसे जीते नहीं जासकते । तथा क्षण एक अपने मनमें ऐसा भलेप्रकार विचार कर महाराजने फिर सेवकोंको वुलाया । और एक हाथ प्रमाणकी एक निखोल खैरकी लकड़ी उन्हें दे यह कहा कि—जाओ इस लकड़ीको नदिगूामके ब्राह्मणोंको दे आओ । उनसे

कहना महाराजने यह लकड़ी भेजी है। कौंनसा तो इसका नीचा भाग है और कौनसा इसका ऊपरका भाग है? यह परीक्षाकर शीघ्रही महाराजके पास भेजदो। नहीं तो तुम्हें नंदिग्रामसे निकाल दिया जायगा।

महाराज की आज्ञापाते ही दूत राजगृह नगरसे चला और नंदिग्रामके ब्राह्मणों को लकडी देकर उसने कहा कि— राजगृहके स्वामी महाराज श्रेणिकने यह लकडी भेजी है। इसका कौनसा तो अगला भाग है और कौंनसा पिछला भाग है? शीघ्रही परीक्षाकर भेजदो। यदि नहीं बता सको तो नदिग्राम छोडकर चले जाओ।

दूतके मुखसे जब महाराजका यह संदेशा सुनने में आया तो नदिग्रामके ब्राह्मणोंके मस्तक घूमने लगे। वे सोचने लगे यह बलाय तो सबसे कठिन आकर टूटी। इस लकडीमें यह बताना बुद्धिके बाह्य है कि कौंनसा भाग इसका पिछला है। और कौंनसा अगला है? इसका उत्तर जाना महाराजके पास कठिन है। अब हम किसीकदर नंदिग्राममें नहीं रह सकते। तथा क्षण एक ऐसे संकल्प विकल्प कर अति व्याकुल हो वे कुमारके पास गये। महाराजका सारा संदेशा कुमारको कह सुनाया और वह खैरकी लकड़ी भी उनके सामने रखदी।

ब्राह्मणोंको म्लानचित्त देख और उस खैरकी लकड़ीको निहार कुमारने उत्तर दिया आप महाराजकी इस आज्ञासे

जराभी न डरें। मै अभी इसका प्रतीकार करता हूं। तथा सब ब्राह्मणोंको इसप्रकार दिलासादेकर कुमारकिसी तलावकेकिनारेंगये। तालावमें कुमारने लकड़ी डाल दी। जिससमय वह लकड़ी अपने मूल भागको आगेकर वहने लगी। शीघ्रही उन्होंने उसका पीछे आगे का भाग समझ लिया। एवं भलेप्रकार परीक्षा कर किसी ब्राह्मणके हाथ उसे महाराज श्रेणिककी सेवामें भेजदिया।

लकड़ीको ले ब्राह्मण राजगृह नगर गया। और कुमारकी आज्ञानुसार उसने लकड़ीका नीचा ऊंचा भाग महाराजकी सेवामें विनयपूर्वक जा बताया।

जिससमय महाराजने लकड़ीको देखा तो मारे क्रोधसे उनका तन वदन जल गया। वे सोचने लगे मै ब्राह्मणों पर दोष आरोपण करनेके लिये कठिनसे कठिन उपाय कर चुका। अभी ब्राह्मण किसीप्रकार दोषी सिद्ध नहीं हुवे है। नान्दिग्राम के ब्राह्मण बड़े चालाक मालूम पडते है। अब इनका दोषी बनानेके लिये कोई दूसरा उपाय सोचना चाहिये। तथा क्षण एक ऐसा बिचार कर उन्होंने फिर किसी सेवकको बुलाया। और उसके हाथमें कुछ तिल देकर यह आज्ञा दी कि अभी तुम नंदिग्राम जाओ। और वहांके ब्राह्मणोको तिल देकर यह बात कहो कि महाराजने ये तिल भेजे है। जितने ये तिल है इनकी बराबर शीघ्रही तेल राजगृह पहुंचा दो। नहीं तो तुम्हारे हकमें अच्छा न होगा।

महाराजकी आज्ञानुसार दूत नदिग्रामकी ओर चलदिया। और तिल ब्राह्मणोंको देदिये। तथा यह भी कह दिया कि जितने ये तिल हैं महाराजने उतना ही तेल मगाया है। तेल शीघ्र भेजो नहिं तो नंदिग्राम छोडना पडेगा।

दूतके मुखसे ऐसे वचन सुन ब्राह्मण बडे घवड़ाये। वे सीधे कुमार अभयके पास गये। और विनयपूर्वक यह कहा—महोदय कुमार! महाराजने ये थोडे से तिल भेजे है। इनकी वरावर ही तेल मांगा है। क्या करैं? यह वात अति कठिन है। तिलोंके वरावर तेल कैसे भेजा जासकता है? मालूम होता है अब महाराज छोड़ेंगे नहीं।

ब्राह्मणोंको इसप्रकार हताश देख कुमारने फिर उन्हे समझा दिया। तथा एक दर्पण मगाया ओर उस दर्पण पर तिलोंको पूरकर ब्राह्मणोंको आज्ञा दी कि जाओ इनका तेल निकलवा लाओ। जिससमय कुमारकी आज्ञानुसार ब्राह्मण तेल पेर कर ले आये। तो उस तेलको कुमारने तिलों की वरावर ही दर्पण पर पूरदिया। और महाराज श्रेणिककी सेवामें किसी मनुष्य द्वारा भिजवा दिया।

तिलोंके वरावर तेल देख महाराज चकित रहगये। फिर उनके हृदय ममुद्रमें विचार तरंग उछलने लगीं। वे वारवार नंदिग्रामके ब्राह्मणोंके वुद्धिवलकी प्रशसा करने लगे। अब महाराज को क्रोधके साथ साथ नंदिग्रामके ब्राह्मणोंकी बुद्धि परीक्षाका कोतू

हलसा होगया। उन्होंने फिर किसी सेवकको बुलाया। और उसै आज्ञा दी कि तुम अभी नंदिग्राम जाओ। और ब्राह्मणोंसे कहो कि महाराजने भोजनके योग्य दूध मगाया है। उनसे यह कह देना कि वह दूध गाय भैस आदि चौपाओंका न हो। और न बकरी आदि दुपाओंका हो। नारियल आदि पदार्थोंका भी न हो। किंतु इनसे अतिरिक्त हो। मिष्ट हो। उत्तम हो। और बहुतसा हो।

महाराजकी आज्ञानुसार दूत फिर नंदिग्रामको गया। महाराजने जैसा दूध लानेके लिये आज्ञा दी थी। वही आज्ञा उसने नंदिग्रामके विप्रोंके सामने जाकर कह सुनाई। और यह भी सुना दिया कि महाराज का क्रोध तुम्हारे ऊपर बढ़ता ही चला जाता है। महाराज आपलोगों पर बहुत नाराज है। दूध शीघ्र भेजो नहीं तो तुम्हे नंदिग्राममें नहीं रहने देंगे।

दूतके मुखसे यह संदेशा सुन ब्राह्मणोंके मस्तक चक्कर खाने लगे। वे विचारने लगे कि दूध तो गाय भैस बकरी आदिका ही होता है। इनसे अतिरिक्त किसीका दूध आज तक हमने सुनाही नहीं है। महाराजने जो किसी अन्य ही चीज का दूध मगाया है सो उन्हें क्या सूझी है? क्या वे अब हमारा सर्वथा नाश ही करन चाहते है? तथा क्षण एक ऐसा विचारकर वे अति व्याकुल हो दौड़ते दौड़ते कुमार अभयके पास गये। और महाराजका सब संदेशा कुमारके सामने कह

सुनाया।तथा कुमारसे यह भी निवेदन किया कि--हे महानुभाव कुमार ! अवके महाराजकी आज्ञा बड़ी कठिन है- --क्योंकि हो सकता है दूध तो गाय भैस वकरी आदिका ही हो सकता है। इनसे अतिरिक्तका दूध होई नहीं सकता। यदि हो भी तो वह दूध नहीं कहा जा सकता। महाराजने अव यह दूध नही मागा है हमलोगोंके प्राण मांगे है।

ब्राह्मणोंके वचन सुन कुमारने उत्तर दिया आप क्यों घवडाते हैं। गाय भैस वकरी आदिसे अनिरिक्तका भी दूध होता है। मै अभी उसे महाराज की सेवामें भिजवाता हू। आप जरा धैर्य रक्खे। तथा ऐसा कहकर कुमारने शीघ्रही कच्चे धान्योंकी वाले मगवाई। औरं उनसे गौके समान ही उत्तम दूध निकलवाकर कई घडे भरकर तयार कराये।एव वे घडे महाराज श्रेणिककी सेवामें राजगृह नगर भेजदिये।

दूधके भरे हुवे घड़ाओंको देख महाराज आश्चर्य समुद्रमें गोता लगाने लगे।नदिग्रामके विप्रोंके बुद्धिवलकी ओर ध्यान दे उन्हे दातो तले उंगली दवानी पडी। वे वारवार यह कहने लगे कि नदिगूामके ब्राह्मणोंका बुद्धिवल है कि कोई वलाय है?मै जिस चीजको परीक्षार्थ उनके पास भेजता हू।फौरन वे उसका जवाव मेरे पास भेज देते है। मालूम होता है उनका बुद्धिवल इतना वढ़ा चढ़ा है कि उन्हें सोचने तक की भी जरूरति नही पड़ती। अस्तु अव मै उन्हें अपने सामने बुलाकर उनकी परीक्षा

करता हू। देखें वे कैसे बुद्धिमान हैं ?। तथा क्षण एक ऐसा अपने मनमें दृढ निश्चयकर महाराजने शीघ्र ही एक सेवकको वुलाया।और उससे यह कहा-तुम अभी नंदिग्राम जाओ और वहाके विप्रोंसे कहो महाराजने यह आज्ञा दी है कि नंदिग्रामके व्राह्मण एकही मुर्गेको मेरे समाने आकर लड़ावे। यदि वे ऐसा न करै तो नंदिग्राम खाली कर चले जांय।

महाराजकी आज्ञा पाते ही दूत फिर चलदिया। और नंदिगामें पहुंच उसने व्राह्मणोंसे जाकर यह कहा कि आपलोगोकेलिये महाराजने यह आज्ञा दी है किं नंदिग्रामके व्राह्मण राजगृह नगर आवे। और हमारे सामने एक ही मुर्गेको लड़ावे। यदि यह वात उनको नामंजूर हो तो वे शीघ्रही नंदिग्रामको खालीकर चले जांय।

दूतके वचन सुन व्राह्मण फिर घवड़ाकर कुमार अभयके पास गये।और महाराजका सारा संदेशा उनके सामने निवेदन करदिया। तथा यह भी कहा महनीय कुमार! अवके महाराज ने हमैं अपने सामने वुलाया है। अवके हमारे ऊपर अति भयंकर विघ्न मालूम पड़ता है।

व्राह्मणोंके ऐसे वचन सुन कुमारने उत्तर दिया आप खुशीसे राजगृह नगर जाय। आप किसी वातसे घवड़ायें न। वहां जाकर एक काम करै। मुर्गेको अपने सामने खड़ाकर एक दर्पण उसके सामने रखदें। जिससमय वह मुर्गा दर्पणमें अपनी

तस्वीर देखेगा।अपना वैरी दूसरा मुर्गा समझ वह फोरन लडने लग जायगा। और आपका काम सिद्ध होजायगा।

कुमारके मुखसे यह युक्ति सुनकर मारे हर्षके ब्राह्मणोंका शरीर रोमाचित होगया। एक मुर्गा लेकर वे शीघ्रही राजगृह नगरकी ओर चलदिये। राजमंदिरमें पंहुचकर उन्होंने भक्ति पूर्वक-महाराजको नमस्कार किया। तथा उनके सामने उन्होंने मुर्गा छोड़दिया।और उसके आगे एक दर्पण रख दिया। जिस समय असली मुर्गेने दर्पणमें अपनी तस्वीर देखी तो उसने उसे अपना वैरी असली मुर्गा समझा। और वह चोंच मार मारकर उसके साथ अति आतुर हो युद्ध करने लगगया।

अकेले ही मुर्गेको युद्ध करते हुवे देख महाराज चकित रह गये। उन्होंने शीघ्रही मुर्गेकी लड़ाई समाप्त करादी।तथा ब्राह्मणोंको जानेके लिये आज्ञा देदी। जिससमय ब्राह्मण चलेगये तब महाराजके मनमें फिर सोच उठा। वे विचारने लगे ब्राह्मण बड़े बुद्धिमान है। उनको अब किसरीतिसे दोषी बनाया जाय? कुछ समझमें नहीं आता। तथा क्षण एक ऐसा विचार कर उन्होंने फिर किसी सेवकको बुलाया।और उससे कहा कि तुम शीघ्र नंदिग्राम जाओ।और वहांके ब्राह्मणोंसे कहो। महाराजने एक वालूकी रस्सी मगाई है।शीघ्र तयार कर भेजो। नहीं तो अच्छा न होगा।

महाराजकी आज्ञा पाते ही दूत नंदिग्रामकी ओर चल

दिया। तथा नदिग्राम में पहुंचकर उसने ब्राह्मणोंके सामने महाराज श्रेणिकका सारा सदेशा कह सुनाया।

दूत द्वारा महाराजकी यह आज्ञा सुन ब्राह्मणोंके तो बिलकुल छक्के छूटगये। वे भागते भागते कुमार अभयके पास पहुंचे। तथा कुमार अभयके सामने सारा सदेशा निवेदन कर उन्होंने कहा पूज्य कुमार! अवके महाराजने यह क्या आज्ञा दी है। इसका हमै अर्थ ही नहीं मालूम हुवा। हमने तो आजतक न वालूकी रस्सी सुनी और न देखी।

ब्राह्मणों द्वारा महाराजकी आज्ञा सुन कुमारने उत्तर दिया। आप किसी वातसे न घवड़ांय।इसका उपाय यही है कि आपलोग अभी राजगृह नगर जांय।और महाराजके सामने यह निवेदन करै। श्रीराजाधिराज! आपके भंडारमें कोई दूसरी वालूकी रस्सी हो तो कृपाकर हमै देवैं। जिससे हम वैसीही रस्सी आपकी सेवामें लाकर हाजिर करदें। यदि महाराज नाईं करै कि हमारे यहां वैसी रस्सीं नहीं हैं।तो उनसे आप विनय पूर्वक अपने अपराधकी क्षमा मागलीजिये।और यह प्रार्थना कर दीजिये कि-हे महाराज? कृपाकर ऐसी अलभ्य वस्तुकी हमै आज्ञा न दिया करैं। हम आपकी दीन प्रजा है।

कुमारके मुखसे यह युक्ति सुन ब्राह्मणोंको अति हर्ष हुआ। वे मारे आंनदके उछलते कूदते शीघ्र ही राजगृह नगर जा पहुचे। राजमादिरमें प्रवेशकर उन्होंने महाराजको नमस्कार किया। और विनय पूर्वक यह निवेदन किया।

श्रीमहाराज!आपने हमें वालूकी रस्सीकेलिये आज्ञा दी है। हमें नहीं मालूम होता हम कैसी रस्सी आपकी सेवामें ला हाजिर करै। कृपया हमें कोई दूसरी वालूकी रस्सी मिले तो हम वैसी ही आपकी सेवामें लाकर हाजिर कर दें। अपराध क्षमा हो।

विप्रोंकी वात सुन महाराजने उत्तर दिया। हे विप्रो! मेरे यहां कोई भी वालूकी रस्सी नहीं। वस फिर क्या था! महाराजके मुखसे शब्द निकलते ही ब्राह्मणोंनें एक स्वर हो इस प्रकार निवेदन किया।

हे कृपानाथ। जव आपके भंडारमें भी रस्सी नहीं है तो हम कहांसे वालूकी रस्सी वनाकर ला सकते है। प्रभो! कृपया हम पर ऐसी अलभ्य वस्तुके लिये आज्ञा न भेजा करै। आप की ऐसी कठोर आज्ञा हमारा घोर अहित करने वाली है। हम आपके तावेदार है।आप हमारे स्वामी है।तथा इसप्रकार विनय पूर्वक निवेदन कर विप्र राज मंदिरसे चले गये। किंतु विप्रोंके विनय करने पर भी महाराजके कोपकी शांति न हुई। विप्रोंके चलेजाने पर उन्हें फिर नंदिग्रामके अपमानका स्मरण आया। उनके शरीरमे फिर क्रोधकी ज्वाला छटकने लगी।

वे विचारने लगें कि ब्राह्मण किसी प्रकार दोषी नही वन पाये है। नंदिग्रामके ब्राह्मण वडे चालाक मालूम पडते है।अस्तु मैं अब उनके पास ऐसी आज्ञा भेजता हूं। जिसका वे पालन ही

न कर सकैं। तथा क्षण एक ऐसा विचार महाराजने शीघ्रही एक दूत वुलाया। और उसै यह आज्ञा दी कि तुम अभी नंदिग्राम जाओ। और वहांके व्राह्मणोंसे कहो कि महाराजने यह आज्ञा दी है कि नंदिग्रामके ब्राह्मण एक कूष्मांड (पेठा) मेरे पास लावें। वह कूष्मांड घड़ामें भीतर हो। और घड़ाकी बरावर हो। कमती वढ़ती न हो। यदि वे इस आज्ञाका पालन न करै तो नंदिग्रामको छोड़दें।

इधर महाराजकी आज्ञा पाकर दूत तो नंदिग्रामकी ओर रवाना हुवा। उधर जव ब्राह्मणोंको वालूकी रस्सी महाराजके यहांसे न मिली तो अपना विघ्न टलजानेसे वे खूब आनंदसे नंदिग्राममें रहनेलगे। और वारवार कुमार अभयकी बुद्धिकी तारीफ करने लगे। किंतु जिससमय दूत फिरसे नंदिग्राम पहुंचा। और ज्यों ही उसने व्राह्मणोंके सामने महाराजकी आज्ञा कहनी प्रारंभ की। सुनते ही व्राह्मण घवड़ागये। महा-राजका आज्ञाके भयसे उनका शरीर थरथर कांपने लगा। वे अपने मनमें विचारने लगे। हे ईश्वर! यह वलाय फिर कहां-से आ टूटी। हम तो अभी महाराजसे अपना अपराध क्षमा कराकर आये है। क्या हमारे इतने विनय भावसे भी महा-राजका हृदय दयासे न पसीजा? अव हम अपने वचनेका क्या और कैसा उपाय करै? । तथा क्षण एक ऐसा विचार कर वे कुमारके सामने इसप्रकार रोदन पूर्वक चिल्लाने लगे।

हे वीरोंके शिरताज कुमार! अवके महाराजने हमारे ऊपर अति कठिन आज्ञा भेजी है। हे कृपानाथ! इसभयकर विघ्नसे हमारी शीघ्र रक्षा करो। हम ब्राह्मणोंके इसभयकर दुःखका जल्दी निवटेरा करो।हे दीनवंधो इसभयकर कष्टसे आपही हमारी रक्षा करसकते हैं। आपही हमारे दु.ख पर्वतके नाश करने में अखंड वज्र है। महनीय कुमार! लोकमें जिसप्रकार समुद्रकी गभीरता, मेरुपर्वतका अचलपना, देवजातिकी विद्वत्ता, सुर्यका प्रतापीपना, इद्रका स्वामीपना, चन्द्रमाकी मनोहरता, राजा रामचन्द्रकी न्यायपरायणता, कामदेवकी सुंदरता आदि वातें प्रसिद्ध है। उसीप्रकार आपकी सुजनता और विद्वत्ता प्रसिद्ध है! हे स्वामिन्। हमारे ऊपर प्रसन्न हूजिये। हमें धैर्य वधाइये। इससमय हम घोर चितासे व्यथित होरहे हैं। जीवननाथ! हम सवलोगोंका जीवन आपके ही आधार है। त्रिलोकमें आपके समान हमारा कोई वधु नहीं।

ब्राह्मणोंको इसप्रकार करुणापूर्वक रोदन करतेहुवे देख कुमार अभयका चित्त करुणासे गद्गद होगया। उन्होंने गभीरता पूर्वक ब्राह्मणोंसे कहा विप्रो! आप क्यों इस न--कुछ वातकेलिये इतना घवड़ाते है।मै अभी इसका उपाय करता हूं। जबतक मै यहा पर हू तव तक आप किसी प्रकारसे राजा की आज्ञाका भय न करें। तथा विप्रोंको इसप्रकार समझा कर कुमार अभयने एक घड़ा मगाया। और उसमें वेल साहित

कुष्माडफलको रखदिया । अनेक प्रयत्न करनेपर कई दिनवाद कूष्माड घड़ेके बरावर बढ़गया । और कुमारनें घड़े सहित ज्योंका त्यों उसै महाराजकी सेवामें भिजवा दिया।एव वे आनद से रहने लगे ।

महाराजनें जेसा कुष्मांड मागा था वैसा ही उनके पास पहुचगया।अवके कूष्माड देखकर तो महाराजके सोचका पारावार न रहा । वे वारवार सोचने लगे । है ! यहवात क्या है ? क्या नदिग्रामके ब्राह्मण ही इतने वुद्धिमान है ! या इनके पास कोई और ही मनुष्य बुद्धिमान रहता है ? नंदिग्रामके ब्राह्मणोंका तो इतना पाडित्य नहीं हो सकता। क्योंकि जवसे इनको राज्यकी ओरसे स्थिर आजीविका मिली है तवसे ये लोग निपट अज्ञानीं होगये है । इनके समझमें साधारणसे साधारण तो वात आती ही नहीं फिर इनके द्वारा मेरी बातोंका जबाव देना तो बहुतही कठिन वात है । जो जो काम मैने नंदिग्रामके ब्राह्मणोंके पास भेजे है । सबका जबाव मुझे बुद्धि पूर्वकही मिला है । इसलिये यही निश्चय होता है।नदिग्राममें अवश्य कोई असाधारण बुद्धिका धारक ब्राह्मणोंसे अन्यही मनुष्य है। जिस पांडित्यसे मेरी बातोंका जबाव दियागया है,न मालूम वह पांडित्य इद्रदेवका है! वा चन्द्रदेवका है ! अथवा सूर्यदेव या यक्षराज का है ? नंदिग्रामके ब्राह्मणोंका तो किसीप्रकार वैसा पांडित्य नहीं हो सकता । अस्तु यदि नंदिग्रामके ब्राह्मणही इतने बुद्धिमान है

तो अभी मे उनकी बुद्धिकी फिर परीक्षा किये लेता हू । तथा इसप्रकार क्षण एक अपने मनमें पक्का निश्चयकर महाराजने शीघ्रही कुछ शूरवीर योधाओंको बुलाया। और उन्हें यह आज्ञा दी कि तुमलोग अभी नंदिग्राम जाओ । और नदिग्राममें जो अधिक बुद्धिमान हो शीघ्र ही उसे तलाशकर आकर कहो । महाराजकी आज्ञा पाते ही योधाओंने शीघ्रही नदिग्रामकी ओर गमन करदिया । तथा नदिग्रामके किसी मनोहर वनमें वे अपनी भूखकी शातिके लिये ठहरगये ।

वह वन अति मनोहर वन था । उसमें जगह २ अनार नारगी संतरा जमनी ककोलि केला लौंग आदि उत्तमोत्तम फल वृक्षोंपर फलते थे । नींबू आदि सुगधित फलोंकी सुगंधिसे सदा वह वन व्याप्त रहता था । उसके ऊचे ऊचे वृक्षों पर कोयल आदि पक्षिगण अपने मनोहर शब्दोंसे पथिकोंके मन हरण करते थे । और केतकी वृक्षोंपर भ्रमर गुजार करते थे । इसलिये हमेशह नदिग्रामके वालक उस वनमें क्रीड़ार्थ आया जाया करते थे ।

रोजकी तरह उसदिन भी वालक क्रीडार्थ वनमें आये । दैवयोगसे उसदिन विप्रोंके वालकोंके साथ कुमार अभय भी थे । वे सवके सव हसते खेलते किसी जमनीके वृक्षपर चढ़ गये । और आनंदसे जामन फलोंको खाने लगे । वालकोंको इसप्रकार जमनीके पेड़ पर चढ़े राजसेवकोंने देखा । तथा वे

सब ' यह समझ कि हम इन वालकोंसे कुछ फल लेकर अपनी भूख शांत करैगे ' शीघ्र ही उस वृक्षकी ओर झुक पड़े।

इधर कुमार अभयने जब राजसेवकोंको अपनी ओर आते हुवे देखा तो वे तो अन्य वालकोंसे यह कहने लगे। देखो भाई ! ये राजसेवक अपनी ओर आरहे है। तुममें से कोई भी इनके साथ वातचीत न करै। जो कुछ जवाव सवाल करूगा सो मै ही इनके साथ करूगा। और उधर राजसेवक जमनीके वृक्षके नीचे चट आ कूदे। और वालकों से कुछ फलोंकोलिये उन्होंने प्रार्थना भी की।

राजसेवकोंकी फलोंकोलिये प्रार्थना सुन कुमार अभयने सोचा। यदि इनको योंही फल देदिये जायगे तो कुछ मजा न आवेगा। इनको छकाकर फल देना ठीक होगा। इस-लिये प्रार्थनाके वदलेमें उन्होंने यही जवाव दिया।

राजसेवको ! तुमने फल मागे सो ठीक है। जितने फलों की तुम्है इच्छा हो, उतने ही फल दे सकता हू। किंतु यह कहो। तुम ठंडे फल लेना चाहते हो या गरम ? क्योंकि मेरे पास फल दोनों तरहके है। कुमारके ऐसे विचित्र वचन सुन समस्त राजसेवक एक दूसरेका मुह ताकने लगे। उन्होंने विचारा कि क्या केवल गरम और केवल ठडे भी फल होते है ? हमैं तो आज तक यह वात सुननेमें नहीं आई कि फल गरम भी होते हैं। जितने फल हमने खाये है।

सब ठडे ही खाये है। और ठडे ही फल सुने है एक। दूसरे एक वृक्षपर गरम और ठडे दो प्रकारके फल हों यह सर्वथा विरुद्ध है। इसलिये कुमार जो दो प्रकारके फल कह रहे है। सो इनका कथन सर्वथा अयुक्त जान पड़ता है। तथा क्षण एक ऐसा दृढ़ निश्चय कर, और कुमारको अब उत्तर देना जरूर है, यह समझ उन्होंने कहा।

महोदय कुमार ! हमे आपके वचन अति प्रिय मालूम पड़ते है। कृपाकर लाइये हमे ठडे ही फल दीजिये।

राजसेवकोंके ये वचन सुन कुमारने कुछ फल तोड़े। और उन्हे आपसमें घिसकर वालूमें दूर पटक दिया। और कहदिया। देखो फल वे पड़े है। उठालो।

कुमारकी आज्ञा पाते ही जिधर फल पड़े थे। राजसेवक उसी ओर दौडे। ज्योंही उन्होंने वालूसे फल उठाकर फूंकना चाहा त्योंही कुमारने कहा। देखो ! फल हुशियारीसे फूकना। ये फल गरम है। जो विना विचारे फूका तो तुम्हारी सब डाढ़ी मूछ पजल जायगी।

कुमारके ऐसे वचन सुनते ही राजसेवक अपने मनमें बडे लज्जित हुवे। वे वार वार टकटकी लगाकर कुमारकी ओर देखने लगे। कुमारकी इस चतुरताको देखकर राजसेवकोंने निश्चय करलिया कि हो न हो यही सबमें चतुर जान पड़ता है ? महाराजकी वातोंका उत्तर भी इसीने दिया होगा ?

तथा कुमारकी रूपसपत्ति उन्होंने देख यह भी निश्चय कर लिया कि यह कोई अवश्य राजकुमार है । यह ब्राह्मण बालक नहीं होसकता क्योंकि जितने भर बालक यहांपर है । सबमें तेजस्वी प्रतापी एवं राजलक्षणोंसे मडित यही जान पड़ता है । उपस्थित बालकों में इतना तेज किसीके चेहरे पर नहीं जितना इस बालकके चेहरे पर दिखाई देता है । एवं किसीसे यह भी निश्चयकर कि यह कुमार महाराज श्रेणिकका पुत्र अभय कुमार है । राजसेवकोंने नंदिग्राम जानेका विचार वहीं समाप्त कर दिया । वे लज्जित एवं आनदित हो राजगृह की ओर ही लोट पडे । और महाराजको नमस्कार कर कुमार-अभयकी जो जो चेष्टा उन्होंने देखी थी सब कह सुनाई ।

सेवकों द्वारा कुमार अभयका समस्त वृत्तात सुन, उन्हें बुद्धिमान एव रूपवान भी निश्चयकर, महाराज श्रेणिकको अति प्रसन्नता हुई । मारे आनदके उनके नेत्रोंसे आनंदाश्रु झरने लगे । मुख कमलके समान विकासित होगया । तथा वे विचार करने लगे कि-मेरा अनुमान कदापि असत्य नहीं हो सकता । मुझे दृढ विश्वास था । नदिग्रामके ब्राह्मणोंकी बुद्धी ऐसी विशाल नहीं होसकती । जरूर उनके पास कोई न कोई चतुर मनुष्य होना चाहिये भला सिवाय कुमार अभयके इतनी बुद्धिकी तीक्ष्णता किसमें हो सकती है ? तथा क्षण एक ऐसा विचार कर उन्होंने कुमार अभयको बुलानेकेलिये कुछ राज

सेवकोंको बुलाया। और उनको आज्ञा दी कि तुम अभी नंदिग्राम जाओ। और कुमार अभयसे कहो कि महाराजने आपको बुलाया है। तथा यह भीं कहना कि आपकेलिये महाराजने यह भी आज्ञा दी है कि-कुमार न तो मार्गसे आवे। और न उन्मार्गसे आवे। न दिनमें आवे। न रातमें आवे। भूखे भी न आवे। अफरे पेट भी न आवे। न किसी सवारीमें आवे। और न पैदल आवे। किंतु राजगृह नगर शीघ्र ही आवे।

महाराज की आज्ञा पाते ही सेवक शीघ्र ही नंदिग्रामकी ओर चलदिये। एव कुमारके पास पहुच, उन्हें भक्ति पूर्वक नमस्कार कर महाराजका जो कुछ सदेशा था, सब कुमारको कह सुनाया।

अबके महाराजने कुमार अभयके ऊपर भी कठिन संदेशा अटकाया है। और उन्हे राजगृह नगर बुलाया है। यह समाचार सारे नदिग्राममें फैलगया। समाचार सुनते ही समस्त ब्राह्मण हाहाकार करने लगे। भाति भांतिके संकल्प विकल्पोंने उनके चित्तको अपना स्थान वना लिया। क्षणे क्षणे अव उनके मनमें यह चिंता घूमने लगी कि अव हम किसी रीतिसे वच नहीं सकते। अव तक जो हमारे जीवनकी रक्षा हुई है, सो इसी कुमारकी असीम कृपासे हुई है। यदि यह कुमार न होता तो अब तक कवका हमारा विध्वस होगया

होता। अवके राजाने कुमारको बुलाया यह बड़ा अनर्थ किया। हे ईश्वर ! हमने किस भवमें ऐसा प्रवल पाप किया था। जिसका फल हम दु:खही दुख भोग रहे है। ईश्वर ! अव तो हमारी रक्षाकर। तथा इसप्रक.र रोते विल्लाते हुवे वे समस्त ब्राह्मण कुमार अभयकी सेवामें गये। और उच्चैः स्वरसे उनके सामने रोने लगे। विप्रोंकी ऐसी दु खित अवस्था देख कुमारने कहा।

ब्राह्मणो ! आप क्यों इतना व्यर्थ खेद करते हो। राजाने जिस आज्ञासे मुझे वुलाया है। मै वैसे ही जाऊगा। मै आपलोगोंका पूरा पूरा खयाल रक्खूंगा। किसीतरहकी आप चिता न करैं। तथा विप्रोंको इसप्रकार धैर्य बंधाकर कुमारने शीघ्र ही एक रथ मगवाया। और उसके मध्यमें एक छींका बधवाकर तयार करवादिया।

जिससमय दिन समाप्त होगया। दिनका अत रातका प्रारभ संध्याकाल प्रकट होगया। कुमारने राजगृहकी ओर रथ हंकवा दिया। चलते समय रथका एक चक्र (पय्या) मार्गमें चलाया गया और दूसरा उन्मार्गमें। कुमारने चलते समय (हारिमंथक) चनाका भोजन किया। एव छीकें पर सवार हो कुमार अनेक विप्रोंके साथ आनंद पूर्वक राजगृह नगर जापहुचे।

महाराज श्रेणिकके पुत्र कुमार अभय राजगृह आगये।

यह समाचार सारे नगरमें फैलगया। समस्त पुरवासी लोग कुमारके दर्शनार्थ राजमार्ग पर एकात्रित होगये। नगरकी स्त्रिया कुमारको टकटकी लगाकर देखने लगीं। कुमारके आगमन उत्सवमें सारा नगर बाजोंसे गूजने लग गया। वंदीगण कुमा-रकी विरदावली बखानने लगे। और पुरवासी लोग कुमारको देख उनकी भाति भांति रीतिसे प्रशंसा करने लगे। इसप्रकार राजमार्गसे जातेहुवे, पुरवासी जनोंसे भलीभाति स्तुत, कुमार अभय राज मदिरके पास जापहुचे। रथसे उतर कुमारने अपने नाना इद्रदत्तके साथ राजसभामें प्रवेश किया।और सभामें महा राजको सिंहासन पर विराजमान देख अतिविनयसे नमस्कार किया। महाराजके चरण छूवे। एव प्रेम पूर्वक वचनालप करने लगे। कुमारके साथ नदिग्रामके विप्रभी थे। महाराजसे उनका अपराध क्षमा कराया। उन्हे अभयदान दिला संतुष्ट किया। एव उन्हें आनंद पूर्वक नदिग्राममें रहनेके लिये आज्ञा देदी। कुमारके इस विनयवर्तावसे एव लोकोत्तर चातुर्यसे महाराज श्रेणिकको अति प्रसन्नता हुई। कुमारकी विना तरीफ किये उनसे न रहागया। वे इसप्रकार कुमारकी प्रशसा करने लगे। हे कुमार ? जैसा ऊचे दर्जका पांडित्य आपमें मोजूद है। वैसा पाडित्य कहीं पर नहीं। महाभाग ! वकरा, वावडी, हाथी, काष्ठ, तेल, दूध, वालकी रस्सी, कूष्माड, रातदिन आदि रहित गमन, इत्यादि प्रश्नोंके जवावका सामर्थ्य आपकी बुद्धि

मे ही था। भला ऐसी विशाल बुद्धि अन्यमनुष्यमें कहांसे हो सकती है ? इत्यादि अनेक प्रकारसे कुमार अभयकी तारीफ कर महाराजने उनके साथ अधिक स्नेह जनाया। दोनों पिता पुत्र अनेक उत्तमोत्तम पुरुषोंकी कथा कहनेलगे। आपसमें वार्तालाप करते हुवे, एक स्थानमें स्थित, दोनों महानुभावोंने सूर्यचंद्रमाकी उपमाको धारण किया। महाराज श्रेणिकने सेठि इंद्रदत्तका भी अति सन्मान किया। एव मधुरभाषी, सोच विचार कर कार्य करनेवाले. कुमार और महाराज आनंद पूर्वक राजगृह नगरमें सुखानुभव करने लगे।

धर्मका महात्म्य अचिंतनीय है। क्योंकि इसकी कृपासे ससारमें जीवोंको उत्तमोत्तम बुद्धिकी प्राप्ति होती है। उत्तम सगति मिलती है। तेजस्वीपना, सन्मान. गंभीरता, आदि उत्तमोत्तम गुणोंकी प्राप्ति भी धर्मसे ही होती है। महाराज श्रेणिक एव कुमार अभयने पूर्व भवमें कोई अपूर्व धर्म संचय कियाथा। इसलिये उन्हे इस जन्ममें गभीरता, शूरता, उदारता, बुद्धिमत्ता, तेजस्वीपना, सन्मान, रूपवानपना आदि उत्तमोत्तम गुणोंकी प्राप्ति हुई। इसालिये उत्तम पुरुषोंको चहिये कि वे हर एक अवस्थामे इस परम प्रभावी धर्मका अवश्य आराधन करै।

इसप्रकार भविष्यत्कालमें होनेवाले श्रीपद्मनाभ तीर्थंकरके भवांतरके जीव महाराज श्रेणिकके चरित्रमें कुमार अभयका राजगृहमें आगमन वर्णन करनेवाला छठवा सर्ग समाप्त हुआ

सातवा सर्गः

ज्ञानरूपी भूषणके धारक, तीनोंलोकके मस्तकपर विराजमान श्री सिद्धभगवानको उनके गुणोंकी प्राप्त्यर्थ मै मस्तक झुकाकर नमस्कार करताहू---

अनंतर इसके महाराज श्रेणिकने रानी नंदश्रीको नदिग्रामसे वुला महादेवीका पद प्रदान किया—उसै पटरानी वनाया। तथा कुमार अभयको युवराज पद दिया। कुमार अभयका वुद्धिवल और तेजस्वीपना देख समस्तसामतोकी सम्मति पूर्वक महाराजने उन्हें सेनापतिका पदभी देदिया। एव बुद्धदेवके गुणोमें दत्ताचित्त महाराज श्रेणिकने किसी बौद्ध संन्यासी को गुरु वनाया। और उसकी आज्ञानुसार वे आनंद पूर्वक चतुरार्यमयतत्त्वकी पूजन करने लगे। तथा अपने राज्यको निष्कंटक राज्य वना कुमार अभयके साथ लोकोत्तर सुखका अनुभव करने लगे।

कुमार अभय आतिशय वुद्धिमान थे। वुद्धिपूर्वक राज्य कार्य करनेसे उनका चातुर्य और यश समस्त ससारमें फैलगया। कुमारकी न्यायपरायणता देख समस्त प्रजा मुक्तकठसे उनकी तारीफ करने लगी। एव कुमारकी नीति निपुणतासे राज्यमें किसीप्रकारकी अनीति नजर न आने लगी। मगध देशकी प्रजा आनंदपूर्वक रहने लगी।

मगधदेशमें महान सपात्तिका धारक कोई **सुभद्रदत्त** नामका सेठि निवास करता था । उसकी दो स्त्रियां थी । सुभद्रदत्तकी बड़ी स्त्रीका नाम **वसुदत्ता** था । और उसकी दूसरी स्त्री जो अतिशय रूपवती थी, व **सुमित्रा** थी । उनदोनोंमें वसुदत्ताके कोई संतान न थी । केवल छोटी स्त्री वसुमित्रा के एक बालक था ।

कदाचित घरमें विपुल धन रहने पर भी सेठि सुभद्रदत्त को धन कमानेकी चिंता हुई । वे शीघ्रही अपनी दोनों स्त्री और पुत्रके साथ विदेशको निकल पडे । अनेक देशोंमें घूमते घूमते वे राजगृह नगर आये । और वहांपर सुखपूर्वक धनका उपार्जन करने लगे । और आनदपूर्वक रहने लगे । दुर्दैवकी महिमा अपार है । ससारमें जो घोरसे घोर दुःखका सामना करना पड़ता है, इमीका कृपा है । इस निर्दयी दुर्दैव को किसी पर दया नहीं । सेठि सुभद्रदत्त आनद पूर्वक निवास करते थे । अचानक ही उन्हें कालने आदवाया । सुभद्रदत्त-को जबरन पुत्र स्त्रियोंसे स्नेह छोडना पड़ा । सुभद्रदत्तके मरने के बाद उनकी स्त्रियोंको अपार दु:ख हुवा । किंतु किया क्या जाय ? दुर्दैवके सामने किसीकी भी तीन पाच नही चलती ।

जब तक सेठि सुभद्रदत्त जीये तब तक तो वसुदत्ता एव वसुमित्रामें गाढ़ प्रेम रहा । सुभद्रदत्तके सामने यह विचार

स्वप्नमें भी नहीं आता था कि कभी इनदोनोंमें झगडा होगा। सेठिजीके मरणके उपरात ये उनकी बुरी तरह मिट्टी पलीत करैगी। पुत्रके ऊपर भी उनदोनोंका बरावर प्रेम था। पुत्रकी खास मा वसुमित्रा जिसप्रकार पुत्रपर अधिक प्रेम रखती थी। उससे भी अधिक वसुदत्ताका था। यहा तक कि समान रीतिसे पुत्रके लालन पालन करनेसे किसीको यह पता भी नही लगता था कि पुत्र वसुदत्ताका है ? या वसुमित्रा का ? बालकको भी कुछ पता नहीं लगता था। वह दोनोंको ही अपनी मा मानता था। किंतु ज्योंही सेठि सुभद्रदत्तका शरीरा त हुवा वसुदत्ता और वसुमित्रामें झगडा होना प्रारंभ होगया। कभी तो उन दोनोंकी लडाई धनके लिये होने लगी। और कभी पुत्रके लिये। वसुदत्ता तो यह कहती थी यह पुत्र मेरा है। और उसकी बातको काटकर वसुमित्रा यह कहती थी यह पुत्र मेरा है। गावके सेठि साहूकारोंने भी यह बात सुनी। वे सेठि सुभद्रदत्तकी आवरूका खयाल कर उनके घर आये। सेठि साहूकारोंने बहुत कुछ उन स्त्रियोको समझाया। उन्हें सेठि सुभद्रदत्तकी प्रतिष्ठाका भी स्मरण दिलाया। किंतु उन मूर्खा स्त्रियोंके ध्यानपर एक बात न चढ़ी। धन सबधी झगडा छोड वे पुत्रकेलिये अधिक झगड़ा करने लगीं। पुत्रका झगडा देख सेठि साहूकारोंकी नाकमें दम आगई। वे जरा भी इसबातका फैसला न करसके। कि वह पुत्र वास्तवमें किसका था ?

तथा इसरीतिसे उनदोनों स्त्रियोंमें दिनोंदिन द्वेष वृद्धि गत होता चलागया।

कदाचित् उनस्त्रियोंके मनमें न्याय सभामें जाकर, न्याय करानेकी इच्छा हुई—उन्हें इसप्रकार दरबारमें जाते देख फिर गांवके बडे बड़े मनुष्य सेठि सुभद्रदत्तके घर आये। उन्होंने फिर उन स्त्रियोंको इसरीतिसे समझाया---देखो, । तुम बडे घरानेकी स्त्रियां हो। तुम्हारा कुल उत्तम है। तुम्हें इस न कुछ बातके लिये दरबारमें जाना नहीं चाहिये । यदि तुम दरबारमें विना विचारे चली जाओगी। तो समस्तलोक तुम्हारी निंदा करैगा। तुम्है निर्लज्ज कहैगा । एवं तुम्है पीछे वहुत कुछ पछिताना पडेगा, किंतु उन मूर्खा स्त्रियोंने एक न मानी। निर्लज्ज हो वे सीधीं दरबारको चलदीं। और महा-राजके सामने जो कुछ उन्हें कहना था, साफ साफ कह सुनाया।

स्त्रियोंकी यह विचित्र वात सुन महाराज श्रेणिक चकित रहगये। उन्होंने वास्तवमें यह पुत्र किसका है? इसवातके जाननेके लिये अनेक उपाय सोचे किं तु कोई उपाय सफल न जान पड़ा। उन्होंने स्त्रियोंको वहुत कुछ समझाया। लड़ाई करनेकेलिये भी रोका। कि तु उनस्त्रियोंने एक न मानी। महा-राजने जब स्त्रियोंका हठ विशेष देखा। समझानेपर भी जब वे न समझीं। तब उन्होंने शीघ्र ही युवराज कुमार अभयको वुलाया

और जो हकीकत उनास्त्रियोंकी थी सारी कह सुनाई।

महाराजके मुखसे स्त्रियोंका यह विचित्र विवाद सुन कुमारको भी दाततले उगली दवानी पड़ी। किंतु उपायसे अति कठिन भी काम अतिसरल होजाता है यह समझ उन्होंने उपाय करना प्रारभ करदिया।

कुमारने उनदोंनों स्त्रियोंको अपने पास वुलाया। प्रिय वचन कह उन्हें अधिक समझाने लगे। किंतु वह पुत्र वास्तवमें किसका था, स्त्रियोंने पता न लगने दिया। किसीसमय कुमारने एक एक कर उन्हें एकातमें भी वुलाकर पूछा। किंतु वे दोनों स्त्रियां पुत्रको अपना अपना ही वतलाती रहीं। विवाद शातिकेलिये कुमारने और भी अनेक उपाय किये। किंतु फल कुछभी नहीं निकला। अंतमें उनको अधिक गुस्सा आगई। उन्होंने वालक शीघ्र ही जमीनपर रखवालिया। और अपने हाथमें एक तलवार ले, उसे वालकके पेटपर रख कुमारने स्त्रियोंसे कहा। स्त्रियो! आप घवड़ाये न, मैं अभी इसवालकके दो टुकडेकर आपका फैसला किये देता हू। आप एक एक टुकडा ले अपने घर चलीं जाय।

मातृस्नेहसे वढ़कर दुनियामें स्नेह नहीं। चाहै पुत्र कुपुत्र होजाय, माता कुमाता नहीं होती। पुत्र भले ही उनकेलिये किसीकामका न हो। माता कभीभी उसका अनिष्ट चिंतन नहीं करती। सदा माताका विचार यहीं रहता है। चाहे मेरा पुत्र

कुछभी न करै। किंतु मेरी आखोंके सामने प्रतिसमय बना रहे। इसलिये जिससमय सेठानी वसुमित्राने कुमार अभयके वचन सुने। मारे भयके उसका शरीर थर्राने लगा। पुत्रके टुकड़े सुन उसके नेत्रोंसे अविरल अश्रुओंकी धारा वहने लगी। उसने शीघ्रही विनय पूर्वक कुमारसे कहा----

महाभाग कुमार! इसदीन वालकके आप टुकड़े न करै। आप यह वालक वसुदत्ताको देदें। यह वालक मेरा नहीं वसुदत्ताका ही है। वसुदत्ताका इसमें अधिक स्नेह है। वालककी खास माता वसुमित्राके ऐसे वचन सुन कुमारने चट जान लिया कि इसवालककी मा वसुमित्रा ही है। तथा समस्त-मनुष्योंके सामने यह वात प्रकट कर कुमारने सेठीनी वसु-मित्राको वालक देदिया। और वसुदत्ताको राज्यसे निकाल डोडी किया। इसप्रकार अपने बुद्धिवलसे नीति पूर्वक राज्यकरने वाले कुमार अभयने महाराज श्रेणिकका राज्य धर्मराज्य वनादिया। और कुमार आनद पूर्वक रहने लगे।

इसी अवसरमे अतिशय सच्चारित्र कोई **वलभद्र** नामका गृहस्थ अयोध्यामें निवास करता था। उसकी स्त्री जोकि अति-शय रूपवती चंद्रमुखी तन्वंगी कठिनस्तनी पिकवैनी अति मनोहरा थी, **भद्रा** थी। उसी नगरमें अतिशय धनवान एक **वसंत** नामका क्षत्रियभी रहता था। उसकी स्त्रीका नाम **माधवी** था। किंतु वह कुरूपा अधिक थी। कदाचित् भद्रा अपने

घरकी छतपर खडी थी। दैवयोगसे वसंतकी दृष्टि भद्रापर पडी। भद्राकी खुवसूरती देख वसत पागलसा होगया। सारी हुशियारी उसको किनारा कर गई। कामदेवके तीक्ष्ण बांण वसतके शरीरको भेदन करने लगगये। उसका दिनों-दिन काम जनित संताप बढ़ताही चलागया। दाहकी शांति केलिये उसने चदनरस चंद्राकिरण कमल कपूर उत्तम शीतल जल अदि अनेक पदार्थोंका सेवन किया। किं तु उसके दाहकी शांति किसीकदर कम न हुई। किंतु जैसे अग्निपर घृत डालनसे उसकी ज्वाला और भी अधिक वढती जाती है। उसीप्रकार शीतलवस्त्र फूलमाला मलयचंदन आदिसे उस उल्लवसतका मन्मथसताप दिनोंदिन वढता ही चलागया। भद्राके विना उसै समस्त ससार शून्य ही शून्य प्रतीत होनेलगा। सोते उठते वैठते उसके मुखसे भद्रा शव्दही निकलने लगा। भद्राकी चिंतामें सारी भूख प्यास वसंतकी एक ओर किनारा कर गई।

कदाचित् अवसर पाकर वसतने एक चतुर दूती वुलाई। और सारी अपनी आत्मकहानी उसै कह सुनाई। एव शीघ्र ही उसै अपना संदेशा कह भद्राके पास भेजादिया। वसत की आज्ञानुसार दूती शीघ्र ही भद्राके पास गई। भद्राको देख दूतीने उसके साथ प्रवल हितैषिता दिखाई। एवं मधुर शव्दों में उसै इसप्रकार समझाने लगी।

भद्रे! संसारमे तू रमणी रत्न है। तेरे समान रूपवती

स्त्री दूसरी नहीं। किंतु खेद है। जैसी तू रूपवती गुणवती चतुरा है। वैसा ही तेरा पति कुरूपवान निर्गुण एवं मूर्ख किसान है। प्यारी बहिन! अतिकुरूप बलभद्रके साथ, मैं तेरा संयोग अच्छा नहीं समझती। मुझे विश्वास है कि बलभद्र सरीखे कुरूप पुरुषसे तुझे कदापि संतोष नहीं होता होगा? तुम सरीखी सुंदर किसी दूसरी स्त्रीका यदि इतना बदसूरत पति होता तो वह कदापि उसके साथ नहीं रहती। उसे सर्वथा छोड़कर चली जाती। न मालूम तू क्यों इसके साथ अनेक क्लेश भोगती हुई रहती है? दूतीकी ऐसी मीठी बोलीने भद्राके चित्तपर पक्का असर डालदिया। भोली भद्रा दूतीकी बातोंमें आगई। वह दूतीसे कहने लगी।

बहिन! मैं क्या करूं? स्वामी तो मुझे ऐसा ही मिला है। मेरे भाग्यमें तो यही पति था। मुझे रूपवान पति मिलता कहांसे? तथा ऐसा कह भद्राका मुख भी कुछ म्लान होगया।

भद्राकी ऐसी दशा देख दूती मनमें अति प्रसन्न हुई। किंतु अपनी प्रसन्नता प्रगट न कर वह भद्राको इसप्रकार समझाने लगी।

भद्रे बहिन! तू क्यों इतना व्यर्थ विषाद करती है। इसी नगरीमें एक वसंत नामका क्षत्रिय पुरुष निवास करता है। वसंत अति रूपवान गुणवान एवं धनवान है। वह तेरे ऊपर

मोहित भी है । तू उसके साथ आनदसे भोगोंको भोग । तुझ सरीखी रूपवतीकेलिये संसारमें कोई चीज दुर्लभ नहीं ।

दूतीके ऐसे वचन सुन तो भद्राके मुहमें पानी आगया । उस मुर्खाने यह तो समझा नहीं कि इस दुष्टवर्ताव- से क्या हानिया होंगी । वह शीघ्र ही वसतके घर जानेकेलिये राजी होगई । तथा दाव पा किसीदिन वसंतके घर चली भी गई । और उसके साथ भोग विलास करने शुरू करदिये ।

व्यसनका चसका बुरा होता है । भद्राको व्यसनका चसका बुरा पडगया । वह अपने भोले पतिको बातोंमें लगा प्रतिदिन वसतके घर जाने लगी । वसत पर अभिमान कर उसने अपने पतिका अपमान करना भी प्रारम्भ कर दिया । अनेकप्रकारकी कलह करनी भी उसने घरमें शुरू कर दीं । और अपने सामने किसीको वह बडा भी नहीं समझने लगी ।

भद्राका पति बलभद्र किसान था । कदाचित् भद्रा को कार्यवश खेत पर जाना पड़ा । दैवसे भद्राकी भैंट मुनि गुण सागरसे मार्गमें होगई । मुनि गुणसागरको अतिरूपवान्, सूर्यके समान तेजस्वी, युवा, एव अनेकगुणोंके भडार देख भद्रा कामसे व्याकुल हो गई । कामके गाढ़ नशेमें आकर उसको यह भी न सूझा कि यह कौन महात्मा है ? वह शीघ्र ही कामसे व्याकुल हो मुनिराजके सामने बैठि गई । और कामजन्य विकारोंको प्रकट करती हुई इसप्रकार कहने लगी ।

साधो ! यह तो आपका उत्तमरूप ? और यह अवस्था ? एवं सौंदर्य ? आपको इस अवस्थामें किसने दीक्षाकी शिक्षा दे दी ! इससमय आप क्यों यह शरीरसुखानेवाला तप कर रहे है । इससमय तप करनेसे सिवाय शरीर सूखनेके दूसरा कोई फायदा नहिं हो सकता।इससमय तो आपको इंद्रिय संबंधी भोग भोगने चाहिये । जिस मनुष्यने संसारमें जन्म धारण कर भोग विलास नहिं किया । उसने कुछ भी नहीं किया। मुने ! यदि आप मोक्षको जानेकेलिये तप ही करना चाहते है तो कृपाकर वृद्ध अवस्थामें करना ? इससमय आपकी वारी उम्र है। आपका मुख चंद्रमाके समान उज्ज्वल एवं मनोहर है। आपका रूप भी अधिक उत्तम है। इसलिये आप की सेवामें यही मेरी सविनय प्रार्थना है कि आप किसी उत्तम रमणीके साथ उत्तमोत्तम भोग भोगें। और आनन्दपूर्वक किसी नगरमें निवास करै ।

मुनिराज गुणसागर तो अवधिज्ञानके धारक थे । भला वे ऐसी निकृष्ट भद्रा सरीखी स्त्रियोंकी वातोंमें कव आने वाले थे । जिससमय मुनिराजने भद्राके वचन सुने । शीघ्र ही उन्हों ने भद्राके मनके भावको पहिचान लिया । एव वे उसै आसन्न भव्या समझ इसप्रकार उपदेश देने लगे—

वाले ! तू व्यर्थ रागके उत्पन्न करनेवाले कामजन्य विकारोंको मत कर । क्या इसप्रकारके दुष्ट विकारोंसे तू

अपना परम पावन शीलवृत नष्ट करना चाहती है ? क्या तू इसवातको नहीं जानती शील नष्ट करनेसे किन किन पापों की उत्पत्ति होती है ? शीलके न धारण करनेसे किन २ घोर दुःखोका सामना करना पड़ता है ? भद्रे ! जो जीव अपने शील रूपी भूषणकी रक्षा नहीं करते वे अनेक पापों का उपार्जन करते है । उन्हे नरक आदि दुर्गतियों में जाना पडता है । एव वहा पर कठिनसे कठिन दुःख भोगने पडते है । तथा भद्रे ! शीलके न धारण करनेसे ससारमें भयंकर वेदनाओंका सामना करना पडता है । कुशीली जीव अज्ञानी जीव कहे जाते है । उनके कुल नष्ट होजाते है । चारो ओर उनकी अपकीर्ति फैल जाती है । और अपकीर्ति फैलने पर शोक सताप आदि व्यथा भी उन्हें सहनी पडती है । इसलिये यदि तू ससारमें सुख चाहती है । और तुझे रमणीरत्न वननेकी अभिलाषा है तो तू शीघ्र ही इस खोटे शीलका परित्याग करदे। उत्तम शीलवृतमें ही अपनी वुद्धि स्थिर कर । अपने चचल चित्त को कुमार्गसे हटाकर सुमार्गमें ला । एव अपने पवित्र पतिवृतधर्मका पालन कर । वाले ! जो स्त्रियां ससारमें भलेप्रकार अपने पतिवृतधर्मकी रक्षा करती है । उनकेलिये अति कठिन वात भी सर्वथा सरल हो जाती हैं । अधिक क्या कहा जाय पतिव्रतधर्म पालन करनेवाली स्त्रियोंका ससार भी सर्वथा छूट जाता है । उन्हें किसीप्रकारकी दुखोंतका सामना नहीं करना पड़ता ।

महामुनि गुणसागरके उपदेशका भद्राके चित्तपर पूरा प्रभाव पड़ गया । कुछसमय पहले जो भद्राका चित्त कुशील-में फसा हुआ था, वह शील वृतकी ओर लहराने लगा। मुनिराज-के वचन सुननेसे भद्राका चित्त मारे आनंदके व्याप्त होगया । शरीरमें रोमाच खड़े होगये । एव गद्गद कठसे उसने मुनिराज से निवेदन किया ।

प्रभो ! मेरे चित्तकी वृत्ति कुशीलकी ओर झुकी हुई है यह वात आपको कैसे मालूम होगई ? किसी ने आपसे कहा भी नहीं ? कृपाकर इस दासी पर अनुग्रहकर शीघ्र वताइये ।

भद्राके ऐसे वचन सुन मुनिराजने उत्तर दिया । भद्रे ! तेरे चरित्रके विषयमे मुझसे किसीने भी कुछ नही कहा । किंतु मेरी अत्माके अदर ऐसा उत्तम ज्ञान विराजमान है । जिस ज्ञानके वलसे मैंने तेरे मनका अभिप्राय समझ लिया है । ज्ञानकी शक्ति अपूर्व है इसवातमे तुझे जरा भी सदेह नहिं करना चाहिये ।

मुनिराजके ज्ञानकी अपूर्व महिमा सुन भद्राको अति आनद हुवा । मुनिराजकी अज्ञानुसार जिस शीलसे देवेंद्र नरेंद्र आदि उत्तमोत्तम पद प्राप्त होते है वह शीलवृत शीघ्रही उसने धारण करलिया । एव समस्त मुनियोंमें उत्तम, जीवोंको कल्याण मार्गका उपदेश देनेवाले, मुनिराज गुणसागरको नमस्कार कर वह शीघ्र ही अपने घर आगई ।

उत्तम उपदेशका फल भी उत्तम ही होता है। वसतकी वातोंमे फस कर जो भद्राने वसतको अपनालिया था। और अपने पतिका अनादर करना प्रारम्भ कर दिया था। भद्राकी वह प्रकृति अव न रही। पापसे भयभीत हो भद्राने वसतका अव सर्वथा सबध तोड़ दिया। उसदिनसे वसत उसकी दृष्टिमे कालाभुजग सरीखा झलकने लगा। अव वह अपने पतिकी तन मनसे सेवा करने लगी। अपने स्वामीके साथ स्नेह पूर्वक वर्ताव करने लगी। भद्राका जैनधर्म पर भी अगाध प्रेम होगया। अपने सुखका महान कारण जैनधर्म ही उसे जान पडने लगा। तथा जैनधर्मपर उसकी यहा तक गाढ भक्ति होगई कि उसने अपने पतिको भी जैनी बना लिया। एव वे दोनों दपती अनदपूर्वक अयोध्या नगरीमें रहने लगे।

भद्राने जिसदिनसे शीलव्रतको धारण कर लिया उसदिन-से वह वसतके घर झांकी तक नहीं। इसरीतिसे जव कई दिन वीत गये वसतको विना भद्राके बडा दुःख हुवा। वह विचारने लगा--भद्रा अव मेरे घर क्यों नहिं आती ? जो वह कहती थी सो ही मै करता था। भैनें कोई उसका अपराध भी तो नहि किया ? तथा क्षण एक ऐसा विचार कर उसने भद्राके समीप एक दूती भेजी। दूतीके द्वारा वसतने बहुत कुछ भद्रा को लोभ दिखाये। अनेकप्रकारके अनुनय भी किये। किंतु भद्राने दूतीकी वात तक भी न सुनी। मोका पाकर वसत भी

भद्राके पास आया। किंतु भद्राने वसंतको भी यह जवाव दे दिया कि मै अब शीलवृत धारण कर चुकी। अपने स्वामी को छोड़कर मैं पर पुरुषकी प्रतिज्ञा ले चुकी। अब मै कदापि तेरे साथ विषयभोग नहीं कर सकती। भद्राकी यह बात सुन जब वसत उसे धमकी देने लगा। और उसके साथ व्याभिचारार्थ कड़ाई करने लगा। तब भद्राने साफ शब्दोंमें यह जवाब दे दिया। रे वसत! तु पापी नीच नराधम वृतहीन है। मेरे चाहे प्राण भी चले जाओ। मै अब तेरा मुह तक न देखूंगी। अब तू मेरेलिये अभिलाषा छोड़। अपनी स्त्रीमें संतोष कर।

भद्राको इसप्रकार अपने व्रतमें दृढ देख वसतकी कुछ भी पेश न चली। वह पागल सरीखा होगया। वह मूर्ख विचारने लगा भद्राको यह व्रत किसने देदिया? अब मैं भद्रा को अपनी आज्ञा कारिणी कैसे वनाऊ? क्या इसे हठसे दासी वनाऊ? या किसी मंत्रसे वनाऊ? क्या करू?

पापी वसत ऐसा अधम विचार ही कर रहा था कि अचानक ही एक **महाभीम** नामका मंत्रवादी अयोध्यामें आ पहुंचा। सारे नगरमें मंत्रवादीका हल्ला होगया। वसंतके कान तक भी यह बात पहुची। मंत्रवादीका आगमन सुन बसंत शीघ्र ही उसके पास आया। और स्नान भोजन आदिसे वसंतने उसकी यथेष्ट सेवा की। जब कई दिन इसीप्रकार सेवा करते वीतगये। और मंत्रवादीको जब

अपने ऊपर वसतने प्रसन्न देखा तो उसने अपना सारा हाल मत्रवादीको कह सुनाया। और विनयसे बहुरूपिणी विद्याके लिये याचना भी की।

वसतकी मत्रकेलिये प्रार्थना सुन एवं उसकी सेवासे संतुष्ट होकर मत्रवादी महाभीमने उसे विधिपूर्वक मंत्र देदिया। तथा मत्र लेकर वसत किसी वनमें चलागया। और उसे सिद्ध करने लगा। दैवयोगसे अनेक दिन वाद वसतको मत्र सिद्ध होगया। अव मत्रवलसे वह छोटे बड़े शरीर धारण करने लगा। एवं अनेक प्रकारकी चेष्टा करनी भी उस ने प्रारभ करदी।

कदाचित् उसके शिर पर फिर भद्राका भूत सवार होगया। किसी दिन वह अचानक ही मुर्गाका रूप धारणकर वलभद्र के घरके पास चिल्लाने लगा। मुर्गाकी आवाजसे यह समझ कि सवेरा होगया अपने पशुओंको लेकर वलभद्र तो अपने खेतकी ओर रवाना होगया। और उस पापी वसंतने मुर्गाका रूप वदल शीघ्र ही वलभद्रका रूप धारण किया। और धृष्टता पूर्वक वलभद्रके घरमें घुस आया।

सुशीला भद्राकी दृष्टि नकली वलभद्र पर पडी। चाल ढ़ालसे उसे चट मालूम होगई कि यह मेरा पति वलभद्र नहीं। तथा उसने गालीं देनी भी शुरू करदी। किंतु उस नकली वलभद्रने कुछ भी परवा न की। वह निर्लज्ज किवाड़

बढ़कर जबरन उसके घरमें रूर पड़ा। नकली वलभद्रका इस प्रकार धृष्टतापूर्वक वर्ताव देख भद्रा चिल्लाने लगी । नकली वलभद्र एव भद्राका झगड़ा भी बड़े जोर शोरसे होने लगा। झगड़ेकी आवाज सुन पाड़पड़ोसी सब भद्राके घर आकर इकट्ठे होगये। असली वलभद्रके कान तक भी यह बात पहुंची वह भी दौड़ता २ शीघ्र अपने घर आया। और अपने समान दूसरा वलभद्र देख आपसमें झगड़ा करने लगा। दोनों वलभद्रोंकी चाल ढ़ाल रूप रंग देख पाड़पाड़ोसी मनुष्योंके होश उड़गये। सबके सब दांतों तले उगली दबाने लगे। तथा अनेक उपाय करने पर भी उनको जरा भी इसबातका पता न लगा कि इन दोनामें असली वलभद्र कौन है ?।

जब पुरवासी मनुष्योंसे असली वलभद्रका फैसला न होसका तो वे दोनो वलभद्रोंको लेकर राजगृह कुमार अभय की शरणमें आये। और उनके सामने सब समाचार निवेदन कर दोनो वलभद्रोंको खड़ा करदिया।

दोनों वलभद्रोंकी शकल रूप रग एकसा देख कुमार अभय भी चकड़ाने लगे। असली वलभद्रके जाननेकेलिये उन्होने अनेक उपाय किये। किंतु जरा भी उन्हें असली वल भद्रका पता न लगा। अतमें सोचते सोचते उनके ध्यानमें एक विचार आया। दोनों वलभद्रोंको बुला उन्हें शीघ्र ही एक कोठेमें बद करदिया। और भद्राको सभामें बुलाकर एव एक तूबी अपने सामने रखकर दोनों वलभद्रोंसे कहा।

सुनो भाई दोनों बलभद्रो ! तुम दोनोंमेंसे कोठेके छिद्र से न निकल कर जो इस तूंबेके छिद्रसे निकलेगा । वही असली बलभद्र समझा जायगा । और उसे ही भद्रा मिलेगी।

कुमारकी यह बात सुन असली बलभद्रको तो बडा दु ख हुवा। उसे विश्वास होगया कि भद्रा अब मुझे नहीं मिल सकती। क्योंकि मै तूंबेके छेदसे निकल नहीं सकता। किंतु जो नकली बलभद्र था कुमारके वचनसे मारे हर्षके उसका शरीर रोमाचित होगया। उसने चट तूंबेके छिद्रसे निकल आनंद पूर्वक भद्राका हाथ पकडलिया।

नकली बलभद्रकी यह दशा देख सभाभवनमें बडे जोर शोरसे हल्ला होगया। सबके मुखसे येही शब्द निकलने लगे— कि यही नकली बलभद्र है। असली बलभद्र तो कोठरीके भीतर बैठा है। एव अपनी विचित्र बुद्धिसे कुमार अभयने नकली बलभद्रको मार पीटकर नगरसे बाहिर भगा दिया। और असली बलभद्रको कोठेसे बाहर निकाल एव उसे भद्रा देकर अयोध्या जानेकी आज्ञा दी।

इसप्रकार पक्षपात रहित न्याय करनेसे कुमार अभय की चारो ओर कीर्ति फैलगई। उनकी न्याय परायणता देख समस्त प्रजा मुक्त कठसे तारीफ करने लगी। एव कुमार अभय आनदसे राजगृहमें रहने लगे।

किसी समय महाराज श्रेणिककी अगूठी किसी कूवेमें

गिरगई। कूवेमें अगूठी गिरी देख महाराजने शीघ्रही कुमार अभयको बुलाया। और यह आज्ञादी।

प्रिय कुमार! अगूठी सूखे कूवेमे गिरगई है। विना किसी वांस आदि की सहायताके शीघ्र अगूठी निकालकर लाओ।

महाराज की आज्ञा पाते ही कुमार शीघ्र ही कूवेके पास गये। कहींसे गोवर मगाकर कुमारने कूवेमें गोवर डलवा दिया। जिससमय गोवर सूखगया कूवेको मुह तक पानीसे भरवादिया। ज्योंही वहता २ गोवर कूवेके मुंह तक आया गोवरमें लिपटी अंगूठी भी कूवेके मुहपर आगई। तथा उस अगूठीको लेकर कुमारने महाराजकी सेवामें ला हाजिर की। कुमारका वह विचित्र चातुर्य देख महाराज अति प्रसन्न हुवे। कुमारका अद्भुत चातुर्य देख सब लोग कुमारके चातुर्यकी प्रशंसा करने लगे। अनेकगुणोंसे शोभित कुमार अभयको चतुर जान महराज श्रेणिक भी कुमारका पूरा पूरा सन्मान करने लगे। और उनको बात बातमें कुमार अभयकी तारीफ करनी पड़ी। इसप्रकार अनेकप्रकारके नवीन २ काम करने का कौतूहली, महाराज श्रेणिक आदि उत्तमोत्तम पुरुषोंद्वारा मान्य, नीतिमार्गपर चलने वाला, समस्त दोषोंकर रहित, वृहस्पातिके समान प्रजाको शिक्षा देने वाला, अतिशय आनंद युक्त, अपने बुद्धिवलसे अति कठिन कार्यको भी तुरंत

करनेवाला, सूर्यके समान तेजस्वी, राज लक्षणोंसे विराजमान, युवराज अभयकुमार सबको आनन्द देने लगे।

ससारमें जीवोंको यदि सुखप्रदानकरनेवाली है तो यह उत्तम बुद्धि ही है। क्योंकि इसीके कृपासे मनुष्य सवोंका शिरोमणि वनजाता है। उत्तम बुद्धिवाले मनुष्यका राजा भी पूरा २ सन्मान और आदर करते है। बड़े २ सज्जन पुरुष उस की विनयभावसे सेवा करने लगजाते हैं। तथा उत्तम बुद्धिकी कृपासे अच्छे २ नीति आदि गुण भी उस मनुष्यको अपना स्थान वनालेते है।

इसप्रकार भविष्यतकालमें होनेवाले श्री पद्मनाभ तीर्थंकरके भवातरके जीव महाराज श्रेणिकके पुत्र अभय कुमारकी उत्तम बुद्धिका वर्णन करनेवाला सातवा सर्ग समाप्त हुवा।

आठवा सर्ग

अपने पवित्र ज्ञानसे समस्त जीवोंका अज्ञानांधकार मिटाने वाले, निर्मल ज्ञानके दाता, मुनियोंमें उत्तम मुनि श्री उपाध्याय परमेष्ठीको अग उपाग सहित समस्त ध्यानकी सिद्धिके लिये मै मस्तक झुकाकर नमस्कार करता हूं।

उससमय अयोध्यपुरीमें कोई भरत नामका पुरुष निवास करता था। भरत चित्रकलामें अतिनिपुण था। कदाचित उसके मनमें यह अभिलाषा हुई कि यद्यपि मैं अच्छी तरह चित्रकला जानता हू किंतु कोई ऐसा उपाय होना चाहिये कि लेखनी हाथमें लेते ही आपसे आप पट पर चित्र खिंच जावे। मुझे विशेष परिश्रम करना न पड़े। उससमय उसे और तो कोई तरकीब न सूझी। अपनी अभिलाषा की पूर्तिकेलिये उसने पद्मावती देवीकी आराधना करनी शुरू कर दी। दैवयोगसे कुछ दिन बाद देवी भरत पर प्रसन्न होगई। और उसने प्रत्यक्ष हो भरतसे कहा—

भक्त भरत ! मै तेरे ऊपर प्रसन्न हू। जिस वरकी तुझे इच्छा हो माग मै देने के लिये तयार हू। देवीके ऐसे वचन सुन भरत अति प्रसन्न हुआ। और विनय भावसे उसने इस प्रकार देवीसे निवदेन किया—

मातः—यदि तू मुझपर प्रसन्न है। और मुझे वर देना चाहती है। तो मुझे यही वरदे जिससमय मै लेखनी हाथमें लेकर बैठू। उससमय आपसे आप मनोहर चित्र, पटपर अंकित होजाय। मुझे किसीप्रकारका परिश्रम न उठाना पडे।

देवीने भरतका निवेदन स्वीकार किया। तथा भरतको इसप्रकार अभिलषित वर दे देवी तो अंतर्लीन होगई। और भरत अपने वरकी परीक्षार्थ किसी एकांत स्थानमें बैठगया।

ज्योंही उसने पट सामने रख लेखनी हाथमें ली । त्योंही विना परिश्रमके आपसे आप पट पर चित्र खिच गया । चित्रको अनायास पट पर अंकित देख भरतको अति प्रसन्नता हुई । अपने वरको सिद्ध समझ वह अयोध्यासे निकल पड़ा । एव अनेक देश पुर ग्रामोंमें अपने चित्रकौशलको दिखाता हुवा, काठिन भी चित्रोंको अनायास खींचता हुवा, अपने चित्रकर्म चातुर्यसे बड़े २ राजाओंको भी मोहित करता हुवा वह भरत आनद पूर्वक समस्त पृथ्वीमंडल पर घूमने लगा ।

अनेक पुर एव ग्रामोंसे शोभित, वन उपवनोंसे मंडित, भाति २ के धान्योंसे विराजित, एक **सिंधु देश** है । सिंधुदेशमें अनुपम राजधानी **विशाला** पुरी है । विशाला पुरीके स्वामी नीतिपूर्वक प्रजाका पालन करनवाले अनेक विद्वानोंसे मडित महाराज **चेटक** थे । महाराज चेटककी पट रानीका नाम सुभद्रा था । जोकि मृगनयनी चद्रमुखी कृशागी और कठिन एव उन्नतस्तनोंको धारण करने वाली थी । राजा चेटकके पटरानी सुभद्रासे उत्पन्न **मनोहरा १ मृगावती २ वसुप्रभा ३ प्रभावती ४ ज्येष्ठा ५ चेलना ६ चंदना ७** ये सात कन्यायें थीं । ये सातो ही कन्या अति मनोहर थीं। भलेप्रकार जैन धर्मकी भक्त थीं । स्त्रियोंके प्रधान २ गुणोंसे मंडित एव उत्तम थीं । सातों कन्याओंके रूप सौन्दर्य देख राजा चेटक एव महाराणी सुभद्रा अति प्रसन्न रहते थे ।

कन्यायेंभी भांति भांतिके कलाकौशलोंसे पिता माताको सदा संतुष्ट करतीं रहतीं थीं।

कदाचित् भ्रमण करता करता चित्रकार भरत इसी विशाला नगरीमें जा पहुंचा। उसने सातो कन्याओंका शीघ्र ही चित्र अंकित किया। एवं उसे महाराज चेटककी सभामें जा हाजिर किया। और महाराजके पूछे जाने पर उसने अपना परिचय भी दे दिया।

अति चतुरतासे पट पर अकित कन्याओंका चित्र देख राजा चेटक अति प्रसन्न हुये। भरतकी चित्रविषयक कारीगारी देख महाराज बार बार भरतकी प्रशंसा करने लगे। और उचित पारितोषिक दे राजा चेटकने भरतको पूर्णतया सन्मानित भी किया।

किसीसमय महाराजकी प्रसन्नताकेलिये भरतने उन सातो कन्याओंका चित्र राजद्वारमें अकित कर दिया। और उसै भाति भातिके रगोसे रगीत कर अति मनोहर वना दिया। चित्रकी सुघड़ाई देख समस्त नगर निवसी उस चित्रको देखने आने लगे। और उन सात कन्याओंका वैसा ही चित्र नगर निवासियोंने अपने अपने द्वारोंपर भी खींच लिया। एवं कन्याओंके चित्रसे अपनेको धन्य समझने लगे।

ससारमें जो लोग सात माता कहकर पुकारते है। और उनकी भक्तिभावसे पूजा करते है। सो अन्य कोई सात

माता नहीं। इन्हीं कन्याओंको बिना समझे सात माता मान रक्खा है। यह सातमाताका मिथ्यात्व उसीसमयसे जारी हुवा है। संसारमें अब भी कई स्थानोंपर यह मिथ्यात्व प्रचलित है।

सातो कन्याओंमें राजा चेटककी चार कन्या विवाहिता थीं। प्रथम कन्याका विवाह नाथबंशीय **कुंडलपुरके** स्वामी महाराज **सिद्धार्थके** साथ हुवा था। द्वितीय कन्या मृगावाती नाथवंशीय **वत्सदेशमें कौशांबी** पुरीके स्वामी महाराज **नाथके** साथ विवाही गई थीं। तथा तृतीय कन्या जो कि वसुप्रभा थी उसका विवाह राजा चेटकने सूर्यवशीय **दशार्ण** देशमें **हेरकच्छपुरके** स्वामी राजा **दशरथको** दी थी। एव चतुर्थ कन्या प्रभावतीका विवाह **कच्छदेशमें रोरुक** पुरके स्वामी महाराज **महातुरके** साथ होगया था। बांकी अभी तीन कन्या कुमारी हीं थीं।

कदाचित् ज्येष्ठाको आदि ले तीनों कन्या चित्रकार भरतके पास गई। और उन सबमें बड़ी कुमारी ज्येष्ठा ने हसी हसी में चित्रकारसे कहा।

भरत! हम जब तुझे उत्तम चित्रकार समझै। कुमारी चेलनाका जैसा रूप है वैसाही इसका वस्त्ररहित चित्र खींच कर तू हमै दिखावे—।

कूमारी चेलनाका वस्त्ररहित चित्र खींचना भरतकेलिये

कौंन वड़ी वात थी ? । ज्योंही उसने ज्येष्ठाके वचन सुने ! चट अपने सामने पट रखकर हाथमे लेखनी लेली । और पद्मावती देवीके प्रसादसे जैसा कुमारी चेलनाका रूप था । तथा जो जो उसके गुप्त अंगोंमें तिल आदि चिन्ह थे वे ज्योंके त्यों चित्र में आगये । तथा चौखटा वगेरहसे उस चित्रको अति मनोहर वनाकर, शीघ्रही उसने ज्येष्ठाको दे दिया ।

कुमारी चेलनाके चित्रको लेकर प्रथम तो ज्येष्ठा अति प्रसन्न हुई । किंतु ज्योंही उसकी दृष्टि गुप्तस्थानोंमें रहे हुये तिल आदि चिन्हो पर पड़ी । वह एक दम आश्चर्य सागर में डूव गई । अव मारामार उसके मनमें ये सकल्प विकल्प उठने लगे । कि वाह्य अंगोंके चिन्होंकी तो वात दूसरी है.इस चित्रकारको गुह्यअगोंके चिन्होंको कैसे पता लग गया ? न मालूम यह चित्रकार कैसा है ?

इधर ज्येष्ठातो ऐसा विचार कर रही थी उधर किसी जासूसको भी इस वातका पता लग गया । वह शीघ्र ही भगता भगता महाराजके पास गया । और चित्रकारकी सारी वातें महाराज चेटकसे जा पोई ।

जासूसके मुखसें यह वृत्तांत सुन राजा चेटक अति कुपित होगये । कुछ समय पहिले जो राजा चेटक चित्रकार भरतको उत्तम समझते थे । वही विचारा चित्रकार जासूसके वचनोंसे उन्हे काला भुजग सरीखा जान पड़ने लगा । वे

विचारने लगे. बड़े खेदकी बात है कि इस नालायक चित्र-कारने कमारी चेलनाका गुप्त स्थानमें स्थित चिन्ह कैसे जान लिया ? मैं नहीं जान सकता यह बात क्या होगई ? अथवा ठीक ही है स्त्रियोंका चरित्र सर्वथा विचित्र है। वडे वड़े देव भी इसका पता नहीं लगा सकते। अखड ज्ञानके धारक योगी भी स्त्रियोंके चरित्रके पते लगानेमें हैरान हैं। तव न कुछ ज्ञानके धारक हम कैसे उनके चरित्रकी सीमा पासकते है ?। हाय मालूम होता है इस दुष्ट चित्रकारने भोली भाली कन्या चेलनाके साथ कोई अनुचित काम कर पाडा। कुलको कलं-कित करनेवाले इस दुष्ट भरतको अव शीघ्र ही सिंधु देशसे निकाल देना चाहिये। अव क्षण भर भी इसै विशालापुरीमें रहने देना ठीक नहीं।

इधर महाराज तो चित्रकारके विषयमे यह विचार करने लगे। उधर चित्रकारको भी कहींसे यह पता लग गया कि महा राज चेटक मुझपर कुपित होगये है। मेरा पूरा पूरा अपमान करना चाहते है। वह शीघ्र ही मारे भयके अपना झोली डंडा ले वहांसे घर भगा। और कुछ दिन मजल दरमजल कर राजगृह नगर आगया।

राजगृह नगरमें आकर उसने फिरसे चेलनाका चित्रपट वनाया। और वड़े विनयसे महाराज श्रेणिककी सभामें जाकर उसै भेट करादिया।

महाराज उससमय अनेक मगधदेशके बड़े बड़े पुरुषोंके साथ सिंहासन पर विराजमान थे। उनके चारो ओर कामिनी चमर ढ़ोल रहीं थीं। वंदी जन उनका यशोगान कररहे थे। ज्योंही महाराज की दृष्टि चेलनाके चित्रपर पड़ी। एक दम महाराज चकित रह गये। चेलनाकी सुव्यक्त तसवीर देख उनके मनमें अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प उठने लगे। वे विचारने लगे—इस चेलनाका केश वेश ऐसा जान पड़ता है मानों कामी पुरुषोंके लिये यह अद्‌भुत जाल है। अथवा यों कहिये चूडामणि युक्त यह केशवेश नहीं है। किंतु उत्तम रत्नयुक्त, समस्तजीवोंको भयका करनेवाला, यह काला नाग है। एवं जैसा चंद्रमा युक्त आकाश शोभित होता है उसीप्रकार गांगेय तिलकयुक्त चेलनाका यह ललाट है। और यह जो भ्रूभंगसे इसके ललाट पर ओंकार बनगया है वह ओंकार नहीं है जगद्विजयी कामदेवका वाण है। तथा गायन जिसप्रकार मृग को परवश बनादेता है। उसीप्रकार इसका कटाक्षविक्षेप कामीजनोंको परवश करने वाला है। अहा! इस चेलनाके कानोंमे जो ये दो मनोहर कुंडल हैं सो कुंडल नहीं किंतु इसकी सेवार्थ दो सूर्य चंद्र है। मृगनयनी इसचेलनाके ये कमलके समान फूले हुवे नेत्र ऐसे जान पड़ते है मानो कामीजनोंको वश करनेवाले मंत्र हैं। इस मृगाक्षी चेलनाका मुख तो सर्वथा आकाश ही जान पड़ता है क्योंकि आकाशमें जैसी बादलकी ललाई चंद्र

आदिकी किरण एव मेघकी ध्वनि रहती है । वैसी ही इसके मुखमें पानकी तो ललाई है । दांतोंकी किरण चद्र किरण है । और इसकी मधुर ध्वनि मेघध्वनि मालूम पडती है । इसकी यह तीन रेखाओंसे शोभित, सोनेके रगकी, मनोहर ग्रीवा है । मालूम होता है कोयलने जो कृष्णत्व धारण किया है । और पुर छोड वनमें वसी है । सो इस चेलनाके कंठके शब्द श्रवणसे ही ऐसा किया है । इस चेलनाके दो स्तन ऐसे जान पड़ते है मानो वक्षस्थल रूपी बनमें दो अति मनोहर पर्वत ही है । मालूम होता है इस चेलनाके नाभिरूपी तालावमें कामदेव रूपी हस्ती गोता लगाये वैठा है । नहीं तो रोमावलीरूपी भ्रमर पक्ति कहासे आई ? । इसके कमलके समान कोमल कर अति मनोहर दीख पडते है । कटिभाग भी इसका अधिक पतला है । ये इसके कोमल चरणोंमें स्थित नूपर इसके चरणोंकी विचित्र ही शोभा वना रहे है । नहीं मालूम होता ऐसी आतिशय शोभायुक्त यह चेलना क्या कोई किन्नरी है ? वा विद्याधरी है । किं वा रोहिणी है ? अथवा कमल निवासिनी कमला है ? वा यह इद्राणी अथवा कोई मनोहर देवी है । अथवा इतनी अधिक रूपवती यह नाग कन्या वा कामदेवकी प्रिया रति है । अथवा ऐसी तेजस्विनी यह सूर्यकी स्त्री है । तथा इसप्रकार कुछ समय अपने मनमे भलेप्रकार विचार कर, और चेलनाके रूपपर मोहित होकर, महाजने शीघ्र ही भरत चित्रकारको अपने पास बुलाया । और उससे पूछा—

कहो भाई। यह अति सुंदरी चेलना किस राजाकी तो पुत्री है? किस देश एव पुरका पालक वह राजा है? क्या उसका नाम है? यह कन्या हमै मिलसकती है या नहीं? यदि मिलसकती है तो किस उपायसे मिलसकती है? ये सब बातें खुलासा रीतिसे शीघ्र मुझै कहो। महाराज श्रेणिकके एस लालसा भरे बचन सुन भरतने उत्तर दिया।

कृपानाथ! यह कन्या राजा चेटककी है। राजाचेटक सिंधु देशमें बिशालापुरी का पालन करनेवाला है। यह कन्या आप-को मिलतो सकती हैं किंतु राजा चेटकका यह प्रण है कि वह सिवाय जैनीके अपनी कन्या दूसरे राजाको नहीं देता। चेटक जैनधर्मका परम भक्त है। इसलिये यदि आप इसकन्याको लेना चाहते हैं तो आप उसके अनुकूल ही उपाय करैं।

भरतके ऐसे वचन सुन महाराज, बिचार सागरमें गोता मारने लगे। वे सोचने लगे यदि राजा चेटकका यह प्रण है कि जैनराजाके अतिरिक्त दूसरेको कन्या न देना तो यह यह कन्या हमै मिलना कठिन है क्योंकि हम जैन नहीं। यदि युद्धमार्गसे इसके साथ जबरन विवाह किया जाय सो भी सर्वथा अनुचित एव नीति विरुद्ध हैं। और विवाह इसके साथ करना जरूरी है क्योंकि ऐसी सुंदरी स्त्री दूसरी जगह मिलने वाली नहीं। किंतु किस उपायसे यह कन्या मिलेगी? यह कुछ ध्यानमें नहीं आता। तथा ऐसा अपने मनमें विचार

करते करते महाराज बेहोश होगये। चेलना विना समस्त जगत उन्हें अंधकारमय प्रतीत होने लगा। यहा तक कि चेलनाकी प्राप्तिका कोई उपाय न समझ उन्होंने अपना मस्तक तक भी धुनडाला।

महाराजको इसप्रकार चिंतासागरमें मग्न एवं दुःखित सुन कुमार अभय उनके पास आये। महाराजकी विचित्र दशा देख कुमार अभय भी चकित रहगये। कुछ समय वाद उन्होंने महाराजसे नम्रता पूर्वक निवेदन किया।

पूज्य पिता! मै आपका चित्त चिंतासे अधिक व्यथित देख रहा हू। मुझे चिंताका कारण कोई भी नजर नहीं आता। पूज्यपाद? प्रजाकी ओरसे आपको चिंता हो नहीं सकती क्योंकि प्रजा आपके आधीन और भलेप्रकार आज्ञा पालन करने वाली है। कोष बल एवं सैन्यवल भी आपको चिंतित नहीं बनासकता क्योंकि न आपके खजाना कम है और न सेना ही। किसी शत्रुकेलिये भी चिंता करना आपको अनुचित है क्योंकि आपका कोई भी शत्रु नजर नहीं आता। आपके शत्रु भी मित्र हो रहे है। पूज्यवर! आपकी स्त्रियां भी एकसे एक उत्तम हैं। पुत्र आपकी आज्ञाके भलेप्रकार पालक और दास हैं। इसलिये स्त्री पुत्रोंकी ओरसे भी आपका चित्त चिंतित नहीं हो सकता। इनसे अतिरिक्त और कोई चिंताका कारण प्रतीत नहीं होता फिर आप क्यों ऐसे दुःखित

होरहे है । कृपाकर शीघ्र ही अपना चिंताका कारण मुझै कहै। मै भी यथासाध्य उसके दूर करनेका प्रयत्न करूगा । कुमार अभयके ऐसे विनय भरे वचन सुन प्रथमतो महाराजने कुछ भी जवाब न दिया। वे सर्वथा चुपकी साधगये । किंतु जब उन्होंने कुमारका आग्रह विशेष देखा तब वे कहने लगे ।

प्यारे पुत्र ! चित्रकार भरतने मुझै चेलनाका यह चित्र दिया है। जिससमयसे मैंने चेलनाकी तसवीर देखी है मेरा चित्त अति चंचल होगया है । इसके विना यह विशाल राज्य भी मुझै जीर्णतृण सरीखा जान पड़ रहा है। इसके पिताकी यह कड़ी प्रतिज्ञा है कि सिवाय जैन राजाके दूसरेको कन्या न देना, इसलिये इसकी प्राप्ति मुझै अति कठिन जान पडती है। अब इसकन्याकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न शीघ्रहोना चाहिये। विना इसके मेरा सुखी होना कठिन है।

' पिताके ऐसे वचन सुन कुमारने कहा। माननीय पिता! इस जरासी बातके लिये आप इतने अधीर न हों। मैं अभी इसके लिये उपाय करता हू। यह कौन बड़ी बात है ? तथा महाराजको इसप्रकार आश्वासन दे कुमारने शीघ्र ही पुरके बड़े बड़े जैनी सेठि बुलाये । और उनसे अपने साथ चलनेके लिये कहा। तथा कुमारकी आज्ञानुसार वे सब कुमारके साथ चलनेकेलिये राजी भी होगये।

जब कुमारने यह देखा कि सब सेठि मेरे साथ चलनेके लिये तयार है। उन्होंने शीघ्र ही महाराज श्रेणिकसे जानेके लिये आज्ञा मांगी। तथा हीरा पन्ना मोती माणिक आदि जवाहिरात और अन्य अन्य उपयोगी पदार्थ लेकर, एव समस्त सेठोंके मुखिया सेठि बनकर कुमार अभयने शीघ्र ही सिंधुदेश की ओर प्रयाण करदिया।

मायाचारी ससारमें विचित्र पदार्थ है। जिस मनुष्य पर इसकी कृपा होजाती है। उसके लिये ससारमें बड़ासे बडा भी अहित, करनेमें सुलभ होजाता है। मायाचारी निर्भय हो चट अनर्थ कर बैठता है। कुमारने ज्योंही राजगृह नगर छोडा। मायाके वे भी बड़े भारी सेवक होगये। मार्गमें जिस नगरको वे बड़ा नगर देखें फौरन वहां पर ठहर जावे। और अन्य सेठाके साथ कुमार भलेप्रकार भगवानकी पूजा करै। एव त्रिकाल सामायिक और पचं परमेष्ठी स्तोत्र का पाठ भी करै। क्या मजाल थी जो कोई जरा भी भेद जान जाय ! इसप्रकार समस्त पृथ्वी मडलपर अपने जैनत्वको प्रसिद्धि करते हुवे कुमार कुछ दिन बाद विशाला नगरीमें जा पहुंचे। और वहाके किसी बागमें ठहरकर खूब जोर शोरसे जिनेंद्र भगवानके पूजा माहात्म्यको प्रकट करने लगे।

कुछ समय बागमें आरामकर कुमारने उत्तमोत्तम रत्नोंको चुना। और कुछ जैन सेठोंको लेकर वे शीघ्र ही राजा चेटक

की सभामें गये । महाराज चेटककी सभामें प्रवेशकर कुमारने राजाको विनयभावसे नमस्कार किया । तथा उनके सामने भैंट रखकर, उनके साथ मधुर मधुर वचनालाप कर अपनेको जैनी प्रकट करते हुवे कुमारने प्रार्थना की ।

राजाधिराज ! हमलोग जौहरी बच्चे है । अनेक देशोंमें भ्रमण करते करते यहां आपहुंचे है । हमारी इच्छा है । कि हम इस मनोहर नगरमें भी कुछ दिन ठहेंर । हमारे पास मकानका कोई प्रबंध नहीं । कृपाकर आप इस राजमंदिरके पास हमै किसी मकानमें ठहरनेकेलिये आज्ञा दं ।

कुमारका ऐसा अद्भुत वचनालाप एवं विनयव्यवहार देख राजा चेटक अति प्रसन्न हुवे । उन्होंने विना सोचे समझे ही कुमारको राजमन्दिरके पास रहनेकी आज्ञा देदी । और कुमार आदिका हदसे ज्यादह सन्मान किया ।

अब क्या था ! राजा की आज्ञा पाते ही कुमारने शीघ्र ही अपना सामान राजमन्दिरके समीप किसीमहलमें मगा लिया । एवं उस मकानमें मनोहर चैत्यालय वनाकर आनन्द पूर्वक वड़े समरोहसे जिन भगवानकी पूजा करनी आरभ करदी । कभी तो कुमार बड़े बड़े मनोहर स्तोत्रों में भगवान की स्तुति करने लगे । और कभी उनसेठोंके साथ जिनेंद्र भगवानकी पूजा करनी आरंभ कर दीं । कभी कभी कुमारको पूजा करते ऐसा आनन्द आगया कि वे बनावटी

तौरसे भगवानके सामने नृत्य भी करने लगे । और कभी उत्तमोत्तम शब्द करने वाले वाजे बजाना भी उन्होंने प्रारम्भ कर दिया । एव कभी कभी कुमार त्रेमठिसलाका पुरुषोंके चरित्र वर्णनकरनेवाले पुराण वाचने लेगे । जिससमय ये समस्त, भगवानकी पूजा स्तुति आदि कार्य करते थे । वरावर उनकी आवाज रनवांसमें जाती थी । राजमन्दिरकी स्त्रियां साफ रीतिसे इनके स्तोत्र आदिको सुनती थीं । और मनही मन इनकी भक्तिकी अधिक तारीफ करती थीं ।

किसीसमय महाराज चेटककी ज्येष्ठा आदि पुत्रियोंके मनमें इसवातकी इच्छा हुई कि चलो इनको जाकर देखें । ये वडे भक्त जान पडते हैं । प्रतिदिन भाव भक्तिसे भगवानकी पूजा करते है । तथा ऐसा दृढ़ निश्चय कर वे अपनी सखियोंके साथ किसीदिन कुमार अभय द्वारा वनाये हुवे चैत्यालय में गई । और वहां पर चमर चादनी झालर घंटा आदि पदार्थोंसे शोभित चैत्यालय देख अति प्रसन्न हुई । तथा कुमार आदिको भगवानकी भक्तिमें तत्पर देख कहने लगी---

आप लोग श्रीजिनदेवकी भक्तिभावसे पूजन एवं स्तुति करते है । इसलिये आप धन्य हैं । इस पृथ्वीतलपर आप लोगोंके समान नतो कोई भक्त दीख पड़ता और न ज्ञान वान एव स्वरूपवान भी दीख पडता । कृपाकर आप कहै--कौन तो आपका देश है ? कौन उस देशका राजा है ! वह किस

धर्मका पालन करने वाला है ? क्या उसकी वय है ? कैसी उसकी सौभाग्य विभूति है ? एव कौंन कौंन गुण उत्तमतया उसमें मौजूद है ? राजकन्याओंके मुखसे ऐसे वचन सुन कुमार अभयने मधुरवचनमें उत्तर दिया—

राज कन्याओ ! यदि आपको हमारे सविस्तर हाल जानने की इच्छा है तो आप ध्यान पूर्वक सुनें मै कहता हूं। अनेक प्रकारके ग्राम पुर एव बाग बगीचोंसे शोभित, ऊंचे ऊंचे जिनमंदिरोंसे व्याप्त, असंख्याते मुनि एव यतियोंका अनुपम विहार स्थान, देशतो हमारा मगधदेश है। मगधदेशमें एक राजगृह नगर है। जो राजगृहनगर बड़े २ सुवर्णमय कलशोंसे शोभित; अपनी उचाईसे आकाशको स्पर्श करने वाले, सूर्यके सामन देदीप्यभान अनेक धीनकोंके मदिर एवं जिनमंदिरसे व्याप्त है। और जहाकी भूमि भांति भांतिके फलोंसे मनुष्योंके चित्त सदा आनदित करती रहती है। उस राजगृहनगरके हम रहने वाले है। राजगृह नगरके स्वामी जो नीति पूर्वक प्रजा पालनकरनेवाले है महाराज श्रेणिक है। राजा श्रेणिक जैन धर्मके परम भक्त है। अभी उनकी अवस्था छोटी है। एव अनेकगुणोंके भडार हैं। राजकन्याओ ! हम लोग व्यापारी है। छोटीसी उम्रमें हम चारो ओरभूमंडल घूम चूके। हर एक कलामें नैपुण्य रखते है। हमने अनेक राजाओंको देखा किंतु जैसी जिनेंद्रकी भक्ति, रूप, गुण, तेज, महाराज

श्रेणिकमें विद्यमान है वैसा कहीं पर नहीं। क्योंकि ऐसा तो उनका प्रताप है कि जितने भर उनके शत्रु थे सब अपने मनोहर मनोहर नगरोंको छोड वनमें रहने लगे। कोषवल भी जैसा महाराज श्रेणिकका है शायद ही किसीका होगा। हाथी घोड़े पयादे आदि भी उनके समान किसीके भी नहीं। अव हम कहांतक कहै। धर्मात्मा गुणी प्रतापी जो कुछ हैं सो महाराज श्रेणिक ही है। कुमारके मुखसे महाराज श्रेणिकको ऐसा उत्तम सुन ज्येष्ठा आदि समस्त कन्यायें अति प्रसन्न हुईं। अव महाराज श्रेणिकके साथ विवाह करनेकेलिये हर एक का जी ललचाने लगा। कुमार की तारीफने कन्याओंको महाराज श्रेणिकके गुणोंके परतत्र वना दिया। अव वे चुप चाप न रहसकीं। उन्होंने शीघ्र ही विनयपूर्वक कुमारसे कहा—

प्रिय वणिक सरदार ! ऐसे उत्तम वरकी हमैं किस रीति से प्राप्ति हो ? न जाने हमारे भाग्यसे इस जन्ममें हमारा कौन वर होगा ? श्रेष्ठिवर्य ? यदि किसीं रीतिसे आप वहा हमै ले चलें तव तो मगधेश हमारे पति हो सकते है। दूसरी रीति से उनका पति होना असभव है। क्योंकि कहा तो महाराज श्रेणिक ! और हम कहा ? कृपाकर आप कोई ऐसी युक्ति सोचिये जिसमें मगधेश ही हमारे स्वामी हों। याद रखिये जवतक महाराज श्रेणिक हमें न मिलेंगे तव तक न तो हम संसारमें

सुखी रह सकेंगी। और न हमें निद्रा ही आवेगी। विशेष कहां तक कहाजाय महाराज श्रेणिकके वियोगमें अब हमें संसार दुःखमय ही प्रतीत होने लगे गा।

कन्याओंके ऐसे लालसाभरे वचन सुन कुमार अति प्रसन्न हुवे। अपने कार्यकी सिद्धि जान मारे हर्षके उनका शरीर रोमांचित होगया। कन्याओंको आश्वासन दे शीघ्र ही उन्हें वहा से चंपत किया। और अपने महलसे राजमंदिरतक कुमार ने शीघ्र ही एक सुरंग तयार करानेकी आज्ञा देदी।

कुछ दिनबाद सुरंग तयार होगई। कुमारने सुरंगके भीतर अपने महलसे राजमहलतक एक रस्सी बंधवादी। और गुप्तरीतिसे कन्याओंके पासभी यह समाचार भेजदिया।

कुमारकी यह युक्ति देख कन्या अति प्रसन्न हुई। किसी समय अवसर पाकर उन तीनों कन्याओंने सुरंगसे जानेका पूरा पूरा इरादा करलिया। और वे सुरंगके पास आगई। किन्तु ज्योंही वे तीनों सुरंगमें घुसी सुरंगमें अंधेरा देख ज्येष्ठा और चंदना तो एक दम घबड़ा गई। उन्होंने सोचा हमें इसमार्गसे जाना योग्य नहीं। क्योंकि प्रथमतो इसमें गाढ़ अंधकार है। इसलिये जाना कठिन है। द्वितीय यदि हमारे पिता सुनेंगे तो हमपर अधिक नाराज होंगे। इसलिये ज्येष्ठा तो अपनी मुद्रिका का बहाना कर वहांसे लौट आई। और चंदना हारका मूढ़ा कर घर लौटी। अकेली विचारी चेलना रहगई उसको कुमारने

शीघ्रही खींचलिया। और उसे रथमें बिठाकर तत्काल राजगृह नगरकी ओर प्रयाण करदिया।

विशाला नगरीसे जब रथ कुछ दूर निकल आया। कुमारी चेलनाको अपने माता पिताकी हुड़क आई। वह उनकी याद कर रोदन करने लगी। किन्तु कुमार अभयने उसे समझा दिया जिससे उसका रोदन शांत होगया। एवं वे समस्त महानुभव कुछ दिनबाद आनन्द पूर्वक मगधदेशमें आपहुंचे।

किसी दूतके मुखसे महाराजको यह पता लगा कि कुमार आरहे हैं उनके साथ कुमारी चेलना भी है। शीघ्र ही बड़ी विभूतिसे वे कुमारके सामने आये। कुमारके मुखसे उन्होंने सारा वृत्तान्त सुना। कुमारको छातीसे लगा महाराज अति प्रसन्न हुये। कुमारके साथ जो अन्यान्य सज्जन थे उनके साथ भी महाराजने अधिक हित जनाया। जिससमय मृगनयनी चन्द्रवदनी कुमारी चेलना पर महाराज की दृष्टि गई तो उससमय तो महाराजके हर्ष का पारावार न रहा। दरिद्री पुरुष जैसा निधिको देख एक विचित्र आनन्दानुभव करने लगता है। चेलनाको देख महाराजकी भी उससमय वैसीही दशा होगई।

इसप्रकार कुछ समय वार्तालाप कर सबोंने राजगृह नगरमें प्रवेश किया। महाराजकी आज्ञानुसार कुमारी चेलना सेठि इन्द्रदत्तके घर उतारी गई। किसीदिन शुभ मुहूर्त एवं शुभ लग्नमें महाराजका विवाह होगया। विवाहके

समय समस्त दिशाओंको वधिर करने वाले वाजे वजने लगे । बन्दीजन महाराजकी उत्तमोत्तम पद्योंमें स्तुति करने लगे । महाराजके विवाहसे नगर निवासिओंको अति प्रसन्नता हुई । चेलनाके विवाहसे महाराजने भी अपने जन्मको धन्य समझा । विवाहके वाद महराजने वडे गाजे वाजेके साथ रानी चेलनाको पटरानीका पद दिया । एव राज मन्दिरमें किसी उत्तम मकानमे रानी चेलनाको ठहराकर प्रीति पूर्वक महाराज उसके साथ भोग भोगने लगे । कभी तो महाराजको रानी चेलनाके मुखसे कथा कौतूहल सुन परम सतोष होने लगा । कभी महाराजको रानी चेलनाकी हंसिनी के समान गति एव चन्द्रके समान मुख देख अति प्रसन्नता हुई । कभी महाराज चेलनाके हास्योत्पन्न सुखसे सुखी होने लगे । कभी कभी महाराजको रतिजन्य सुख सुखी करने लगा । और कभी चेलनाके प्रति अगकी सुघडाई महाराजको सुखी करने लगी । जिससमय राजा रानी पासमें बैठते थे । उससमय इनमें और इन्द्र इन्द्राणीमें कुछ भी भेद देखनेमें नहीं आता था । ये आनन्द पूर्वक इन्द्र इन्द्राणीके समान ही भोग विलास करते थे । रानी चेलना एव राजा श्रेणिकके शरीर ही भिन्न थे । किंतु मन उनका एकही था । लोग ऐसा आपसी घनिष्ट प्रेम देख दोनोंको सुखकी जोड़ी कहते थे । और बराबर दोनोंके पुण्यफलकी प्रशसा करते थे ।

भाग्यकी महिमा अनुपम है। देखो कहां तो राजा चेटक की पुत्री चेलना ? और कहां जिनधर्मरहित महाराज श्रेणिक ? कहा तो सिंधुदेशमें विशालपुरी ? और राजगृह नगर कहा ? तथा कहा तो कुमार अभयद्वारा चेलनाका हरण ? और कहा महाराज श्रेणिकके साथ संयोग ? इसलिये मनुष्यको अपने भाग्यका भी अवश्य भरोसा रखना चाहिये। क्योंकि भाग्यमें पूर्णतया फल एवं अफल देने की शक्ति मौजूद है। जीवोंको शुभ भाग्यके उदयसे परमोत्तम सुख मिलते है। और दुर्भाग्यके उदयसे उन्हे दुःखोंका सामना करना पडता है। नरकादि गतियों में जाना पडता है।

इसप्रकार भविष्यत कालमें होनेवाले तीर्थंकर पद्मनाभके जीव महाराज श्रेणिकके चारित्रमें चेलनाके साथ विवाह वर्णन करनेवाला आठवा सर्ग समाप्त हुवा।
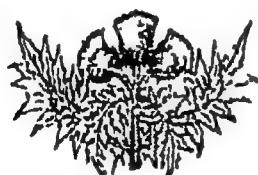
नवम सर्ग।

कृतकृत्य समस्तकर्मोंसे रहित होनेके कारण परम पूजनीक सम्यग्दर्शनादि तीनों रत्नत्रयसे भूषित श्री सिद्ध भगवान हमारी रक्षा करें।

अनन्तर इसके रानी चेलना आनन्द पूर्वक महाराज श्रेणिकके साथ भोग भोग रही थी । अचानक ही जब उसने यह देखा कि महाराज श्रेणिकका घर परम पवित्र जैन धर्म से रहित है । महाराजके घरमें हिंसाको पुष्ट करने वाले तीन मूढ़तासहित, ज्ञान पूजा आदि आठ अभिमान युक्त. एवं उभयलोकमें दुःख देनेवाले बौद्ध धर्मका अधिक तर प्रचार है । तो उसे अति दु ख हुवा । वह सोचने लगी हाय पुत्र अभयकुमारने वुरा किया । मेरे नगरमें छलसे जैनधर्मका वैभव दिखा मुझ भोली भालीको ठगलिया । क्योंकि जिसघरमे श्री जिनधर्मकी भलेप्रकार प्रवृत्ति है । उनके गुणोंका पूर्णतया सत्कार है । वास्तवमें वही घर उत्तम घरहै । किंतु जहा जिन-धर्मकी प्रवृत्ति नहीं है वह घर कदापि उत्तम नहीं होसकता । वह मानिंद पक्षियोंके घोंसलेके है । यदि मै महाराज श्रेणिकके इस अलौकिक वैभवको देख अपने मनको शांत करू सोभी ठीक नहीं क्योंकि परभवमें मुझै इससे घोरतर दुःखोंकी ही आशाहै। अथवा मै अपने मनको इसरीतिसे वहलाऊ कि महाराज श्रेणि-कके घरमें मुझै अनन्यलभ्य भोग भोगनेमें आरहे है, यहभी अनुचित है । क्योंकि ये भोग मानिंद भयकर भुजंगके मुझै परिणाममें दुःख ही देंगे । भोगोंका फल नरक तिर्यच आदि गतियोंकी प्राप्ति है।उनमें मुझै जरूरहीं जाना पड़ेगा । एवं वहां पर घोरतर वेदनाओंका सामना करना पड़ेगा । संसारमें धर्म

होवे धन न होवे तो धर्मके सामने धनका न होना तो अच्छा किंतु विना धर्मके आतिशय मनोहर, सासारिक सुखका, केंद्र, चक्रवर्तीपना भी अच्छा नहीं । संसारमें मनुष्य विधवापनेको बुरा कहते हैं । किं तु यह उनकी बडी भारी भूल है । विधवापना सर्वथा बुरा नहीं । क्योंकि पति यदि सन्मार्गगामी हो और वह मरजाय तवतो विधवापना बुरा । किंतु पति जीता हो और वह हो मिथ्यामार्गी तो उस हालतमें विधवापना सर्वथा बुरा ही है । संसारमें वाज रहना अच्छा। भयकर वनका निवास भी उत्तम । अग्निमें जलकर और विष खाकर मरजानाभी अच्छा । तथा अजगरके मुखमें प्रवेश और पर्वतसे गिरकर मरजाना भी अच्छा । एव समुद्रमें डूवकर मरजानेमें भी कोई दोष नहीं । किंतु जिनधर्म रहित जीवन अच्छा नहीं । पति चाहै अन्य उत्तमोतम गुणोंका भडार हो । यदि वह जिनधर्मी न हो तो किसी कामका नहीं । क्योंकि कुमार्गगामी पतिके सहवाससे, उसके साथ भोग भोगनेसे दोनों जन्मभे अनेक प्रकारके दुःख ही भोगने पड़ते है । हाय बडा कष्ट है । मैन पूर्वभवमें ऐसा कौन घोर पाप किया था । जिसमे इसभवमें मुझे जैनधर्मसे विमुख होना पड़ा । हाय अव मेरा एकप्रकारसे जैनधर्मसे सबध छूटसा हो गया । हे दुर्दैव! तूने कव कवके मुझसे दाये लिये । पुत्र अभयकुमार ! क्या मुझे भोली वातोंमें फसाकर ऐसे घोर संकटमें डालना आपको योग्य था ? अथवा कवियोंने जो स्त्रियोंको अवला कहकर पुकारा है सो

सर्वथा ठीक है । ये यिचारी वास्तवमे अवला ही हैं । विना समझे बूझे ही दूसरोंकी वातपर चट विश्वास कर वैठती हैं।और पीछे पछितातीं है । दीनवंधो ! जो मनुष्य प्रियवचन वोल दूसरे भोले जीवोंको ठग लेते है । संसारमें कैसे उनका भला होता होगा ? फुसलाकर दूसरोंको ठगनेवाले संसारमें महापातकी गिने जाते है। तथा ऐसा चिरकालपर्यंत विचारकर रानी चेलनाने मौन धारण करलिया । एवं एकातस्थानमें वैठ करुणाजनक रोदन करने लगी। रानी चेलनाकी ऐसी दशा देख समस्त सखियां घवड़ागई। चेलनाकी चिंता दूर करनेकेलिये उन्होंने अनेक उपाय किये किं तु कोईभी उपाय सफल न दीख पड़ा । यहांतक कि रानी चेलनाने सखियोंके साथ वोलना भी वंद करदिया । वह मारामारा अपने जीवनकी निंदा करने लगी। जिनेंद्र भगवानकी मानसिक पूजा और उनके स्तवनमें उसने अपना मन लगाया । एवं इस दुःखसे जव जव उसे अपने माता पिताकी याद आई तो वह रोने भी लगी।

रानी चेलनाकी चिंताका समाचार महाराज श्रेणिकके कान तक पहुंचा । अति व्याकुल हो वे शीघ्र ही चेलनाके पास आये । चेलनाका मौनधारण देख उन्हें अति दुःख हुआ । रानी चेलनाके सामने वे विनयभावसे इसप्रकार कहने लगे ।

प्रिये ! आज तुम्हारी यह अचानक दशा क्योंकर होगई ? जव जव मै तुम्हारे मंदिरमें आता था । मै तुमको सदा प्रसन्न

ही देखता था । मैंने आजतक कभी आपके चित्तपर ग्लानि न देखी । और समय तुम मेरा पूरापूरा सन्मान भी करतीं थी । आज तुमने मेरा सन्मानभी विसार दिया । आजतक मैंने तुम्हारा कोई कहना भी न डाला । जिससमय मै तुम्हारा किसी कामकेलिये आग्रह देखता था फौरन करता था तथापि यदि मुझसे तुम्हारी अवज्ञा होगई हो तो क्षमा करो अव तुम्हारी अवज्ञा न की जायगी । मैं तुम्हारा अव कहना मानूगा । यदि राजमंदिरमें किसीने तुम्हारा अपराध किया है । तुम्हारी आज्ञा नहीं मानी है । सोभी मुझे कहो मै अभी उसे दंड देनेकेलिये तयार हूं । शुभे ! मुझसे थोड़ीसी तो वात चीतकरो । मै तुम्हारी ऐसी दशा देखनेकेलिये सर्वथा असमर्थ हू । तुम्हारी इस अवस्थाने मुझे अर्धमृतक वनादिया है । तुम्हें मैं अपने आधे प्राण समझता हूं । तू मेरे जीवनरूपी घरकेलिये विशाल स्तंभ है । शुभानने ! तेरी दुःखमय अवस्था मुझे भी दु खमय वना रही है ! तेरे दुखित होनेपर यह समस्त राजमंदिर मुझे दु.खमय ही प्रतीत होरहा है । पूर्णचंद्रानने ! तू शीघ्र अपने दुःखका कारण कह । शीघ्र हीं अपनी मनोमलिनता दूरकर ! और जल्दी प्रसन्न हो ।

महाराज श्रेणिकके ऐसे मनोहरवचन सुनकर भी प्रथम तो रानी चेलनाने कुछभी जवाव न दिया । किंतु जव उसने महाराजका प्रेम एवं आग्रह अधिक देखा तव वह कहने लगी —

जीवननाथ ! इससमय जो आप मुझे चिंतायुक्त देख रहे है

इसचिंताका कारण न तो आप है। और न कोई दूसरा मनुष्य है। इससमय मुझे चिंता किसी दूसरे ही कारणसे हो रही हैं। तथा वह कारण मेरा जैनधर्मका छूटजाना है। कृपानाथ! जबसे मैं इस राजमदिरमें आई हूं एक भी दिन मैंने इसमें निर्ग्रंथ मुनिको नहीं देखा! राजमदिरमें उत्तम धर्मकी ओर किसी की दृष्टि नहीं। मिथ्याधर्मका अधिकतर प्रचार हैं। सब लोग बौद्धधर्मको ही अपना हितकारी धर्म मान रहे है। किं तु यह उनकी बड़ी भारी भूल है। क्योंकि यह धर्म नहीं कुधर्म हैं। जीवोंको कदापि इससे सुख नहीं मिल सकता। रानी चेलनाके ऐसे वचन सुन महाराज अति प्रसन्न हुवे। उन्होंने इसप्रकार गंभीरवचनोंमें रानीके प्रश्नका उत्तर दिया?

प्रिये? तुम यह क्या ख्याल कर रही हो? मेरे राजमंदिरमें सद्धर्मका ही प्रचार है। दुनियामें यदि धर्म है तो यही है। यदि जीवोंको सुख मिलसकता है तो इसी धर्मकी कृपासे मिल सकता है। देख! मेरे सच्चेदेव तो भगवान वुद्ध है। भगवान वुद्ध समस्त ज्ञान विज्ञानोंके पारगामी हैं! इनसे बढकर दुनियामें कोई देव उपास्य और पूज्य नहीं। जो पुरुष उत्तम पुरुष है। अपनी आत्माके हितके आकांक्षी है उन्हें भगवान वुद्धकी ही पूजा भक्ति एव स्तुति करनी चाहिये क्योंकि हे प्रिये! भगवान वुद्धकी ही कृपासे जवोंको सुख मिलते है। और इन्हींकी कृपासे स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होती है। महाराजके मुखसे इसप्रकार बौद्धधर्मकी तारीफ सुन रानी चेलनाने उत्तर दिया।

प्राणनाथ ! आप जो बौद्ध धर्मकी इतनी तारीफ कर रहे हैं सो बौद्धधर्म इतनी तारीफके लायक नहीं । उससे जीवोंका जराभी हित नहीं हो सकता । दुनियामें सर्वोत्तम धर्म जैनधर्म ही है ! जैनधर्म छोटे बड़े सबप्रकारके जीवोंपर दयाके उपदेशसे पूर्ण है । इसका वर्णज केवली भगवानके केवलज्ञानसे हुआ है । जो भव्यजीव इस परमपवित्र धर्मकी भक्ति पूर्वक आराधना करता है । नियमसे उसे आराधनाके अनुसार फल मिलता है । तथा हे कृपानाथ ! इस जैनधर्ममें क्षुधा तृषा आदि अठारह दोषोंसे रहित, समस्तप्रकारकी परिग्रहोंसे विनिर्मुक्त, केवल ज्ञानी एव जीवोंको यथार्थ उपदेशदाता तो आप्त कहागया है । और भलेप्रकार परीक्षित जीव अजीव आस्रव आदि सात तत्त्व कहे है । प्रमाण नय निक्षेप आदि सयुक्त इन सप्ततत्त्वोंका वर्णनभी केवली भगवानकी दिव्यध्वनिसे हुआ है । ये सातो तत्त्व कथचित् नित्यत्व और कथचित् अनित्यत्व इत्यादि अनेक धर्मस्वरूप है । यदि एकांतरीतिसे ये सर्वतत्त्व सर्वथा नित्य और अनित्य ही माने जांय तो इनके स्वरूपका भलेप्रकार परिज्ञान नहीं होसकता । और हे स्वामिन् ! जो साधु निर्ग्रथ, उत्तमक्षमा उत्तममार्दव आदि उत्तमोत्तम गुणोंके धारी, मिथ्या अधकारको हटानेवाले, राग द्वेष मोह आदि शत्रुओंके विजयी, बाह्य अभ्यंतर दोनों प्रकारके तपसे विभूषित, भलेप्रकार परीषहोंके सहन करनेवाले एव नग्न दिगबर हैं । वे इस जैनागममें गुरू माने गये हैं ।

तथा हे प्रभो ! जिससे किसीप्रकारके जीवोंके प्राणोंको त्रास न हो ऐसा इस जैनसिद्धांतमें अहिंसापरमधर्म माना गया है । इसी धर्मकी कृपासे जीवोंका कल्याण हो सकता है । दया सिंधो ! यह थोड़ासा जैनधर्मका स्वरूप मैंने आपके सामने निवेदन किया है । इसका विस्तारपूर्वक वर्णन सिवाय भगवान केवलीके दूसरा कोई नही कर सकता । अब आप ही कहैं ऐसे परम पवित्रधर्मका किसरांतिसे परित्याग किया जा सकता है । मेरा विश्वास है जो जीव इस जैनधर्मसे विमुख एवं घृणा करनेवाले हैं । वे कदापि भाग्य शाली नहीं कहे जा सकते ।

रानी चेलनाके मुखसे इसप्रकार जैनधर्मका स्वरूप श्रवण कर महाराज निरुत्तर होगये । उन्होंने और कुछ न कहकर महारानीसे यही कहा-प्रिये ! जो तुम्हें श्रेयस्कर मालूम पड़े वही कामकरो किंतु अपने चित्त पर किसी प्रकारकी ग्लानि न लाओ । मै यह नहीं चाहता कि तुम किसीप्रकारसे दुःखित रहो ।

महाराजके मुखसे ऐसा अनुकूल उत्तर पा रानी चेलना अति प्रसन्न हुई । अब रानी चेलना निर्भय हो जैनधर्मका आराधन करने लगी । कभी तो रानी चेलनाने भक्तिभावसे भगवानकी पूजन करनी प्रारंभ करदी । और कभी वह अष्टमी चतुर्दशी आदि पर्वोंमें उपवास और रात्रिजागरण भी करने लगी । तथा नृत्य और उत्तमोत्तम गद्य पद्यमय गायनोंसे भी

उसने भगवानकी स्तुति करनी प्रारभ करदी। जैनशास्त्रोंका वह प्रतिदिन स्वाध्याय करने लगी। रानी चेलनाको इसप्रकार धर्मपर आरूढ देख समस्त रनवास उसके धर्मात्मापनेकी तारीफ करने लगा। यहां तक कि गिनतीके ही दिनोंमें रानी चेलनाने समस्त राजमदिर जैनधर्ममय करदिया।

कदाचित् बौद्ध साधुओंको यह पता लगा कि रानी चेलना जैनधर्मकी परम भक्त है। राजमंदिरको उसने जैनधर्मका परमभक्त वनादिया है। और नगर एव देशमें वह जैन धर्मके प्रचारार्थ शक्ति भर प्रयत्न कर रही है। वे शीघ्र ही दोड़ते दौड़ते राजा श्रेणिकके पास आये। और क्रोधमें आकर महाराज श्रेणिकसे इसप्रकार कहने लगे।

राजन्! हमने सुना है कि रानी चेलना जैनधर्मकी परम भक्त है। वह वौधधर्मको एक घृणित धर्म मानती है। बौद्ध धर्मको धरातलमें पहुचानेके लिये वह पूरा पूरा प्रयत्न भी कर रही है। यदि यह बात सत्य है तो आप शीघ्र ही इसके प्रतीकारार्थ कोई उपाय सोचें। नहीं तो वड़े भारी अनर्थकी सभावना है।

वौद्ध गुरुओंके ऐसे वचन सुन महाराजने और तो कुछ भी जवाब न दिया। केवल यही कहा-पूज्यवरो! रानीको मै वहुत कुछ समझा चुका। उसके ध्यानमें एक भी बात नहीं आती। कृपाकर आप ही उसके पास जांय। और उसे समझावै। यदि आप इस

वानमें विलम्ब करैगे तो याद रखिये बौद्धधर्मकी अव खैर नहीं। अवश्य रानी बौद्ध धर्मको जड़से उड़ानेके लिये पूरा पूरा प्रयत्न कर रही है।

महाराजके ऐसे वचनोंने बौद्धगुरुओंके चित्त पर कुछ शांतिका प्रभाव डालदिया। उन्हें इस वातसे सर्वथा दिलजमई होगई कि चलो राजा तो बौद्धधर्मका भक्त है। तथा उन्होंने शीघ्र ही राजासे कहा।

राजन्! आप खेद न करै। हम अभी रानीको जाकर समझाते है। हमारेलिये यह वात कौन काठिन है? क्योंकि हम पिटकत्रय आदि अनेक ग्रथोंके भलेप्रकार ज्ञाता हैं। हमारी जिह्वा सदा अनेकशास्त्रोंका रंगस्थल वनी रहती है। और भी अनेक विद्याओंके हम पारगामी है। तथा ऐसा कहकर वे शीघ्र ही रानी चेलनाके पास आये। और इसप्रकार उपदेश देने लगे।

चेलने! हमने सुना है कि तू जैनधर्मको परम पवित्र धर्म समझती है। और बौद्धधर्मसे घृणा करती है। सो यह तेरा विचार सर्वथा अयोग्य है। तू यह निश्चय समझ, संसारमें जीवोंको हितकरनेवाला है तो बौद्धधर्म ही है। जैनधर्मसे कदापि जीवोंका कल्याण नहीं होसकता। देख! ये जितने दिगम्बर मतके अनुयायी साधु है सो पशूके समान है। क्योंकि पशू जिसप्रकार नग्न रहता है उसीप्रकार ये भी नग्न फिरते रहते

है। आहारके न मिलनेसे पशु जैसा उपवास करता है। उसी प्रकार ये भी आहारके अभावमें उपवास करते है। तथा पशुके समान ये अविचारित और ज्ञान विज्ञानरहित भी है। और हे रानी! दिगम्बर साधु जैसे इसभवमें दीन दरिद्री रहते हैं परजन्ममे भी इनकी यही दशा रहती है। परजन्ममें भी इन्हें किसीप्रकारके वस्त्र भोजनोंकी प्राप्ति नहीं होती। वर्तमानमें जो दिगम्बर मुनि क्षुधा तृषा आदिसे व्याकुल दीखते है। परजन्ममें भी नियमसे ये ऐसे ही व्याकुल रहेंगे। इसमें कोई सदेह नहीं। तथा हे रानी! क्षेत्रमें बीज बोने पर जैसा तदनुरूप फल उत्पन्न होता है। उसीप्रकार समस्त संसारी जीवोंकी दशा है। वे जैसा कर्म करते है नियमसे उन्हें भी वैसाही फल मिलता है। याद रक्खो यदि तुम इन भिक्षुक दरिद्र दिगंम्बर मुनियोंकी सेवा शुश्रुषा करोगी तो तुम्हेंभी इन्हींके समान परभवमें दरिद्र एव भिक्षुक होना पड़ेगा। इसलिये अनेक प्रकारके भोग भोगनेवाले, वस्त्र आदि पदार्थोंसे सुखी, बौद्ध साधुओंकी ही तू भक्तिपूर्वक सेवा कर। इन्हे ही अपना हितैषी मान जिससे परभवमें भी तुझे अनेक प्रकारके भोग भोगनेमें आवे। पतिव्रते! अव तुझे चाहिये कि तू शीघ्र ही अपने चित्तसे जैन मुनियोंकी भक्ति निकालदे। बुद्धिमान लोग कल्याणमार्गगामी होते है। सच्चा कल्याण कारी मार्ग भगवान बुद्धका ही है। बौद्धगुरुओंका ऐसा उपदेश सुन रानी चेलनासे न रहागया

बड़ी गभीरता एवं सभ्यतासे उसने शीघ्र ही पूछा---

बौद्धगुरुओ! आपका उपदेश मैने सुना किंतु मुझे इसवा-नाका संदेह रहगया। आप यह बात कैसे जानते हैं कि दिगंबर मुनियोंकी सेवासे परभवमें क्लेश भोगने पड़ते है?। दीन दरिद्री होना पडता है?। और बौद्ध गुरुओंकी सेवासे यह एकभी बात नहीं होती। बौद्ध गुरुसेवासे मनुष्य परभवमें सुखी रहते है। इत्यादि कृपाकर मुझे शीघ्र कहे----

रानीके इन वचनोंको सुन बौद्ध गुरुओंने कहा--चेलने! तुम्हें इस वातमें सन्देह नहीं करना चाहिये। हम सर्वज्ञ है। परभवकी बात वताना हमारे सामने कोई बड़ी बात नहीं। हम विश्वभर की बातें बना सकते है। बौद्धगुरुओंके ऐसे वचन सुन रानी चेलनाने कहा—

बौद्ध गुरुओ! यदि आप अखंडज्ञानके धारक सर्वज्ञ है। तो मै कल आपको भक्ति पूर्वक भोजन कराकर आपके मतको ग्रहण करूंगी। आप इस विषयमें जराभी संदेह न करैं—

रानीके मुखसे ये वचन सुन बौद्धसाधुओंको परम संतोष होगया। हर्षितचित्त हो वे शीघ्र ही महाराजके पास आये। और सारा समाचार महाराजको कह सुनाया। बौद्ध गुरुओंके मुखसे रानीका इसप्रकार विचार सुन महाराज भी अति प्रसन्न हुवे। उन्हें भी पूरा विश्वास होगया कि अब रानी जरूर बौद्ध वन जायगी। तथा रानी की भांति भांतिसे

प्रशसा करते हुवे महाराज शीघ्र ही उसके पास गये।और उसके मुखपर भी इसप्रकार प्रशसा करने लगे।

प्रिये ! आज तुम धन्य हो । गुरुओंके उपदेशसे तुमने बौद्धधर्म धारण करनेकी प्रतिज्ञा करली । शुभे ! ध्यान रक्खो बौद्धधर्मसे बढ़कर दुनियामें कोई भी धर्म हितकारी नहीं । आज तेरा जन्म सफल हुवा । अब तुम्हे जिस बातकी अभिलाषा हो शीघ्र कहो मैं अभी उसे पूर्ण करनेकेलिये तयार हू। तथा इसप्रकार कहते कहते महाराजने रानी चेलनाको उत्तमोत्तम पदार्थ बनानेकी शीघ्र ही आज्ञा देदी ।

महाराजकी आज्ञा पाते ही रानी चेलनाने शीघ्र ही भोजन करना प्रारम्भ कर दिया। लाड्डू खाजे आदि उत्तमोत्तम पदार्थ तत्काल तयार होगये।जिससमय महाराजने देखा कि भोजन तयार है शीघ्र ही उन्होंने बड़े विनयसे गुरुओंको बुलावा भेजदिया । और राजमंदिरमें उनके बैठनेके स्थानका शीघ्र प्रबन्ध भी करा दिया ।

गुरुगण इसबातकी चिंतामें बैठा ही था कि कब निमंत्रण आवे और कब हम राजमंदिरमें भोजनार्थ चलें। ज्योंही निमंत्रण समाचार पहुचा। शीघ्र ही सबोंने अपने वस्त्र पहिने। और राजमंदिरकी ओर चलदिये ।

जिससमय राजमंदिरमें प्रवेशकरते रानी चेलनाने उन्हें देखा तो उनका बड़ा भारी सन्मान किया.उनके गुणोंकी प्रश-

सा की । एव जव वे वौद्धगुरु अपने अपने स्थानोंपर वैठि गये। रानी चेलनाने नम्रतासे उनका पादप्रक्षालन किया। तथा उनके सामने उत्तमोत्तम सुवर्णमय थाल रखकर भाति भांतिके लाडू खीर श्रीखंड राजाओंके खाने योग्य भात, मूंगके लाडू इत्यादि स्वादिष्ट पदार्थोको परोस दिया । और भोजनकेलिये प्रार्थना भी करदी।

रानीकी प्रार्थना सुनते ही गुरुओंने भोजन करना प्रारम्भ करादिया । कभी तो वे खीर खाने लने। और कभी उन्होंने लाडुओंपर हाथ जमाया । भोजनको उत्तम एवं स्वादिष्ट समझ वे मन ही मन अति प्रसन्न होने लगे।और वार वार रानीकी प्रशंसा करने लगे ।

जिससमय रानीने वौद्धगुरुओंको भोजनमें अति मग्न देखा। शीघ्र ही उसने अपनी प्रिय दासी वुलाई।और यह आज्ञा दी । तू अभी राजमंदिरके दरवाजेपर जा, और गुरुओंके वायें पैरोंके जूते लाकर शीघ्र उनके छोटे छोटे टुकड़े कर मुझे दे ।

रानीकी आज्ञा पाते ही दूती चलदी। उसने वहांसे जूता लाकर और उनके महीन टुकड़े कर शीघ्र ही रानीको देदिये । तथा रानीने उन्हें शीघ्रही किसी निकृष्ट छाछमें डालदिया,एव उनमें खूब मसाला मिलाकर शीघ्र ही थोड़ा थोड़ा कर गुरुओंके सामने परोस दिया ।

जिससमय मधुर भोजनोंसे उनकी तवियाति अकुलागई तव उन्होंने यह समझ कि यह कोई अद्भुत चटपटी चीज है।

शीघ्र ही उन छाछमिश्रित टुकडोंको खागये । एवं भोजनके अन्तमें रानी द्वारादिये तांवूल इलायची आदि चीजोंको खाकर और सबके सब रानीके पास आकर इसप्रकार उसै उपदेश देने लगे—

सुदरि ! देख तेरी प्रार्थनासे हम सवोंने राजमदिरमें आकर भोजन किया है। अब तू शीघ्र ही बौद्धधर्मको धारणकर । शीघ्र ही अपनी आत्मा बौद्धधर्मकी कृपासे पवित्र वना । अब तुझे जैनधर्मसे सर्वथा सबध छोड देना चाहिये ।

बौद्ध गुरुओंका ऐसा उपदेश सुन रानीने विनयसे उत्तर दिया श्रीगुरुओ ! आप अपने अपने स्थानोंपर जाकर विराजे। मै आपके यहां आऊगी । और वहीं पर बौद्धधर्म धारण करूंगी । इस विषयमें आप जराभी सदेह न करै ।

रानी चेलनाके ऐसे विनयवचन सुन वे सवगुरु अति प्रसन्न हुवे । और अपने अपने मठोंको चलदिये ।

जिससमय वे दरवाजेपर आये। और ज्योंही उन्होंने अपने वाये पैरके जूतोंको न देखा वे एकदम घवडागये। आपसमें एक दूसरेका मुंह ताकने लगे । एव कुछ समय इधर उधर अन्वेषण कर वे शीघ्र ही रानीके पास आये। और रानीसे जूतोंकी वावत कहा । एव रानीको डपटने भी लगे कि तुझे गुरुओंके साथ हंसी नहीं करनी चाहिये ।

बौद्ध गुरुओंका यह चरित्र देख रानी हसने लगी। उसने

शीघ्र ही उत्तरदिया गुरुओ ! आप तो इसवातकी डींग मारते थे कि हम सर्वज्ञ हैं। अब आपका वह सर्वज्ञपना कहां जाता रहा ? आप ही अपने ज्ञानसे जाने कि आपके जूते कहां है ? रानीके ऐसे वचन सुन बौद्धगुरु बड़े छके। उनके चेहरोंसे प्रसन्नता तो कोसो दूर किनारा करगई। अब रानीके सामने उनसे दूसरा तो कोई बहाना न बन सका। किं तु लाचारीसे यही जवाब देना पड़ा।

सुंदरि ! हमलोगोंमें ऐसा ज्ञान नहीं कि हम इसवातको जानलें कि हमारे जूते कहां है। कृपाकर आपही हमारे जूते वतादीजिये। बौद्धगुरुओंके ऐसे वचन सुन रानी चेलनाका शरीर मारे क्रोधके भभक उठा। कुछसमय पहिले जो वह अपने पवित्र धर्मकी निंदा सुन चुकी थी। उस निंदाने उसे और भी क्रोधित बना दिया। बौद्धगुरुओंको विना जवाब दिये उससे नहीं रहा गया। वह कहनेलगी—

बौद्धगुरुओ ! जब तुम जिनधर्मका स्वरूप ही नहीं जानते तो तुम्हे उसकी निंदा करनी सर्वथा अनुचित थी। विना समझे वोलनेवाले मनुष्य पागल कहे जाते है। तुम लोग कदापि गुरुपदके योग्य नहीं हो। किंतु भोलेभाले प्राणियोंके वंचक असत्यवादी, मायाचारी, एवं पापी हो।

रानीके मुखसे ऐसे कटुक बचन सुनकर भी बौद्ध गुरुओंके मुखसे कुछभी जवाब न निकला। वे मारामार उससे यही

प्रार्थना करने लगे—कृपया आप हमारे जूते देदें। जिससे हम आनदपूर्वक अपने अपने स्थान चले जांय। इसप्रकार बौद्ध गुरुओंकी जब प्रार्थना विशेष देखी तो रानीने जवाब दिया-

बौद्धगुरुओ? आपकी चीज आपके ही पास है। और इस समय भी वह आपके ही पास है। आप विश्वास रक्खे आपकी चीज किसी दूसरेके पास नही.-रानी चेलनाके ये वचन सुन तो बौद्ध गुरु बडे बिगड़े। वे कुपित हो इस प्रकार रानीसे कहने लगे----रानी यह तू क्या कहती है? हमारी चीज हमारे पास है, भला बतातो वह चीज कहां है? क्या हमने उसे चबाली? तुझे हम साधुओंके साथ कदापि ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिये। गुरुओंके ऐसे वचन सुन रानीने जवाब दिया

गुरुओ? आप घबाडायें न यदि आपकी चीज आपके पास होगी तो मै अभी उसे निकाल कर देती हू। रानीके इन वचनोंने बौद्धसाधुओंको बुद्धिहीन बनादिया। वे बार बार सोचने लगे यह रानी क्या कहती है? यह बात क्या हो गई? मालूम होता है इस निर्दय रानीने हमें जूतोंका भोजन करादिया। तथा ऐसा विचार करते करते उन्होंने शीघ्र ही क्रोधसे वमन करदिया

फिर क्या था! जूतोंके टुकडे तो उनके पेटमें अभी विराजमान ही थे ज्योंही वमनमें उन्होंने जूतों के टुकड़े देखे

उनके सारे होश किनारा करगये अब वे वारवार रानी की निंदा करने लगे। तथा रानी द्वारा किये हुवे पराभवसे लज्जित एवं नतमुख हो वे शीघ्र ही महाराजकी सभामें गये। और जो जो रानीने उनका अपमान किया था सारा महाराजको जा सुनाया। एव राजमंदिरमें अति अनादरको पा, वे चुपचाप अपने अपने स्थानोंको चलेगये। रानीके सामने उनके ज्ञानकी कुछ भी तीन पांच न चली।

कदाचित् राजगृह नगरमें एक विशाल बौद्धसाधुओंका संघ आया। सघके आगमनका समाचार एवं प्रशंसा महाराजके कानोंमें भी पड़ी। महाराज अति प्रसन्न हो शीघ्र ही रानी चेलनाके पासगये। और उन साधुओंकी प्रशंसा करने लगे—

प्रिये! मनोहरे! हमारे गुरु अतिशय ज्ञानी है। तपकी उत्कृष्ट सीमाको प्राप्त है। समस्त ससार उनके ज्ञानमें झलकता है। और परम पवित्र है। मनोहरे! जब कोई उनसे किसीप्रकारका प्रश्न करता है तो वे ध्यानमें अतिशय लीन होनेके कारण बड़ी कठिनतासे उसका जवाब देते है। ध्यानसे वे अपनी आत्माको साक्षात् मोक्षमें ले जाते है। एव वे वास्तविकतत्त्वोंके उपदेशक है। और देदीप्यमान शरीरसे शोभित है। महाराजके मुखसे इस प्रकार बौद्धसाधुओंकी प्रशंसा सुन रानी चेलनाने विनयसे उत्तर दिया।

कृपानाथ! यदि आपके गुरु ऐसे पवित्र एवं ध्यानी है

तो कृपाकर मुझे भी उनके दर्शन कराइये। ऐसे परमपवि महात्माओंके दर्शनसे मैं भी अपने जन्मको पवित्र करूंगी। आप इसबातका विश्वास रक्खे यदि मेरी निगाह पर बौद्धधर्म का सच्चापन जगगया और वे साधु सच्चे साधु निकले तो मैं तत्काल बौद्धधर्मको धारण करलूंगी। मुझे इसबातका कोई आग्रह नहीं कि मैं जैन धर्मकी ही भक्त बनी रहूं। परंतु विना परिक्षा किये दूसरेके कथनमात्रसे मैं जैनधर्मका परित्याग नहीं करसकती। क्योंकि हेयोपादेयके जानकर जो मनुष्य विना समझेबूझे दूसरेके कथनमात्रसे उत्तम मार्गको छोड दूसरे मार्ग पर चल पड़ते हैं वे शक्ति हीन मूर्ख कहे जाते हैं। और किसीप्रकार वे अपनी आत्माका कल्याण नहीं करसकते। महाराणीके ऐसे निष्पक्ष वचनोंसे महाराजको रानीका चित्त कुछ बौद्धधर्मकी ओर खिंचा हुवा दीख पड़ा। एवं रानीके कथनानुसार उन्होंने शीघ्र ही एक मंडप तयार कराया। और वह ग्रामके बाहिर वातकी वातमें बनकर तयार होगया।

मंडप तयार होनेपर इधर बौद्धगुरुओंने तो मंडपमें समाधि लगाई। दृष्टिबन्दकर, श्वास रोककर, काष्ठकी पुतली-के समान वे निश्चेष्ट बैठिगये। उधर रानीको भी इसबातका पता लगा वह शीघ्र पालकी तयार कराकर उनके दर्शनार्थ आई। एवं किसी बौद्धगुरुसे बौद्धधर्मकी बाबत जाननेके लिये वह प्रश्नभी करने लगी।

रानीके प्रश्नको भलेप्रकार सुन करभी किसी भी बौद्ध-गुरुने उत्तर नहीं दिया। किन्तु पास ही एक ब्रह्मचारी बैठा था उसने कहा—मातः! यह समस्त साधुवृंद इससमय ध्यानमें लीन है। समस्त साधुओंकी आत्मा इससमय सिद्धालयमें विराजमान है। देह युक्तभी इससमय ये सिद्ध हैं। इसलिये इन्होंने आपके प्रश्नका जवाब नहीं दिया है।

ब्रह्मचारीके ऐसे वचन सुन रानी चेलनाने और तो कुछभी जवाब न दिया। उन्हें मायाचारी समझ, मायाके प्रकट करनेकेलिये उसने शीघ्र ही मंडपमें आग लगा दी। और उनका दृश्य देखनेकेलिये एक ओर खड़ी हो गई। एवं कुछ समय बाद राजमंदिरमें आ गई

फिर क्या था? अग्नि जलते ही बौद्ध गुरुओंका ध्यान न जानें कहां किनारा कर गया। कुछसमय पहिले जो वे निश्चल ध्यानारूढ बैठे थे वे अब इधर उधर व्याकुल हो दौड़ने लगे। और रानीका सारा कृत्य उन्होंने महाराजको जा सुनाया।

बौद्ध गुरुओंके ये बचन सुन अबके तो महाराज कुपित होगये। वे यह समझ कि रानीने बड़ा अनुचित काम किया, शीघ्र ही उसके पास आये। और इसप्रकार कहने लगे—

सुंदरि! मंडपमें जाकर तूने यह अति निंद्य एवं नीच काम क्यों कर पड़ा! अरे? यदि तेरी बौद्धधर्म पर श्रद्धा नहीं है। बौद्ध साधुओंको तू ढोंगी साधु समझती है तो तू उनकी भक्ति

न कर । यह कौन वुद्धि मानी थी कि मंडपमें आग लगा तूने उन विचारोंके प्राण लेने चाहे । कांते ! जो तू अपनेको जैनी समझ जैनधर्मकी डींग मार रही है । सो वह तेरी डींग अब सर्वथा व्यर्थ मालूम पड़ती है । क्योंकि जैनसिद्धांतमें धर्म दयाप्रधान माना गया है । दया उसीका नाम है जो एकेंद्रियसे पचेंद्रि पर्यंत जीवोंकी प्राणरक्षा की जाय । किंतु तेरे इस दुष्ट वर्तावसे उस दयामय धर्मका पालन कहां होसका? तूने एकदम पचेंद्रियजीवोंके प्राण विघातकेलिये साहस कर पाड़ा यह बड़ा अनर्थ किया । अव तेरा हम जैन हैं हम जैन हैं यह कहना आलाप मात्र है । इस दुष्टकर्मसे तुझे कोई जैनी नहीं वतला सकता । महाराजको इसप्रकार अधि कुपित देख रानी चेलनाने बड़ी विनय एवं शांतिसे इसप्रकार निवेदन किया—

कृपानाथ! आप क्षमाकरें । मैं आपको एक विचित्र आख्यायिका सुनाती हूं । आप कृपया उसे ध्यान पूर्वक सुनें । और मेरा इस कार्यमें कितने अंश अपराध हुवा है । उस पर विचार करें ।

इसी जंबूद्वीपमें मनोहर मनोहर गांवोंमे शोभित, धनिक एवं विद्वानोंसे भूषित, एक वत्स देश है । वत्सदेशमें एक कोशांवी नगरी है । जो कोशांवी उत्तमोत्तम वाग वगीचोंसे, देवतुल्य मनुष्योंसे स्वर्गपुरीकी शोभाको धारण करती है ।

कौशांबीपुरीका स्वामी जो नीतिपूर्वक प्रजापालक, कल्पवृक्षके समान दाता था राजा वसुपाल था। राजा वसुपालकी पटरानी का नाम अश्वनी था। रानी अश्विनी स्त्रियोंके प्रधान प्रधान गुणोंकी आकर, मृगनयना चंद्रवदना एवं रमणीरत्न थी। कौशावी पुरीमें कोई सागरदत्त नामका सेठि रहता था। सागरदत्त अपार-धनका स्वामी था। अनेक गुणयुक्त होनेके कारण राजमान्य था। और विद्वान था। सागरदत्तकी स्त्रीका नाम वसुमती था। वसुमती रात्रिविकसी कमलोंको चांदनीके समान सदा सागरदत्तके मनको प्रसन्न करती रहती थी। मुखसे चंद्रशोभाको भी नीचे करने वाली थी। एवं प्रत्येक कार्यको विचारपूर्वक करती थी।

उसीसमय कौशांबीपुरीमें सुभद्रदत्त नामका सेठि भी निवास करता था। सुभद्रदत्त सागरदत्तके समान ही धनी था। धर्मात्मा एवं अनेकगुणोंका भंडार था। सेठि सुभद्रदत्तकी प्रिय भार्या सागरदत्ता थी जो कि अतिशय रूपवती गुणवती एव पतिभक्ता थी।

कदाचित् सेठि सागरदत्त और सुभद्रदत्त आनंदपूर्वक एक स्थानमें बैठे थे। परस्परमें और भी स्नेह वृद्ध्यर्थ सेठि सुभद्रदत्तने सागरदत्तसे कहा।

प्रिय सागरदत्त! आप एक काम करैं यदि भाग्यवश आपके पुत्र और मेरे पुत्री अथवा मेरे पुत्र और आपके पुत्री होवे तो

उन दोनोंका आपसमें विवाह करदेना चाहिये जिससे हमारा और आपका स्नेह दिनोंदिन बढ़ता ही चलाजाय—सुभद्रदत्तके ये वचन सुन सागरदत्तने कहा—जो आप कहते हैं सो मुझे मंजूर है। मैं आपके वचनोंसे बाहिर नहीं हूं।

कुछदिन बाद सेठि सागरदत्तके भाग्यानुसार एक पुत्र जो कि सर्पकी आकृतिका धारक, एवं-भयावह था उत्पन्न हुवा। और उसका नाम वसुमित्र रक्खा गया। तथा सेठि सुभद्रदत्त-की सेठानी सागरदत्तासे एक पुत्री उत्पन्न हुई जो पुत्री चंद्र-वदना, मनोहरा सुवर्णवर्णा एवं अनेकगुणोंकी आकर थी। और उसका नाम नागदत्ता रक्खा गया। कदाचित् कुमार कुमारीने यौवन अवस्थामें पदार्पण किया। इन्हें सर्वथा विवाहके योग्य जान बड़े समारोहसे दोनोंका विवाह किया गया। एवं विवाहके बाद वे दोनों दंपती संसारिक सुखका अनु-भव करने लगे।

माताका पुत्री पर अधिक प्रेम रहता है। यदि पुत्री किसी कष्टमय अवस्थामें हो तो माता अति दुःख मानती है। कदाचित् पुत्री नागदतापर सागरदत्ताकी दृष्टि पड़ी। उसे हार आदि उत्तमोत्तम भूषणोंसे भूषित, कमलाक्षी, कनकवर्णा देख वह इस प्रकार मन ही मन रोदन करने लगी।

पुत्री! कहा तो तेरा मनोहर रूप, सौभाग्य, उत्तमकुल, एवं मनोहरगति? और कहा भयंकर शरीरका धारक, हाथ पैर

राहित एवं अशुभ तेरा पति नाग ? हाय दुर्दैव! तुझै सहस्रवार धिक्कार है । तूनें क्या जानकर यह संयोग मिलाया । अथवा ठीक है तेरी गति विचित्र है । बड़े बड़े देव भी तेरी गतिके पते लगानेमें हैरान हैं । तब हम कौन चीज हैं । हाय विचारा तो कुछ और था, हो कुछ और ही गया । मताको इसप्रकार रोदन करती देख पुत्री नागदत्ताका भी चित्त पिघल गया । उसने शीघ्र ही विनयसे सांत्वनापूर्वक कहा—

मातः ? आज क्या हुवा। तू मुझै देख अचानक ही क्यों-कर विलाप करने लगगई । कृपाकर इसका कारण शीघ्र मुझे कह—

पुत्रीके इन विनयवचनोंने तो सागरदत्ताको रोदनमें और अधिक सहायता पहुंचाई--अब उसकी आंखोंसे अविरल आसु-ओंकी झड़ी लग गई । प्रथम तो उसने नागदत्ताके प्रश्नका कुछ भी जवाब न दिया । किंतु जब उसने नागदत्ताका अधिक आग्रह देखा तो बड़े कष्टसे वह कहने लगी पुत्रि! मुझे और किसीकी ओर से दुःख नहीं किंतु इस युवा अवस्थामें तुझे पतिजन्य सुखसे सुखी न देख मैं रोती हूं। यदि तेरा पति कुरूप भी होता पर होता मनुष्य, तो मुझे कुछ दुख न होता परंतु तेरा पति नाग है। वह न कुछ कर सकता और न धर ही सकता है । इसलिये मेरे चित्तको अधिक संताप है । माताके ये वचन सुन प्रथम तो नागदत्ता हंसने लगी पश्चात् उसने विनयसे कहा ।

मातः! तूं इस बातकेलिये जरा भी खेद मत कर। यदि तूं नहीं मानती है तो मैं अपना सारा हाल तुझे सुनाती हूं। तू ध्यान-पूर्वक सुन—मेरे शयनागरमें एक संदूक रक्खी रहती है। जिससमय दिन हो जाता है उससमय तो मेरा पति नाग बन जाता है। और दिनभर नागरूपमें मेरे साथ खेल किलोल करता है। और जब रात हो जाती है तो वह उस संदूकसे निकल उत्तम मनुष्याकार बन जाता है। एवं मनुष्यरूपसे रात भर मेरे साथ भोग भोगता है। पुत्रीके मुखसे यह विचित्र घटना सुन सागरदत्ता आश्चर्य करने लगी उसने शीघ्र ही नागदत्तासे कहा—

नागदत्ते! यदि यह बात सत्य है तो तू एक काम कर उस संदूकको तू किसी परिचित एवं अपने अभीष्ट स्थानमें रख। और यह वृत्तांत मुझे दिखा। तब मैं तेरी बात मानूंगी—

पुत्री नागदत्ताने अपनी माताकी आज्ञा स्वीकार करली। तथा किसी निश्चितदिन नागदत्ताने उस संदूकको ऐसे स्थान पर रखवा दिया जो स्थान उसकी माका भी भलेप्रकार परिचित था। और माको इशारा कर वह मनुष्याकार अपने पतिके साथ भोग भोगने लगी।

बस फिर क्या था? हे महाराज! जिससमय सागरदत्ताने उस संदूकको खुला देखा, तो उसने उसे खोखला समझ शीघ्र जला दिया। और वह वसुमित्र फिर सदाके

लिये मनुष्याकार बन गया। उसीप्रकार हे दीनबंधो ! किसी ब्रह्मचारीसे मुझे यह बात मालूम हुई कि बौद्ध गुरुओंकी आत्मा इससमय मोक्षमें है। ये इनके शरीर इससमय खोखले पडे हैं। मैंने यह जान कि बौद्धगुरुओंको अब शारीरिक वेदना न सहनी पडे, आग लगादी क्योंकि इसबात को आप भी जानते हैं। जब तक आत्माके साथ इस शरीरका संबंध रहता है। तब तक अनेक प्रकारके कष्ट उठाने पडते हैं। किं तु ज्योंहीं शरीरका संबंध छूटा त्योंहीं सब दुख भी एक ओर किनारा कर जाते है। फिर वे आत्मासे कदापि संबंध नहीं करने पाते। नाथ ! शरीरके सर्वथा जल जानेसे अब समस्त गुरू सिद्ध होगये। यदि उनका शरीर कायम रहता तो उनकी आत्मा सिद्धालयसे लोट आतीं। और संसारमें रहकर, अनेक दुःख भोगतीं। क्योंकि संसारमें जो इंद्रिय-जन्य सुख भोगनेमें आते है उनका प्रधान कारण शरीर है। यह बात अनुभव सिद्ध है। कि ऐंद्रिकसुखसे अनेक कर्मोंका उपार्जन होता है। और कर्मोंसे नरकादि गतिओंमें घूमना पड़ता है। जन्म मरण आदि वेदना भोगनी पडती हैं इसलिये मैंने तो उन्हें सर्वथा दुःखस छुड़ानेके लिये ऐसा किया था, नरनाथ! आप स्वयं विचार करें इसमें मैंने क्या जैन धर्मके विरुद्ध अपराध करपडा ? प्रभो! आपको इसबातपर जराभी विषाद नहीं करना चाहिये। आप यह निश्चय समझें बौद्ध-

गुरुओंका वह ध्यान नहीं था। ध्यानके बहानेसे भोलेजीवोंको ठगना था। मोक्ष कोई ऐसी सुलभ चीज नहीं जो हर एकको मिलजाय। यदि इस सरल मार्गसे मोक्ष मिलजाय तो बहुत जल्दी सर्वजीव सिद्धालयमें सिधार जाय। आप विश्वास रक्खे मोक्षप्राप्तिकी जो प्रक्रिया जिनागममें वर्णित है वही उत्तम और सुखप्रद है। नाथ! अब आप अपने चित्तको शांत करें। और बौद्ध साधुओंको ढोंगी साधू समझें।

रानीके इन युक्ति पूर्ण वचनोंने महाराजको अनुत्तर बना दिया। वे कुछ भी जवाब न दे सके। किंतु गुरुओंका पराभव देख उनका चित्त शांत न हुआ। दिनोंदिन उनके चित्तमें ये विचार तरंगे उठती रहीं कि इस रानीने बडा अपराध किया है। मेरा नाम श्रेणिक नहीं जो मैं इसे बौद्धधर्मकी भक्त और सेविका न बना दूं। आज जो यह जिनेंद्रका पूजन और उनकी भक्ति करती है सो जिनेंद्रके बदले इससे बुद्धदेवकी भक्ति कराऊंगा। तथा अशुभ कर्मके उदयसे कुछ दिन ऐसे ही संकल्प विकल्प वे करते रहे।

कदाचित् महाराजको शिकार खेलनेका कौतूहल उपजा। वे एक विशाल सेनाके साथ शीघ्र ही बनकी ओर चलपडे। जिस वनमें महाराज गये उसीवनमें महामुनि यशोधर खड्गासनसे ध्यानारूढ थे। मुनि यशोधर परमज्ञानी, आत्मस्वरूपके भलेप्रकार जानकार, एवं परमध्यानी थे। उनकी आत्मा

सदा शुभयोगकी ओर झुकी रहती थी । अशुभ योग उनके पासतक भी नहीं फटकने पाता था । उनका मन सर्वथा वश था । मित्र शत्रुओंपर उनकी दृष्टि बराबर थी । त्रैकालिक योगके धारक थे । समस्त मुनिओंमें उत्तम थे । अनंत अक्षय गुणोंके भंडार थे । असंख्याती पर्यायोंके युगपत् जानकार थे। देदीप्यमान निर्मल ज्ञानसे शोभित थे । भव्यजीवोंके उद्धारक और उन्हें उत्तम उपदेशके दाता थे । स्यादस्ति स्यान्नास्ति इत्यादि अनेक धर्मस्वरूप जीवादि सप्त तत्त्व उनके ज्ञानमें सदा प्रतिभासित रहते थे । एवं बड़े बड़े देव आर इंद्र आकर उनके चरणोंको नमस्कार करते थे । महाराजकी दृष्टि मुनि यशोधर पर पडी । उन्होंने पहिले किसी दिगंबर मुनिको नहीं देखा था इसलिये शीघ्र ही उन्होंने किसी पार्श्वचरसे धर पूछा ।

देखो भाई ! नग्न, स्नानादि संस्काररहित, एवं मूड़मूड़ाये यह कौन खडा है। मुझे शीघ्र कहो । पार्श्वचर बौद्ध था उसने शीघ्र ही इन शब्दोंमे महाराजके प्रश्नका जवाव दिया ।

कृपानाथ ! क्या आप नहीं जानते ? शरीरनगाये खडा हुवा, महाभिमानी यही तो रानी चेलनाका गुरू है ।

बस वहां कहने मात्रकी ही देरी थी । महाराज इस फिराकमें बैठे ही थे कि कब रानीका गुरु मिलै और कब उसका अपमान कर मैं रानीसे वदला लूं! ज्योंही महाराजने पार्श्वचरके वचन सुने मारे क्रोधसे उनका शरीर उबल उठा । वे विचारने लगे

अहा ! रानीसे वैरके बदला लेनेका आज सवसर मिला है । रानीने मेरे गुरुओंका बडा अपमान किया है । उन्हें अनेक कष्ट पहुंचाये है । मुझे आज यह रानीका गुरु भी मिला है । अब मुझे भी इसे कष्ट पहुंचानेमें और इसका अपमान करनेमें चूकना नहीं चाहिये । तथा ऐसा क्षण एक विचार कर महाराजने शीघ्र ही पांचसो शिकारी कुत्ते, जो लंबी लंबी डाडोंके धारक, सिंह के समान ऊंचे, एवं भयंकर थे । मुनिराज पर छोडदिये ।

मुनिराज परमध्यानी थे । उन्हें अपने ध्यानके सामने इस बातका जरा भी विचार न था कि कौन दुष्ट हमारे ऊपर क्या अपकार कर रहा है ? इसलिये ज्योंही कुत्ते मुनिराजके पास गये । और ज्योंही उन्होंने मुनिराज की शांतमुद्रा देखी, सारी क्रूरता उनकी एक ओर किनारा कर गई । मंत्रकीलित सर्प जैसा शांत पडजाता है मंत्रके सामने उसकी कुछ भी तीन पाच नही चलती उसीप्रकार कुत्ते भी शांत होगये । मुनिराज की शांत मुद्राके सामने उनकी कुछ भी तीन पाच न चली । वे मुनिराज की प्रदक्षिणा देने लगे । और उनके चरण कमलोंमें बैठि गये ।

महाराजभी दूरसे यह दृश्य देख रहे थे । ज्योंही उन्होंने कुत्तोंको क्रोधरहित और प्रदक्षिणा करते हुवे देखा—मारे क्रोधके उनका शरीर पजलगया । वे सोचने लगे यह साधु नहीं है धूर्त वंचक कोई मंत्रवादी है । मेरे वलवान कुत्ते इस दुष्टने मंत्रसे

कीलित कर दिये हैं। अस्तु मैं अभी इसके कर्मका इसे मजा चखाता हूं। तथा ऐसा विचार कर उन्होंने शीघ्र ही म्यानसे तलवार सूत ली। और मुनिके मारणार्थ वडे वेगसे उनकी ओर धर झपटे।

मुनिके मारनेकेलिये महाराज जा ही रहे थे। अचानक ही उन्हें एक सर्प, जोकि अनेक जीवोंका भक्षक एवं फणा ऊंचे किये था, दीख पड़ा। एवं उसे अनिष्टका करनेवाला समझ शीघ्र महाराजने मारडाला। और अति क्रूर परिणामी हो पवित्र मुनि यशोधरके गलेमें डाल दिया।

जैनसिद्धांतमें फलप्राप्ति परिणामाधीन मानी है। जिस मनुष्यके जैसे परिणाम रहते है। उसे वेसे ही फलकी प्राप्ति होती है। महाराज श्रेणिकके उससमय अति रौद्र परिणाम थे। उन्हें तत्काल ही, जिस महाप्रभानरकमें तेतीस सागरकी आयु, पांचसो धनुषका शरीर, एवं विद्वानोंके भी वचनके अगोचर घोर दुःख हैं उस महाप्रभा नामके सप्तम नर्कका आयुबंध बंध गया।

यह बात ठीकभी है जो मनुष्य विना विचारें दूसरोंको कष्ट करपाड़ते हैं। विशेष कर साधु महात्माओंको उन्हें घोर दुःखों का सामना करना पड़ता है। महात्माओंको कष्ट देनेवाले मनुष्योंको सदा नरकादि गतियां तयार रहती हैं। किंतु मदोन्मत्तोंको इस बातका कुछभी ज्ञान नहीं रहता। वे चट

अनर्थ कर वठते है। महाराज श्रेणिकने मदोन्मत्त हो चट ऐसा काम कर पाडा। इसलिये उन्हें इसप्रकारका कष्टप्रद आयुवध वध गया।

ज्योंही मुनि यशोधरको यह बात मालूम हुई कि मेरे गलेमें सर्प डाल दिया है। उन्होंने तो अपनी ध्यान मुद्रा और भी अधिक चढादी। और महाराज श्रेणिक वहासे चल-दिये। एवं नो जो काम उन्होंने वहा किये थे। अपने गुरुओंसे आकर सव कह सुनाये।

श्रेणिक द्वारा एक दिगंवर गुरूका ऐसा अपमान सुन वौद्ध गुरुओंको अति प्रसन्नता हुई। वे बारबार श्रेणिककी प्रशंसा करने लगे। किं तु साधू होकर उनका यह कृत्य उत्तम न था। साधुका धर्म मानापमान सुखदु:खमें समान भाव रखना है। अथवा ठीक ही था यदि वे साधू होते तो वे साधु-ओंके धर्म जानते। किंतु वहा तो वेषसाधुकां था। आत्माके साथ साधुत्वका कोई संवंध न था।

इसप्रकार तीन दिन तक तो महाराज इधर उधर लापता रहे। चौथे दिन वे रानी चेलनाके राजमंदिरमें गये। जो कुछ दुष्कृत्य वे मुनिके साथ कर आये थे सारा रानीसे कह सुनाया और हंसने लगे।

महाराजद्वारा अपने गुरुका यह अपमान सुन रानी चेलना अवाक् रह गई। मुनि पर घोर उपसर्ग जान उसकी

आखोंसे अविरल अश्रुधारा वहने लगी। वह कहने लगी हाय बड़ा अनर्थ होगया। राजन्! तूने अपनी आत्माको दुर्गतिका पात्र वनालिया। अरे! अव मेरा जन्म सर्वथा निष्फल है। मेरा राजमंदिरमें भोग भोगना महापाप है। हाय मेरा इस कुमार्गी पतिके साथ क्योंकर संवंध होगया। युवती होनेपर मे मर क्यों न गई। अव मैं क्या करूं; कहां जाऊं! कहां रहूं? हाय यह मेरा प्राण पखेरू क्यों नहीं जल्दी विदा होता। प्रभो! मै वड़ी अभागिनी हूं। मेरा अव कैसे भला होगा? छोटे गांव, वन, पर्वतोंमें रहना अच्छा किंतु जिन धर्म-रहित अति वैभव-युक्त भी इस राजमंदिरमें रहना ठीक नहीं। हाय दुर्दैव! तूने मुझ अभागिनी पर ही अपना अधिकार जमाया। रानी चेलनाका इसप्रकार रोदन सुन महाराजका पत्थरका भी हृदय मोम सरीखा पिघल गया। अव महाराजके चेहरेसे प्रसन्नता कोसों दूर उड़ गई। उससमय उनसे और कुछ न वन सका। वे इसरीतिसे रानीको समझाने लगे।

प्रिये! तू इस वातके लिये जराभी शोक न कर वह मुनि गलेसे सर्प फेंककर कवका वहांसे चल वसा होगा। मृतसर्पका गलेसे निकालना कोई कठिन नहीं। महाराजके ये वचन सुन रानीने कहा—

नाथ! आपका यह कथन भ्रममात्र है। मेरा विश्वास है

यदि वे मेरे सच्चे गुरु हैं तो कदापि उन्होंने अपने गलेसे सर्प न निकाला होता। कृपानाथ! अचल भी मेरुपर्वत कदाचित् चलायमान होजाय। मर्यादाका नहीं त्यागीभी समुद्र अपनी मर्यादा छोड़दे। किंतु जब दिगंबर मुनि ध्यानैकतान होजाते हैं। उससमय उनपर घोरतमभी उपसर्ग क्यों न आजाय; कदापि अपने ध्यानसे विचलित नहीं होते। प्राणनाथ! क्षमाभूषणसे भूषित दिगंबर मुनि अचल तो पृथ्वीके समान होते हैं। और समुद्रके समान गंभीर, वायुके समान निष्परिग्रह; अग्निके समान कर्म भस्म करनेवाले, आकाशके समान निर्लेप, जलके समान स्वच्छ चित्तके धारक, एवं मेघके समान परोपकारी होते हैं। प्रभो! आप विश्वास रक्खे जो गुरु परमज्ञानी परमध्यानी दृढवैरागी होंगे, वे ही मेरे गुरु होंगे। किं तु इनसे विपरीत परीषहोंसे भय करनेवाले, अति परिग्रही, व्रत तप आदिसे शून्य, मधु मांस मदिराके लोलुपी, एवं महा पापी जो गुरु है सो मेरे गुरु नहीं। जीवनसर्वस्व! ऐसे गुरु आपके ही हैं। न जाने जो परम परीक्षक एवं अपनी आत्माके हितैषी हैं। वे कैसे इन गुरुओंको मानते हैं?—उनकी पूजा प्रतिष्ठा करते हैं? रानीके ऐसे युक्तिपूर्ण वचन सुन राजाका चित्त मारे भयके कपगया। उससमय। और कुछ न कहकर उनके मुखसे येही शब्द निकले—

प्रिये! इससमय जो आपने कहा है बिलकुल सत्य कहा है।

अब विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं। अब एक काम करो जहांपर मुनिराज विराजमान हैं वहां पर हम दोनों शीघ्र चलें। और उन्हें जाकर देखें।

रानी तो जानेको तयार ही थी उसने उसीसमय चलना स्वीकार किया। एवं इधर रानी तो अपनी तयारी करने लगी। उधर महाराजने मुनिदर्शनार्थ शीघ्र ही नगरमें डोंडी पिटवादी तथा जिससमय रानी पीनसमें बैठि बनकी ओर चलने लगी महाराजभी एक विशाल सेनाके साथ उसके पीछे घोडे पर सवार हो चलदिये। और रातही रातमें अनेक हाथी घोडों से वेष्ठित वे दोनों दंपती पल स्यायतमें मुनिराजके पास जा दाखिल होगये।

यह नियम है मुनियोंपर जब उपसर्ग आता है। तव वे अनित्य आदि बारह भवनाओंका चिंतन करने लगजाते हैं। ज्योंही मुनि यशोधरके गलेमें सर्प पड़ा वे इसप्रकार भावना भा निकले-राजाने जो मेरे गलेमें सर्प डाला है सो मेरा बडा उपकार किया है। क्योंकि जो मुनि अपनी आत्मासे समस्तकर्मोंका नाश करना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि वे अवश्य कर्मोंकी उदीरणाके लिये परीषह सहैं। यह राजा मेरा बडा उपकारी है। इसने अपने आप परीषहोंकी सामिग्री मेरेलिये एकत्रित करदी है। यह देह मुझसे सर्वथा भिन्न है। कर्मसे उत्पन्न हुवा है। और मेरी आत्मा समस्त कर्मोंसे रहित पवित्र है।

चैतन्य स्वरूप है। शरीरमें क्लेश होनेपर भी मेरी आत्मा क्लेशित नहीं वन सकती। यद्यपि यह शरीर अनित्य है -महा- अपावन है। मल मूत्रका घर है। घृणित है। तथापि न मालूम विद्वान लोग क्यों इसै अच्छा समझते हैं? । इत्र फुलेल आदि सुगंधित पदार्थोंसे क्यों इसका पोषण करते हैं? । यह बात बरावर देखनेमें आती है कि जब आत्माराम इस शरीरसे विदा होता है उससमय कोश दो कोशकी तो बात ही क्या है, पग भरभी यह शरीर उसके साथ नहीं जाता। इसलिये यह शरीर मेरा हैं ऐसा विश्वास सर्वथा निर्मूल है। मनुष्य जो यह कहते हैं कि शरीरमें सुख दु:ख होने पर आत्मा सुखी दुखी होता है यहभी बात उनकी सर्वथा निर्युक्तिक है क्योंकि जिसप्रकार झोपडेमें अग्नि लगने पर झोपडा ही जलता है तदंतर्गत आकाश नहिं जलता उसीप्रकार शारीरिक दु:ख सुख मेरी आत्माको दुःखी सुखी नहीं वना सकते। मैं ध्यानवलसे आत्माको चैतन्यस्वरूप शुद्ध निष्कलंक समझता हूं। और मेरी दृष्टिमें शरीर जड, अशुद्ध, चर्मावृत, मल मूत्र आदिका घर, अनेक क्लेश देनेवाला हैं। मुझे कदापि इसै अपनाना नहीं चाहिये। तथा इस- प्रकार भावनाओंका चिंतन करते हुवे मुनिराज, जैसे उन्हें राजा छोडगया था वैसे ही खडे रहे। और गंभीरता पूर्वक परीषह सहते रहे।

सत्य सिद्धांतपर आरूढ रहने पर मनुष्य कहां तक दास

नहीं बनते है ? जिससमय राजारानीने मुनिको ज्योंका त्यों देखा मारे आंनदके उनका शरीर रोमांचित होगया । उन दोनोंने शीघ्र ही समानभावसे मुनिराजको नमस्कार किया । एवं उनकी प्रदक्षिणा की । मुनिके दुःखसे दुःखित, किंतु उनके ध्यानकी अचलतासे हर्षितचित्त, एवं प्रशम संवेग आदि सम्यक्त्व गुणोंसे भूषित, रानी चेलनाने शीघ्र ही मुनिके गलेसे सर्प निकाला । पासमें कुछ चीनी फैलाकर शीघ्र ही चिंउटी दूर कीं । चिंउटिओंने मुनिराजका शरीर खोखला कर दिया था इसलिये रानी ने एक मुलायम वस्त्रसे अवशिष्ट कीडिओंको भी दूरकर उसै गरम पानीसे धोया । और संतापकी निवृत्तिके लिए उसपर शीतल चंदन आदिका लेप कर दिया । एवं मुनिराजको भक्ति पूर्वक नमस्कार कर मुनिराजकी ध्यान मुद्रापर आश्चर्य करनेवाले,उनके दर्शनसे अतिशय संतुष्ट, वे दोनों दंपती आनंद पूर्वक उनके सामने भूमिमें बैठिगये ।

यह नियम है दिगंबर साधु रात्रमें नहीं बोलते इसलिये जबतक रात्रि रही मुनिराजने किसीप्रकार वचनालाप न किया । किंतु ज्यों ही दिनका उदय हुवा । और अंधकारको तितर बितर करते हुवे ज्योंहीं सूर्य महाराज प्राची दिशामें आ जमे । रानीने शीघ्र ही मुनिराजके चरणोंका प्रक्षालन किया । एव परमज्ञानी, परमध्यानी, जर्जर शरीरके धारक, मुनिराजकी फिरसे तीन प्रदक्षिणा दीं । और उनके चरणोंकी भक्तिभावसे

पूजाकर अपने पापकी शांतिके लिये वह इसप्रकार स्तुति करने लगी।

प्रभो! आप समस्त संसारमें पूज्य हैं। अनेक गुणोंके भंडार हैं। आपकी दृष्टि शत्रु मित्र बराबर है। दीनबंधो! सुमार्गसे विमुख जो मनुष्य आपके गलेमें सर्प डालने वाले है। और जो आपको फूलोंके हार पहिनाने वाले हैं आपकी दृष्टिमें दोनों ही समान है। कृपासिंधो! आप स्वयं संसार समुद्रके पार पर विराजमान हैं। एवं जो जीव दुःखरूपी तरंगोंसे टकराकर संसाररूपी बीचसमुद्रमें पडे हैं। उन्हें भी आप ही तारने वाले हैं। जीवोंके कल्याणकारी आप ही हैं। करुणासिंधो! अज्ञानवश आपकी जो अवज्ञा और अपराध बन पडा है आप उसे क्षमा करैं। कृपानाथ! यद्यपि मुझै विश्वास है आप राग द्वेष रहित हैं। आपसे किसीका अहित नहीं हो सकता। तथापि मेरे चित्त-में जो अवज्ञाका मकल्प बैठा है। वह मुझे संताप देरहा है। इसीलिये यह मैंने आपकी स्तुति की है। प्रभो! आप मेघ तुल्य जीवोंके परोपकारी हैं। आप ही धीर और वीर हैं। एवं शुभ भावना भावने वाले हैं। इसप्रकार रानी द्वारा भलेप्रकार मुनिकी स्तुति समाप्त होनेपर राजा रानीने भक्तिपूर्वक फिर मुनिराजके चरणोंको नमस्कार किया। और यथास्थान बैठिगये। एवं मुनिराजने भी अतिशय नम्र दोनों दंपती को समान भावसे धर्मवृद्धि दी। तथा इसप्रकार उपदेश देनेलगे।

विनीत मगधेश! संसारमें यदि जीवोंका परम मित्र है तो धर्म ही है। इस धर्मकी कृपासे जीवोंको अनेक प्रकारके ऐश्वर्य मिलते हैं। उत्तम कुलमें जन्म मिलता है। और संसारका नाश भी धर्मकी ही कृपासे होता है। इसलिये उत्तम पुरुषोंको चाहिए कि वे सदा उत्तम धर्मकी आराधना करैं।

देखो भाग्यका माहात्म्य कहां तो परम पवित्र मुनि यशोधर का दर्शन? ओर बौद्धधर्मका परमभक्त कहा मगधेश राजा श्रेणिक? तथा कहां तो रानी चेलना द्वारा बौद्धधर्मकी परीक्षा। और कहां महाराज श्रेणिकका परीक्षासे क्रोध! कहां तो श्रेणिकका मुनिराजके गलेमें सर्प गिराना? और कहां फिर रानी द्वारा उपदेश? एवं कहां तो रात्रिमें राजा रानीका गमन? और कहां समान रीतिसे धर्मवृद्धिका मिलना? ये सब बातें उन दोनों दंपतीको शुभ अशुभ भाग्योदय से प्राप्त हुईं।

मुनि यशोधरने जो धर्म वृद्धि दी थी वह साधारण न थी किंतु स्वर्ग मोक्ष आदि सुख प्रदान करने वाली थी। संसारसे पार करनेवाली थी। तीर्थंकर चक्रवर्ती इंद्र अहमिंद्र आदि पदोंकी प्रदात्री थी। एवं ' महाराज आगे तीर्थंकर होंगे, इस बातको प्रकट करनेवाली थी। और धर्मसे विमुख महाराजको धर्म मार्गपर लानेवाली थी।

इसप्रकार भविष्यत् कालमें होनेवाले श्री पद्मनाम
तीर्थंकरके भवातरके जीव महाराज श्रेणिकको
मुनिराजका समागम वर्णन करनेवाला
नवमा सर्ग
समाप्त हुवा ।

दशमासर्गः ।

समस्त मुनिओंके स्वामी, कर्मरहित निर्मल आत्माके ज्ञाता, समस्त कर्मोंके नाशक, मनुष्येश्वर महाराज श्रेणिक द्वारा पूजित, मैं श्री यशोधर मुनिको नमस्कार करता हूं ।

ज्योंही महाराज श्रेणिकका इस ओर लक्ष्य गया कि मुनि यशोधरने हम दोंनोंको समान रीतिसे ही धर्म वृद्धि दी है । धर्मवृद्धि देते समय मुनिराजने शत्रुमित्रका कुछभी विभाग नहीं किया है । इनकी हम दोंनोंपर कृपा भी एकसी जान पडती है । महाराज एकदम अवाक् रहगये । तत्काल उनका मन संकल्प विकल्पोंसे व्याप्त होगया । वे खिन्न हो ऐसा विचारने लगे—

मुनि यशोधरको धन्य है । गलेमें सर्प पडनेपर अनेक पीडा सहन करते भी इन्होंने उत्तमक्षमाको न छोडा । रानीचेलनाने गलेसे सर्प निकाल इनकी भक्तिभावसे सेवा की । और मैंने इनके गलेमें सर्पडाला । इनकी अनेक प्रकारसे हंसीकी । एवं इनकी

कुछभी भक्ति भी न की। तोभी मुनिराजका भाव हमदों-नोपर समान ही प्रतीत होरहा है। हाय! मैं बडा नीच नराधम हूं जोकि मैंने ऐसे परमयोगी की यह अवज्ञा की। देखो कहा तो परमपवित्र यह मुनिराजका शरीर! और कहां मैं इनका विघातेच्छु? हाय मुझे सहस्रवार धिक्कार है। संसारमें मेरे समान कोई वज्रपापी न होगा। अरे अज्ञानवश मैंने ये क्या अनर्थ कर पाडे? अव कैसे इनपापोंसे मेरा छुटकारा होगा;। हाय मुझे अव नियमसे नरक आदि घोर दुर्गतिओंमें जाना पडेगा। अव नियमसे वहांके दुःख भोगने पडेंगे। अव मैं क्या करूं? कहां जाऊं? इस कमाये हुवे पापका पश्चात्ताप कैसे करूं? अव पाप निवृत्त्यर्थ मेरा उपाय यही श्रेयस्कर होगा कि मैं खड्गसे अपना शिर काटूं और मुनिराजके चरणोंमें गिर समस्तपापोंका शमन करूं। कृपासिंधो! मेरे अपराध क्षमा करिये। मुझे दुर्गतिसे वचाइये। तथा इसप्रकार विचार करते करते मारे लज्जाके महाराजका मस्तक नत हो गया। मारे दुःखके उनकी आंखोसे अश्रुविंदू टपक पडी!

मुनिराज परमज्ञानी थे उन्होंने चट राजाके मनका तात्पर्य समझ लिया। एवं महाराजको सांत्वना देते हुवे वे इसप्रकार कहने लगे।

नरनाथ! तुम्हे किसीप्रकारका विपरीत विचार नहीं करना चाहिये। पापविनाशार्थ जो तुमने आत्महत्याका

विचार किया है सो ठीक नहीं, आत्महत्यासे रत्तीभर पापोंका नाश नहीं हो सकता । इस कर्मसे उल्टा घोर पापका बंध ही होगा ! मगधेश ! अज्ञान वश जो जीव तलवार विष आदिसे अपनी आत्माका घात करलेते है । वे यद्यपि मरणके पहिले समझ तो यह लेते हैं कि हमारी आत्मा कष्टोंसे मुक्त हो जायगी । परभवमे हमें सुख मिलैंगे । किंतु उनकी यह वडी भूल समझनी चाहिये । आत्मघातसे कदापि सुख नहीं मिल सकता । आत्मघातसे परिणाम संक्लेशमय- हो जाते है । संक्लेशमय परिणामोंसे अशुभ बंध होता है । और अशुभ बंध-से नरक आदि घोर दुर्गतिओंमे जाना पडता है । राजन् ! यदि तुम अपना हित ही करना चाहते हो तो इस अशुभ सकल्पको छोडो । अपनी आत्माकी निंदा करो । एव इस पापका शास्त्र में जो प्रायश्चित्त लिखा है उसे-करो । विश्वास रक्खो पापोंसे मुक्त होने का यही उपाय है । आत्महत्यासे पापोंकी शांति नहीं हो सकती ।

मुनिराजके ये वचन सुन तो महाराज अचंभेमें पडगये । वे महारानीके मुंहकी ओर ताककर कहने लगे । सुंदरि ! यह बात क्या हुई ? मुनिराजने मेरे मनका अभिप्राय कैसे जान लिया ? अहा ! ये मुनि साधारण मुनि नहीं । किं तु कोई महामुनि है । महाराजके मुखसे यह बात सुन रानी चेलनाने कहा—

नाथ! हाथकी रेखाके समान समस्त पदार्थोंको जाननेवाले क्या इन मुनिराजकी ज्ञानविभूतिको आप नहीं जानते? । प्राणनाथ! आपके मनकी बात मुनिराजने अपने परमपवित्र ज्ञानसे जान ली है। आप अचंभा न करें मुनिराजको आपके अंतरंगकी बातका पता लगाना कोई कठिन बात नहीं। आपके भवांतरका हाल भी ये बता सकते हैं। यदि आपको इच्छा है तो पूछिये। आप इनके ज्ञानकी अपूर्व महिमा समझें। रानी चेलनासे मुनिराजके ज्ञानकी यह अपूर्व महिमा सुन अबतो महाराज गद्गद कंठ हो गये। अपनी आखोंसे आनंदाश्रु पोंछते हुवे वे मुनिराजसे इसप्रकार निवेदन करने लगे—

कृपासिंधो! मैं परभवमें कौन था? किस योनिसे मैं इसजन्ममें आया हूं? कृपया मेरे पूर्वभवका विस्तार पूर्वक वर्णन करें। इससमय मैं अपने भवातरके चरित्र सुननेकेलिये अति आतुर एवं उत्सुक हूं। अतिविनयी महाराज श्रेणिकके ऐसे बचन सुन मुनिराजने कहा—राजन्! यदि तुम्हें अपने चरित्र सुननेकी इच्छा है तो तुम ध्यान पूर्वक सुनो मैं कहता हूं—

इसीलोकमें लाख योजन चौडा, द्वीपोंका शिरताज, अपनी गोलाईसे चंद्रमाकी गोलाईको नीचे करनेवाला जम्बूद्वीप है। जंबूद्वीपमें सुवर्णके रंगका सुमेरु नामका पर्वत है। सुमेरु पर्वतकी पश्चिम दिशामें जो विजयार्द्ध पर्वतसे छ खंडोंमें विभक्त है, भरतक्षेत्र है। भरतक्षेत्रमें एक अति रम-

णीय स्थान जो कि स्वर्गके निरालंब होनेके कारण, पृथ्वीपर गिरा हुवा स्वर्गका टुकड़ा ही है क्या ? ऐसी मनुष्योंको भ्रांति करनेवाला है आर्यखंड है। आर्यखंडमें अपनी कांतिसे सूर्यकांतिको तिरस्कृत करनेवाला, जगद्विख्यात, समस्तदेशोंका शिरोमणि सूर्यकांत देश है। सूर्यकांतदेशमें कुक्कुटसंपात्य ग्राम हैं। मनोहर, पुरुषोंके चित्तोंको अनेकप्रकारसे आनंद प्रदान करनेवाली उत्तमोत्तम स्त्रियां है। सर्वदा यह देश उत्तमोत्तम धान्य सोना, चांदी आदि पदार्थोंसे शोभित, और ऊंचे ऊंचे धनिकगृहोंसे व्याप्त रहता है। इसीदेशमें एक नगर जो कि उत्तमोत्तम बावड़ी कूप एवं स्वादिष्ट धान्योंसे शोभित है सूरपुर है। सूरपुरके बाजारमें जिससमय रत्नोंकी ढेरी नजर आती है उससमय यही मालूम होता है मानो पानी रहित साक्षात् समुद्र आकर ही इसकी सेवा कर रहा है। और जब ऊंचे ऊंचे धनिक गृहोंकी शिखरपर सुवर्णकलश देखनेमें आते हैं तब यह जानपड़ता है मानो चंद्रमा इसनगरकी सदा सेवा करता रहता है। वहांपर भक्तिभावसे उत्तमोत्तम जिनालयोंमें भगवानकी पूजाकर भव्यजीव अपने पापोंका नाश करते हैं। और मयूर जिससमय गवाक्षोंसे निकला हुवा सुगंधित धूवां देखते हैं तो उसे मेघ समझ असमयमें ही नाचने लग जाते हैं। एवं वहां कई एक भव्यजीव संसारभोगोंसे विरक्त हो सर्वदाकेलिये कर्मबंधनसे छूटजाते हैं।

सूर्यपुरका स्वामी जो नीतिपूर्वक प्रजापालक एवं शत्रुओं को भयावह था राजा मित्र था। राजा मित्रकी पटरानी श्रीमती थी। श्रीमती वास्तवमें अतिशय शोभायुक्त होनेसे श्रीमती ही थी। महाराज मित्रके श्रीमती रानीसे उत्पन्न कुमार सुमित्र था। सुमित्र नीति शास्त्रका भलेप्रकार वेत्ता, विवेकी, सच्च-रित्र और विशाल किंतु मनोहर नेत्रोंसे शोभित था। राजा मित्र के मंत्रीका नाम मतिसागर था। जोकि नीतिमार्गानुसार राज्य की सभाल रखता था। मंत्री मतिसागरके मनोहररूपकी खानि, रूपिणी नामकी भार्या थी। और रूपिणीसे उत्पन्न पुत्र सुषेण था। सुषेण माता पिताको सदा सुख देता था। और प्रत्येककार्य को विचारपूर्वक करता था। राजा मित्रका पुत्र सुमित्र और सुषेण दोनों समवयस्क थे। इसलिये वे दोनों आपसमें खेलाकरते थे। सुमित्रको अभिमान अधिक था। वह अभिमानमें आकर सुषेणको बड़ा कष्ट देता था। अनेक प्रकारकी अवज्ञा भी किया करता था।

एकदिन सुमित्र और सुषेण किसी बावड़ीपर स्नानार्थ गये। वे दोनों कमलपत्रसे मुंह ढाक बार बार जलमें डुबकी मारने लगे सुमित्र बड़ा कौतूहली था। सुषेणको बार बार डुबाता था। और खूब हंसी करता था। सुमित्रके इसबर्तावसे यद्यपि सुषेणको दुःख होता था किंतु राजा मित्रके भयसे वह कुछ नहीं कहता था। उदासीनभावसे उसके सर्व अनर्थ सहता था।

कदाचित् राजा मित्रका शरीरांत होजानेसे सुमित्र राजा बनगया। सुमित्रको राजा जान मंत्रिपुत्र सुषेणको अति चिंता हो गई। वह विचारनेलगा—सुमित्रकी प्रकृति क्रूर है। यह दुष्ट मुझे बालकपनमें बडे कष्ट देता था। अब तो यह राजा हो गया, मुझे अब यह और भी अधिक कष्ट देगा। इसलिये अब सबसे अच्छा यही होगा कि इसके राज्यमें न रहना। तथा ऐसा विचार कर सुषेणने शीघ्र ही कुटुंबसे मोह तोडदिया। एवं बनमें जाकर जैनदीक्षा धारण कर वे उग्रतप करनेलगे।

जबसे सुषेण मुनिराज बनमें गये तबसे वे राजमंदिरमें न आये। राजा सुमित्र भी राजपाकर आनंदसे भोग भोगने लगे। उनको भी सुषेणकी कुछ याद न आई। कदाचित् राजा सुमित्र एकांत स्थानमें बैठे थे। उन्हें अचानक ही सुषेणकी याद आगई। सुषेणका स्मरण होते ही उन्होंने चट किसी पार्श्वचर (सिपाही)से घर पूछा कहो भाई! आजकल मेरे परमपवित्र मित्र सुषेण राज मंदिरमें नहीं आते। वे कहां रहते हैं? और क्यों नहीं आते?। महाराजके मुखसे सुषेणके बाबत ये वचन सुन पार्श्वचरने कहा—

कृपानाथ! सुषेण तो दिगंबर दीक्षाधारण कर मुनि हो गये। अब उन्होंने समस्त संसारसे मोह छोड़दिया। वे आजकल बनमें रहते हैं। इसलिये आपके मंदिरमें नहीं आते। पार्श्वचरके मुखसे अपने प्रियमित्र सुषेणका यह समाचार सुन राजा सुमित्र बड़े दुःखी हुए। उन्हें सुषेणकी अब बड़ी याद आने लगी।

कदाचित् राजा सुमित्रको यह पता लगा कि मुनिराज सुषेण सूरपुरके उद्यानमें आ विराजे हैं। उन्हें बडी खुशी हुई। मुनिराजके आगमन श्रवणसे राजा सुमित्रका चित्तरूपी कमल विकसित होगया। उन्होंने मुनिराजके दर्शनार्थ शीघ्र ही नगरमें ढिंढोडा पिटवा दिया। एवं स्वयं भी एक उन्नत गजपर सवार हो बडे ठाट वाटसे मुनि दर्शनकेलिये गये। ज्योंही राजा सुमित्रका हाथी बनमें पहुंचा। वे गजसे चट उतर पडे। मुनिराज सुषेणके पास जाकर उनकी तीन प्रदक्षिणा दीं। अति विनयसे नमस्कार किया। एवं प्रवल मोहके उदयसे सुषेणकी मुनिमुद्राकी ओर कुछ न विचार कर वे यह कहने लगे।

प्रियमित्र! मेरा राज्य विशाल राज्य है। शुभकर्मके उदयसे मुझे वह मिल गया है। ऐसे विशाल राज्यकी कुछ भी परवा न कर मेरे बिना पूछे आप मुनि बनगये यह ठीक न किया। आपको आधा राज्य ले भोग भोगने थे। अब भी आप इस पदका परित्याग करदें। भला संसारमें ऐसा कौंन बुद्धिमान होगा? जो शुभ एवं प्रत्यक्ष सुख देनेवाले राज्यको छोड दुर्धर तप आचरण करैगा। राजा सुमित्रके मुखसे ये मोहपूर्ण वचन सुन मुनिराज सुषेणने कहा—

राजन्! मैं अपनी आत्माको शांतिमय अवस्थामें लाना चाहता हूं। परभवमें मेरी आत्मा शांतिस्वरूपका अनुभव करै इसलिये मैंने यह तप करना प्रारंभ करदिया है। मुझे विश्वास है

कि उत्तमतपकी कृपासे मनुष्योंको स्वर्ग मोक्ष सुख मिलते है। इसीकी कृपासे राज्य,उत्तमोत्तम विभूतिया, उत्तम यश,एवं उत्तम ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। मुनिराज सुषेणके मुखसे ये वचन सुन राजा सुमित्रने और तो कुछ न कहा किं तु इतना निवेदन और भी किया।

मुनिनाथ! यदि आप तप छोडना नहीं चाहते तो कृपाकर आप मेरे राजमंदिरमें भोजनार्थ जरूर आवे। और मेरे ऊपर कृपाकरें। राजाके ये वचनभी मोह परिपूर्ण जान मुनिवर सुषेणने कहा :—

नरनाथ! मैं इस कामके करनेकेलियेभी सर्वथा असमर्थ हूं। दिगंबर मुनिओंको इसबातकी पूर्णतया मनाई है। वे संकेतपूर्वक आहार नहीं ले सकते। आप निश्चय समझिये जो भोजन मन वचन कायद्वारा स्वयं किया, एवं परसे कराया गया, वा परको करते देख 'अच्छा है' इत्यादि अनुमोदनापूर्वक, होगा दिगंबर मुनि उस भोजनको कदापि न करेंगे। किंतु उनके योग्य वही भोजन हो सकता है जो प्रासुक होगा। उनके उद्देशसे न बना होगा। और विधिपूर्वक होगा। राजन्! दिगंबर मुनि अतिथि हुवा करते हैं। उनके आहारकी कोई तिथि निश्चित नहीं रहती। मुनि निमंत्रण आमंत्रण पूर्वक भी भोजन नहीं कर सकते। आप विश्वास रखिये जो मुनि निश्चित तिथिमें निमंत्रण पूर्वक आहार करनेवाले हैं। कृत कारित अनुमोदनाका कुछ भी

विचार नहीं रखते। वे मुनि नहीं जिह्वाके लोलुपी हैं। एवं वज्र मूर्ख हैं । हां यदि मेरे योग्य जैनशास्त्रसे अविरुद्ध कोई काम हो तो मैं कर सकता हूं। मुनिराजकी दृष्टि सासारिक कामोंसे ऐसी उपेक्षायुक्त देख राजा सुमित्रने कुछभी जवाव न दिया। उसने शीघ्र ही मुनिराजके चरणोंको नमस्कार किया। एवं हताश हो चुपचाप राजमंदिरकी ओर चलदिया।

यद्यपि राजा सुमित्र हताश हो राज मंदिरमें तो आगये। किंतु उनका सुषेणविषयक मोह कम न हुवा। उनके मनमें मोहका यह अंकुर खडा ही रहा कि किसीरीतिसे मुनि सुषेण राज मंदिरमें आहार लें। इसलिये ज्यों ही वह राज मंदिरमें आया। शीघ्र ही उसने,यह समझ कि मुनि सुषेणको जब अन्यत्र आहार न मिलैगा तो मेरे यहा जरूर लेंगे। नगरमें यह कडी आज्ञा कर दी कि, सुषेण मुनिको कोई अहार न दे। और प्रतिदिन मुनि सुषेणकी राह देखता रहा।

कई दिन वाद मुनिराज सुषेण दो पक्षकी पारणाकेलिये नगरमें आहारार्थ आये। वे विधिपूर्वक इधर उधर ग्रहस्थोंके घर गये। किंतु राजाकी आज्ञासे किसीने उन्हें आहार न दिया। अंतमें सम्यग्दर्शनादिगुणोंसे भूषित, विद्वान्, आहारके न मिलने पर भी प्रसन्नचित्त, मुनि सुषेण जूरा प्रमाण भूमिको निरखते राज मंदिरकी ओर आहारार्थ चल दिये।

इधर मुनिराजका तो राजमंदिरमें प्रवेश हुवा। और इधर राजा सुमित्रकी सभामें राजा वैर का एक दूत आ पहुंचा। दूतमुखसे समाचार सुन राजा सुमित्र अति व्याकुल हो गये। चित्तकी घवडाहटसे वे मुनिराजको न देख सके। अन्य किसी ने मुनिराजको आहार दिया नहीं। इसलिये अपना प्रवल अंतराय जान मुनिराज तत्काल वनको लौट गये। एवं उन्होंने दो पक्षका प्रोषधव्रत धारण करलिया।

जब दो पक्ष समाप्त हो गये तो फिर मुनिराज आहारको आये। और उसीतरह समस्त ग्रहस्थोंके घर घूम कर वे राजमंदिर की ओर गये। ज्योंही मुनिराज राजमंदिरके पास पहुंचे त्योंही राजा सुमित्रके हाथीने बंधन तोड दिया। एवं जनसमुदायको व्याकूल करता हुवा वह नगरमें उपद्रव करने लगा इसलिये इस भयंकर दृश्यसे अपना भोजनातराय समझ मुनिराज फिर वनको लौट गये। उस दिन भी उनको आहार न मिला। एवं वनमें जाकर फिर उन्होंने दो पक्षका प्रोषध व्रत धारण कर लिया।

प्रतिज्ञाके पूर्ण हो जानेपर मुनिराज फिर भी दो पक्ष वाद नगरमें आये। गृहस्थोंके घरोंमें आहार न पाकर वे राज मंदिरमें आहारार्थ गये। इधर मुनिराजका तो राज मंदिरमें आगमन हुवा। और उधर राजमंदिरमें बडे जोरसे अग्नि जल उठी। अग्निज्वाला देख राजा सुमित्र आदि घव-

डागये । उस दिन भी राजा सुमित्रकी दृष्टि मुनिराज पर न पडी । एवं मुनिराज भी आहारका अंतराय समझ बनकी ओर चल दिये ।

मुनिराज वनकी ओर जा रहे थे । उनकी देह आहारके न मिलनेसे सर्वथा क्षीण हो चुकी थी—ज्योंही गृहस्थोंकी दृष्टि मुनिराज पर पडी मुनिराजका शरीर अति क्षीण देख उन्हें बहुत दुःख हुवा । वे खुले शब्दोंमें राजा सुमित्रकी निंदा करने लगे । देखो यह राजा बडा दुष्ट है इससमय यह मुनिराजके आहारमें पूरा पूरा अंतराय कर रहा है । न यह दुष्ट स्वयं आहार देता है । और न किसी दूसरेको देने देता है ।

मनुष्योंको इसप्रकार वातचीत करते सुन मुनि सुषेण ईर्यापथ ध्यानसे विचलित हो गये । आहारके न मिलनेसे मारे क्रोधके उनका शरीर लाल हो गया । वे विचारने लगे—देखो इस राजा की दुष्टता जिससमय मै मुनि नहीं था उस समय भी यह मुझे अनेक संताप देता था । और अब मै मुनि हो गया । इसके साथ मेरा कुछ भी संबंध न रहा तौ भी यह मुझे संताप दिये बिना नहीं मानता । ऐसा नीच चाडाल कोई राजा नहीं दीख पडता । तथा इसप्रकार क्रोधांध हो मुनि सुषेण ने बडे जोरसे किसी पत्थरमें लात मारी । लात मारते ही वे

एकदम जमीनपर गिरगये। तत्काल उनके प्राण पखेरु उडभगे। एवं खोटे निदानसे मुनि सुषेण व्यंतर होगये।

मुनि सुषेणकी मृत्युका समाचार राजा सुमित्रने भी सुना। सुनते ही उनका चित्त अति आहत होगया। सुमित्रको आदि ले मंत्री आदि सुषेणकी मृत्यु पर अति शोक करने लगे। किसीदिन सुषेणकी मृत्युसे सुमित्रके दुःखकी सीमा यहा तक बढ गई कि उसने समस्त राज्यका परित्याग कर दिया। शीघ्र ही तापसके व्रत धारण कर लिये। और आयुके अंतमें मर कर खोटे तपके प्रभावसे वह भी देव हो गया।

मगधेश! अब देवगतिकी आयुको समाप्त कर राजा सुमित्रका जीव तो तो श्रेणिक हुवा है। और मुनि सुषेणका जीव अपने आयुकर्मके अंतमें रानी चेलनाके गर्भमें आवेगा। वह कुणक नाम का धारक तेरा पुत्र होगा। एवं तेरा पुत्र होकर भी वह तेरेलिये सदा शत्रु ही रहेगा।

मुनिराज यशोधरके मुखसे अपने पूर्वभवका यह वृत्तात सुन राजा श्रेणिकको शीघ्र ही जातिस्मरण हो गया। जातिस्मरण-के बलसे उन्होंने शीघ्र ही अपने पूर्वभवका हाल वास्तविक रीतिसे जान लिया। एवं मुनिराजके गुणोंकी मुक्त कठसे प्रशंसा करते हुवे वे ऐसा विचार करने लगे—

अहा!!! मुनि यशोधरका ज्ञान धन्य है। उत्तम

क्षमा भी इनकी प्रशंसाके लायक है। परीषहोंके जीतनेमें धीरता भी इनकी लोकोत्तर है। इनके प्रत्येक गुण पर विचार करनेसे यही बात जान पडती है कि मुनि यशोधरसा परम ध्यानी परम ज्ञानी मुनि शायद ही संसारमें होगा? श्री जिनेंद्र भगवानका शासन भी संसारमें धन्य है। जिनागममें जो तत्त्व कहे गये हैं। और उनका जिसरीतिसे स्वरूप वर्णन किया गया है सर्वथा सत्य है। जिनोक्त जीवादितत्त्वोंसे भिन्न तत्त्व मिथ्या तत्त्व हैं। यशोधर मुनिराज अपने व्रतमें सर्वथा दृढ हैं। साधुओंके वास्तविक लक्षण मुनि यशोधरमें ही संघटित होते है। एवं महाराजकी विचार सीमा अब और भी चढ गई वे मनही मन यह भी कहने लगे—जो साधु भोले जीवोंके वंचक हैं। विषय लंपटी है। हाथी घोडा माल खजाना स्त्री आदि परिग्रहोंके धारक है। वास्तविक ज्ञान ध्यानसे वहिर्भूत हैं। वे नामके ही साधु है। पाखंडी साधु कदापि गुरु नहीं वन सकते। वे संसार समुद्रमें डुबाने वाले है। इसप्रकार विचार करते करते महाराज श्रेणिकको अपनी आत्माका कुछ वास्तविक ज्ञान हो गया। उन्होंने शीघ्र ही श्रावकके व्रत धारण करलिये। रानी चेलना सहित महाराज श्रेणिकने विनयसे मुनिराजके चरणोंको नमस्कार किया। एवं मुनिराजके गुणोंमें संलग्नचित्त, उनकी वारंवार स्तुति करते हुवे महाराज श्रेणिक और रानी चेलना आनंद पूर्वक

अपने राजमंदिरकी ओर चल दिये । महाराजने जिन धर्मकी परम भक्त रानी चेलनाके साथ बड़े ठाटवाटसे राज मंदिरमें प्रवेश किया । और अपनी कीर्तिसे समस्त दिशोयें सफेद करनेवाले महाराज भले प्रकार जिन भगवानकी पूजा आराधना एवं उनके गुणोंका स्तवन करते हुवे राज मंदिरमें रहने लगे ।

कदाचित् बौद्ध साधुओंको इसबातका पता लगा कि महाराज श्रेणिकने किसी जैन मुनिके उपदेशसे जैन धर्म धारण कर लिया है । उनके परिणाम बौद्ध धर्मसे सर्वथा विमुख हो गये हैं । वे शीघ्र ही महाराज श्रेणिकके पास आये । और ऐसा उपदेश देने लगे ।

प्रिय मगधेश ! यह बात सुननेमें आई है कि आपने बौद्ध धर्मका सर्वथा परित्याग कर दिया है । आप जैन धर्मके परम भक्त हो गये हैं ? यदि यह बात सत्य है तो आपने बडा अनर्थ एवं अविचारित काम कर पड़ा । हम संदेह होता है कि परम पवित्र, जीवोंको यथार्थ सुख देनेवाले, श्री बुद्ध देवके धर्म और यथार्थ तत्त्वोंको छोडकर, निस्सार, जीवोंका अहितकारक जैनधर्म और उसके तत्त्वों पर आपने कैसे विश्वास कर लिया ? प्रजानाथ ! स्त्रियोंकी अपेक्षा बुद्धिबल मनुष्यका अधिक होता है । इसलिये सर्वथा संसारमें यही बात देखनेमें आती है कि यदि स्त्री किसी विपरीत मार्ग पर चलनेवाली हो तो चतुर पुरुष अपने बुद्धिबलसे उसे सन्मार्ग पर ले आते

हैं। किंतु यह बात कहीं नहीं देखी कि स्त्रीके कहनेसे वे विपरीत मार्गगामी हो जांय—आप विश्वास रखिये जो मनुष्य स्त्रीकी बातोंमें आकर अपने समीचीन मार्गका त्याग करदेते है। और विपरीत मार्गको ही सम्यक मार्ग समझने लग जाते है। वे मनुष्य विद्वानोंकी दृष्टिमें चतुर नहीं समझे जाते। स्त्रीके कहनेमें चलने वाला मनुष्य आ बालगोपाल निंदा भाजन बन जाता है। राजन्! आप बुद्धिमान हैं। प्रत्येक कार्य विचार पूर्वक करते हैं। तथापि न मालूम आपने कैसे स्त्री की बातोंमें फसकर अपने पवित्र धर्मका परित्याग कर दिया? हमैं इस बातकी कोई परवा नहीं कि आप जैन बनैं अथवा बौद्ध रहैं। किं तु यहां यह कहना हमैं आवश्यकीय होगा कि यदि आप जैन मुनिओंकी अपेक्षा बौद्ध साधुओंको अल्पज्ञानी समझते हैं, तो आप कृपया फिरसे इस बातका निर्णय कर लें। पीछे आप बौद्ध धर्मका परित्याग कर दें। मगधाधिप! हमैं पूर्ण विश्वास है कि अनेकप्रकारके ज्ञान विज्ञानके भंडार, परम पवित्र, बौद्ध साधुओंके सामने जैन धर्मसेवी मुनी कोई चीज नहीं। और न बौद्धधर्मके सामने जैन धर्म ही कोई चीज है। याद रखिये यदि आप योंही विना परिक्षा किये जैन धर्म धारण कर लेंगे। और बौद्ध धर्म छोड देंगे तो आपको अभी नहीं तो पीछे जरूर पछिताना होगा।

प्रबल पवनके सामने अचलभी वृक्ष कहातक चलायमान नहीं

होता। कुतर्कसे मनुष्यके सद्विचार कहांतक किनारा नहीं करजाते?
ज्योंही महाराजने बौद्धोंका लंबा चोडा उपदेश सुना 'पानीके
अभावसे जैसा अभिनव वृक्ष कुझला जाता है' महाराजका जैन-
धर्मरूपी पौधा कुझला गया। अब उनका चित्त फिर डामाडो-
ल होगया। उनके मनमें फिरसे जैनधर्म एवं जैन मुनिओंकी
परीक्षाका विचार आकर सामने ठहुकाने लगा।

कदाचित् महाराजने जैन मुनिओंकी परीक्षार्थ राजमंदिरमें
गुप्तरीतिसे एक गहरा गढा खुदवाया। उसमें कुछ हड्डी
चर्म आदि अपवित्र पदार्थ मगाकर रखवादिये। और रानीसे
जाकर कहा—

काते! अब मै जैनधर्मका परिपूर्ण भक्त होगया हूं।
मेरे समस्तविचार बौद्धधर्मसे सर्वथा हट गये है। कदाचित्
भाग्यवश यदि कोई जैनमुनि राजमंदिरमें आहारार्थ आवें
तो तू इसपवित्रमंदिरमें आहार देना उनकी भक्ति सेवा सन्मा-
न भी खूब करना—

रानी चेलना बडी पंडिता थी। महाराजकी यह आक-
स्मिक वचनभंगी सुन उसे शीघ्र ही इसबातका बोध होगया कि
महाराजने जैनमुनिओंकी परीक्षार्थ अवश्य ही कुछ ढोंग रचा
है। और महाराजके परिणाम बौद्धधर्मकी ओर फिर झुकेहुये
प्रतीत होते हैं।

कुछ दिनके पश्चात् भलेप्रकार ईर्यासमितिके परिपालक,

परमपवित्र तीन मुनिराज राजमंदिरमें आहारार्थ आये। ज्योंही महाराजकी दृष्टि मुनिओंपर पडी वे शीघ्र ही रानीके पास गये। और कहने लगे—प्रिये! मुनिराज राजमंदिरमें आहारार्थ आरहे हैं। जल्दी तयार हो उनका पड़िगाहन कर। तथा स्वयं भी मुनिओंके सामने आकर खडे होगये।

मुनिराज यथास्थान आकर ठहर गये। ज्योंही रानीने मुनिराजोंको देखा विनम्र मस्तक हो उन्हें नमस्कार किया। तथा महाराजद्वारा की हुई परीक्षासे जैनधर्म पर कुछ आघात न पहुंचे यह विचार रानीने शीघ्र ही विनयसे कहा :—

हे मनोगुप्ति आदि त्रिगुप्ति पालक, परसोत्तम, मुनिराजो! आप आहारार्थ राजमंदिरमें तिष्ठें।

उनमेंसे कोई भी मुनि त्रिगुप्तिका पालक था नहीं। सब दो दो गुप्तिओंके पालक थे। इसलिये ज्योंही रानीके वचन सुने उन्होंने शीघ्र ही अपनी दो दो अंगुलिया उठा दी। तथा दो अगुलियोंके उठानेसे रानीको यह जतलाकर कि हे रानी! हम दो दो गुप्तियोंके ही पालक हैं, शीघ्र वनकी ओर चल दिये।

उसीसमय कोई गुणसागर नामके मुनिराज भी पुरमें आहारार्थ आये। मुनिगुणसागरको अवधिज्ञानके बलसे राजाका भीतरी विचार विदित हो गया था। इसलिये वे सीधे राजमंदिर में ही घुसे चले आये। मुनिराजपर रानीकी दृष्टि पडी। उन्हें

नत मस्तक हो, रानीने नमस्कार किया। एवं विनयसे वह इस प्रकार कहने लगी।

हे त्रिगुप्तियोंके पालक परमोत्तम मुनिराज! आप राज-मंदिरमें आहारार्थ ठहरें।

मुनि गुणसागरने ज्योंही रानीके वचन सुने शीघ्र ही उन्होंने अपनी तीन अंगुलिया दिखा दीं। मुनिराजकी तीनों अंगुलिया देख रानी अति प्रसन्न हुई। उसने शीघ्र ही महाराजको अपने पास बुलाया। महाराजने आकर भक्ति भावसे मुनिराजको नमस्कार किया। आगे बढकर रानीने मुनिराजको काष्ठासन दिया। उनका पडिगाहन (प्रतिगृहीत) किया। गरम पानीसे उनके चरण प्रक्षालन किये। एव महाराज नत मस्तक हो उन्हें भोजनालयमें आहारार्थ ले गये।

महाराजकी प्रार्थनानुसार मुनिराज भोजानलयमें गये तो सही। किंतु ज्योंही वे वहां पहुंचे अधविज्ञानके बलसे शीघ्र ही उन्हें गढे हुवे हड्डी चामका पता लग गया। वे तत्काल ही यह कह कि राजन्! तेरा घर अपवित्र है, वहासे घर लोटे। और इर्यापथसे जीवोंकी रक्षा करते हुवे बनकी ओर चले आये।

चारो मुनिओंको इसप्रकार राजमंदिरसे विना कारण लोटा देख राजा श्रेणिक आदि समस्त जन हाहाकार करने लगे—मुनिओंका अलौकिक ज्ञान देख सब मनुष्योंके मुखसे

उनकी प्रशंसा निकलने लगी। महाराज श्रेणिकको भी इसबातका परम दुःख हुवा। वे शीघ्र रानीके पास आये और कहने लगे—

प्रिये! यह क्या हुवा। मुनिराज अकारण ही क्यों आहार छोड चले गये? कुछ जान नहीं पड़ता शीघ्र कहो। महाराजके ऐसे वचन सुन रानीने उत्तर दिया—

नाथ! मैं भी इसबातको न जान सकी मुनिगण क्यों तो राजमंदिरमें आहारार्थ आये और क्यों फिर विना आहारलिये चले गये। स्वामिन्! चलिये अपन शीघ्र ही वन चलें। और जहापर वे परम पवित्र यतीश्वर विराजमान हैं। वहां जाकर उन्हीं से यह बात पूंछे। रानी चेलनाकी मनोहर एवं संशय निवारक यह युक्ति महाराजको पसंद आगई। अतिशय तेजस्वी और मुनिदर्शनार्थ उत्कंठित वे दोनों दंपती जहा मुनिराज विराजमान थे वहीं गये। प्रथम ही प्रथम महाराजकी दृष्टि मुनिवर धर्मघोष पर पडी। तत्काल वे दोनो दंपती उनके पास गये। भक्तिपूर्वक उनके चरणोंको नमस्कार किया। एवं अति विनयसे महाराजने यह पूछा—

प्रभो! समस्त जगतके उद्धारक स्वामिन्! मेरे शुभोदय से आप राजमंदिरमें आहारार्थ गये थे। किंतु आप विना आहारके ही चले आये। मैं यह न जान सका क्यों तो आप राजमंदिरमें आहारार्थ गये और क्यों लौट आये? कृपा

कर शीघ्र मेरे इस संशयको दूर करै। राजाके ऐस वचन सुन मुनिवर धर्मघोषने कहा :—

राजन् जब हम राजमंदिरमें आहारार्थ पहुंचे थे। हमें देख रानी चेलनाने यह कहा था हे त्रिगुप्तिपालक मुनिराज! आप मेरे राजमंदिरमें आहारार्थ विराजै। हम त्रिगुप्तिपालक थे नहिं इसलिये हम वहा न ठहरे। हमारे न ठहरनेका और दूसरा कोई कारण न था। मुनिराजके ऐसे वचन सुन महाराज आश्चर्य सागरमें गोता मारने लगे। वे सोचने लगे ये परम पवित्र मुनिराज किस गुप्तिके पालक नहीं हैं? तथा ऐसा कुछ समय सोच विचार कर महाराजने शीघ्र ही मुनिराजसे निवेदन किया—

कृपानाथ! क्या आपके तीनों ही गुप्ति नहीं है। अथवा कोई एक नहीं है। तथा वह क्यों नहीं है? कृपया शीघ्र कहैं—

महाराज श्रेणिकके ऐसे लालसा युक्त वचन सुनकर मुनिराजने कहा राजन्! हमारे मनोगुप्ति नहीं है। वह क्यों नही है उसका कारण कहता हूं आप ध्यान पूर्वक सुनें।

अनक प्रकारके उत्तमोत्तम नगरोंसे व्याप्त इसी जंबूद्वीपमें एक कलिंग नामका देश है। कलिंग देशमें अतिशय मनोहर बाजारोंकी श्रेणियोंसे व्याप्त एक दंतपर नामका सर्वोत्तम नगर है। दंतपुरका स्वामी जोकि नीति पूर्वक प्रजाका पालक मत्री एवं बडे २ सामंतोंसे वेष्टित, सूर्यके समान प्रतापी था

मैं राजा धर्मघोष था। मेरी पटरानीका नाम लक्ष्मीमती था रानी लक्ष्मीमती अति मनोहरा थी। समस्त रानियोंमें मेरी प्राणवल्लभा थी। चंद्रमुखी एवं काममंजरी थी। हम दोनों दंपतीमें गाढ प्रेम था। एक दूसरेको देख कर जीता था। यहा तक कि हम दोनों ऐसे प्रेममें मस्त थे कि हमको जाता हुआ काल भी नही मालूम होता था।

कदाचित् मुझे एक दिगंबर गुरुके दर्शनका सौभाग्य मिला। मैंने उनके मुखसे जैनधर्मका उपदेश सुना। उपदेश में मुनिराजके मुखसे ज्यों हीं मैंनें संसारकी अनित्यता, विजलीके समान विषय भोगोंकी चपलता, सुनी मारे भयके मेरा शरीर कप गया। कुछ समय पहिले जो मै भोगोंको अच्छा समझता था वे ही मुझे विष सरीखे जान पडने लगे। मै एक दम संसारसे उदास हो गया। और उन्हीं मुनिराजके चरणकमलोंमें चट जैनेश्वरी दीक्षा धारण करली।

इसी पृथ्वीतलमें एक अति मनोहर कौशांबी नगरी है। कौशाबीपुरीके राजाका मंत्री जोकि नीतिकलामे अतिशय चतुर था गरुडवेग था। मंत्री गरुडवेगकी प्रिय भार्या गरुडदत्ता थी। गरुडदत्ता परम सुंदरी चंद्रवदना एवं पति भक्ता थी। किसीसमय विहार करता करता मै कौशांबी नगरीमें जा पहुचा। और वहां किसीदिन मंत्री गरुड वेगके घर आहारार्थ गया। ज्यों हीं गरुडदत्ताने मुझे अपने घर आते

देखा भलेप्रकार मेरा विनय किया । आह्वानन कर काष्टासन पर विठाकर मेरा चरण प्रक्षालन किया। एवं मन और इंद्रियों को भलेप्रकार संतुष्ट करनेवाला मुझे सर्वोत्तम आहार दिया। आहार देतेसमय गरुडदत्ताके हाथसे एक कवल नीचे गिर गया। कवल गिरते ही मेरी दृष्टि भी जमीन पर पडी। ज्योंही मैने गरुडदत्ताके पैरका अगूंठा जमीन पर देखा मुझे चट अपनी प्रियतमा लक्ष्मीमतीके अगूठेकी याद आई। मेरे मनमें अचानक यह विकल्प उठ खडा हुवा। अहा! जैसा मनोहर अगूंठा रानी लक्ष्मीमतीका था वैसा ही इस गरुडदत्ताका है। बस फिर क्या था? मेरे मनके चलित हो जानेसे हे राजन्! आजतक मुझे मनोगुप्तिकी प्राप्ति न हुई। इसलिये मै मनोगुप्ति रहित हूं।

ज्यों हीं मुनिवर धर्मघोषके मुखसे राजा श्रेणिकने यह बात सुनी उन्हें अति प्रसन्नता हुई। वे अपने मनमें कहने लगे– समस्त पापोंका नाशक जिनेंद्रशासन धन्य है। सत्य वक्ता मुनिवर धर्मघोष भी धन्य हैं। अहा! जैसी सत्यता जैनधर्ममें है वैसी कहीं नही। तथा इसप्रकार मुनिराज धर्मघोषकी बार बार प्रसंशा कर महाराजने मुनिराजको भक्ति पूर्वक नसस्कार किया। एवं वे दोनों दंपती वहासे उठकर मुनिवर जिनपालके पास गये। उन्हें सविनय नमस्कार कर राजा श्रेणिकने पूछा–

भगवन्! आज आप आहारार्थ मेरे मंदिरमें गये थे। आपने मेरे मंदिरमें क्यों आहार न लिया? मुझसे ऐसा क्या घोर अपराध बन पडा था? कृपाकर मेरे इस संदेहको शीघ्र दूर करें। राजा श्रेणिकके ऐसे वचन सुन मुनिराज जिनपालने भी वही उत्तर दिया जो मुनिवरधर्मघोषने दिया था।

मुनिराजसे यह उत्तर पाकर महाराज फिर अचंभेमें पड गये। मनमें वे ऐसा सोचने लगे कि इन मुनिराजके कौनसी गुप्ति नहीं है। और वह क्यों नहीं है? तथा कुछ समय ऐसा संकल्प विकल्प कर उन्होंने मुनिराजसे पूछा—

प्रभो। कृपया इसबातको खुलासारीतिसे कहैं। आपके कौंनसी गुप्ति न थी। और क्यों न थी? मेरे मनमें अधिक संशय है। मुनिराजने उत्तरदिया—

राजन्! मेरे वचन गुप्ति न थी। वह क्यों न थी उसका कारण सुनाता हूं ध्यानपूर्वक सुनो—

इसी पृथ्वीमंडलपर समस्त पृथ्वीका तिलकभूत एक भूमितिलक नामका नगर है। नगर भूमितिलका अधिपति भलेप्रकार प्रजाका रक्षक, अतिशय धर्मात्मा राजा वसुपाल था। वसुपालकी प्रिय भार्या धारिणी थी। रानी धारिणी अतिमनोहरा, उत्तमोत्तम गुणोंकी आकर एवं कामदेवकी जयपताका थी। शुभ भाग्योदयसे रानी धारिणीसे उत्पन्न एक कन्या थी। जो कन्या चंद्रवदना मृगनयना रतिरूपा समस्त उत्तमोत्तम

गुणोंकी आकर एवं अपनी शरीरकातिसे अंधकारको नाशकरने-वाली थी । और उसका नाम वसुकांता था ।

उसीसमय कौशांबी पुरी में एक चंडप्रद्योतन नामका प्रसिद्धराजा राज्य करता था । चंडप्रद्योतन अतिशय तेजस्वी वीर एवं विशालसेनाका स्वामी था ।

कदाचित् कुमारी वसुकाताने यौवन अवस्थामें पदार्पण किया, राजा चंडप्रद्योतनको इसके युवती पनेका पता लगगया । कुमारीके गुणोंपर मुग्ध हो राजा चंडप्रद्योतनने शीघ्र ही राजा वसुपालसे उस पुत्रीकेलिये प्रार्थना की । और उनके साथ बहुत कुछ प्रेम दिखाया । किंतु राजा चंडप्रद्योतन जैन न था । इसलिये राजा वासुपालने उसकी प्रार्थना न सुनी, और पुत्री-केलिये साफ इन्कार करदी ।

राजा चंडप्रद्योतनने यहबात सुनी । उसने शीघ्र ही सेना सजाकर भूमितिलक की ओर प्रस्थान करदिया । कुछ दिन बाद मजल दरमंजल करता करता राजा चंडप्रद्योतन भूमितिलक पुरमें आ पहुंचा । आते ही उसने अपनी सेनासे समस्तनगर घेरलिया और लडाईकेलिये तयार होगया—

राजा वसुपालको इसबातका पता लगा उसने भी अपनी सेना सजवाली। तत्काल वह चंडप्रद्योतनसे लडनेके लिये निकल पडा-- और दोनों दलकी सेनामें भयंकर युद्ध होनेलगा-मेघनाद मेघश-ब्दसे जैसे मयूर उधर उधर नाचते फिरते हैं मेघनाद (बिगुल)

के शब्दसुननेसे उससमय योधोओंकीभी वही दशा होगई रोषमें आकर वे भी इधर उधर घूमने लगे और एक दूसरे पर प्रहार करने लगे । दोनों सेनाका घोर संग्राम साक्षात् महामागरकी उपमाको धारण करता था । क्योंकि महासागर जैसा पर्वतोंसे व्याप्त रहता है । संग्रामभी आहत हो पृथ्वीपर गिरेहुवे हाथीरूपी पर्वतोंसे व्याप्त था । महासागर जैसा तरंग युक्त होता है, संग्रामभी चंचल अश्वरूपी तरंग युक्त था । महासागर में जिसप्रकार महामत्स्य रहते है संग्राममे भी पैनी तलवारोसे कटे हुवे मनुष्योंके मुखरूपी मत्स्य थे । महासागर जैसा जल पूर्ण रहता है । संग्राम भी घावोंसे निकलते हुये रक्तरूपी जलसे पूर्ण था । महासागर जैसा मणिरत्नोंसे व्याप्त रहता है संग्राम भी मृतयोधाओंके दांतरूपी मणिरत्नोंसे व्याप्त था । महासागरमें जैसे भयंकर शब्द होते है । संग्राममे भी हाथियोंके चीत्कार रूपी शब्द थे । महासागर जिसप्रकार बालू सहित होता है । संग्राम भी पिसी हुई हड्डी रूपी बालू सहित था । महासमुद्र जैसा कीचड व्याप्त रहता है संग्राम भी मांसरूपी कीचडसे व्याप्त था । महासागरमें जैसे मेढक और कछुवे रहते हैं संग्राममें भी वैसेही कटे हुवे घोडोंके पैर मेढक और हाथियोंके पैर कछुवे थे । महासागर जैसा खंडपर्वत युक्त होता है । संग्राम भी मृतशरीरोंके ढेररूप खंडपर्वतयुक्त था । महासागरमें जैसे सर्प रहते हैं संग्राम में भी कटी हुई हाथियोंकी पूंछे सर्प थीं । महासागर

जैसा पवन परिपूर्ण रहता है संग्राम भी योधाओंके श्वासोच्छ्वास रूपी पवनसे परिपूर्ण था। महासागरमें जैसा वडवानल होता है संग्राममें भी उसीप्रकार चमकते हुवे चक्र वडवानल थे। महासागर जैसा वेलायुक्त होता है उसीप्रकार संग्राममें भी समस्त दिशाओंमें घूमते हुवे योधा-रूपी वेला थीं। सागरमें जैसे नाव और जहाज होते हैं संग्राममें भी घोडेरूपी नाव और जहाज थे। तथा संग्राममें खड्गधारी खड्गोंसे युद्ध करते थे। मुष्टियुद्ध करनेवाले मुष्टि-ओंसे लडते थे। कोई कोई आपसमें केश पकडकर युद्ध करते थे। अनेक वीरपुरुष भुजाओंसे लडते थे। पैरोंसे लडाई करनेवाले पैरोंसे लडते थे। शिर लड़ानेवाले सुभट शिर लड़ाकर युद्ध करते थे। बहुतसे सुभट आपसमें मुख भिड़ा कर लडते थे। गदाधारी और तीरदाज गदाधारी और तीरं-दाजोंसे लडते थे। घुड सवार घुडसवारोंसे, गजसवार गज सवारोंसे, रथसवार रथसवारोंसे, एवं पयादे पयादोंसे भयंकर युद्ध करते थे। उस सग्राममें अनेक वीर पुरुष शब्द-युद्ध करने वाले थे इसलिये वे शब्दयुद्ध करते थे। लट्ठी चलानेवाले लाठ्योंसे युद्ध करते थे। एवं राजा राजाओंसे युद्ध करते थे। तथा शिलायुद्ध करनेवाले शिलाओंसे, वास युद्ध करने वाले सुभट वासोंसे, वृक्ष उखाड कर युद्ध करनेवाले वृक्ष उखाड कर हलके धारक अपने हलोंसे युद्ध करते थे।

इसप्रकार दोनों राजाओंका आपसमें कई दिन तक भयंकर युद्ध होता रहा। अंतमें जब वसुपालने यह देखा कि राजा चंड प्राद्योतन जीता नहीं जा सकता तो उसे बडी चिंता हुई वह उसके जीतनेके लिये अनेक उपाय सोचने लगा--

कदाचित् विहार करता करता उससमय मैं भी कौशांबीमें जा पहुंचा। मैंने जो वन किलेके बिलकुल पास था उसीमें स्थित हो ध्यान करना प्रारंभ कर दिया। वहां ध्यान करते मालीने मुझे देखा। वह तत्काल राजा वसुपालके पास भागता भागता पहुंचा और मेरे आगमनका सारा समाचार राजासे कह सुनाया।

सुनते ही राजा वसुपाल तत्काल मेरे दर्शनकेलिये आये। मेरे पास आकर उन्होंने भक्ति पूर्वक नमस्कार किया। राजा वसुपालके साथ और भी कई मनुष्य थे। उनमेंसे एक मनुष्यने मुझसे यह निवेदन किया--

प्रभो! कृपया राजा वसुपालको आप शत्रुओंकी ओरसे अभय दान प्रदान करें। इन्हें वैरियोंकी ओरसे कैसा भी भय न रहै।

मनुष्यकी रागद्वेष परिपूर्ण वात सुनकर मैंने कुछ भी उत्तर न दिया उस वनकी रक्षिका एक देवी थी ज्यों हीं उसन यह समाचार सुना अपनी दिव्यवाणीसे उसने शीघ्र ही उत्तरदिया--

राजन् वसुपाल ! तुझे किसीप्रकारका भय नहीं करना चाहिये नियमसे तेरी विजय होगी। बस फिर क्या था ? देवी तो उससमय अदृश्य थी इसलिये ज्यों ही राजा वसुपालने ये वचन सुने मारे आनदके उसका शरीर रोमाचित होगया। वह यह समझ कि यह आशीर्वाद मुझे मुनिराजने दिया है बड़ी भक्तिसे उसने मुझे नमस्कार किया। और बडी विभूतिके साथ अपने राजमंदिरकी ओर चला गया—राजमदिरमे जाकर विजयकी खुशीमें उसने तोरण आदि लगाकर नगरमें बड़ा भारी उत्सव किया। समस्त दिशा बधिर करनेवाले बाजे बजने लगे। एवं राजा वसुपाल आनदसे रहने लगा।

राजा चंडप्रद्योतनको भी इसबातका पता लगा। राजा वसुपालको पक्का जैनी समझ उसने तत्काल युद्धका सकल्प छोड दिया। और सब सेनाको साथ ले अपने नगरकी ओर प्रस्थान करदिया। नगरमें जाकर उसने जैनधर्म धारण कर लिया। जिनराजके वाक्यों पर उसका पूरा पूरा श्रद्धान होगया। और आनदसे रहने लगा।

राजा वसुपालको भी चंडप्रद्योतनके चले जानेका पता लगा। उसने शीघ्र ही कई मन्त्री जो कि परके अभिप्राय जानने-में अतिशय चतुर थे शीघ्र ही राजा चंडप्रद्योतनके पास भेजे और सारा हाल जानना चाहा। राजाकी आज्ञानुसार समस्त मत्री शीघ्र ही कौशाबी गये। राजा चडप्रद्योतनकी सभामें

पहुच उन्होंने विनयसे राजाको नमस्कार किया और जो कुछ राजा वसुपालका संदेशा था सब कह सुनाया। मंत्रिओंके मुखसे राजा वसुपालका यह संदेशा सुन राजा चंड-प्रद्योतनने कहा--

मंत्रिओ! राजा चंडप्रद्योतन अतिशय धर्मात्मा है। धर्म उसे अपने प्राणोंसे भी प्यारा है। मैंने राजा वसुपालको जैन समझ युद्धका संकल्प छोड़ दिया। जो पापी पुरुष जैनियोंके प्राणोंको दुःखाते है। उनके साथ युद्ध करते हैं। वे शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होते हैं। और वे संसारमें नराधम कहलाते है।

राजा चंडप्रद्योतनसे यह समाचार सुन मंत्री तत्काल भूमितिलकपुरको लौट पड़े। चंडप्रद्योतनका सारा समाचार राजा वसुपालको कह सुनाया और उनकी अनेकप्रकारसे प्रशंसा करने लगे। ज्योंही राजा वसुपालने यह वात सुनी उन्हें अति प्रसन्नता हुई। चंडप्रद्योतनको अपना समान धर्मी समझ राजा वसुपालने शीघ्र ही कन्या वसुकांताका राजा चंडप्रद्योतनके साथ विवाह कर दिया। एवं हाथी घोड़ा आदि उत्तमोत्तम पदार्थ देकर राजा चंडप्रद्योतनके साथ बहुत कुछ हित जनाया।

जब कन्या वसुकांताके साथ राजा चंडप्रद्योतनका विवाह होगया तो उनको बड़ा संतोष हुवा। वे बड़े आनंदसे रहने लगे। और दोनों दंपती भलेप्रकार सांसारिकसुखका अनु-

भव करने लगे।

कदाचित् राजा चडप्रद्योतन रानी वसुकांताके साथ एकांतमें बैठे थे। अचानक ही उन्हें भूमितिलकपुरके युद्धका स्मरण होगया। वे रानी वसुकांतासे कहने लगे।

प्रिये! मै अतिशय प्रतापी था। चतुरग सेनासे मडित था अपने प्रतापसे मैंने समस्त भूपतियोंका मान गलन करादिया था। मैंने तेरे पिताको इतना बलवान नहीं जाना था। हाय तेरे पिताके साथ युद्धकर मैंने बडा अनर्थ किया। रानी वसुकांताने जब ये वचन सुने तो वह कहने लगी--

नाथ! आपके बराबर मेरे पिता बलवान न थे। किं तु मुनिवर जिनपालने उन्हें अभयदान दे दिया था इसलिये वे आपसे पराजित न हो सके। रानी वसुकांताके ये वचन सुन तो महाराज अचंभेमें पड़ गये। वे कहने लगे--

चंद्रवदने! तुम यह क्या कह रहीं हो। परमयोगी राग द्वेषसे रहित होते है। वे कदापि ऐसा काम नहिं कर सकते। यदि मुनिवर जिनपालने राजा वसुपालको ऐमा अभय-दान दिया हो तो बडा अनर्थ कर पाडा। चलो अब हम शीघ्र उन्हीं मुनिराजके पास चलें और उन्हींसे सब समाचार पूछे--

राजा चडप्रद्योतनकी आज्ञानुसार रानी वसुकांता चलनेकेलिये तयार होगई, वे दोनों दपती बडे आनंदसे मुनिवद नार्थ गये। जिससमय वे दोनों दंपती वनमें पहुचे। और

ज्योंही उन्होने मुझै देखा बड़ी भक्तिसे नमस्कार किया। तीन प्रदक्षिणा दीं। एवं राजा चडप्रेद्योतनने वडी विनयसे यह कहा--

समस्त विज्ञानोंके पारगामी. भव्योंको मोक्षसुख प्रदान करनेवाले, अतिशय काठिन किंतु परमोत्तम वृतके धारक. शत्रुमित्रोंको समान समझनेवाले. प्रभो! क्या यह आपको योग्य था कि एकको अभयदान देना और दूसरेका अनिष्ट चिंतन करना। कृपानाथ! प्रथम तो मुनियोंकेलिये ऐसा कोई अवसर नहीं आता। यदि किसीप्रकारका अवसर आकर उपस्थित भी हो जाय तो आप सरीखे वीतराग मुनिगण उससमय ध्यानका अवलंबन करलेते है। भली बुरी कैसी भी सम्मति नहिं देते। राजा चडप्रद्योतनके ऐसे वचन सुन हे राजन् श्रेणिक! मैने तो कुछ जवाब न दिया। किंतु रानी वसुकांता कहने लगी!

नाथ! मेरे पिताके शुभोदयसे उससमय किसी वनरक्षिका देवीने वह आशीर्वाद दिया था। मुनिराजने कुछ भी नहिं कहा था। आप इस अंशमें मुनिराजका जरा भी दोष न समझै।

बस फिर क्या था? राजन्! ज्योंही राजा चंडप्रद्योतनने रानी वसुकांताके वचन सुने मारे हर्षके उसका कंठ गदगद होगया। कुछ समय पहिले जो उसके हृदयमें मेरे विषयमें कालुष्य बैठा था तत्काल वह निकल भागा। दोनों दंपतीने मुझै

भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। एव वे दोनो दंपती तो कौशांबी-पुरीमें आनदानुभव करने लगे। और मुझै उसीकारणसे आज-तक वचनगुप्ति न प्राप्त हुई। मै अनेक देशोंमें विहार करता २ राजगृह आया। आज मै आपके यहां आहारार्थ भी गया किंतु मैं त्रिगुप्तिपालक था नहीं। इसलिए मैने आहार न लिया मेरे आहारके न लेनेका अन्य कोई कारण नहीं। विनीत मगधेश! यह आप निश्चय समझै जो मुनि मनोगुप्ति वचनगुप्ति और कायगुप्तिके पालक होते है वे नियमसे अवधिज्ञानके धारक होते है। तीनों गुप्तियोंमें एक भी गुप्ति-को न रखनेवाले मुनिराजके अवधिज्ञान मन. पर्ययज्ञान और केवलज्ञान तीनों ज्ञानोंमेंसे एकभी ज्ञान नहीं होता। साधा-रणजीवोंके समान उनके मति, श्रुति दोही ज्ञान होते है। राजन्! मनमें उत्पन्न खोटे विकल्पोंके निरोधकेलिये मनो-गुप्तिका पालन किया जाता है। इस मनोगुप्तिका पालन करना सरल बात नहीं। इस गुप्तिको वे ही पालन कर सकते हैं जो ज्ञान पूजा आदि अष्ट मदोंके विजयी, यती-श्वर होते हैं। और शुभ एव अशुभ सकल्पोंसे बहिर्भूत रहते है। उसीप्रकार वचनगुप्तिकी रक्षा करना भी अतिकठिन है। जो मुनीश्वर वचन गुप्तिके पालक होते है। उन्हें स्वर्गसुखकी प्राप्ति होती है। अनेक प्रकारके कल्याण मिलते है। विशेष कहां तक कहा जाय वचनगुप्तिपालक मुनिराज समस्त-

कर्मोंका नाशकर सिद्ध अवस्थाको भी प्राप्त हो जाते हैं। तथा इसीप्रकार कायगुप्तिका पालन भी अतिकठिन है। शरीरसे सर्वथा निर्मम होकर विरले ही मुनीश्वर कायगुप्तिके पालक होते है। तीनों गुप्तियोंके पालक मुनिराज निर्मल होते हैं। उन्हें तपके प्रभावसे अनेकप्रकारकी लब्धियां मिलती है। उनकी आत्मा सम्यग्ज्ञानसे सदा भूषित रहती है। एवं वे जैन धर्मके सचालक समझे जाते है।

इसप्रकार मुनिवर धर्मघोष और जिनपालके मुखसे मनोगुप्ति और वचनगुप्तिकी कथा सुन राजा श्रेणिक और रानी चेलनाको अति आनंद मिला। वे दोनों दंपती परम पवित्र दोनों गुप्तिओंकी वारवार प्रशंसा करने लगे। उनके मुखसे समस्तबाधा रहित मुनिमार्गकी एवं केवलिप्रतिपादित श्रुतज्ञान की भी झड़ाझड़ प्रशंसा निकलने लगी।

इसप्रकार पद्मनाभ तीर्थंकरके भवांतरके जीव महाराज श्रेणिकके चरित्रमें मनोगुप्ति वचनगुप्ति दोनों गुप्तिओंकी कथा वर्णन करनेवाला दशवां सर्ग समाप्त हुवा

ग्यारहवां सर्गः

मुनिवर जिनपालद्वारा वचनगुप्ति कथाके समाप्त होजाने पर राजा रानीने उन्हें भक्तिपूर्वक नमस्कार किया। धर्मप्रेमी वे दोनों दम्पती मुनिवर **मणिमालीके** पासगये। उन्हें भक्तिपूर्वक नमस्कारकर राजाश्रेणिकने विनयसे पूछा।

ससारतारकस्वामिन्! मेरे शुभोदयसे आप राजमदिरमें आहारार्थ गये थे। किंतु आप विनाकारण वहांसे आहारके विनाही लौट आये। यह क्या हुवा? मेरे मनमें इसवातका बड़ा सशय बैठा है कृपया इसमेरे संशयको शीघ्र मिटावें। राजा श्रेणिकके ऐसे वचन सुन मुनिराजने कहा—

राजन्। रानीचेलनाने 'हे त्रिगुप्ति पालक मुनिराज आप आहारार्थ राजमदिरमें विराजें' इसरीतिसे हमारा आह्वानन किया था। मेरे कायगुप्ति थी नहीं इसलिये मै वहां आहार केलिये न ठहरा। वह क्यों नहिं थी उसका कारण सुनाता हूं आप ध्यान पूर्वक सुनै—

इसी पृथ्वीतलमें अतिशय शुभ एक **मणिवत** नामका देशहै। मणिवत साक्षात् समस्तदेशोंमें मणिके समानहै। मणिदेशमें (अधरता) धन विद्या आदिकी असहायता हो यह बात नहीं है वहाके निवासी धनी एव विद्वान धन और विद्या से बराबर सहायता करनेवाले है। एकमात्र अधरता है तो

स्त्रियोंके ओठोमें ही है। वहां सबलोग सुखी है इसलिये कोई किसीसे किसी चीजकी याचनाभी नहीं करता। यदि याचना का व्यवहार है तो वरकेलिये कन्या और कन्याकेलिये वरका ही है। उसदेशमें किसीका विनाशभी नहीं किया जाता। यदि विनाश व्यवहार है तो व्याकरणमें क्विप्प्रत्ययमें ही है—क्विप्-प्रत्ययका ही लोप किया जाता है। वहांके मनुष्य निरपराधी है इसलिये वहां कोई किसीका बन्धन नहीं करता यदि बंधन व्यवहार है तो मनोहरशब्द करनेवाले पक्षियोंमें ही है—वे ही पिंजरामें बधे रहते है! मणिवत देशमें कोई आलसीभी नजर नही आता आलसीपना है तो वहांके मतवाले हाथियोंमें ही है—वे ही झूमते झूमते मंद गतिसे चलते है। कोई किसीको वहापर मारने सतानेवालाभी नहीं है। यदि मारता सताता है तो यमराजही है। वहांके निवासियोंको भय किसीसे नही है केवल कामीपुरुष अपनी प्राणवल्लभाओंके क्रोधसे डरते है—कामियोंको प्रतिक्षण इसबातका डर बना रहता है कहीं यह नाराज न होजाय। उसदेशमें कोई चोर नहीं है यदि चोर का व्यवहार है तो पवनमें है वही जहां तहांकी सुगंधि चुरा ले आता है। वहांका कोई मनुष्य जातिपतित नहीं है यदि पतन व्यवहार है तो वृक्षोंके पत्तोंमें है वेही पवनके जोरसे जमीनपर गिरते है। वृक्षोंके पत्ते छोड़कर उसदेशमें कोई चपल भी नहीं है। किंतु वहाके निवासी सबलोग गम्भीर

और उदार है। वहांपर कोई मनुष्य जड़ नहीं है यदि जड़ता है तो स्त्रियों के नितंवोंमें है। कृशता भी वहापर स्त्रियोंके कटिभागमें ही है—स्त्रियोंकी वहां कमरही पतली है और कोई कृश नहीं। वहाके पत्थर ही नहीं बोलते चालतेहै मनुष्य कोई गूंगा नहीं। उसदेशमें कोई किसीका दमन नहीं करता एकमात्र योगीश्वर ही इन्द्रियोंका दमन करते है। मलिनभी वहा कोई नहीं रहता एकमात्र मलिनता वहांके तलावोंमें है। हाथी आकर वहांके तालावोंको गदला करदेते है। उसदेशमें निष्कोषता कमलोंमें ही है सूर्य्यास्त होनेपर वे ही मुद जातेहैं किन्तु वहां निष्कोषता खजाना न हो यह वात नहीं। लोग उसदेशमें दान आदि उत्तमकार्योंमें ईर्षा द्वेष करते है। किन्तु इनसे अतिरिक्त और किसी कार्यमें उन्हें ईर्षा द्वेष नहीं। वहाके लोग उत्तमोत्तम व्याख्यान सुननेके व्यसनी है जूवा आदिका कोई व्यसनी नहीं है। तथा उस देशमें उत्तमोत्तम मुनियोंके ध्यानप्रभावसे सदा वृक्ष फले फूले रहते है। योग्य वर्षा हुआ करती है' उसके मनोहरवागोंमें सदा कोकिल बोलती रहती है। वहांकी स्त्रियोंसे हथिनीं भी मद गमनकी शिक्षा लेती है। और स्वभावसे वे स्त्रियां लज्जावती एवं पतिभक्ता है।

इसी मणिवत देशमें एक अतिशय रमणीय दारा नामक नगर है। दारानगरके ऊचे २ महल सदा चन्द्रमडलको

भेदन किया करते है। उसकी स्त्रियोंके मुखचंद्रमाकी कृपासे अधकार सदा दूर रहताहै इसलिये वहा दीपक आदिकी भी आवश्यकता नहीं पड़ती। जिससमय वहांकी स्त्रियां अटारियोंपर चढ जाती है उससमय चंद्रमा उनका चूडामणि तुल्य जान पड़ता है। और तारागण चूडामणिमें जड़े हुवे सफेद मोतीसरीखे मालूम पड़ते है।

दारानगरका स्वामी भलेप्रकार नीतिकलामें निष्णात क्षत्रियवशी मै राजा **मणिमाली** था। मेरी स्त्री जोकि अतिशय गुणवती थी **गुणमाला** थी। गुणमालासे उत्पन्न मेरे एक पुत्र था उसकानाम **मणिशेखर** था और वह अतिशय नीति युक्त था। मै भोगोंमें इतना मस्त था कि मुझे जाते हुवे काल का भी ज्ञान न था। मै सदा जिनधर्मका पालन करता हुआ आनंदसे राज्य करता था।

कदाचित् मै आनंदमें वैठा था। मेरी पटरानी मेरे केशोंको सम्भाल रही थी। अचानकही उसे मेरे शिरमें एक सफेद वाल दीखपड़ा। वह एकदम अचम्भेमें पड़ गई। और कहने लगी--हाय जिस यमराजने बड़े बड़े चक्रवर्ती नारायण प्रति नारायणोंकोंभी अपना कवल वनालिया उसी यमराजका दूत यहां आकरभी प्रकट होगया। वस !!! ज्योंही मैने रानी गुणमालाके ये वचन सुने मेरी आनंद तरंगें एक ओर किनारा कर गई। मेरे मुखसे उससमय ये ही शब्द निकले।

प्रिये ! समस्त लोकको भय उत्पन्न करनेवाला वह यम दूत कहां है । मुझै भी शीघ्र दिखा । मै उसै देखना चाहताहूं

मेरे वचन सुनते ही रानीने वाल चट उखाड लिया। और मेरी हथेलीपर रखदिया। ज्योंही मैंने अपना सफेद बाल देखा । अपना काल अति समीप जान मैं चट राज्यसे विरक्त होगया । जो विषय भोग कुछ समय पहिले मुझै अमृत जान पड़ते थे वे ही हलाहल विष बनगये । मै अपने प्यारे पुत्र और स्त्रियोंको भी अपना शत्रु समझने लगा । मैने शीघ्र ही चंद्रशेखरको बुलाया—और राज्यकार्य उसै सौप तत्काल वन की ओर चल पड़ा । वनमें आते ही मुझै मुनिवर गुणसागरके दर्शन हुवे । मैंने शीघ्र ही अनेक राजाओंके साथ मुनिदीक्षा धारण करली । जैनसिद्धांतके पढ़नेमें अपना मन लगाया। एवं जब मै जैनसिद्धांतका भलेप्रकार ज्ञाता होगया और उग्र तपस्वी बनगया तो मैं सिंहके समान इसपृथ्वीमडल पर अकेला ही विहार करने लगा—

राजन् ! अनेक देश एवं नगरोंमें विहार करता २ किसी दिन मैं उज्जयनी नगरीमें जा पहुचा । और वहांकी श्मसान भूमिमें मुर्देके समान आसन बांधकर ध्यानके लिये बैठगया । वह समय रात्रिका था इसलिये एक मन्त्रवादी जोकि अनेक मन्त्रोंमें निष्णात, वैताली विद्याकी सिद्धिका इच्छुक, एवं जातिका कौली था वहां आया। और मेरे शरीरको मृतशरीर

जान तत्काल उसने मेरे मस्तकपर एक चूल्हा रखदिया एवं किसी मृतकपालमें दूध और चावल डालकर, चूल्हेमें अग्नि वालकर वह खीर पकाने लग गया। वस फिर क्या था? मंत्रवादी तो यह समझ कि कंव जल्दी खीर पके और कव जल्दी मंत्र सिद्ध हो' बड़ी तेजीसे चूल्हेमें लकड़ी झोंककर आग वालने लगा। और आगवलनेसे जव मुझे मस्तक और मुखमें तीव्र वेदना जान पड़ी तो मै कर्म रहित शुद्ध आत्माका स्मरणकर इस प्रकार भावना भा निकला---

रे आत्मन्? तुझे इससमय इसदु.खसे व्याकुल न होना चाहिये। तूने अनेकवार भयंकर नरक दुःख भोगे है। नरक दुःखोंके सामने यह अग्निका दु.ख कुछ दुःख नहीं। देख! नरकमें नारकियोंको क्षुधा तो इतनी अधिक है कि यदि मिले तो वे त्रिलोकका अन्न खा जाय किंतु उन्हें मिलता कणमात्रभी नहीं इसलिये वे आतिशय क्लेश सहते है। वहांपर नारकियों को गरम लोहेकी कढाइयोंमें डाला जाता है उनके शरीरके खड क्रिये जाते है उससमय उन्हें परम दुःख भोगना पड़ता है। हजार विच्छुओंके काटनेसे जैसी शरीरमें अग्नि भैराती है उसीप्रकार 'नरकभूमिस्पर्शसे नारकियोंको दुःख भोगने पड़ते हैं। यदि नरककी मिट्टीका छोटासा टुकड़ाभी यहां आजाय तो उसकी दुर्गंधिसे कोसो दूर बैठे जीव शीघ्र मर जांय किंतु अभागे नारकी रातदिन उसमें पड़े रहते हैं।

तुझेभी अनेकवार नरकमें जाकर ये दु ख भोगने पड़े है। जब जब तू एकेंद्रिय द्वीद्रिय आदि विकलेंद्रिय योनियोंमें रहा है उससमय भी तूने अनेक दुःख भोगे है। अनेकवार तू निगोदों में भी गया है। और वहांके दुःख कितने कठिन है यह बात भी तू जानता है। तुझे इससमय जराभी विचालित नहीं होना चाहिये। भाग्य वश यह नरभव मिला है। प्रसन्न चित्त होकर तुझे व्रतसिद्धिकेलिये परीषह सहिनी। चाहिये ध्यान रख! परीषह सहनकरनेसे ही व्रतसिद्धि और सच्चा आत्मीय सुख मिल सकता है।

राजन्? मै तो इसप्रकार अनित्यत्व भावना भा रहा था। मुझे अपने तन बदनका भी होश हवास न था। अचानक ही जब अग्नि जोरसे बलने लगी तो मेरे मस्तककी नसें भी सकुडने लगीं। मेरे मस्तकपर रहा कपाल वेहदरीतिसे हिलने लगा और भलीभाति कौलिक द्वारा डाटे जानेपर तत्काल ज़मीनपर गिरगया। जो कुछ उसमें दूध चावल आदि चीजें थीं मिट्टीमें मिलगई और शीघ्रही अग्नि शात होगई।

वस फिर क्या था? ज्योंही उस कौलिकने यह दृश्य देखा मारे भयके उसके पेटमें पानी होगया। वह यह जान कि मंत्र मुझपर कुपित होगया है वहासे तत्काल घर भगा और शीघ्र ही अपने घर आगया।

कुछ समय वाद रात्रिमें मुर्देके धोखेसे मुनिराज पर घोर

उपसर्ग हुवा है! यह बात्त दारा नगरनिवासी सज्जनोंका मानो जतलाता हुवा सूर्य प्राची दिशामें उदित होगया। जिनेंद्र रूपी सूर्यके उदयसे जैसा मिथ्यात्व अंधकार तत्काल विलयको प्राप्त होजाता है और भव्योंके चित्तारूपी कमल विकसित होजाते है। उसीप्रकार सूर्यके उदयसे गाढभी अंधकार बातकी बातमें नष्ट होगया। जहां तहां सरोवरोंमें कमलभी खिलगये। उससमय रातभरके वियोगी चकवा चकवी सूर्योदय से अति आनंदित हुवे। और परस्पर प्रेमालिंगन कर अपनेको धन्य समझने लगे। किंतु रात्रिमें अपनी प्राणप्यारियों-के साथ क्रीड़ा करनेवाले कामीजन अति दुःख मानने लगे और वारवार सूर्यकी निंदा करने लगे। असली पूछिये तो सूर्य एकप्रकारका उत्तमसाधु है क्योंकि साधु जिसप्रकार भव्य जीवोंको उत्तममार्गका दर्शक होता है सूर्यभी पथिकोंको उत्तम मार्गका दर्शक है। साधु जैसा भव्यजीवोंके अज्ञान अंधकारको दूर करता है सूर्यभी उसीप्रकार दूर करनेवाला है। साधु जिस प्रकार जीव अजीव आदि पदार्थोंका विचार करता है उनके साथ संबंध रखता है। उसीप्रकार सूर्यभी अपनी किरणोंसे समस्तपदार्थोंसे संबंध रखता है। देदीप्यमान सूर्यके तेजके सामने चंद्रमा उससमय सूखे पत्तेके समान जान पड़ने लगा। और तारागण तो लापता होगये? श्मसानभूमिके पास एक वाग था इसलिये उससमय एक माली फूल तोड़नेके लिए वहां आया

अचांनक उसकी दृष्टि मुझपर पड़ी। ज्योंही उसने मुझे अर्धदग्ध मस्तक युक्त और वेहोश देखा मारे आश्चर्यके उसका ठिकाना न रहा। वह शीघ्रही भागकर नगरमें आया और जिनधर्मके परम भक्त जो **जिनदत्त** आदि सेठ थे उनसे मेरा सारा हाल कह सुनाया।

ज्योही जिनदत्त आदि सेठोंने मालीके मुखसे मेरी ऐसी भयंकर दशा सुनी उन्हें परमदुःख हुवा। मारे दुःखके वे हाहाकार करने लगे और सबके सब मिलकर तत्काल श्मसान भूमिकी ओर चलदिये।

श्मसानभूमिमें आकर मुझे उन्होंने भक्तिपूर्वक प्रणाम किया। मेरी ऐसी बुरी अवस्था देख वे और भी अधिक दुःख मनाने लगे। किस दुष्टने मुनिराजपर यह उपसर्ग किया है ? इसप्रकार क्रुद्ध हो भव्य जिनदत्तने मुझे शीघ्र उठाया। और व्याधिके दूर करनेके लिये मुझे अपने घर लेगया। जिस समय मैं घर पहुंच गया। तत्काल जिनदत्त किसी वैद्यके घर गया। मेरी व्याधिके शांत्यर्थ वैद्यसे उसने औषधि मांगी और मेरी सारी अवस्था कह सुनाई। भव्य जिनदत्तके मुखसे मुनिराजकी यह अवस्था सुन वैद्यने कहा—

प्रिय जिनदत्त! मुनिराजका रोग अनिवार्य है। जब तक लाक्षामूल तेल न मिलैगा कदापि मैं उनकी चिकित्सा नहिं करसकता लाक्षामूल तैलसे ही यह रोग जा सकता है।

इसलिये तुम्हें लाक्षामूल रसके लिये प्रयत्न करना चाहिये। वैद्यराजके ऐसे वचन सुनकर जिनदत्तने कहा वैद्यराज! कृपया शीघ्र कहै लाक्षामूल तेल कहां कैसे मिलेगा? मै उसके लिये प्रयत्न करू। वैद्यराजने कहा।

इसी नगरमे भट्ट **सोमशर्मा** नामका ब्राह्मण निवास करता है। लाक्षामूल तेल उसीके यहां मिल सकता है और कही नहीं तुम उसके घर जाओ और शीघ्र वह तेल लेआओ वैद्यराजके ऐसे वचन सुन जिनदत्त शीघ्र ही भट्टसोमशर्माके घर गया। वहां उसकी **तुंकारी** नामकी शुभ भार्याको देखकर और उसै वहिन इस शब्दसे पुकार कर यह निवेदन करने लगा।

वहिन! मुनिवर जिनपालका आधामस्तक किसी दुष्टने जलादिया है। उनके मस्तकमें इससमय प्रवल पीड़ा है कृपा कर मुनिपीड़ा की निवृत्तिके लिये मूल्य लेकर मुझै कुछ लाक्षा मूल तेल देदीजिये। जिनदत्तकी ऐसी प्रियवोली सुन तुंकारी अति प्रसन्न हुई। उसने शीघ्र ही जिनदत्तसे कहा।

प्रिय जिनदत्त! यदि मुनि पीड़ा दूरकरनेके लिये तुम्है तेलकी आवश्यकता है तो आप लेजाइये मै आपसे कीमत न लूंगी। जो मनुष्य इसभवमें जीवोंको औषधि प्रदान करते हैं परभवमें उन्हे कोई रोग नहि सताता। आप निर्भय हो मेरी अटारी चले जाइये। वहां बहुत से घड़े तेलके रक्खें है जितना

तुम्हें चाहिये उतना लेजाइये। तुकारीके ऐसे दयामय वचन सुन जिनदत्त अति प्रसन्न हुआ। अटारी पर चढ़कर उसने चट एक घड़ा उठाकर अपनें कधेपर रखलिया और चलने लगा।

घडा लेकर जिनदत्त कुछ ही दूर गया था अचानक ही उसके कधेसे घडा गिर गया। और उसमें जितना तेल था सब फैलकर मिट्टीमें मिल गया। तेलको इसप्रकार जमीन पर गिरा देख जिनदत्तका शरीर मारे भयके कप गया। वह विचारने लगा हाय!!! वडा अनर्थ होगया ? बडी कठिनतासे यह तेल हाथ आया था सो अब सर्वथा नष्ट होगया। जाने अब मुझे तेल मिलैगा या नहिं ? । अहा!!! अब तुकारी मुझ पर जरूर नाराज होगी मैंने बढ़ा अनर्थ किया तथा इसप्रकार अपने मनमें कुछसमय सकल्प विकल्पकर वह फिर तुकारीके पास गया। डरते डरते उसे सब हाल कह सुनाया और तेलके लिये फिरसे निवेदन किया। तुकारी परम भद्रा थी उसने नुक्सान पर कुछ भी ध्यान न दिया। किं तु शातिपूर्वक उसने यही कहा।

प्रिय जिनदत्त! यदि वह तेल फैल गया तो फैल जाने दे मेरे यहां बहुत तेल रक्खा है जितना तुझे चाहिये उतना लेजा और मुनिराजकी पीडा दूर करनेका उपाय कर। ब्राह्मणी के ऐसे उत्तम किंतु संतोषप्रद वचन सुन जिनदत्तका सारा भय दूर होगया। ब्राह्मणीकी आज्ञानुसार उसने शीघ्र ही दूसरा घडा

अपने कंधेपर रख लिया। किंतु ज्योंही घड़ा लेकर जिनदत्त कुछ चला ठोकर खा चट जमीन पर गिरगया और घड़ाके फूट जाने से फिर सारा तेल फैलगया। ब्राह्मणीकी आज्ञानुसार जिन दत्तने तीसरा घड़ा भी अपने कंधेपर रक्खा कंधेपर रखते ही वह भी फूट गया। इसप्रकार बरावर जव तीन घड़े फूट गये तो जिनजत्तको परम खेद हुआ खिन्न चित्त हो उसने ब्राह्मणीसे फिर सब हाल जाकर कह सुनाया। और कहते कहते उसका मुख फीका पड़ गया। तीनों घडोंके इसप्रकार फूटजानेसे सेठि जिनदत्तको अति दुःखित देख तुंकारीका चित्त करुणासे आर्द्र होगया। डाट डपटके वदले उसने जिन-दत्तसे यही कहा।

प्यारे भाई! यदि तीन घड़े फूट गये है तो फूट जाने दे। उसकेलिये किसीवातका भय मत कर। मेरे घरमें वहुतसे घड़े रक्खे है; जब तक तुम्हारा प्रयोजन सिद्ध न हो तब तक तुम एक एक कर सवोंको ले जाओ। ब्राह्मणीके ऐसे स्नेह भरे वचन सुन जिनदत्तको परम आनंद हुवा। उसकी आज्ञानुसार उसने शीघ्र ही घड़ा कंधेपर रखलिया और अपने घरकी ओर चलदिया।

ब्राह्मणीके ऐसे उत्तम वर्तावसे जिनदत्तके चित्तपर असा धारण असर पड़ गया था। ब्राह्मणीके स्नेहयुक्त वचनोंने उसे अपना पक्का दास वनालिया था। इसलिये ज्योंही वह

अपने घर पहुंचा घडा रखकर वह फिर तुकारीके घर आया और विनयपूर्वक इसप्रकार निवेदन करनेलगा।

प्रियवहिन ! तू धन्य है । तेरा मन सर्वथा धर्ममें दृढ़ है। तू क्षमाकी भडार है। मैने आज तक तेरे समान कोई स्त्रीरत्न नहि देखा।जैसी क्षमा तुझमें है ससारमें किसीमें नहीं । मुझसे बराबर तीन घडे फूट गये । तेरा बहुत नुक्सान होगया तथापि तुझे जरा भी क्रोध न आया । जिनदत्तके ऐसे प्रशसा युक्त किन्तु उत्तम वचन सुन तुकारीने कहा।

भाई जिनदत्त ! क्रोधका भयकर फल म चख चुकी हूं। इसलिये मैने क्रोध कुछ शात करदिया है मै जरा जरासी बात पर क्रोध नहिं करती। तुकारीके ऐसे वचन सुन जिनदत्तने कहा—

वहिन ! तुम क्रोधका फल कब चख चुकी हो कृपाकर मुझे उसका सविस्तर समाचार सुनाओ । इस कथाके सुनने-की मुझे विशेष लालसा है । जिनदत्तके ऐसे बचन सुन तुकारीने कहा।

भाई ! यदि तुझे। इस कथाके सुननेकी अभिलाषा है तो मै कहती हू तू ध्यानपूर्वक सुन ।

इसी पृथ्वीतलमें आनदित जनोंसे परिपूर्ण, मनोहर, एवं आनदका आकर एक **आनंद** नामका नगर है। आनंद नगरमें अक्षय संपत्तिका धारक कोई शिवशर्मा नामका ब्राह्मण निवास

करता था। शिवशर्माकी प्रियभार्या **कमलश्री** थी। कमलश्री अतिशय मनोहरा सुवर्णवर्णा एवं विशालनेत्रा थी। शिवशर्मा के प्रियभार्या कमलश्रीसे उत्पन्न आठ पुत्ररत्न थे। आठो ही पुत्र इंद्रके समान सुन्दर थे। भव्य थे। और धन आदिसे मत्त थे। उन आठो भाइयोंके बीच मै अकेली भैन थी। मेरा नाम **भद्रा** था। पिता माताका मुझपर असीम प्रेम था। सदा वे मेरा सन्मान करते रहते थे। मेरे भाई भी मुझपर परम स्नेह रखते थे। मै अतिशय रूपवती और समस्त स्त्रियोंमे सारभूत थी इसलिए मेरी भोजाई भी मेरा पूरा पूरा सन्मान करतीं थीं। पाड़पड़ोसी भी मुझपर अधिक प्रेम रखते थे और मुझै शुभनामसे पुकारते थे। मुझे तुंकार शब्दसे वडी चिड थी। इसलिये मेरे पिताने राजसभामे भी जाकर कह दिया था।

राजन्! मेरी पुत्री तुंकार शब्दसे वहुत चिड़ती है इसलिये क्यातो मत्री क्या नगर निवासी और बाधव, कोई भी उसके सामने तुंकार शब्द न कहै। मेरे पिताके ऐसे वचन सुन राजाने मुझै भी वुलाया। राजाकी आज्ञानुसार मै दरबारमें गई। मैने वहां स्पष्टरीतिसे यह कह दिया कि जो मुझे तुंकारी शब्दसे पुकारै गा राजाके सामने ही मै उसके अनेक अनर्थ कर पाडूगी। तथा ऐसा कहकर मै अपने घर लौट आई। उसदिनसे सब लोगोंने चिड़से मेरा नाम तुंकारी ही रख-

दिया । और मै क्रोध पूर्वक माता पिताके घरमें रहने लगी ।

कदाचित् **शुभ्र** नामके वनमें एक परम पवित्र मुनिराज जिनका नाम **गुणसागर** था, आये।मुनिराजका आगमन समाचार सुन राजा आदि समस्त लोग उनकी बंदनार्थ गये । मुनिराजके पास पहुचंकर सबोंने भक्तिभावसे उन्है नमस्कार किया । और सबके सब उनके पास भूमिमें बैठि गये । उनसबोंको उपदेश श्रवणकेलिये लालायित देख मुनिराजने उपदेश दिया । उपदेश सुनकर सबोंको परम सतोष हुवा । और अपनी सामर्थ्यके अनुसार यथायोग्य सबोंने व्रतभी धारण किये । मै भी मुनिराजका उपदेश सुन रही थी मैने भी श्रावक व्रत धारण करलिये। किंतु व्रत धारण करते समय तुकार शब्दसे उत्पन्न क्रोधका त्याग नहीं किया था । मुनिराजके उपदेशके समाप्त होजाने पर सबलोग नगरमें आगये । मै भी अपने घर आगई । मेरे भाई जैसे आठ मदयुक्त थे उनके ससर्गसे मै भी आठ मदयुक्त होगई । जिसवातकी मै हठ करती थी उसे पूरा करके मानती थी । यहा तक कि मुझे हठीली जान मेरा कोई विवाह भी नहीं करता था इसलिये जिससमय मै युवती हुई तो मेरे पिताको परम कष्ट होनेलगा । मेरी विवाह सम्बधी चिंता उन्हें रात दिन सताने लगी ।

उसीसमय एक **सोमशर्मा** नामका ब्राह्मण था । सोमशर्मा पक्का ज्वारी था । कदाचित् सोमशर्मा जूवा खेल रहा था । उसने

किसी वाजूपर अपना सब धन रखदिया। और तीव्र दुर्भाग्योदयसे उसै वह हार गया। सब धनके हारने पर जब ज्वारियोंने सोमशर्मासे अपना धन मागा तो वह न देसका इसलिये ज्वारियेंने उसै किसी वृक्षसे वांधदिया। और बुरी तरह लात डंडे घूसोंसे मारने लगे। शिवशर्माके कान तक भी यह बात पहुची वह भगता भगता शीघ्र ही सोमशर्माके पास गया और उससे इसप्रकार कहने लगा—

प्रिय ब्राह्मण! यदि तुम मेरी पुत्रीके साथ विवाह करना स्वीकार करो तो मै इन ज्वारियोंका कर्जा पटादू और तुम्है इनके चगुलसे छुटालूं। वस हे श्रेष्ठिन्! मेरे पिताके ऐसे हितकारी वचन सुन सोमशर्माने कहा--

ब्राह्मणसरदार! आपकी कन्यामें ऐसा कोंनसा दुर्गुण है जिससे उसकेलिए कोई योग्य वर नहीं मिलता और पापी, ज्वारी, दुष्टोंद्वारादडित, मुझ न कुछ पुरुषके साथ उसका विवाह करना चाहते है।सोमशर्माके ऐसे वचन सुन शिवशर्माने कहा—

प्रियवर! मेरी पुत्रीमें रूप आदिका कुछभी दोष नही है वह अतिशय रूपवती सुंदरी है। अनेक कलाकौशलोंकी भंडार है। किंतु उसमें क्रोधकी कुछ मात्रा अधिक है। वह तुंकार शब्दको सहन नहि करसकती।वस जो कुछ दोष है सो यही है। तुम अपने जीवन सुख भोगनेके लिये यही काम करना कि हम तुम का हीं व्यवहार रखना। मै तूका न हिं

इसके अतिरिक्त दूसरा तुम्है कोई कष्ट न भोगना पड़ेगा। शिव शर्माके ऐसे वचन सुन और उस कष्टको कुछ कष्ट न समझ सोमशर्मा ने उसके साथ विवाह करना स्वीकार करलिया। एव मेरे पिताने तत्काल ज्वारियोंका कर्ज पटादिया और आनद पूर्वक उसै अपने घर ले आये। कुछ दिन वाद किसी उत्तम मुहूर्तमें सोमशर्माके साथ मेरा विवाह होगया। मै उसके साथ आनद पूर्वक भोग भोगने लगी। वह मुझसे सदा नुमका व्यवहार रखता था। इसलिये मुझै परम सतोष रहता था। एव हम दोनों दपतीका आपसमें स्नेह वढता ही चलाजाता था।

कदाचित् सोमशर्मा किसी कार्यवश वाहर गये। उन्हें वहां कोई ऐसा स्थान दीखपडा जहां बहुतसे नृत्य आदि तमाशे होरहे थे। वे चट वहां वैठि गये और तमाशा देखते देखते उन्हें अपने समयका भी कुछ खयाल न रहा। जब बहुतसी रात्रि वीत चुकी। खेल भी प्राय: समाप्त होने पर आचुका। उन्हैं घरकी याद आई। वे शीघ्र अपने घरके द्वारपर आकर इसप्रकार पुकारने लगे।

प्राणवल्लभे! कृपाकर आप किवाड़ खोलें। मै दरवाजे पर खडा हू। मै उससमय अर्धनिद्रित थी इसलिये दो एक तो मै अवाज उनकी न सुन सकी किंतु जव वे स्वभावसे वार वार पुकारने लगे तो मैने उनकी आवाज तो सुनली परतु 'ये इतनी रात तक कहा रहे क्यों अपने समय पर अपने घर न आये'

ऐसा उनपर दोषारोपण कर फिर भी मैने आवाज न दी और न दरवाजा खोला। कुछ समय बाद वे मुझै 'तुम तुम' शब्दसे पुकारने लगे तो भी मैने उन्हें उत्तर न दिया प्रत्युत मै उनपर अधिक घृणा करती चलीगई और मेरा गर्भ भी बढता चलागया । अतमें जब सोमशर्मा अधिक घबड़ागये, मेरी ओरसे उन्हें कुछ भी जवाव न मिला तो उन्हे क्रोध आ गया। क्रोधके आवेशमें उन्है कुछ न सूझा वे मुझे फिर इस रीतिसे पुकारने लगे।

अरी तुकारी ! किवाड़ तू क्यों नहिं जल्दी खोलती दरवाजे पर खड़े खड़े हमे अधिक समय वीत चुका है रात्रिके अधिक व्यतीत होजानेसे हम कष्ट भोग रहे है।

वस फिर क्या था ! रे भाई जिनदत्त ! ज्योंही मैंने अपने पतिके मुखसे तुंकारी शब्द सुना मेरा क्रोधके मारे शरीर भभक उठा। मेरे पति अर्धरात्रिके वीतने पर घर आये थे इसलिये मै स्वभावसे ही उनपर कुपित वैठी थी किंतु तुंकारी शब्दने मुझे वेहद कुपित वना दिया। मुझे उससमय और कुछ न सूझा किवाड़ खोल मै घरसे निकली ओर बनकी ओर चलपड़ी।

उससमय रात्रि अधिक वीत चुकी थी।नगरमें चारो ओर सन्नाटा छारहा था उससमय उल्लू चोर आदिक ही आनदसे जहा तहां भ्रमण करते फिरते थे। और कोई नहिं जागता था । मै थोडी ही दूर अपने घरसे गई थी । मेरे

वदन पर कीमती भूषण वस्त्र थे। इसलिये मुझपर चोरोंकी दृष्टि पड़ी। वे शीघ्र मुझपर वाघसरीखे टूटपड़े। और मुझे कडी रीतिसे पकडकर उन्होंने तत्काल अपने सरदार किसी भीलके पास पहुचा दिया। चोरोंका सरदार वह भील बड़ा दुष्ट था ज्योंही उसने मुझे देखा वह अति प्रसन्न हुआ। और इसप्रकार कहने लगा।

वाले! तुझे जिसबातकी आवश्यकता हो कह मै उसे करनेकेलिये तयार हू। तू मेरी प्राणवल्लभा वनना स्वीकार करले। मै तुझे अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारी रक्खूंगा। तू किसीप्रकार अपने चित्तमें भय न कर। भिल्लपतिके ऐसे वचन सुन मै भोंचक रहगई। किंतु मैंने धैर्य हाथसे न जाने दिया इसलिये मैंने शीघ्र ही प्रोढ किंतु शांतिपूर्वक इसप्रकार जवाब दिया----

भिल्लसरदार! आपका यह कथन सर्वथा विरुद्ध और मलिन है। जो स्त्रिया उत्तमवशमें उत्पन्न हुई है। और जो मनुष्य कुलीन है कदापि उन्हें अपना शीलवृत नष्ट न करना चाहिये। आप यह विश्वास रक्खें जो जीव अपने शीलवृतकी कुछभी परवा न कर दुष्कर्म करपाड़ते है उन्हें दोनों जन्मोंमें अनेक दुःख सहने पडते है। ससारमें उनको कोई भला नहीं कहता।

उससमय वह चोरोंका सरदार काम वाणसे विद्ध था।

भला वह धर्म अधर्मको क्या समझ सकता था। इसलिये तप्त लोहपिंडपर जलबूंद जैसी तत्काल नष्ट होजाती है— उसका नाम निशान भी नजर नहीं आता। वैसा ही मेरे वचनोंका भिल्लराजके चित्तपर जराभी असर न पड़ा वह, 'कबूतरी पर जैसा बाज टूटता है' एकदम मुझपर टूटपड़ा और मुझे अपनी दोनों भुजाओंमें भरकर कामचेष्टा करनेकेलिये उद्यत होगया।

जब मैंने उसकी यह घृणित अवस्था देखी तो मैं अपने पवित्र शीलव्रतकी रक्षार्थ आसन बांधकर निश्चल बैठिगई मैंने उसकी ओर निहारा तक न। बहुतसमय तक प्रयत्न करनेपर भी जब उसपापीका उद्देश पूर्ण न हो सका तो वह अति कुपित होगया। उसने शीघ्र ही अपने साथियोंके हाथ मुझे बेचडाला और अपने क्रोधकी शांतिकी।

उसके साथी भी परम दुष्ट थे---ज्योंही उन्होंने मुझे देखा देवांगनाके समान परम सुंदरी जान वे भी कामबाणोंसे व्याकुल होगये। और विना समझे बूझे मेरे शीलव्रतका खंडन करना प्रारंभ करदिया। उससमय कोई वनरक्षिका देवी यह दृश्य देख रही थी इसलिये ज्योंही वे दुष्ट मेरे पास आये मारडंडोंके देवीने उन्हें ठीक करदिया। और वह मुझे अपने यहां लेगई।

भाई जिनदत्त! यद्यपि मै अतिशय पापिनी थी तोभी मैं अपने शीलव्रतमें दृढ़ थी इसलिये उस भयंकर समयमें उस

देवीने मेरी रक्षा की । तुम निश्चय समझो जो मनुष्य अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रहते है देवभी उनके दास बन जाते हैं और समस्त दु.ख उनके एक ओर किनारा करजाते है ।

जिससमय देवी मुझे अपने घर लेगई थी उससमय मेरे पास कोई वस्त्र न था इसलिये उसदेवीने मुझ एक ऐसा कंबल जो अनेक जूवा कीडी आदि जीवोसे व्याप्त था। जगह २ उसमें रक्त पीव कीचड लगी थी देदिया और मुझे वहीं रहनेकी आज्ञा दी । मैने भी कंबल लेलिया और प्रवलपापो दयसे उस क्षेत्रमे उत्पन्न कोदों आदि धान्योंको देखती हुई रहने लगी । इतने परभी मे रे दु खोंकी शांति न हुई प्रति पक्षमें वह देवी मे रे शिरके केशोंका मोचन करती थी और अपने वस्त्रके रगनेकेलिये उससे रक्त निकाला करती थी । रक्त निकालते समय मेरे मस्तकमें पीडा होती थी इसलिये वह देवी उस पीडाको लाक्षामूल तेल लगाकर दूर करती थी ।

कदाचित् मेरा परमस्नेही भाई **यौवनदत्त** उज्जयनीके राजाने किसी कार्यवश वडी विभूतिके साथ राजा **पारासर** के पास भेजा । वह अपना कार्य समाप्त कर उज्जयनी लोट रहा था । मार्गमे कुछ समयकेलिये जिसवनमें मैं रहती थी उसी वनमें वह ठहर गया । और मुझ अभागिनी पर उसकी दृष्टि पड गई । ज्योंही उसने मुझे देखा बडे स्नेहसे मुझे अपने हृदय लगाया । और वडी कठिनतासे उसदेवीके चगुलसे निकाल

कर मुझे उज्जयनी लेगया । जिससमय मेरी माता आदि कुटुंबियोंने मुझे देखा उन्हे परम दुःख हुआ । मेरे शरीरकी दशा देख मेरी मा अधिक दुःख मानने लगी मेरे मिलापसे मेरा समस्त बंधुवर्ग अति प्रसन्न हुवा । एव कुछ दिन बाद मेरा भाई **धनदेव** मुझे यहां मेरे पतिके घर पहुंचागया ।

प्रिय भाई जबसे मै यहा आई हूं तबसे मैने जरा जरासी बात पर क्रोध करना छोड दिया है । मै क्रोधका फल भयकर चख चुकी हूं इसलिये और भी मै क्रोधकी मात्रा दिनों दिन कमती करती जाती हूं । आप निश्चय समझिये यह धर्म रूपी वृक्ष सम्यग्दर्शनरूपी जडका धारक, शास्त्ररूपी पीड़ कर युक्त, दानरूपी शाखाओंसे शोभित, अनेक प्रकारके गुणरूपी पत्तोंसे व्याप्त, कीर्तिरूपी पुष्पोंसे सुसज्जित, वृतरूपी उत्तम आलवालसे मनोहर, मोक्षरूपी फलका देनेवाला, क्षमारूपी जलसे बढाहुवा परम पवित्र है । यदि इसमें किसीरीतिसे क्रोधरूपी अग्नि प्रवेश करजाय तो वह कितनाभी बड़ा क्यों न हो तत्काल भस्म हो जाता है इसलिये जो मनुष्य अपना हित चाहते है उन्है ऐसा भयकर फल देनेवाला क्रोध सर्वथा छोड़ देना चाहिये ।

ब्राह्मणी तुकारीके मुखसे ऐसी कथा सुन सेठि जिनदत्त अति प्रसन्न हुवा । वह तुंकारीकी बारबार प्रशंसा करने लगा एव प्रशसा करता २ कुछ समय बाद अपने घर आया । लाक्षामूल तेल एवं अन्यान्य औषधियोंसे जिनदत्त मेरी (मुनि-

राजकी) परिचर्या करने लगा। कुछ दिन बाद मेरे रोगकी शांति हुई। मुझै नीरोग देख जिनदत्तको परम सतोष हुवा। मेरी नीरोगताकी खुशीमें जिनदत्त आदि सेठोंने अति उत्सव मनाया। जहा तहा जिनमदिरोंमें विधान होने लगे। एव कानों को अति प्रिय उत्तमोत्तम बाजे भी बजने लगे।

राजन् श्रेणिक! इधर तो मै नीरोग हुवा और उधर वर्षाकालभी आगया। उससमय आनदसे वृष्टि होने लगी। जहा तहा विजली चमकने लगी। एवं प्रत्येक दिशामें मेघध्वनि सुन पडी। उससमय हरित वनस्पतिसे आच्छादित, जलबूंदोंसे व्याप्त, पृथ्वी अति मनोहर नजर आने लगी। जैसे हरित कांत-मणिपर जड़े हुवे सफेद मोती शोभित होते है हरी वनस्पतिपर स्थित जल बूंदे उससमय ठीक वैसी ही शोभाको धारण करतीं थीं। उससमय मयूर चारो ओर आनंद शब्दकरते थे। विराहिणी कामिनियोंके लिये वह मेघमाला जलती हुई अग्नि ज्वालाके समान थी। और अपनी प्राण वल्लभाके अधरामृत पानके लोलुपी, क्षणभरभी उसके विरहको सहन न करनेवाले कामियोंके मार्गको रोकनेवाली थी। जिससमय विरहिणी स्त्रियां अपने २ घोंसलोंमें आनद पूर्वक प्रेमालिंगन करते हुवे वगलीवगलोंको देखती थीं उन्हें परम दुःख होता था। वे अपने मनमें ऐसा बिचार करती थीं। हाय!!! यह पतिविरह दु.ख हमपर कहासे टूट पड़ा। क्या यह दु:ख हमारे ही

लिये था ! हम कैसे इस दुःखको सहन करैं। इसप्रकार जीवोंको स्वभावसे ही सुखदुःखके देनेवाले वर्षाकालके आजा-नेसे जिनदत्त आदिने चतुर्मासके लिये मुझे उस नगरमें ही रहनेके लिये आग्रह किया इसलिये मै वहीं रहगया एव ध्यान में दत्तचित्त, जीवोंको उत्तम मार्गका उपदेश देता हुवा मैं सुख पूर्वक जिनदत्तके घर में रहने लगा।

सेठि जिनदत्तका पुत्र जोकि अति व्यासनी और दुर्ध्यानी था **कुवेरदत्त था**। कुवेरदत्तसे जिनदत्त धन आदिके विष-यमें सदा शंकित रहता था। कदाचित् सेठि जिनदत्तने एक तामेके घडेको रत्नोंसे भरकर और मेरे सिंहासनके नीचे एक गहरा गढा खोदकर चुपचाप रखदिया किंतु घड़ा रखते समय कुवेरदत्त मेरे सिहासनके नीचे छिपा था इसलिये उसने यह सब दृश्य देख लिया। और कुछ दिन वाद वहांसे उस घड़ेको उखाड कर अपने परिचित स्थान पर उसने रखदिया।

कुछ दिन वाद चतुर्मास समाप्त होगया। मैने भी अपना ध्यान समाप्त करदिया। एवं हेयोपादेय विचारमें तत्पर, ईर्या समिति पूर्वक मै वहासे निकला और वनकी ओर चलदिया।

मेरे चलेजानेके पश्चात् सेठि जिनदत्तको अपने धन की याद आई। जिस स्थान पर उसने रत्न भरा घड़ा रक्खा

था तत्काल उसे खोदा। वहां घडा था नहिं इस लिये जब उसे घड़ा न मिला तो वह इस प्रकार संकल्प विकल्प करने लगा—

हाय! मेरा धन कहां गया? किसने लेलिया? अरे मेरे प्राणोंके समान, यत्नसे सुरक्षित, धन अब किसके पास होगा! हाय रक्षार्थ मैंने दूसरी जगहसे लाकर यहां रक्खा था उसे यहांसे भी किसी चोर ने चुरा लिया? जब बाढ़ही खेत खाने लगी तो दूसरा मनुष्य कैसे उसकी रक्षा कर सकता है। मुनिराजके सिवाय इस स्थान पर दूसरा कोई मनुष्य नहिं रहता था। शायद मुनिराजके परिणामोंमें मलिनता आ गई हो। उन्होंने ही ले लिया हो। पूछनेमें कोई हानि नहिं चलू मुनिराज से पूछ लू तथा ऐसा कुछ समयपर्यंत विचारकर शीघ्र ही जिनदत्तने कुछ नोकर मेरे अन्वेषणार्थ भेजे। और स्वय भी घर से निकल पडा। एव कपटवृत्तिसे जहा तहा मुझे ढूढ़ने लगा।

मै वनमें किसी पर्वतकी तलहटी में ध्यानारूढ़ था। मुझे जिनदत्तकी कपटवृत्तिका कुछ भी ख्याल न था। अचानक ही घूमता घूमता वह मेरे पास आया। भक्तिभावसे मुझे नमस्कार किया एव कपटवृत्तिसे वह इसप्रकार प्रार्थना करने लगा।

प्रभो! दीनबंधो! जबसे आपने उज्जयनी छोड़दी है

तबसे वहांके निवासी श्रावक बड़ा दु:ख मान रहे है । आपके चले आनेसे वे अपने को भाग्यहीन समझते है । और अहोरात्र आपके दर्शनोंकेलिये लालायित रहते है । कृपा कर एक समय आप जरूर ही उज्जयनी चलें और उन्हें आनंदित करें पीछे आपके आधीन वात हैं चाहे आप जावें या न जावे । जिनदत्तकी ऐसी वचन भंगी सुन मै अवाक् रहगया मुझे शीघ्र ही उसके भीतरी अभिप्रायका ज्ञान होगया । धनके लिये उसका ऐसा वर्ताव सुन मैं अपने मनमें ऐसा विचार करने लगा ।

यह धन बड़ा निकृष्ट पदार्थ है । यह दुष्ट, जीवोंको घोरपापका संचय करानेवाला और अनेक दु:ख प्रदान करने वाला हैं । हाय !!! जो परम मित्र है अपना कैसा भी अहित नहिं चाहता वह भी इस धनकी कृपासे परम शत्रु वन जाता है और अनेक अहित करनेकेलिये तयार होजाता है । प्राण प्यारी स्त्री इसधनकी कृपासे सर्पिणीके समान भयंकर वन जाती है । जन्म दात्री, सदा हित चाहनेवाली, माता भी धन के चक्रमें पड़कर भयंकर व्याघ्री वन जाती है-- धनके लिये पुत्रके मारनेमें वह जरा भी संकोच नहि करती । धनके फेरमें पड़कर एक भाई दूसरे भाईका भी अनिष्ट चिंतन करने लग जाता है । पिता भी धनकी ही कृपासे अपनेको सुखी मानता है । यदि कुटुंबी धन नहिं देखते है तो जहां तहा निंदा करते

फिरते हैं। वहिन भी धनके चक्रमें फसकर हलाहल विष सरीखी जान पडती है। निर्धन भाईके मारदेमें उसे भी जराभी संकोच नहिं होता। हाय !!! समस्त परिग्रहके त्यागी, आत्मीक रसमें लीन, मुनिराजभी इस दुष्ट धनकी कृपासे चोर बन जाते है। इस धनकेलिये पिता अपने प्यारे पुत्रको मार देना है। पुत्रभी अपने प्यारे पिताको यमलोक पहुचा देता है। धनके पीछे भाई भाईको मार देता है। सेवक स्वामीका प्राणघात करदेते है। धनकेलिये जीव अपने शरीरकी भी परवाह नहिं करते। हाय !!! ऐसे धनको सहस्रवार धिक्कार है। यह सर्वथा हिंसामय है। इसके चक्रमें फसेहुवे जीव कदापि सुखी नहिं होसकते। तथा इसप्रकार धनकी बार बार निंदा करते हुवे मुझे वह पुन. अपने घर लेगया एव वहा पहुचकर यह कहने लगा—

नाथ! कृपाकर मुझे कोई कथा सुनाइये ? मुझे आपके मुखसे कथाश्रवणकी अधिक अभिलाषा है। उसके ऐसे वचन सुन मैने कहा—

जिनदत्त! तुम्हीं कोई कथा कहो हम तुम्हारे मुखसे ही कथा सुनना चाहते है बस फिर क्या था ? वह तो कथा द्वारा अपना भीतरी अभिप्राय जतलाना चाहता ही था इस लिये ज्योंही उसने मेरे वचन सुने वह अति प्रसन्न हुआ और कहने लगा—

प्रभो आपकी आज्ञानुसार मै कथा सुनाता हूं आप ध्यान पूर्वक सुनें और मुझे क्षमा करें।

इसी जंबूद्वीपमें एक अतिशय मनोहर **बनारस** नामकी नगरी है। बनारस नगरीका स्वामी जो नीति पूर्वक प्रजाका पालक था राजा **जितमित्र** था। राजा जितमित्रके यहां एक **अगदंकार** नामका राजवैद्य था। उसकी स्त्री **धनदत्ता** अतिशय रूपवती एव साक्षात् कुवेरकी स्त्रीके समान थी। राज्यकी ओरसे वैद्य अगदंकारको जो आजीविका दी जाती थी उसीसे वह अपना गुजारा करता था एव इन्द्रके समान उत्तमोत्तम भोग भोगता वहा आनदसे रहता था। वैद्यवर अगदंकारके अतिशय सुदर दो पुत्र थे। प्रथम पुत्र **धनमित्र** था। और दूसरेका नाम **धनचंद्र** था। दोनों भाई माता पिताके लाड़ले अधिक थे इसलिए अनेक प्रयत्न करने पर भी वे फूटा अक्षर भी न पढ़ सके। रोग आदिकी परीक्षाका भी उन्हें ज्ञान न हुआ। एवं वे निरक्षर-भट्टाचार्य होकर घर में रहने लगे।

कुछ दिन बाद अशुभकर्मकी कृपासे वैद्यवर अगदंकार का शरीरांत हो गया। वे धनमित्र और धनचन्द्र अनाथ सरीखे रह गये। राजकी ओरसे जो आजीविका बंधी थी राजाने उसे भी उन्हें मूर्ख जान छीनली। इसलिए उन दोनों भाइयोंको और भी अधिक दुःख हुआ। एवं अतिशय

अभिमानी किन्तु अतिशय दुःखित वे दोनों भाई कुछ विद्या सीखनेकेलिए **चम्पापुरी**की ओर चल दिये।

उससमय चम्पापुरीमें कोई **शिवभूति** नाम का ब्राह्मण निवास करता था। शिवभूति वैद्य विद्याका अच्छा ज्ञाता था इसलिये वे दोनों भाई उसके पास गये। एव कुछ काल वैद्यक शास्त्रों का भलेप्रकार अभ्यास कर वे भी वैद्य विद्याके उत्तम जानकार वन गये।

जब उन्होंने देखा कि हम अच्छे विद्वान वन गये तो उन दोनोंने अपनी जन्म भूमि बनारस आनेका विचार किया एव प्रतिज्ञानुसार वे वहासे चल भी दिये। मार्ग में वे आनन्द पूर्वक आरहे थे अचानक ही उनकी दृष्टि एक व्याघ्र पर पड़ी जो व्याघ्र सर्वथा अंधा था और आखों के न होनेसे अनेक क्लेश भोग रहा था।

व्याघ्रको अधा देख धनमित्रका चित्त दयासे आर्द्र होगया। उसने शीघ्र ही अपने छोटे भाईसे कहा—

प्रिय धनचंद्र ! कहो तो मै इस दीन व्याघ्रको उत्तम औषधियोंके प्रतापसे अभी सूझता करदूं? यह विचारा आखोंके बिना बड़ा कष्ट सह रहा है। धनमित्रकी ऐसी बात सुन धनचंद्रने कहा—

नहीं भाई इसे तुम सूझता मत करो। यह स्वभावसे दुष्ट है इसके फंदेमें पड़कर अपनी जान वचनी भी कठिन पड़

जायगी। दुष्टोंपर उपकार करनेसे कुछ फल नही मिलता।

धनमित्रका काल शिर पर छारहा था। उसनें छोटे भाई धनचंद्र की जरा भी बात न मानी और तत्काल व्याघ्रको सूझता वनानेकेलिए तत्पर होगया। जब धनचंद्रने देखा कि धनमित्र मेरी बात को नहीं मानता है तो वह शीघ्र ही समीप-वर्ती किसी वृक्ष पर चढ़ गया और पत्तियोंसे अपने को छिपाकर सब दृश्य देखने लगा।

धनमित्र व्याघ्रकी आखोंकी दवा करने लगा औषधियों के प्रभावसे वातकी वातमें धनमित्रने उसे सूझता वना दिया किंतु दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते ज्यों ही व्याघ्र सूझता होगया उसने तत्काल ही धनमित्र को खालिया और आनदसे जहां तहां घूमने लगा। इसलिये हे प्रभो मुने! क्या व्याघ्र को यह उचित था जो कि वह अपने परमोपकारी दु ख दूर करनेवाले धनमित्रको खागया? कृपया आप मुझे कहै? सेठि जिनदत्तके मुखसे ऐसी कथा सुन मुनिराजने कहा—

जिनदत्त! व्याघ्र बड़ा कृतघ्नी निकला निस्संदेह उसने परमोपकारी जिनदत्तके साथ अनुचित वर्ताव किया, तुम निश्चय समझो जो मनुष्य कृत उपकारका खयाल नहीं करते वे घोर पापी समझै जाते है संसारमें उन्है नरक आदि दुर्गतिओंके फल भोगने पड़ते है। मै तुम्हारी कथा सुन चुका अव तुम मेरी कथा सुनो जिससे संशय दूर हो।

इसी जम्बूद्वीपसे एक **हस्तिनापुर** नामका विशाल नगर है किसीसमय हस्तिनापुरका स्वामी अतिशय बुद्धिमान राजा **विश्वसेन** था। विश्वसेनकी प्रियाभार्या रानी **वसुकांता** थी। वसुकाता अतिशय मनोहरा चंद्रवदना मृगनयनी कृशांगी एवं पूर्णचंद्रानना थी। राजा विश्वसेनकी रानी वसुकातासे उत्पन्न एक पुत्र जो कि शुभलक्षणोंका धारक सदा, धनवृद्धिका इच्छुक, वीर, एवं सर्वोत्कृष्ट था **वसुदत्त** था। राजा विश्वसेनने वसुदत्तको योग्य समझ राज्यभार उसै ही देदिया था। और आनद पूर्वक भोग भोगते वे अपने अन्त:पुर में रहते थे।

कदाचित् वे आनंदमें वैठे थे उससमय कोई एक सार्थवाह मनुष्य उनके पास आया। उसने भक्तिपूर्वक उन्हें नमस्कार किया एवं अपनी भक्ति प्रकट करनेकेलिये एक आमकी गुठली उनकी भैट की। राजा विश्वसेनने गुठलीतो लेली किंतु वे उसकी परीक्षा न करसके इसलिये उन्होंने शीघ्र ही सार्थवाहसे पूछा—

कहो भाई यह क्या चीज है मै इसको पहिचान न सका। राजाके ऐसे वचन सुन सार्थवाहने कहा।

कृपानाथ! समस्तरोगोंके नाश करनेवाले आम्रफलका यह बीज है। इसदेशमें यह फल होता नहीं इसलिये यह अपूर्वपदार्थ जान मैंने आपकी सेवामें आकर भेट किया है।

सार्थवाहके ऐसे विनयवचनोंसे राजा विश्वसेन अति प्रसन्न हुए। उनका प्रेम रानी वसुकांतामें अधिक था इसलिये उन्होंने यह समझ, कि विना रानीके मेरा नीरोग होना किसकामका ? चट रानीको वीज देदिया रानीका प्रेम पुत्र वसुदत्त पर अधिक था इसलिय उसने उठा वसुदत्तको देदिया। जव वह आमका वीज वसुदत्तके हाथमें आया तो वे उसै जान न सकै और उनका प्रेम पितापर अधिक था इसलिये उन्होंने शीघ्र ही वह वीज पिताको देदिया और विनयसे यह प्रार्थना की कि पूज्यपिता! यह क्या चीज है कृपाकर मुझे वतावें ? वसुदत्त के ऐसे वचन सुन राजा विश्वसेनने कहा।

प्यारे पुत्र! अमृतफल-आम पैदा करने वाला यह आम का वीज है। इससे जो फल उत्पन्न होता है उससे समस्त रोग शांत होजाते है। यह फल हमै सार्थवाहने भेंट किया है तथा ऐसा कहते कहते उन्होंने शीघ्र ही किसी चतुर माली को वुलाया और स्त्री पुत्र आदिके नीरोगपनकी आशासे किसी उत्तम क्षेत्रमें वोनेकेलिए उसे शीघ्र ही आज्ञा देदी।

राजाकी आज्ञानुसार मालीने उसे किसी उत्तम क्षेत्रमें वोदिया। प्रतिदिन स्वच्छ जल सींचना भी प्रारंभ कर दिया। कुछ दिन वाद माली का परिश्रम सफल होगया। वह वृक्ष उत्तमोत्तम फलों से लदवदा गया एवं वह प्रतिदिन माली को आनंद देने लगा।

किसीसमय एक गृद्धपक्षी आकाशमार्गसे किसी एक जहरीले सर्पको मुखमें दवाये चला जारहा था। भाग्यवश एक फलपर सर्पकी विष बूंद गिरगई। विषकी गर्मीसे वह फलभी जल्दी पकगया। मालीने आनंदित हो फल तोडालिया और उसै राजाकी सभामें जाकर भैट कर दिया। राजा विश्वसैनको फल देख परमानंद हुआ। उन्होंने मालीको उचित पारितोषिक दे सतुष्ट किया एवं अपने प्रिय पुत्रको बुलवा कर उसे फल खाने की आज्ञा दे दी।

आमफल विष बूंदसे विषमय होचुका था इसलिए ज्योंही कुमारने फल खाया खाते ही उसके शरीरमें विष फैल गया वातकी वातमें वह मूर्छित हो जमीन पर गिर गया और उसकी चेतना एक ओर किनारा कर गई। अपने इकलोती और प्रियपुत्र वसुदत्तकी यह दशा देख राजा विश्वसेन वेहोश हो गये उन्होंने वह सब कार्य आम फलका जान तत्काल उसे कटवाने की आज्ञा दे दी एव पुत्रकी रक्षार्थ शीघ्र ही राजवैद्य को बुलवाया।

राजवैद्यने कुमारकी नाडी देखी। नाड़ीमें उसे विष विकार जान पड़ा इसलिए उसने शीघ्र ही उसी आम्र फलका एक फल मंगाया और कुमारको खिलाकर तत्काल निर्विष कर दिया! राजा विश्वसेनने जब आम्र फलका यह माहात्म्य देखा तो उन्हें बड़ा शोक हुआ वे अपने उस

अविचारित कार्यकेलिये वार वार पश्चात्ताप करने लगे। और अपनी मूर्खताकेलिये सहस्र वार धिक्कार देने लगे।

हे जिनदत्त ! यह तुम निश्चय समझो जो हतवुद्धि मनुष्य विना विचारे काम कर पाड़ते है उन्हें पीछे पछिताना पड़ता है। विना समझे काम करनेवाले मनुष्य निंदा भाजन बन जाते है। अव तुम्हीं इस वातको कहो राजाने जो वह आम विना विचारे कटवा दिया था वह काम क्या उसका उत्तम था ! मुझसे यह कथा सुन जिनदत्त ने कहा—

नाथ? राजाका वह कार्य सर्वथा वेसमझका था। मै आपको एक दूसरी कथा सुनाता हूं आप ध्यान पूर्वक सुनै।

किसीसमय किसी गंगा किनारे एक विन्ध्यभूति नामका तपस्वी रहता था कदाचित् एक हाथीका वच्चा नदी के प्रवाहमें बहा चला जाता था। तपस्वीकी अचानक ही उसपर दृष्टि पड़ गई। दयावश उसने शीघ्र ही उस हाथी के वच्चेको पकड़ लिया। वह वच्चा शुभ लक्षण युक्त था इस लिए वह तपस्वी उत्तमोत्तम फल आदि खवाकर उसका पोषण करने लगा और चन्द रोजमें ही वह वच्चा एक विशाल हाथी वनगया।

कदाचित् किसी राजाकी दृष्टि उस हाथी पर पड़ी उसै शुभ लक्षणयुक्त देख राजाने उसे खरीद लिया और अपने घर लेजाकर सिखानेकेलिए किसी महावत की सुपुर्द

कर दिया। राजाकी आज्ञानुसार महावत उसे सिखाने लगा। जब वह सिखानेमें टाल मटोल करता था तब महावत उसे मारे २ अकुशों के वशमें करता था।

इसप्रकार कुछ समय तो वह हाथी वहां रहा। जब उसे अंकुश बहुत दुःख देने लगा तो वह भग कर गंगा के किनारे उसी तपस्वीके पास आगया।

ज्योंही तपस्वीने उसे देखा तो उसने भी उसे न रक्खा मारपीट कर वहां से भगा दिया। तपस्वीका ऐसा वर्ताव देख हाथीको क्रोध आगया एव उस दुष्टने उस उपकारी तपस्वीको तत्काल चीर कर मार दिया। कृपानाथ! अब आप ही कहै परमोपकारी उस तपस्वीके साथ क्या हाथीका वह वर्ताव उत्तम था? मैंने कहा।

जिनदत्त! वह हाथी बड़ा दुष्ट था। दुष्टने जरा भी अपने उपकारीकी दया न की। देखो जो मनुष्य दूसरेके उपकार को भूलजाते है उन्है अनेक वेदना सहनी पडती है। नर-कादि गतियां उनके लिए सदा तयार रहती है। एव बुद्धि-मान लोग स्वभावसे हिंसक और उपकारीके हिंसकमें उतना हीं भेद मानते हैं जितना राई और पर्वत में मानते हैं। मै तुम्हारी कथा सुन चुका। मै भी एक दूसरी कथा कहता हूं तुम उसे ध्यान पूर्वक सुनो।

इसी पृथ्वीपर एक **चम्पापुरी** नाम की सर्वोत्तम नगरी

है। किसीसमय कुवेरपुरीके तुल्य उस चंपापुरी में एक देवदत्ता नामकी वेश्या रहती थी। देवदत्ता अतिशय सुन्दरी थी यदि उसके लिए देवांगना कह दिया जाता तो भी उसके लिये कम था। उसके पास एक पालतू तोता था वह उसे अपने प्राणोंसे भी प्यारा समझती थी।

कदाचित् रविवारके दिन तोतेकेलिए प्याले में शराव रखकर वह तो किसी कार्य वश भीतर चली गई और इतने ही में एक लड़की वहां आई उसने उस शरावमें विष डाल दिया और शीघ्र वहासे चंपत हो गई। देवदत्ताको इस वातका पता न लगा वह अपने सीधे स्वभावसे वाहिर आई और तोताको शराव पिलाने लगी। किन्तु तोता वह सव दृश्य देख रहा था इसलिये अनेक वार प्रयत्न करने पर भी उसने शरावमें चोंच तक न वोरी वह चुप चाप वैठा रहा। देवदत्ता जबरन उसे शराव पिलाने लगी तोभी उसने न पिया देवदत्ता जब और जबरन पिलाने लगी तो वह चिल्लाने लगा इसलिये देवदत्ताको क्रोध आगया और उसने उसे तत्काल मार कर फेंक दिया। अव हे जिनदत्त? तुम्हीं कहो देवदत्ताका वह अविचारित काम क्या योग्य था? जिन-दत्तने उत्तर दिया।

नाथ! यदि देवदत्ताने ऐसा काम किया तो परम मूर्खा समझनी चाहिए। मै अव आपको तीसरी कथा सुनाता हूं

कृपया उसे ध्यान पूर्वक सुनै ।

इसी लोकमें एक अतिशय मनोहर एवं प्रसिद्ध **बनारस** नामकी नगरी है । किसीसमय बनारसमें कोई **वसुदत्त** नामका सेठि निवास करता था । वसुदत्त उत्तमदर्जेका व्यापारी था धनी था सुवर्णनिर्मित मकानमें रहता था और बडा तुंदिल (बडी थोंदिका धारक) था । वसुदत्तकी प्रिय भार्याका नाम **वसुदत्ता** था वसुदत्ता बडी चतुरा थी । विनयादि गुणोंसे अपने पतिको संतुष्ट करने वाली थी और मनोहरा थी । कदाचित् उसी नगरीमें एक चोर किसीके घर चोरीके लिये गया । उससमय उस घरके मनुष्य जग रहे थे इसलिये चोरको उन्होंने देख लिया । देखते ही चोर भगा । भागते समय उसके पीछे बहुतसे मनुष्य थे इसलिये घबडा कर वह सेठि सुभद्रदत्तके घरमें घुस पड़ा और सुभद्रदत्तसे इसप्रकार विनय वचन कहने लगा ।

कृपानाथ ! मुझे बचाइये मै मरा । चोरके ऐसे वचन सुन सुभद्रदत्तको दया आ गई । उसने चोरको शीघ्र ही अपने कपडोंमें छिपा लिया । कोतवाल आदि सेठिजीके पास आये सेठिजीसे चोरकी बाबत पूछा भी तो भी सेठिजीने कुछ जवाब न दिया । जहा तहा सबोंने चोर देखा कहीं न दीख पड़ा किंतु सेठिजीकी बडी थोंदिके नीचे ही वह छिपा रहा । इसलिये वे सबके सब पीछेको लोट गये ।

जब विघ्न शांत होगया तव चोरको जानेकी आज्ञा दे दी तथा यह समझ कि चोर चला गया वे अपने किवाड़ वन्द कर सो गये। किंतु वह दुष्ट उसी घरमें छिप गया और दाव पाकर मालमटा लेकर चंपत होगया। प्रातःकाल सेठि सुभदत्त की आंख खुली। अपनी चोरी देख उन्है परम दुःख हुआ। वे कहने लगे मैंने तो उस दुष्ट चोरकी रक्षा की थी किंतु उस दुष्टने मेरे साथ भी यह दुष्टता की। यह वात ठीक है दुष्ट अपनी दुष्टता कदापि नाहिं छोड़ते तथा ऐसा कुछसमय सोच विचारकर वे शान्त होगये। इसलिये हे मुनिनाथ? आपही कहे क्या उस चोरका सेठि सुभद्रदत्तके साथ वैसा वर्ताव उत्तम था! मैंने उत्तर दिया।

सर्वथा अनुचित। उसने सेठि सुभद्रदत्तके साथ बडा विश्वासघात किया। वह चोर बड़ा पापी और कुमार्गी था। इसमें जरा भी संदेह नहीं। अब मैं भी तुम्है कथा सुनाता हू मुझै विश्वास है अब की कथासे तुम्है जरूर संतोष होगा तुम ध्यान पूर्वक सुनो।

इसीलोकमें कामदेवका रंगस्थल आतिशय मनोहर एक **वंग** देश है। वंगदेशमें एक चंपापुरी नामकी नगरी है। चंपापुरीमें जातीय मुकुद केतकी चंपा आदिके वृक्ष सदा हरे भरे फले फूले रहते है और सदा उत्तम मनुष्य निवास करते है। चपापुरीमें एक ब्राह्मण, जो कि भलेप्रकार वेद

वेदांगका पाठी और धनी था **सोमशर्मा** था सोमशर्माकी अतिशय रूपवती दो स्त्रियां थीं प्रथम स्त्री **सोमिल्ला** और दूसरीका नाम **सोमशर्मिका** था। भाग्योदयसे सुंदरी सोमिल्लाके एक अतिशय रूपवान पुत्र उत्पन्न हुआ। सोमिल्लाको पुत्रवती देख सोमशर्मा उसपर अधिक प्रेम करने लगा और सोमशर्मिकाकी ओरसे उसका प्रेम कुछ हटने लगा।

स्त्रिया स्वभावमे ही ईर्षा द्वेषकी खानि होती हैं यदि उनको कुछ कारण मिल जाय तब तो ईर्षा द्वेष करनेमें वे जरा भी नहि चूकती ज्योंही सोमशर्मिकाको यह पता लगा कि मेरा पति मुझ पर प्रेम नहिं करता सोमिल्लाको अधिक चाहता है मारे क्रोधके वह भवक उठी। वह उसी दिनसे सोमिल्लासे मर्मभेदी वचन कहने लगी। हास्य और कलह करना भी प्रारम्भ कर दिया यहा तक कि सोमिल्लाके अहित करनेमें भी वह न डरने लगी।

उसी नगरीमें एक भद्र नामका बैल रहता था। भद्र सुशील और शांति प्रकृतिका धारक था इसलिए समस्त नगर निवासी उसपर बड़ा प्रेम करते थे। कदाचित् भद्र (बैल) ब्राह्मण सोमशर्माके दरवाजे पर खड़ा था ब्राह्मणी सोमशर्मिकाकी दृष्टि उसपर पडी उसने शीघ्र ही अपनी सौत सोमिल्लाका बालक ऊपर अटारीसे बैलके सींगपर पटक दिया

एव सींग पर गिरते ही रोता हुवा वह बालक शीघ्र मरगया ।

नगर निवासियोंको बालककी इसप्रकार मृत्यु का पता लगा । वे दौड़ते २ शीघ्र ही सोमशर्मोके यहां आये । बिना विचारे सबोंने बालककी मृत्युका दोष विचारे बैल के मत्थे पर ही मड़दिया । जो बैलको घास आदि खिला कर नगर निवासी उसका पालन पोषण करते थे सो भी छोड दिया और मारपीट कर उसे नगरसे बाहिर भगादिया जिससे वह बैल बड़ा खिन्न हुआ बिलकुल लट गया । तथा किसीसमय अतिशय दुःखी हो वह ऐसा विचार करने लगा ।

हाय !!! इन स्त्रियोंके चरित्र बड़े विचित्र हैं । बड़े २ देव भी जब इनका पता नहि लगा सकते तो मनुष्य उनके चरित्रका पता लगालें यह बात अति कठिन है । ये दुष्ट स्त्रिया निकृष्ट काम कर भी चट मुकर जाती है । और मनुष्यों पर ऐसा असर डाल देतीं है मानो हमने कुछ किया ही नहीं ये मायाचारिणी महापापिनी है । दूसरों द्वारा कुछ और ही कहवाती है और स्वयं कुछ औरही कहती है । ये कटाक्षपात किसी और पर फेंकती है इशारे किसी अन्यकी ओर करती है और आलिंगन किसी दूसरेसे ही करती है । तथा वस्तु का वायदातों इनका किसी दूसरेके साथ होता है और दे किसी दूसरे को बैठती है । कवियोंने जो इन्हें अबला कह कर पुकारा है सो ये नामसे ही अबला (शक्तिहीन) है काम

से अवला नहिं । जिससयम ये क्रूर काम करनेका बीडा उठा लेती है तो उसै तत्काल कर पाडती है । और अपने कटाक्ष पातोंसे बडे २ वीरोंको भी अपना दास बना लेतीं है। चाहे आतिशय उष्ण भी अग्नि शीतल होजाय शीतल भी चन्द्रमा उष्ण होजाय । पूर्व दिशामें उदित होनेवाला सूर्य भी पश्चिम दिशामें उदित हो जाय किन्तु स्त्रिया शूठ छोड कभीं भी सत्य नहिं बोल सकतीं। हाय जिससमय ये दुष्ट स्त्रिया पर पुरुषमें आसक्त हो जातीं है उससमय अपनी प्यारी माता को छोड़ देती है। प्राण प्यारे पुत्रकी भी परवा नहिं करतीं परम स्नेही कुटुम्बीजनोंका भी लिहाज नहिं करतीं। विशेष कहां तक कहा जाय अपनी प्यारी जन्मभूमिको छोड परदेशमें भी रहना स्वीकार कर लेती है। ये नीच स्त्रिया अपने उत्तम कुलको भी कलकित वना देनी है । पति आदिसे नाराज हो मरने का भी साहस कर लेती है । और दूसरोंके प्राण लेनेमें भी जरा नहीं चूकतीं । अहा !!! जिन योगीश्वरोंने स्त्रियों की वास्तविक दशा विचार कर उनसे सर्वथाकेलिए सवन्ध छोड दिया है स्त्रियोंकी बात भी जिनकेलिए हलाहल विष है वे योगीश्वर धन्य है और वास्तविक आत्मस्वरूपके जानकार है। हाय !!! ये स्त्रियां छल कपट दगाबाजी की खानि है। समस्त दोषोंकी भडार है । असत्य बोलनेमें बडी पंडिता है । विश्वासके अयोग्य है। चौतर्फा इनके शरीर में

कामदेव व्याप्त रहता है । मोक्षद्वारके रोकनेमें ये अर्गल (वेंड़ा) है । स्वर्ग मार्गको भी रोकने वाली है । नरकादि गतियोंमें लेजाने वाली है दुष्कर्म करने में वड़ी साहसी है । इत्यादि अपने मनमें संकल्प निकल्प करता करता वह भद्र नामका बैल वहीं रहने लगा ।

उसीनगरीमें कोई **जिनदत्त** नामका सेठि निवास करता था । जिनदत्त समस्त वणिकोंका सरदार और धर्मात्मा थी । जिनदत्त की प्रियभार्या सेठानी **जिनमती** थी जिनमती परम धर्मात्मा, थी शीलादि उत्तमोत्तम गुणोंकी भंडार थी । अति रूपवती थी । पति भक्ता एवं दान आदि उत्तमोत्तम कार्योंमें अपना चित्त लगाने वाली थी ।

सेठि जिनदत्त और जिनमती आनन्दसे रहते थे। अचानक ही जिनमतीके अशुभ कर्मका उदय प्रकट हो गया । उस विचारीको लोग कहने लगे कि यह व्यभिचा-रिणी है । निरन्तर परपुरुषोंके यहां गमन करती है इसलिए वह मनमें अतिशय दु खित होने लगी । उसे अति दु.खी देख कई एक मनुष्य उसके यहां आये और कहने लगे जिनमती ! यदि तुझे इस बातका विश्वास है कि मै व्यभि-चारिणी नहीं हू तो तू एक काम कर तपा हुआ पिंड अपने हाथ पर रख । यदि तू व्यभिचारिणी होगी तो तू जल जायगी नही तो नहीं । नगर निवासियोंकी बात जिनमतीने मानली

किसीदिन वह सर्वजनोंके सामने अपने हाथमें पिंड लेना ही चाहती थी कि अचानक ही वह भद्र नामका बैल भी वहां आगया। वह सब समाचार पाहिलेसे ही सुन चुका था इसलिए आते ही उसने तप्त लोहेका पिंड अपने दांतों में दबा लिया। बहुत काल मुखमें रखनेपर वह जरा भी न जला। एव सबोंको प्रकटरीतिसे यह बात जतलादी कि ब्राह्मण सोमशर्माका बालक मैंने नहिं मारा। मै सर्वथा निर्दोष हूं।

भद्रककी यह चेष्टा देख नगर निवासी मनुष्योंके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। कुछ दिन पहिले जो वे विना विचारे भद्रकको दोषी मानचुके थे वही भद्रक अब उनकी दृष्टि में निर्दोष बनगया। अब वे भद्रककी बार बार तारीफ करने लगे। उनके मुखसे उससमय जयकार शब्द निकले। तथा जिसप्रकार भद्रकने उसप्रकारका कामकर अपनी निर्दोष-ताका परिचय दिया था जिनमतीने भी उसीप्रकार दिया वेधडक उसने तप्तपिंडको अपनी हथेली पर रखलिया जब उसका हाथ न जला तो उसने भी यह प्रकटरीतिसे जतला दिया कि मै व्यभिचारणी नहीं हू। मैने आजतक परपुरुषका मुह नहीं देखा है। मै अपने पतिकी सेवामे ही सदा उद्यत रहती हू और उसीको देव समझती हू। जिससे सब लोग उसकी मुक्तकठसे तारीफ करने लगे और उसकी आत्माको भी

शांति मिली। इसलिये जिनदत्त! तुम्हीं बताओ भद्रक और जिनमती पर जो दोषारोपण कियागया था वह सत्य था या असत्य? । जिनदत्तने कहा—

कृपानाथ! वह दोषारोपण सर्वथा अनुचित था। विना विचारे किसीको भी दोष नहिं देना चाहिये जो लोग ऐसा काम करते हैं वे नराधम समझे जाते हैं। दीनवंधो! मैं आपकी कथा सुन चुका अव आप कृपया मेरी भी कथा सुनें—

इसीलोकमें एक **पद्मरथ** नामका नगर है। किसीसमय पद्मरथनगरमें राजा **वसुपाल** राज्य करता था। कदाचित् राजा वसुपालको अयोध्याके राजा **जितशत्रुसे** कुछ काम पड़गया इसलिये उसने शीघ्र ही एक चतुर ब्राह्मण उसके समीप भेज दिया। ब्राह्मण राजाकी आज्ञानुसार चला। चलते २ वह किसी अटवीमें जा निकला। वह अटवी बड़ी भयावह थी। अनेक क्रूर जीवोंसे व्याप्त थी। कहींपर वहां पानी भी नजर नहिं आता था। चलते २ यहभी थक चुका था। प्याससे भी अधिक व्याकुल होचुका था इसलिये प्याससे व्याकुल हो वह उसी अटवीमें किसी वृक्षके नीचे पड़गया और मूर्छितसा होगया। भाग्यवश वहां एक वंदर आया। ब्राह्मण की वैसी चेष्टा देख उसै दया आगई। वह यह समझ कि प्याससे इसकी ऐसी दशा हो रही है, शीघ्र ही उसै एक विपुल जल से भरा तालाब दिखाया और एक ओर हट गया।

ज्यों हीं ब्राह्मणने विपुल जलसे भरा तालाब देखा उसके आनंदका ठिकाना न रहा वह शीघ्र उसमें उतरा अपनी प्यास बुझाई और इसप्रकार विचार करने लगा—

यह अटवी विशाल अटवी है। शायद आगे इसमें पानी मिले या न मिले इसलिये यहींसे पानी ले चलना ठीक है। मेरे पास कोई पात्र है नहीं इसलिये इस वंदरको मार कर इसकी चमडीका पात्र बनाना चाहिये। वस फिर क्या था? विचारके साथ ही उस दुष्टने शीघ्र ही उस परोपकारी वंदरको मार दिया और उसकी चमड़ीमें पानी भरकर अयोध्याकी ओर चल दिया। कृपानाथ! अब आप ही कहै क्या उस दुष्ट ब्राह्मणका परोपकारी उसबदरके साथ वैसा बर्ताव उचित था? मैंने कहा—

सर्वथा अनुचित। वास्तवमें वह ब्राह्मण बड़ा कृतघ्नी था। उसे कदापि उस परमोपकारी वदरके साथ वैसा वर्ताव करना उचित न था! जिनदत्त। तुम निश्चय समझो जो पापी मनुष्य किये उपकारको भूल जाते है ससारमें उन्हें अनेक दुःख भोगने पडते है, कोई मनुष्य उन्हें अच्छा नहि कहता। अब मैं भी तुम्हे एक कथा सुनाता हूं तुम ध्यान पूर्वक सुनो—

इसी ज्बूद्वीपमें एक **कौशांबी** नामकी विशाल नगरी है। कौशावी नगरीमें कोई मनुष्य दरिद्र न था सब धनी सुखी एव अनेकप्रकारके भोग भोगनेवाले थे। उसी नगरीमें

किसीसमय एक **सोमशर्मा** नामका ब्राह्मण निवास करता था। उसकी स्त्रीका नाम **कपिला** था। कपिला अतिशय सुंदरी थी मृगनयनी थी काममंजरी एवं रतिके समान मनोहरा थी। कदाचित् सोमशर्माको किसी कार्यवश किसी वनमें जाना पड़ा। वहां एक अतिशय मनोहर नोलेका बच्चा उसे दीख पड़ा। और तत्काल उसे पकड़ अपने घर ले आया। कपिलाके कोई संतान न थी। विना संतानके उसका दिन बड़ी कठिनतासे कटता था इसलिये जबसे उसके घरमें वह बच्चा आगया पुत्रके समान वह उसका पालन करनेलगी। और उसबच्चेसे उसका दिनभी सुखसे व्यतीत होने लगा।

दुर्भाग्यके अंत हो जाने पर कपिलाके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रकी उत्पत्तिसे कपिलाके आनंदका ठिकाना न रहा। सोमशर्मा और कपिला अब अपनेको परमसुखी मानने लगे। और आनंदसे रहने लगे।

कपिलाका पति सोमशर्मा किसान था इसलिये किसीसमय कपिलाको धान काटनेकेलिये खेतपर जाना पड़ा। वह बच्चेको पालनेमें सुलाकर और नौलेको उसे सुपुर्दकर शीघ्र ही खेतको चली गई।

उधर कपिलाकातो खेतपर जाना हुआ और इधर एक काला सर्प बालकके पालनेके पास आया। ज्योंही नोलाकी दृष्टि काले सर्पपर पड़ी वह एकदम सर्पपर टूटपड़ा और कुछ समयतक चू.

चू. फू. फू. शब्द करते हुवे घोर युद्ध करने लगा । अतमें अपने पराक्रमसे नोलाने विजय पाली और उस सर्पराजको तत्काल यमलोकका रास्ता बता दिया तथा वह बालकके पास बैठिगया ।

कपिला अपना कार्य समाप्त कर घर आई । कपिलाके पैर की आहट सुन नोला शीघ्र ही कपिलाके पास आया और कपिलाके पैरोंमें गिर उसकी मिन्नत करनेलगा । नोलेका सर्वांग उससमय लोहू लुहान था इसलिये ज्योंही कपिलाने उसै देखा 'इसने अवश्य मेरे पुत्रको मार कर खाया है यह समझ' मारे क्रोधके उसका शरीर भवक उठा और विना विचारे उस दीन नोलेको मारे मूसलोंके देखते २ यमपुर पहुचा दिया । किंतु ज्योहीं वह बालकके पास आई । और ज्योंही उसने बालकको सकुशल देखा उसके शोकका ठिकाना न रहा । नोलेकी मृत्यु से उसकी आखोंसे आसुओंकी झड़ी लग गई और माथा धुनने लगी । जिनदत्त ! कहो उस ब्राह्मणीका वह अविचारित कार्य उत्तम था या नहिं ? मेरे ऐसे वचन सुन जिनदत्तने कहा—

कृपानाथ ! ब्राह्मणीका वह काम सर्वथा अयोग्य था । विना विचारे जो मदान्ध हो काम करपाड़ते है उन्हें पीछे अधिक पछिताना पड़ता है । मै भी पुनः आपको कथा सुनाता हूं आप ध्यानपूर्वक सुनिये

इसी द्वीपमें एक विशाल **बनारस** नामकी उत्तम नगरी

है। किसीसमय बनारसमें एक **सोमशर्मा** नामका ब्राह्मण निवास करता था सोमशर्माकी स्त्रीका नाम **सोमा** था सोमा अतिशय व्यभिचारिणी थी। पतिसे छिपाकर वह अनेक दुष्कर्म किया करती थी। किंतु अपने मिष्टवचनोंसे पतिको अपने दुष्कर्मोंका पता नहि लगने देती थी। और बनावटी सेवा आदि कार्योंसे उसै सदा प्रसन्न करती रहती थी

कदाचित सोमशर्मातो किसी कार्यवश बाहिर चलागया और सोमा अपने यार गोपालोंको बुलाकर उनके साथ सुख पूर्वक व्यभिचार करनेलगी। किन्तु कार्य समाप्त कर ज्योंही सोमशर्मा घर आया और ज्योंही उसने सोमाको गोपालोंके साथ व्यभिचार करते देखा उसै परम दुःख हुआ। वह एकदम घरसे विरक्त होगया। एवं बांसकी लाठीमें कुछ सोना छिपाकर तीर्थ यात्राकेलिये निकल पड़ा।

मार्गमें वह कुछ ही दूर पहुंचा था अचानक ही उसकी एक मायाचारी बालकसे भेंट होगई। बालकने विनयपूर्वक सोमशर्माको प्रणाम किया। उसका शिष्य बनगया एवं यह विचार कि इस सोमशर्माके पास धन है वह सोमशर्माके साथ चलभी दिया।

मार्गमें चलते २ उन दोनोंको रात होगई इसलिये वे दोनों किसी कुम्हारके घर ठहरगये। वहां रात बिताकर सबेरे चलभी दिये। चलते समय बालक **महादेवके** शिरसे कुम्हार

का छप्पर लगगया और एक तृण उसके शिरसे चिपटा चला गया। वे कुछ ही दूरगये थे कि बालकने अपना शिर टटोला उसे एक तृण दीख पड़ा। तथा तृण देख मायाचारी वह बालक ब्राह्मणसे इसप्रकार कहने लगा।

गुरो! चलते समय कुम्हारके छप्परका यह तृण मेरे शिरसे लिपटा चला आया है। मै इसे वहांपर पहुचाना चाहता हूं। उत्तम किंतु कुलीन मनुष्योंको परद्रव्य ग्रहण करना महा पाप है। मै विना दिये पर पदार्थजन्य पापको सहन नहिं कर सकता कृपाकर आप मुझे आज्ञादें मै शीघ्र लोटकर आता हू तथा ऐसा कहता २ चल भी दिया। ब्राह्मणने जब देखा वटुक चला गया तो वहभी आगे किसी नगरमें जाकर ठहर गया उसने किसी ब्राह्मणके घर भोजन किया एव उस ब्राह्मणको अपने शिष्यकेलिये भोजन रख छोडनेकी भी आज्ञा देदी।

कुछसमय पश्चात् ढूडता ढ़ाडता वह बालकभी सोमशर्मा के पास आपहुचा। आते ही उसने विनयसे सोमशर्माको नमस्कार किया और सोमशर्माकी आज्ञानुसार वह भोजनको भी चलदिया। वह वटुक चित्तका अति कटुक था इसलिये ज्योंही वह थोड़ी दूर पहुचा तत्काल उसने ब्राह्मणका धन लेनेके लिये वहाना बनाया और पीछे लोटकर इसप्रकार विनय पूर्वक निवेदन करनेलगा।

प्रभो! मार्गमें कुत्ते अधिक हैं। मुझे देखते ही वे भोंकते हैं।

शायद वे मुझे काट खांय इसलिये मै नहिं जाना चाहता फिर कभी देखा जायगा। किंतु वह ब्राह्मण परमदयालु था उसे उस पर दया आगई इसलिये उसने अपने प्राणोंसे भी अधिक प्यारी और जिसमें सोना रख छोड़ाथा वह लकड़ी शीघ्र उसे देदी और जानेके लिये प्रेरणाभी की।

बस फिरक्या था! बालककी निगाह तो उसलकड़ी पर ही थी। संग भी वह उसी लड़कीकेलिये लगाथा इसलिए ज्योंही उसके हाथ लकडी आई वह हमेशहकेलिये ब्राह्मणसे विदा होगया फिर वृद्ध ब्राह्मणकी ओर उसने झांककरभी न देखा। कृपानाथ! आप ही कहै वृद्ध और परमोपकारी उस ब्राह्मणके साथ क्या उस बालकका वह वर्ताव योग्य था? मैने कहा--

जिनदत्त! सर्वथा अयोग्य। उसबालकको कदापि सोम शर्मा ब्राह्मणके साथ वैसा वर्ताव नहिं करना चाहिये था अस्तु अब मै भी तुम्है एक अतिशय उत्तम कथा सुनाता हूं तुम ध्यान पूर्वक सुनो--

धन धान्य उत्तमोत्तम पदार्थोंसे व्याप्त इसी पृथ्वीतलमें एक **कौशांबी** नगरी है। किसीसमय उसनगरीका स्वामी राजा **गंधर्वानीक** था। राजा गंधर्वानीकके मणि आदि रत्नोंका साफ करनेवाला कोई **गारदेव** नामका मनुष्यभी उसीनगरीमें निवास करता था। कदाचित वह राजमंदिरसे एक पद्मराग मणि साफ करनेकेलिये लाया और उसे आंगनमें रख वह साफ ही करना

चाहता था उसीसमय कोई **ज्ञानसागर** नामके मुनिराज उसके यहां आहारार्थ आगये। मुनिराजको देख गारदेवने अपना काम छोड़ दिया। मुनिराजको विनयपूर्वक नमस्कार किया। प्रासुकजलसे उनका चरणप्रक्षालन किया। एव किसी उत्तम काष्ठासन पर बैठनेकी प्रार्थना की। प्रार्थनानुसार इधर मुनिराज तो काष्ठासन पर वैठे ,और उधर एक नीलकंठ आया एवं आख वचाकर उस पद्मरागमणिको लेकर तत्काल उड़ गया तथा मुनिराज आहार ले वनकी ओर चलदिये।

मुनिराजको आहार देकर जव गारदेवको फुरसति मिली तो उसै मणिके साफ करनेकी याद आई। वह चट आंगनमें आया। उसै वहां मणि मिली नहिं इसलिये परदुःखी हो वह इसप्रकार विचारने लगा—

मेरे घरमें सिवाय मुनिराजके दूसरा कोई नहिं आया यदि मणि यहां नहीं है तो गई कहा! मुनिराजने ही मेरी मणि ली होगी और लेनेवाला कोई नहिं। तथा कुछसमय ऐसा सकल्पविकल्पकर वह सीधा वनको चलदिया और मुनिराजके पास आकर माणिका तकादा करताहुआ अनेक दुर्वचन कहने लगा।

जब मुनिराजने उसके ऐसे कटुक वचन सुने तो अपने ऊपर उपसर्ग समझ वे ध्यानारूढ़ होगये गारदेवके प्रश्नों का उन्होंने जवाब तक न दिया। किन्तु मुनिराजसे जवाब न पाकर मारे क्रोधके उसका शरीर भवक उठा उस दुष्टको

उससमय और कुछ न सूझी मुनिराजको ही चोर समझ वह मुक्के घूसे डंडोंसे मारने लगा और कष्टप्रद अनेक कुवचन भी कहनेलगा। इसप्रकार मार धाड़ करने पर भी जव उसने मुनि-राजसे कुछ भी जवाव न पाया तो वह हताश हो अपने नगरको चल दिया।

वह कुछ ही दूर गया कि उसे फिर मणिकी याद आई। वह फिर मदांध होगया इसलिए उसने वहींसे फिर एक डंडा मुनिराज पर फेंका। दैवयोगसे वह नलिकंठ भी उसी वनमें मुनिराजके समीप किसी वृक्षपर वैठा था। इसलिये जिससमय वह डंडा मुनिकी ओर आया तो उसका स्पर्श नलिकंठसे भी होगया। डंडेके लगते ही नील कंठ भगा और जल्दीमें पद्म-रागमणि उसके मुंहसे गिरगई।

पद्मरागमणिको इसप्रकार गिरी देख गारदेव अचंभेमें पड़गया। अव वह अपने अविचारित काम पर वार वार घृणा करने लगा। मणिको उठा वह नगर चला गया। साफ कर उसे राजमंदिरमे पहुचादी और संसारसे सर्वथा उदासीन हो उसी वनमें आया। मुनिराजके चरण कमलोंको भक्ति पूर्वक नमस्कारकर अपने पापोंकी क्षमा मागी। एवं उन्हींके चरणोंमें दीक्षा धारणकर दुर्धर तप करने लगा। सेठि जिनदत्त ! कहो। क्या उस गारदेवका विना विचारे किया वह काम योग्य था! निश्चय समझो विना विचारे जो काम करपाड़ते है उन्है निस्सीम दुःख भोगने

पडते है । मेरी यह कथा सुन जिनदत्तने कहा ।

कृपासिंधो ! गारदेवका वह काम सर्वथा निंदनीय था । अविचारित कामकरनेवालोंकी दशा ऐसी ही हुआ करती है नाथ ! मै आपकी कथा सुन चुका कृपाकर आपभी मेरी कथा सुनें ।

इसी पृथ्वीतलमें अनेक उत्तमोत्तम घरोंसे शोभित, देवतुल्य मनुष्योंसे व्याप्त, एक **पलाशकूट** नामका सर्वोत्तम नगर है। किसीसमय पलाशकूट नगरमें कोई **रौद्रदत्तनामका** ब्राह्मण निवास करता था । कदाचित् किसीकार्यवश रौद्रदत्तको एक विशालवनमें जाना पड़ा । यह वनमें पहुचाई था कि एक गैंड़ा इसकी ओर टूटा । उससमय रौद्रदत्तको और तो कोई उपाय न सूझा समीपमें एक विशालवृक्ष खडा था उसीपर वह चढ़ गया । जिससमय गैंड़ा उसवृक्षके पास आया तो वह शिकारका मिलना कठिन समझ वहांसे चलदिया । और अपने विघ्नको शात देख रौद्रदत्तभी नीचे उतर आया । वह वृक्ष अति मनोहर था। उसकी हरएक लकड़ी बडे पायेदार थी। इस-लिये उसे देख रौद्रदत्तके मुखमें पानी आगया । वह यह निश्चयकर कि इसकी लकड़ी अत्युत्तम है इसकी स्तभ आदि कोई चीज वनवानी चाहिये, शीघ्र ही घर आया । हाथमें फरसा ले वह फिर वनको चला गया और बातकी बातमें वह वृक्ष काट डाला । कृपानाथ! आप ही कहै क्या आपत्तिकालमें रक्षाकरने-

वाले उस वृक्षका काटना रौद्रदत्तकेलिये योग्य था ! मैंने कहा-

जिनदत्त ! सर्वथा अयोग्य था। रौद्रदत्तको कदापि वह वृक्ष काटना नहि चहिये था जो मनुष्य परकृत उपकारको नहिं मानते वे नितरां पापी गिने जाते है, कृतघ्नी मनुष्योंको संसारमें अनेक वेदना भोगनी पड़ती है। मैं तुम्हारी कथा सुन चुका अब मै भी तुम्हे एक अत्युत्तम कथा सुनाता हूं तुम ध्यान पूर्वकसुनो

इसी पृथ्वीतलमें उत्तमोत्तम तोरण पताका आदिसे शोभित समस्त नगरियेंामें उत्तम कोई दारावती नामकी नगरी है। किसीसमय दारावतीके पालक महाराज श्रीकृष्ण थे। महाराज श्रीकृष्ण परम न्यायी थे। न्याय राज्यसे चारो ओर उनकी कीर्ति फैली हुई थी और **सत्यभामा रुक्मिणी** आदि कामिनियोंके साथ भोग भोगते वे अनंदसे रहते थे।

कदाचित् राजसिंहासनपर वैठि वे अनंदमें मग्न थे इतने ही में एक माली आया उसने विनय पूर्वक महाराजको नमस्कार किया, और उत्तमोत्तम फल भैट कर वह इसप्रकार निवेदन करने लगा।

प्रभो ? प्रजापालक ? एक परम तपस्वी वनमें आकर विराजे हैं। मालीके मुखसे मुनिराजका आगमन सुन महाराज श्रीकृष्णको परमानंद हुवा। वे जिस कामको उससमय कर रहे थे उसै शीघ्र ही छोड़ दिया। उचित पारितोषिक दे मालीको

प्रसन्न किया। अनेक नगरनिवासियोंके साथ चतुरंग सेनासे मंडित महाराजने वनकी ओर प्रस्थान करदिया। वनमें आकर मुनिराजको देख भक्ति पूर्वक नमस्कार किया। और कुछ उपदेश श्रवणकी इच्छासे मुनिराजके पास भूमिमें बैठि गये। उससमय मुनिराजका शरीर व्याधिग्रस्त था इसलिये उस व्याधिके दूरकिरणार्थ राजाने यही प्रश्न किया।

प्रभो! इसरोगकी शांतिका उपाय क्या है। किस औषधिके सेवन करनेसे यह रोग जा सकताहू कृपया मुझे शीघ्र बतावें राजा श्रीकृष्णके ऐसे वचन सुन मुनिराजने कहा—

नरनाथ! यदि रत्नकापिष्ट (?) नामका प्रयोग कियाजाय तो यह रोग शात हो सकता है और इसरोगकी शांतिका कोई उपाय नहिं। मुनिराजके मुखसे औषधि सुन राजा श्रीकृष्णको परम सतोष हुआ। मुनिराजको विनयपूर्वक नमस्कार कर वे द्वारावतीमें आगये और मुनिराजके रोग दूरकरनेकेलिये उन्होंने सर्वत्र आहारकी मनाई करदी।

दूसरे दिन वे ही ज्ञानसागर मुनि आहारार्थ नगरमें आये। विधिके अनुसार वे इधर उधर नगरमें धूमें किंतु राजाकी अज्ञानुसार उन्हें किसीने आहार न दिया। अतमें वे राजमदिरमें अहारार्थ गये। ज्योंही राजमदिरमें मुनिराजने प्रवेश किया रानी रुक्मिणीने उनका विधिपूर्वक अहानन किया पड़िगाहन आदि कार्य कर भक्ति पूर्वक आहारभी दिया। रत्नकापिष्ट-

चूर्ण एवं अन्यान्य औषधियोंके ग्रास भी दिये । एवं आहार लेचुकनेपर मुनिराज वनको चलेगये ।

इसप्रकार औषधिके सेवन करनेसे मुनिराजका रोग सर्वथा नष्ट होगया । वे शीघ्र ही नीरोग होगये ।

किसीसमय किसी वैद्यके साथ महाराज श्रीकृष्ण वनमें गये । जहां पर परम पवित्र मुनिराज विराजमान थे उसी स्थान परपहुंच उन्हे भक्तिपूर्वक नमस्कार किया और मुनिराजके सामने ही वैद्यने यह कहा-प्रजानाथ ! मुनिराजका रोग दूर होगया है । वैद्यके मुखसे जव मुनिराजने ये वचन सुने तो वे इसप्रकार उपदेश देनेलगे ।

नरनाथ ! संसारमें जीवोंको जो सुखदुःख कल्याण और अकल्याण भोगने पड़ते है उनके भोगनेमें कारण पूर्वोपार्जित शुभाशुभ कर्म है । जिससमय ये शुभ अशुभ कर्म सर्वथा नष्ट होजाते हैं उससमय किसीप्रकारका सुखदुःख भोगना नहिं पड़ता । कर्मोंके सर्वथा नष्ट होजानेपर परमोत्तमसुख मोक्ष मिलता है । राजन् शुभ अशुभकर्मरूपी अंतरंग व्याधिके दूरकरनेमें अतिशय पराक्रमी चक्रवर्ती भी समर्थ नहिं हो सकते । ये औषधि आदिक व्याधिकी निवृत्तिमें बाह्य कारण है । उनसे अतरंगरोगकी निवृत्ति कदापि नहिं हो सकती ।

मुनिराजतो वीतराग भावसे यह उपदेश देरहे थे उन्हें किसीसे उससमय द्वेष न था किंतु वैद्यराजको उनका वह

उपदेश हलाहल विष सरीखा जान पड़ा। वह अपने मनमें ऐसा विचार करनेलगा यह मुनि बड़ा कृतघ्नी है। रोगकी निवृत्ति का उपाय इसने शुभाशुभकर्मकी निवृत्ति ही बतलाई है मेरा नाम तकभी नहि लिया। इसमुनिके वचनोंसे यह साफ मालूम होता है हमने कुछ नहि किया। जो कुछ किया है कर्मकी निवृत्तिने ही कियाहै तथा इसप्रकार रौद्र विचार करते २ वैद्यने उसीसमय आयुबंध बांधलिया और आयुके अन्तमें मर कर वह वानरयोनिमें उत्पन्न होगया।

कदाचित् विहार करते २ मुनिराज, जिसवनमें यह वानर रहता था उसीवनमें जापहुचे और पर्यंक आसन मांड़कर, नासाग्रदृष्टि होकर, ध्यानैकतान होगये। किसीसमय मुनिराज पर बंदरकी दृष्टि पडी। मुनिराजको देखते ही उसे जातिस्मरण होगया। जातिस्मरणके बलसे उसने अपने पूर्वभवका सब समाचार जानलिया। राजा श्रीकृष्णके सामने मुनिराजके उप-देशसे जो उसने अपना पराभव समझा था वह पराभव भी उसे उससमय स्मरण हो आया। और मारे क्रोधके उसपापीने पवित्र किंतु ध्यानरसमें लीन मुनि गुणसागरके ऊपर एक विशाल काष्ठ पटक दिया। उन्हें अनेकप्रकार पीड़ाभी देने लगा। किंतु मुनिराज जराभी ध्यानसे विचलित न हुए।

चिरकालतक अनेक प्रयत्न करनेपरभी जब बंदरने देखा कि मुनिराज ममतारहित, समता रसमेंलीन, निर्मलज्ञानकेधारक,

हलन चलन क्रियासे रहित, परमपद मोक्षपदके अभिलाषी, परम किंतु उत्कृष्ट धर्मध्यान और शुक्लध्यानके आचारणकरने वाले, ध्यानबलसे परम सिद्धि प्राप्तिके इच्छुक, पाषाणमें उकलीहुई प्रतिमाके समान निश्चल, और हाथ पैरकी समस्त चेष्टाओंसे रहित है तो उसैभी एकदम वैराग्य होगया। कुछ समय पहले जो उसके परिणामोंमें रौद्रता थी वही मुनिराजकी शांतमुद्राके सामने शांतिरूपमें परिणत होगई। वह अपने दुष्कर्मकेलिये अधिक निंदा करनेलगा। मुनिराजपर जो काठ डाला था वह भी उसने उठाके एक ओर रख दिया। वह पूर्वभवमें वैद्य था इसलिये मुनिराज पर काष्ठपटकनेसे जो उनके शरीरमें घाव हो गये थे उत्तमोत्तम औषधियोंसे उन्हेंभी उसने अच्छा करादिया। अब वह मुनिराजकी शुद्धहृदयसे भक्तिकरनेलगा और यह प्रार्थना करने लगा।

प्रभो! अकारणदीनबंधो! मेरे इनपापोंका छुटकारा कैसे होगा? मै अब कैसे इनपापोंसे बचूंगा? कृपाकर मुझ कोई ऐसा उपाय बतावें जिससे मेरा कल्याण हो। मुनिराज परम दयालु थे उन्होंने वानरको पच अणुव्रतका उपदेश दिया और भी अनेक उपदेश दिये। वानरने भी मुनिराजकी अज्ञानुसार पंच अणुव्रत पालने स्वीकार करलिये अहंकार क्रोध आदि जो दुर्वासनां थीं उन्है भी उसने छोड़ादिया। और हरसमय अपने अविचारित कामके लिये पश्चात्ताप करने लगा। सेठि जिन-

दत्त ! तुम निश्चय समझो जो नीच पुरुष विना विचारे क्रोध मानमाया आदि कर बैठते है उन्हें पीछे अधिक पछिताना पडता है वे तिर्यंच नरक आदि गतिओंमें जाते हैं। वहां उन्है अनेक दुस्सह्य वेदनायें सहनी पडती है। अविचारित काम करनेवाले इसलोकमें भी राजा आदिसे अनेक दड भोगते है उनकी सव जगह निंदा फैल जाती है। परलोकमें भी उन्है सुख नहि मिलता। अबुद्धिपूर्वक काम करनेवालोकी सब जगह हसी होती है। देखो अनेक शास्त्रोंका भलेप्रकार ज्ञाता, राजा श्रीकृष्णके सन्मानका भाजन वह वैद्य तो कहा ? और कहां अशुभ कर्मके उदयसे उसै वंदरयोनिकी प्राप्ति ?, यह सब फल अज्ञान पूर्वक कार्य करनेका है। जिनदत्त ? यह कथा तुम ध्यान पूर्वक सुन चुके हो तुम्हीं कहो क्या उस बदरका वह कार्य उत्तम था ? जिनदत्तने कहा—

मुनिनाथ ! वह बंदरका अविचारित काम सर्वथा अयोग्य था विना विचारे अभिमानादि वशीभूत हो नीचकामकरनेवाले मनुष्योंको ऐसे ही फल मिलते है। इसके अनतर हे मगधदेशके स्वामी राजा श्रेणिक ! सेठि जिनदत्त मेरी कथाके उत्तरमें दूसरी कथा कहनाही चाहता था कि उसके पास उसका पुत्र कुवेरदत्त भी वैठा था और सववातोंको बरावर सुनरहा था इसलिये उसने विवादकी शांत्यर्थ शीघ्रही वह रत्नभरित-घड़ा दूसरीजगहसे निकालकर मेरे देखते २ अपने पिताके

सामने रखदिया। और विनयपूर्वक इसप्रकार प्रार्थना करने लगा।

प्रभो! समस्त जगतकेतारक स्वामिन्! मेरे पिताने बड़ा अनर्थ करपाड़ा। इस दुष्टधनके फंदेमें फंसकर आपको भी चोर बना दिया। हाय इसधनकेलिये सहस्रवार धिक्कार है। दीनवंधो! यह वात सर्वथा सत्य जान पड़ती है संसारमें जो घोरसे घोर पाप होते हैं वे लोभसे ही होते हैं। संसारमें यदि जीवोंका परम अहित करनेवाला है तो यह लोभ ही है। प्रभो! किसी रीतिसे अव मेरा उद्धार कीजिये। मुक्तिमें असाधारण कारण मुझे जैनेश्वरी दीक्षा दीजिये। अव मै क्षणभरभी भोग भोगना नहिं चाहता।

जिनदत्तभी रत्नोंके घड़ाको और पुत्रको संसार से विरक्त देख अतिदुःखित हुआ अपने अविचारितकामपर उसे वहुत लज्जा आई संसार को असार जान उसने भी धनसे संवंध छोड़दिया। अपनी वार वार निंदा करनेवाले समस्त परिग्रह से विमुख उनदोनों पितापुत्रने मुझसे जैनेश्वरी दीक्षा धारण करली। एवं अतिशयनिर्मलचित्तके धारक, भले प्रकार उत्त-मोत्तमशास्त्रोंके पाठी, परिग्रहसे सर्वथा निस्पृह, मनोगुप्ति वचनगुप्ति कायगुप्तिके धारक वे दोनों दुर्धर तप करने लगे।

इसप्रकार हे मगधदेशके स्वामी श्रेणिक! अनेकदेशोंमें विहार करते २ हम तीनों मुनि राजगृहमें भी आये उक्त दो मुनियोंके समान मै त्रिगुप्ति पालक न था मेरे अभीतक

कायगुप्ति नहिं हुई इसलिये मैने राजमंदिरमें आहार न लिया आहार के न लेनेका और कोई कारण नहीं। इसरीतिसे तीनों मुनिराजोंके मुखसे भिन्न २ कथाके श्रवणसे अतिशय सतुष्ट चित्त मोक्षसंबंधी कथाके परमप्रेमी महाराज श्रेणिक मुनिराजको नमस्कार कर राजमंदिर में गये। राजमंदिरमें जाकर सम्यग्दर्शनपूर्वक जैनधर्मधारण कर मुनिराजोंके उत्तमोत्तमगुणोंको निरन्तर स्मरणकरते हुये रानी चेलना और चतुरंगसेनाके साथ आनन्दपूर्वक राजमंदिरमें रहने लगे।

इसप्रकार श्रीपद्मनाभभगवान्‌के पूर्वभवके जीव महाराज
श्रेणिकके चरित्रमें कायगुप्ति कथाका वर्णन करने
वाला ग्यारहवां सर्ग समाप्त हुवा।

बारहवां सर्ग

जिस परमोत्तमधर्मकी कृपा से मगधदेश के स्वामी महाराज श्रेणिक को अनुपमसुख मिला। पापरूपी अंधकारको सर्वथा नाश करनेवाले उस परमधर्मके लिये नमस्कार है।

महाराज श्रेणिक को जैनधर्म में जो संदेह थे सो सब हट गयेथे इसलिये भलेप्रकार जैनधर्मके पालक राज्यसंबंधी अनेक भोगभोगनेवाले शुभमार्गपर आरूढ़ राजा श्रेणिक और रानी चेलना सानंद राजगृहनगर में रहने लगे। कभी वे दोनो दंपती जिनेंद्रभगवानकी पूजा करनेलगे कभी मुनियों के उत्तमोत्तम गुणोंका स्मरण करने लगे। कभी उन्होंने त्रेसठि महापुरुषोंके पवित्रचरित्र से पूर्ण प्रथमानुयोगशास्त्रका स्वाध्याय किया। कभी लोककी लंबाई चोड़ाई आदि बतलानेवाले करणानुयोगशास्त्रको वे पढनेलगे। कभी कभी अहिंसादि श्रावक और मुनियोंके चारित्रको बतलानेवाले चरणानुयोग शास्त्रका उन्होंने श्रवणकिया और कभी गुण द्रव्य और पर्यायोंका वास्तविक स्वरूप बतलानेवाले स्यादस्ति स्यान्नास्ति इत्यादि सप्तभंगनिरूपक द्रव्यानुयोगशास्त्रों को विचारने लगे। इसप्रकार अनेकशास्त्रोंके स्वाध्यायमें प्रवीण धर्मसंपदाके धारक समस्तविपत्तियोंसे रहित रति और कामदेवतुल्य भोगभोगनेवाले बड़े २ ऋद्धिधारक मनुष्योंसे पूजित रतिजन्यसुखके भी भलेप्रकार आस्वादक वे दोनों दंपती

इद्र इद्राणीके समान सुख भोगने लगे और भोगोंमें वे इतने लीन होगये कि उन्हें जाता हुआ काल भी न जान पड़ने लगा।

बहुतकालपर्यंत भोगभोगने पर रानी चेलना गर्भवती हुई। उसके उदरमें सुषेणचर नामके देवने आकर जन्मलिया। गर्भ-भारसे रानी चेलनाका मुख फीका पड गया। स्वाभाविक् कृशभी शरीर और भी कृश होगया। वचन भी वह धीरे २ बोलने लग-गई गति भी मद होगई। और आलस्यने भी उसपर पूरा २ प्रभाव जमा लिया।

गर्भवती स्त्रियों को दोहले हुवा करते है। और दोहलों से सन्तान के अच्छे बुरे का पता लगजाता है क्योंकि यदि सतान उत्तम होगी तो उसकी माताको दोहले भी उत्तम होंगे। और सतान खराब होगी तो दोहले भी खराब होंगे। रानी चेलनाको भी दोहले होनेलगे। चेलना के गर्भमें महाराज श्रेणिकका परमवैरी अनेकप्रकार कष्ट देनेवाला पुत्र उत्पन्न होनेवाला था इसलिये रानीको जितने भर दोहले हुए सब खराबही हुए जिससे उसका शरीर दिनोदिन क्षीण होने लगा। प्राणपतिपर आगामी कष्ट आनेसे उसका सारा शरीर फीका पड़गया प्रात.कालमें तारागण जैसे विच्छाय जानपडते है रानी चेलना भी उसी प्रकार विच्छाय होगई।

किमी समय महाराज श्रेणिक की दृष्टि महाराणी चेलना पर पड़ी। उसे इसप्रकार क्षीण और विच्छाय देख उन्है अति

दुःख हुवा । रानी पास आकर वे स्नेहपरिपूर्ण वचनोंमें इस प्रकार कहने लगे ।

प्राणवल्लभे ! मेरे नेत्रों को अतिशयआनद देनेवाली प्रिये ! तुम्हारे चित्तमें ऐसी कौनसी प्रबलचिंता विद्यमान है जिससे तुम्हारा शरीर रात दिन क्षीण और कांतिरहित होता चला जाता है । कृपाकर उसचिंता का कारण मुझसे कहो बराबर उसके दूर करनेके लिए प्रयत्न किया जायगा । महाराजाके ऐसे शुभ वचन सुन पहले तो लज्जावश रानी चेलनाने कुछ भी उत्तर न दिया किन्तु जब उसने महाराज का आग्रह विशेष देखा तो वह दुःखाश्रुओंको पोछती हुई इसप्रकार विनयसे कहने लगी

प्राणनाथ ! मुझसरीखी अभागिनी डांकिनी स्त्रीका संसार में जीना सर्वथा निस्सार है यह जो मैंने गर्भधारण किया है सो गर्भ नहीं आपकी अभिलाषाओंको मूलसे उखाडनेवाला अंकुर बोया है । इस दुष्टगर्भकी कृपासे मैं प्राणलेनेवाली डांकिनी पैदाहुई हूं । प्रभो ! यद्यपि मैं अपने मुखसे कुछ कहना नहिं चाहती तथापि आपके आग्रहवश कुछ कहती हूं । मुझे यह खराब दोहला हुआ है कि आपके वक्षःस्थलको विदार रक्त देखूं । इस दोहलाकी पूर्तिहोना कठिन है इसलिये मैं इसप्रकार अतिचिंतित हूं ।

रानी चेलनाके ऐसे वचन सुन महाराजश्रेणिकने उसी

समय अपने वक्षस्थलको चीरा और उससे निकले रक्तको रानी चेलनाको दिखाकर उसकी इच्छाकी पूर्ति की। नवम मासके पूर्ण होने पर रानी चेलनाके पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्रोत्पत्तिका समाचार महाराजके पासभी पहुंचा। उन्होंने दीन अनाथ याचकोंको इच्छाभर दान दिया और पुत्रको देखनेके लिए गर्भगृहमें गये। ज्योंही महाराज अपने पुत्रके पास गये। महाराजको देखतेही उसे पूर्वभवका स्मरण हो आया। महाराजको पूर्वभवका अपना प्रबल बैरी जान मारे क्रोधके उसकी मुठी बँधगई। मुख भयंकर और कुटिल होगया। नेत्र लोहूलोहान होगये। मारे क्रोधके भौंहै चढ़गई। ओठभी डसने लगा और उसकी आखेंभी इधर उधर फिरने लगी। रानीने जब उसकी यह दशा देखी तो उसे प्रबल अनिष्टका करनेवाला समझ वह डर गई। अपने हितकी इच्छासे निर्मोह हो उसने वह पुत्र शीघ्रही वनको भेज दिया। जब राजाको यह पता लगा कि रानीने भयभीत हो पुत्र वनमें भेज दिया है तो उससे न रहागया पुत्रपर मोहकर उन्होंने शीघ्रही उसे राजमंदिरमें मंगा लिया उसे पालनपोषणके लिए किसी धायके हाथ सौंप दिया। और उसका नाम **कुणिक** रख दिया। एव वह कुणिक दिनोदिन बढ़ने लगा। कुमारकुणिकके बाद रानी चेलनाके वारिषेणनामका दूसरा पुत्र हुआ। कुमारवारिषेण अनेक ज्ञानविज्ञानोंका पारगामी, मनोहर रूपका धारक, सम्यग्दर्शनसे

भूषित, और मोक्षगामी था। वारिषेणके अनंतर रानी चेलना के हल्ल हल्लके पीछे विदल विदलके पीछे जितशत्रु ये तीन पुत्र और भी उत्पन्न हुए । और ये तनोंही कुमार मातापिताको आनंदित करने वाले हुए।

• इस प्रकार इन पांच पुत्रों के बाद रानी चेलना के प्रवल भाग्योदयसे सवको आनंद देने वाला फिर गर्भ रहगया गर्भके प्रसादसे रानी चेलनाका आहार कम होगया । गतिभी धीमी होगई। शरीर पर पांडिमा छागई। आवाज मंद होगई। शरीर अति कृश होगया। पेटकी त्रिवलीभी छिपगई। होनेवाला पुत्र समस्त शत्रुओंके मुख काले करेगा इसवातको मानो जतलाते हुवे ही उसके दोनों चूचकभी काले पड़गये। एवं गर्भभारके सामने उसे भूषणभी नहि रुचने लगे।

किसी समय रानीके मनमें यह दोहला हुवा कि ग्रीष्मकाल में हाथीपर चढकर वरषते मेहमें इधर उधर घूमूं। किंतु इस इच्छा की पूर्ति उसे अतिकाठिन जानपड़ी । इसलिये उस चिंतासे उसका शरीर दिनोदिन अधिक क्षीण होनेलगा । जब महराजने रानीको अतिचिंताग्रस्त देखा तो उन्हे परमदुःख हुवा । चिंताका कारण जाननेके लिये वे रानी से इसप्रकार कहने लगे।

प्रिये! मैं तुम्हारा शरीर दिनोदिन क्षीण देखता चलाजाता हूं मुझै शरीर की क्षीणता का कारण नहीं जान पड़ता तुम

शीघ्र कहो तुम्हे कौनसी चिंता ऐसी भयकरता से सता रही है। महाराज के ऐसे वचन सुन रानीने कहा--

कृपानाथ ! मुझे यह दोहला हुआ है कि मै ग्रीषमकालमें वरसते हुए मेघमें हाथीपर चढ़कर घूमू किंतु यह इच्छा पूर्ण होनी दुःसाध्य है इसलिये मेरा शरीर दिनोंदिन क्षीण होता चला जाता है। रानी की ऐसी काठिन इच्छा सुन तो महाराज अचभे में पडगये । उस इच्छाके पूर्णकरनेका उन्है कोई उपाय न सूझा इसलिए वे मोन धारणकर निश्चेष्ट बैठ गये। कुमार अभयने महाराज की यह दशा देखी तो उन्हे बडा दु.ख हुवा वे महाराज के सामने इस प्रकार विनय से पूछने लगे । पूज्य पिता ! मै आपको प्रबलचिंतासे आतुर देखरहा हूं मुझे नहीं मालूमपड़ता अकारण आप क्यों चिंता कररहे है ? कृपया चिंताका कारण मुझेभी सुनावै । पुत्र अभयके ऐसे बचन सुनक महाराजश्रेणिकने सारी आत्मकहानी कुमारको कह सुनाई और चिंता दूरकरने का कोई उपाय न समझ वे अपना दुख भी प्रगट करने लगे।

कुमारअभय अतिबुद्धिमान थे ज्योंही उन्होंनें पिताके मुखसे चिंताका कारणसुना शीघ्रही संतोषप्रद वचनोंमें उन्होंने कहा--पूज्यवर ! यह बात क्या कठिन है मै अभी इस चिंता के हटाने का उपाय सोचता हूं आप अपने चित्तको मलिन न करें। तथा चिंता दूर करनेका उपायभी सोचने लगे।

कुछ समय सोचनेपर उन्हें यहबात मालूम हुई कि यह काम विना किसी व्यंतर की कृपासे नहीं होसक्ता इसलिये आधीरात के समय घरसे निकले। व्यंतरकी खोजमें किसी श्मशानभूमिकी ओर चलदिये। एवं वहां पहुंचकर किसी विशाल वटवृक्षके नीचे इधर उधर घूमने लगे। वह श्मशान उल्लूकों के फूत्कार शब्दोंसे व्याप्त था शृगालोंके भयंकर शब्दोंसे भयावह था। जगह २ वहां अजगर फुंकारशब्द कररहे थे मदोन्मत्त हाथियों से अनेक वृक्ष उजड़े पड़े थे। अर्द्धदाहमुर्दे और फूटे घड़ोंके समान उनके कपाल वहां जगह २ पड़े थे मांसाहारी भयंकरजीवोंके रौद्रशब्द क्षण २ में सुनाई पड़तेथे अनेक जगह वहां मुरदे जलरहे थे और चारों ओर उनका धूआं फैला हुवा था मांसलोलुपी कुत्तेभी वहां जहां तहां भयावह शब्द करते थे। चारो ओर वहां राखकी ढेरियां पड़ी थीं। इसलिये मार्ग जाननाभी कठिन पड़जाता था। एव चारोओर वहां हड्डियांभी पड़ीथीं। बहुत काल अंधकारमें इधर उधर घूमनेपर किसी वटवृक्षके नीचे कुछ दीपक जलते हुवे कुमारको दीख पड़े वह उसी वृक्षकी ओर झुक पड़ा और वृक्षके नीचे आकर उसे धीर वीर जयशील स्थिरचित्त चिरकालसे उद्विग्न एवं जिसके चारो ओर फूलरक्खे हुए हैं कोई उत्तम पुरुष दीखपड़ा। पुरुषको ऐसी दशापन्न देख कुमारने पूछा।

भाई! तू कौन है? क्या तेरा नाम है? कहांसे तू यहां

आया ? तेरा निवासस्थान कहां है ? और तू यहां आकर क्या सिद्ध करना चाहता है ? कुमारके ऐसे वचन सुन उस पुरुष ने कहा ।

राजकुमार ! मेरावृत्तांत आतिशय आश्चर्यकारी है यदि आप उसे सुनना चाहते है तो सुनें मै कहता हू ।

विजयार्धपर्वतकी उत्तरदिशा में एक **गमनाप्रिय** नामका नगर है । गमनाप्रिय नगर का स्वामी अनेक विद्याधर और मनुष्योंसे सेवित मै राजा वायुवेग था । कदाचित् मुझे विजयार्धपर्वतपर जिनेन्द्र चैत्यालयोंके वंदनार्थ आभिलाषा हुई । मै अनेक राजाओं के साथ आकाशमार्गसे अनेकनगरोंको निहारता हुवा विजयार्धपर्वतपर आगया । उसी समय राज-कुमारी सुभद्रा जो कि बालकपुरके महाराज की पुत्री थी अपनी सखियों के साथ विजयार्द्धपर्वत पर आई । राजकुमारी सुभद्रा अतिशय मनोहरा थी यौवनकी अद्वितीय शोभासे मडित थी मृगनयनी थी । उसके स्थूल किंतु मनोहरनितब उसकी विचित्र शोभा बनारहे थे एव रतिके समान अनेकविलाससंयुत होनेसे वह साक्षात् रतिही जानपड़ती थी । ज्योंही कमलनेत्रा सुभद्रा पर मेरी दृष्टी पडी मै बेहोस होगया कामबाण मुझे वेहद रीतिसे बेधने लगे । मेरा तेजस्वीभी शरीर उस समय सर्वथा शिथिल हो गया विशेष कहां तक कहूं तन्मय होकर मै उसीका ध्यान करने लगा ।

सुभद्रा विना जव मेरा एक क्षणभी वर्षसरीखा वीतने लगा तो विना किसीके पूछे मै जवरन सुभद्राको हरलाया और गमनप्रिय नगर में आकर आंनदसे उसके साथ भोग भोगनेलगा। इधर मै तो राजकुमारी सुभद्रा के साथ आनन्द से रहने लगा और उधर किसी सखीने वलाकपुरकेस्वामी सुभद्राके पितासे सारी वोखता कहसुनाई और मेरा ठिकाना भी वतला दिया सुभद्राकी इसप्रकार हरणवार्ता सुन मारे क्रोधके उसका शरीर भभक उठा और विमानपंक्तियों से समस्त गगनमंडलको आच्छादन करता हुआ शीघ्र ही गमनप्रिय नगरकी ओर चल पड़ा। विलाकपुरके स्वामीका इसप्रकार आगमन मैंने भी सुना अपनीसेना सजाकर मै शीघ्रही उसके सन्मुख आया चिरकालतक मैंने उसके साथ और अनेक विद्याओंके जानकार तीक्ष्णखड्गोंके धारी उसके योधाओंके साथ युद्ध किया। अंत में वलाकपुरके स्वामीने अपने विद्यावलसे मेरी समस्तविद्या छीनली सुभद्राको भी जवरन लेगया। विद्याके अभावसे मै विद्याधरभी भूमिगोचरीके समान रहगया। अनेकशोकोंसे आकुलित हो मै पुनः उसविद्याकेलिये यह मंत्र सिद्ध कररहा हूं वारह वर्षपर्यंत इस मंत्र के जपनेसे वह विद्या सिद्ध होगी एसा नैमत्तिकने कहा है। किन्तु वारहवर्ष वीतचुके अभीतक विद्या सिद्ध न हुई इसलिये मै अव घर जाना चाहताहूं। ज्योंही कुमारने उस पुरुष के मुखसे ये समाचार सुने शीघ्रही पूछा—

भाई वह कौनसा मंत्र है मुझे भी तो दिखाओ देखू तो वह कैसा कठिन है ? कुमारके इसप्रकार पूछेजाने पर उस पुरुषने शीघ्रही वहमत्र कुमारको वतला दिया।

कुमार अतिशयपुण्यात्मा थे उस समय उनका भाग्य सुभाग्य था इसलिये उन्होंने मत्र सीखकर शीघ्र ही इधर उधर कुछ वीज क्षेपण करदिये और वातकी वातमें वह मन्त्र सिद्ध करलिया मत्रसे जो २ विद्या सिद्ध होनेवाली थीं शीघ्र ही सिद्ध होगई। कुमारके प्रसादसे राजा वायुवेगको भी विद्या सिद्ध होगई जिससे उसे परमसतोष होगया एव वे दोंनो महानुभाव आपसमें मिल भेंटकर वडे प्रेमसे अपने अपने स्थान चलेगये।

मत्र सिद्ध कर कुमार अपने घर आये। विद्यावलसे उन्होंने शीघ्रही कृत्रिम मेघ वनादिये। रानी चेलनाको हाथी पर चढ़ालिया इच्छानुसार उसे जहां तहां घुमाया। जव उसके दोहले की पूर्ति होगई तो वह अपने राजमहलमें आगई। दोहलेकी पूर्ति, कठिनसमझ जो उसके चित्तमें खेद था वह दूर होगया। अव उसका शरीर सोनेके समान दमकने लगा। नोमासके वीतजानेपर रानी चेलनाके आतिशय प्रतापी शत्रुओं का विजयी पुत्र उत्पन्न हुआ। और दोहलेके अनुसार उसका नाम **गजकुमार** रक्खा गया। गजकुमारके वाद रानी चेलना के **मेघकुमार नामका** पुत्र उत्पन्न हुआ। सात ऋषियोंसे

आकाशमें जैसी तारा शोभित होतीहै रानी चेलनाभी ठीक उसी प्रकार सातपुत्रोंसे शोभित होनेलगी। इसप्रकार आपसमें आतिशय सुखी समस्तखेदोंसे रहित वे दोंनो दंपती आनन्द पूर्वक भोगभोगते राजगृह नगरमें रहने लगे।

कदाचित् अनेक राजा और सामंतोंसे सेवित भलेप्रकार बंदीजनोंसे स्तुत महाराज श्रेणिक छत्र और चंचल चमरोंसे शोभित अत्युन्नत सिंहासनपर वैठतेही जाते थे कि अचानकही सभामें वनमाली आया। उसने विनयसे महाराजको नमस्कार किया एव षट्कालके फल और पुष्प महाराजकी भेट कर वह इस प्रकार निवेदन करने लगा।

समस्तपुण्योंके भण्डार! वड़े २ राजाओंसे पूजित! दयामयचित्तके धारक! चक्र और इन्द्रकी विभूतिसे शोभित! देव!–**बिपुलाचल** पर्वतपर धर्मके स्वामी भगवान **महावीर** का समवसरण आया है। भगवानके समवसरणके प्रसादसे वनश्रीसाक्षात् स्त्री वनगई है क्योंकि स्त्री जैसी पुत्ररूपी फल युक्त होती है वनश्री भी स्वादु और मनोहर फलयुक्त होगई है। स्त्री जैसी **सपुष्पा** रजोधर्मयुक्त होती है वनश्री भी सपुष्पा हरे पीले अनेक फूलोंसे सज्जित होगई है। स्त्री जैसी यौवनअवस्थामें **मदनोद्दीप्ता** कामसे दीप्त होजाती है वनश्रीभी मदनोद्दीप्ता मदनवृक्षसे शोभित होगई है। भगवान के समवसरणकी कृपासे तालावोंने सज्जनोंके चित्तकी तुलना

की है क्योंकि सज्जनोंका चित्त जैसा रस पूर्ण—करुणा आदिरसोंसे व्याप्त रहता है तालाब भी उसी प्रकार रसपूर्ण जलसे भरेहुए हैं सज्जनोंका चित्त जैसा सपद्म-अष्टदलकमलाकार होता है तालाब भी सपद्म—मनोहर कमलोंसे शोभित है सज्जनचित्त जैसा **वर**—उत्तम होता है तालाबभी वर-उत्तम है सज्जन चित्त जैसा निर्मल होता है तालाब भी उसी प्रकार निर्मल है। सज्जनोंके चित्त जैसे गंभीर होते है तालाबभी इस समय गंभीर है इसप्रकारसे भी वनश्रीने स्त्री की तुलना की है क्योंकि—स्त्री जैसी **सवंशा**-कुलीना होती है वनश्री भी सवंशा बांसों से शोभित है। स्त्री जैसी **तिलकोद्दीप्ता** तिलक से शोभित रहती है वनश्री भी तिलकोद्दीप्ता—तिलकवृक्षसे शोभित है स्त्री जैसी **मदनाकुला**—कामसे व्याकुलरहती है वनश्री भी मदनाकुला-मदन वृक्षोंसे व्याप्त है । स्त्री जैसी **सुवर्णा** मनोहर वर्णवाली होती है वनश्री भी सुवर्णा हरे पीले वर्णोंसे युक्त है । स्त्रीके सर्वांगमें जैसा **मन्मथ** काम जाज्वल्यमान रहता है वनश्री भी मन्मथजातिके वृक्षोंसे जहां तहां व्याप्त है पद्मिनी स्त्री जैसी भौंरोंकी जंघारोंसे युक्त रहती है वनश्रीभी भौंरोकी जंघारसे शोभितहै स्त्री जैसीहास्य युक्त होतीहैं वनश्री भी पुष्परूपी हास्य युक्त है । स्त्री जैसी स्तन युक्त होती है वनश्री भी ठीक उसीप्रकार फलरूपी स्तनोंसे शोभित है । प्रभो ! इससमय नोले आनंदसे सर्पोंके साथ क्रीड़ा कर

रहे है । बिल्लीके बच्चे वैर रहित मूसोंके साथ खेल रहे हैं । अपनापुत्र समझ हथिनी सिहनीके बच्चोंको आनंदसे दूध पिला रही है और सिंहनी हथिनियोंके बच्चोंको प्रेमसे दूध पिला रही है । प्रजापालक ! समवसरणके प्रसादसे समस्तजीव वैर रहित होगये है मयूरगण सर्पोंके मस्तकोंपर आनंदसे नृत्यकर रहे है। विशेष कहांतक कहा जाय इससमय नहिं संभव भी काम बड़े २ देवोंसे सेवित महावीर भगवानकी कृपासे होरहे है । मालीके इसप्रकार अचिंत्यप्रभावशाली भगवान् महावीरका आगमन सुन मारे आनदके महाराजका शरीर रोमांचित होगया । उदयाद्रिसे जैसा सूर्य उदित होता है महाराज भी उसीप्रकार शीघ्रही सिंहासन से उठपड़े । जिस दिशामें भगवानका समवशरण आया था उसदिशाकी ओर सात पैड चलकर भगवानको परोक्ष नमस्कार किया । उस समय जितने उनके शरीर पर कीमती भूषण और वस्त्र थे तत्काल उन्हें मालीको देदिया धन आदि देकर भी मालीको संतुष्ट किया । समस्त जीवोंकी रक्षा करनेवाले महाराजने समस्त नगरनिवासियोंके जनानेके लिये बड़ी भक्ति और आनंदसे नगरमें ड्योढी पिटवा दी । ड्योढीकी आवाज सुनतेही नगरनिवासी शीघ्रही राजमहलके आंगनमें आगये उनमें अनेक तो घोड़ोंपर सवारथे और अनेक हाथीपर और रथोंपर बैठे थे । सब नगरनिवासियोंके एकचित्त होतेही रानी पुरवासी

राजा सामंत और मंत्रियोंसे वेष्टित महाराज शीघ्रही भगवानकी पूजार्थ वनकी ओर चलदिये। मार्गमें घोड़े आदिके पेरोंसे जो धूलि उठती थी वह हाथियोंके मदजलसे शांत होजाती थी। उस समय जीवोंके कोलाहलोंसे समस्त आकाश व्याप्त था, इसलिये कोई किसीकी बात तक भी नहिं सुन सकता था। यदि किसीको किसीसे कुछ कहना होता था तो वह उसकी मुहकी ओर देखता था। और बड़े कष्टसे इशारेसे अपना तात्पर्य उसै समझाता था। उस समय ऐसा जान पड़ता था मानों बाजोंके शब्दोंसे सेना दिक्स्त्रियोंको बुला रही है। उस समय सबोंका चित्त कर्मविजयी भगवान महावीरमें लगा था। और छत्रोंका तेज सूर्यतेजकोभी फीका कर रहा था। इस प्रकार चलते २ महाराज समवसरणके समीप जा पहुंचे। समवसरणको देख महाराज शीघ्रही गजसे उत्तर पड़े। मानस्तंभ और प्रतिहार्योंकी अपूर्व शोभा देखते समवसरणमें घुस गये। वहां जिनेंद्र महावीरको विशाल किंतु मनोहर सिंहासनपर विराजमान देख भक्तिपूर्वक नमस्कार किया एवं मंत्रपूर्वक पूजा करना प्रारंभ करदिया। सबसे प्रथम महाराजने क्षीरोदधिके समान उत्तम और चंद्रमाके समान निर्मल जलसे प्रभूकी पूजा की। पश्चात् चारोंदिशामें महकनेवाले चंदनसे और अखंड तंदुलसे जिनेंद्र पूजै। कामबाणके विनाशार्थ उत्तमोत्तम चंपा आदि पुष्प और क्षुधारोग विनाशार्थ उत्तमोत्तम स्वादिष्ट पक्वान चढ़ाये। समस्त

दिशायें प्रकाश करनेवाले रत्नमयी दीपकोंसे और उत्तम धूपसे भी भगवानका पूजन किया। एवं मोक्षफलकी प्राप्तिके लिये उत्तमोत्तम फल और अनर्घपदकी प्राप्त्यर्थ अर्घभी भगवानके सामने चढ़ाये। जब महाराज श्रेणिक अष्टद्रव्यसे भगवानकी पूजा कर चुके तो उन्होंने सानंद हो इसप्रकार स्तुति करना प्रारंभ कर दिया.—

हे समस्त देवोंके स्वामी! बड़े २ इंद्र और चक्रवर्तियोंसे पूजित आपमें इतने अधिक गुण है कि प्रखर ज्ञानके धारक गणधरभी आपके गुणोंका पता नहिं लगा सकते। आपके गुणस्तवन करनेमें विशाल शक्तिके धारक इंद्रभी असमर्थ है। मुझे जान पड़ता है कामको सर्वथा आपनेही जलाया है। क्योंकि महादेव तो उसके भयसे अपने अंगमें उसकी विभूति लपेटे फिरते है। विष्णु रातदिन स्त्रीसमुदायमें घूसे रहते हैं। ब्रह्माभी चतुर्मुख हो चारों दिशाकी ओर कामदेवको देखते रहते हैं। और सदा भयसे कपते रहते है। प्रभो! ऊंचापना जैसा मेरु पर्वतमें है अन्य किसीमें नहिं उसी प्रकार अखंड ज्ञान जैसा आपमें है वैसा किसीमें नहिं। दीनबंधो! जो मनुष्य आपके चरणाश्रित हो चुका है यदि वह मत्त, और सुगंधिसे आये भौंरोंकी झंकारसे अतिशय क्रुद्ध महाबली गजके चक्रमेंभी आजाय तो भी गज उसका कुछ नहिं कर सकता। जिस मनुष्यके पास आपका ध्यानरूपी अष्टापद मो-

जूद है- मत्त हाथियोंके गंडस्थल विदारण करनेमें चतुरभी सिंह-उसे- कष्ट नहि पहुंचा सकता। आपके चरणसेवी मनुष्यका कल्पांतकालीन और अपने फुलिंगोंसे जाज्वल्यमान अग्निभी कुछ नहिं कर सकती। महामुने! जिस मनुष्यके हृदयमें आपकी नाम रूपी नाग दमनी बिराजमान है। चाहै सर्प-कैसा भी भयंकर हो उस मनुष्यके देखतेही शीघ्र निर्विष होजाता है। दयासिंधो! जो-मनुष्य आपके चरणरूपी जहाजमें स्थित है चाहै-वह वड़वानलसे व्याप्त, ताके मगर आदि जीवोंसे पूर्ण समुद्रमें ही क्यों न जा पड़े बातकी बातमें तैरकर पारपर आ जाता है। जिनेंद्र! जिन मनुष्योंने आपका नामरूपी कवच धारण कर लिया है वे अनेक भाले, बड़े२ हाथियोंके चीत्कारोंसे परिपूर्ण, भयंकर भी संग्राममें देखते२ विजय पालेते है। कोढ़ जलोदर आदि भयंकर रोगोसे पीड़ित भी मनुष्य आपके नाम-रूपी परमौषधिकी कृपासे शीघ्रही नीरोग होजाता है। गुणाकर! जिनका अंग संकलोंसे जिकड़ा हुआ है। हाथ पैरोंमें बेड़ियां पडी है यदि ऐसे मनुष्योंके पास आपका नामरूपी अद्भुत खड्ग मोजूद है तो वे शीघ्रही बंधनरहित होजाते है। प्रभो! अनादिकालसे संसाररूपी घरमें मग्न अनेक दुःखोंका सामना करनेवाले जीवोंके यदि शरण है तो तीनों लोकमें आपही है। प्रभो! कथंचित् गणनातीत मैं आपके गुणोंकी गणना करता हूं। कृपानाथ! गंभीर गणनातीत प्रसन्न परम पसं इतने गुणही

आपमें है इनसे अधिक आपमें गुण नहिं । इस लिये हे कल्याणरूप जिनेंद्र ! आपके लिये नमस्कार है । महामुने ! परमयोगीश्वर वीरभगवान् ! आप मेरी रक्षा करें ।

इस प्रकार भगवान महावीरको भक्तिपूर्वक नमस्कार कर और गातम गणधरको भी भक्तिपूर्वक शिर नवाकर महाराज मनुष्य कोठेमें बैठि गये । एवं धर्मरूपी अमृतपानकी इच्छासे हाथ जोड़कर धर्मकी वावत कुछ पूछा–महाराज श्रेणिकके इस प्रकार पूछनेपर समस्त प्रकारकी चेष्टाओंसे रहित भगवान महावीर अपनी दिव्यवाणीसे इस प्रकार उपदेश देने लगे— राजन् ! सकल भव्योत्तम ! प्रथम ही तुम सात तत्वोंका श्रवण करो । सातों तत्त्व सम्यग्दर्शनके कारण है और सम्यग्दर्शन मोक्षका कारण है । वे सात तत्त्व जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष है । जीवके मूल भेद दो हैं–त्रस और स्थावर । स्थावर पांच प्रकार है–पृथ्वी, अप्, तेज, वायु और वनस्पति । ये पांचो प्रकारके जीव चारों प्राणवाले होते हैं । और इनके केवल स्पर्शन इंद्रिय होती है । ये पांचो प्रकारके जीव सूक्ष्म और स्थूल भेदसे दो प्रकार भी कहे गये हैं और ये सब जीव पर्याप्त अपर्याप्त और लब्धपर्याप्त इस रीतिसे तीन प्रकार भी है । पृथ्वीजीव चार प्रकार है–पृथ्वीकाय, पृथ्वीजीव, पृथ्वी और पृथ्वीकायिक । इसी प्रकार जलादिके भी चार२ भेद समझ लेना चाहिये । आदिके चार जीव घनांगुलके

असंख्यातवे भाग शरीरके धारक है। वनस्पतिकायके जीवोंका उत्कृष्ट शरीर परिमाण तो संख्यातांगुल है और जघन्य अंगुलके असंख्यात भाग है। शुद्धेतर पृथ्वीजीवोंकी आयु बारह हजार वर्षकी है। जलजीवोंकी बाईस हजार वर्षकी है। तेजकायिक जीवोंकी सात हजार और तीन वर्षकी है। एवं वायुकायिक जीवोंकी तीन हजार और वनस्पतिकायिक जीवोंकी उत्कृष्ट आयु दश हजार वर्षकी है। विकलेंद्रिय जीव तीन प्रकार हैं— दोइंद्रिय, तेइंद्रिय और चौइंद्रिय। सञ्ज्ञी और असंज्ञी भेदसे पंचेंद्रिय भी दो प्रकार है। पचेंद्रिय जीव, मनुष्य, देव, तिर्यंच और नारकी भेदसे भी चार प्रकार है। नारकी सातो नरकमें रहनेके कारण सात प्रकार है। तिर्यचोंके तीन भेद है—जलचर, स्थलचर और नभचर। भोगभूमिज और कर्मभूमिज भेदसे मनुष्य दो प्रकारके है। जो मनुष्य कर्मभूमिज है वेही मोक्षके अधिकारी है। देवभी चार प्रकार है—भवनवासी, व्यंतर, ज्योतिष्क और वैमानिक। भवनवासी दश प्रकार है, व्यंतर आठ प्रकार, ज्योतिषी पांच प्रकार और वैमानिक दो प्रकार है। इस प्रकार संक्षेपसे जीवोंका वर्णन कर दिया गया। अब अजीवतत्त्वका वर्णन भी सुनिये—

अजीवतत्त्वके पांच भेद है—धर्म, अधर्म, आकाश, काल और पुद्गल। उनमें धर्मद्रव्य असंख्यात प्रदेशी जीव और पुद्गलके गमनमें कारण, एक, अपूर्व और सत्तारूप द्रव्य लक्षण

युक्त है। धर्म द्रव्य भी वैसा ही है किन्तु इतना विशेष है कि यह स्थितिमें सहकारी है। आकाशके दो भेद है—एक लोकाकाश, दूसरा अलोकाकाश। लोकाकाश असंख्यात प्रदेशी है। और अलोकाकाश अनंत प्रदेशी है। लोकाकाश सब द्रव्योंको घरके समान अवगाह दान देनेमें सहायक है। काल द्रव्य भी असंख्यात प्रदेशी एक और द्रव्य लक्षण युक्त है। यह रत्नोंकी राशिके समान लोकाकाशमें व्याप्त है। और समस्त द्रव्योंके वर्तना परिणाममें कारण है। कर्म वर्गणा आहार वर्गणा आदि भेदसे पुद्गल द्रव्य अनंत प्रकार है। और यह शरीर और इंद्रिय आदिकी रचनामें सहकारी कारण है। आस्रव दो प्रकार है—द्रव्यास्रव और भावास्रव। दोनों ही प्रकारके आस्रवके कारण मिथ्यात्व,अविरति,प्रमाद आदि है। जीवके विभाव परिणामोंसे बंध होता है। और उसके चार भेद है—प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, अनुभागबंध और प्रदेशबंध। आस्रवका रुकना संवर है। संवरके भी दो भेद हैं—द्रव्यसंवर और भावसंवर। और इन दोनों ही प्रकारके संवरोंके कारण गुप्ति, समिति, धर्म, अनुप्रेक्षा आदि हैं। निर्जरा दो प्रकार है—सविपाक निर्जरा और अविपाक निर्जरा। सविपाक निर्जरा साधारण और अविपाक निर्जरा तपके प्रभावसे होती है। द्रव्यमोक्ष और भावमोक्षके भेदसे मोक्ष भी दो प्रकार कहागया है। और समस्त कर्मोंसे रहित हो जाना मोक्ष है। मगधेश! यदि इन्ही

तत्त्वोंके साथ पुण्य और पाप जोड़ दिये जांय तो येही नव पदार्थ कहलाते है। इस प्रकार पदार्थोंके स्वरूपके वर्णनके अनंतर भगवानने श्रावक मुनिधर्मका भी वर्णन किया। महाराज श्रेणिकके प्रश्नसे भगवानने त्रेसठिसलाका पुरुषोंका चरित्र भी वर्णन किया। जिससे महाराज श्रेणिकके चित्तमें जो जैनधर्म विषयक अंधकार था शीघ्र ही निकल गया। जब महाराज श्रेणिक भगवानकी दिव्यध्वनिसे उपदेश सुन चुके तो अतिशय विशुद्ध मनसे राजा श्रेणिकने गौतम गणधरको नमस्कार किया और विनयसे इस प्रकार निवेदन करने लगे—

भगवन्! पुराणश्रवणसे जैनधर्ममें मेरी बुद्धि दृढ़ है। संसार नाश करनेवाली श्रद्धा भी मुझमें है तथापि प्रभो! मैं नहिं जान सकता मेरे मनमें ऐसा कोंनसा अभिमान बैठा है जिससे मेरी बुद्धि व्रतोंकी ओर नहिं झुकती। मगधेशके ऐसे वचन सुन गणनायक गौतमने कहाः—

राजन्! भोगके तीव्र संसर्गसे गाढ़ मिथ्यात्वसे मुनिराजके गलेमें सर्प डालनेसे दुश्चरित्रसे और तीव्रपरिग्रहसे तूने पहिले नरकायु बांध रक्खी है इसलिये तेरी परिणति व्रतोंकी ओर नहि झुकती। जो मनुष्य देवगतिका बंधन बाध चुके हैं। उन्हींकी बुद्धि व्रत आदिमें लगती है। अन्यगतिकी आयु बांधनेवाले मनुष्य व्रतोंकी ओर नहिं झुकते। नरनाथ! संसारमें तू भव्य और उत्तम है। पुराणश्रवणसे उत्पन्न हुई विशुद्धिसे

तेरा मन अतिशय शुद्ध है। सात प्रकृतियोंके उपशमसे तेरे औपशमिक सम्यग्दर्शन था। अंतर्मूहूर्तमें क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पाकर उन्हीं सात प्रकृतियोंके क्षयसे अव तेरे क्षायिक सम्यक्त्वकी प्राप्ति हो गई है। यह क्षायिक सम्यक्त्व निश्चल अविनाशी और उत्कृष्ट है। भव्योत्तम! जिनेंद्रद्वारा प्रतिपादित, पूर्वापर विरोधरहित शास्त्रोंद्वारा निरूपित निर्दोष सात तत्त्वोंका श्रद्धान सम्यग्दर्शन कहा गया है। इस सम्यग्दर्शनकी प्राप्ति अतिशय दुर्लभ मानी गई है। संसाररूपी विषवृक्षके जलानेमें सम्यग्दर्शनके सिवाय कोई वस्तु समर्थ नहिं। सम्यग्दर्शनसे वढ़कर संसारमें कोई सुख भी नहिं और न कोई कर्म और तप है। देखो—सम्यग्दर्शनकी कृपासे समस्त सिद्धियां मिलती हैं। सम्यग्दर्शनकी ही कृपासे तीर्थंकरपना और स्वर्ग मिलता है एव संसारमें जितने सुख है वेभी सम्यग्दर्शनकी कृपासे वातकी वातमें प्राप्त हो जाते है। राजन्! इस संम्यग्दर्शनकी कृपासे जीवोंके कुव्रत भी सुव्रत कहलाते है और उसके विना योगियोंके सुव्रत भी कुव्रत हो जाते हैं। भव्योत्तम! तू अव किसी वातका भय मत करै। सम्यग्दर्शनकी कृपासे आगे उत्सर्पिणी कालमें तू इसी भरतक्षेत्रमें पद्मनाभ नामका धारक तीर्थंकर होगा। इसलिये तू आसन्न भव्य है। तू अब निर्भय हो। तूने तीर्थंकर प्रकृतिकी कारण भावना भाली हैं। समस्त दोषरहित तूने सम्यग्दर्शन प्राप्त करालिया है। और विनयगुण तुझमें स्वभावसे

है। तेरा चित्त भी शीलव्रतकी ओर झुका है। यह शीलव्रत व्रतोंकी रक्षार्थ छत्रके समान है। मगधेश्वर! तू अपने चित्तमें संवेगकी भावना करता है। भवभोगसे निवृत्त होनेके लिये तपमें भी मन लगाता है। शक्त्यनुसार धर्मार्थ जिनपूजा आदिमें तेरा धन भी खर्च होता है। साधुओंका समाधान भी तू आश्चर्यकारी करता है। शास्त्रानुसार तू योगियोंका वैयावृत्य भी करता है। समस्त कर्म रहित जिनेंद्र भगवान्‌में तेरी भक्ति भी अद्वितीय है। भले प्रकार शास्त्रके जानकार उत्तमोत्तम आचार्योंकी उपासना भी तू भक्ति और हर्षपूर्वक करता है। जिनप्रतिपादित शास्त्रोंका तू भक्त भी है। इस समय षट् आवश्यकोंमें तेरी बुद्धि भी अपूर्व है। धर्मके प्रसारके लिये तू जैनमार्गकी प्रभावना भी करता है। जैन मार्गके अनुयायी मनुष्योंमें वात्सल्य भी तेरा उत्तम है। राजन्! त्रैलोक्य क्षोभका कारण परम पवित्र सोलह भावना भानेसे तूने तीर्थंकरपदका बंध भी बांध लिया है। अब तू प्राणोंका त्यागकर प्रथम नरक रत्नप्रभामें जायगा और वहां मध्य आयुका भोगकर भविष्यत् कालमें नियमसे रत्नधामपुरमें तू तीर्थंकर होगा। मुनिनाथ गौतमके ऐसे वचन सुन महाराज श्रेणिकने कहाः—

नाथ! अधोगतिका प्रियपना क्या है? श्रेणिकका भीतरी भाव समझ गौतम गणाधरने राजा श्रेणिकको कालसूकरकी कथा सुनाई। उसने पहिले अपने पापोदयसे सप्तम नरककी

आयु बांध पुनः किस रीतिसे उसका छेद किया सोभी कह सुनाया। इस प्रकार गौतम गणधरके वचनोंसे अतिशय संतुष्ट अनेक बड़े२ राजाओंसे पूजित महाराजने जिनराजके चरण-कमलोंसे अपना मन लगाया और समस्त कल्याणोंसे युक्त हो अपने पुत्र पौत्रोंके साथ शत्रु रहित हो गये। पापोंसे जो पहिले सप्तम नरककी आयु बांध ली थी उस आयुका अपने उत्कृष्ट भावों द्वारा महाराज श्रेणिकने छेद कर दिया तथा तीर्थंकर नाम कर्मकी शुभ भावना भानेसे भविष्यतमें तीर्थंकर प्रकृतिका बंध बांधकर अतिशय शोभाको धारण करने लगे। देखो भावोंकी विचित्रता! कहां तो सप्तम नरककी उत्कृष्ट स्थिति और कहां फिर केवल प्रथम नरककी मध्यम स्थिति? यह सब धर्मका ही प्रसाद है। धर्मकी कृपासे जीवोंको अनेक कल्याण आकर उपस्थित हो जाते है और धर्मकी कृपासे तीर्थंकर पदकी भी प्राप्ति हो जाती है इसलिये उत्तम पुरुषोंको चाहिये कि वे निरंतर धर्मका आराधन करै।

इस प्रकार भविष्यत कालमें होनेवाले श्रीपद्मनाभ
तीर्थंकरके जीव महाराज श्रेणिकके चरित्रमें
महाराज श्रेणिकको क्षायिक सम्यक्-
दर्शनकी उत्पत्ति वर्णन
करनेवाला बारहवा सर्ग
समाप्त हुआ।

त्रयोदश सर्ग।

गणके स्वामी मुनियोंमें उत्तम श्रीगौतम गणधरको भक्ति-पूर्वक नमस्कार कर बड़ी विनयसे कुमार अभयने अपने भवोंको पूछा–कुमारको इस प्रकार अपने पूर्वभव श्रवणकी अभिलाषा देख गौतम गणधर कहने लगे–कुमार अभय! यदि तुम्हें अपने पूर्ववृतांत सुननेकी अभिलाषा है तो मै कहता हूं, तुम ध्यानपूर्वक सुनोः—

इसी लोकमें एक वेणातड़ाग नामकी पुरी है। वेणातड़ागमें कोई रुद्रदत्त नामका ब्राह्मण निवास करता था वह रुद्रदत्त बड़ा पाखंडी था इसलिये किसी समय तीर्थाटनके लिये निकल पड़ा और घूमता २ उज्जयनीमें जा निकला। उस समय उज्जयनीमें कोई अर्हदास नामका सेठ रहता था। उसकी प्रियभार्या जिनमती थी वे दोनों ही दंपती जैनधर्मके पवित्र सेवक थे। अनेक जगह नगरमें फिरता फिरता रुद्रदत्त सेठि अर्हदासके घर आया और कुछ भोजन मागने लगा। वह समय रात्रिका था इसलिये ब्राह्मणकी भोजनार्थ प्रार्थना सुन जिनमतीने कहा–

यह समय रात्रिका है। विप्र! मै रात्रिमें भोजन न दूंगी।

सेठानी जिनमतीके ऐसे वचन सुन रुद्रदत्तने कहा—

बहिन! रात्रिमें भोजन देनेमें और करनेमें क्या दोष है? जिससे तू मुझे भोजन नहिं देती? जिनमतीने कहा—

प्रिय भव्य! रात्रिमें भोजन करनेसे पतंग, डांस, मांखी आदि जीवोंका घात होता है इसलिये महापुरुषोंने रात्रिका भोजन अनेक पाप प्रदान करनेवाला हिंसामय, घृणित और अनेक दुर्गतियोंका देनेवाला कहा है। यह निश्चय समझो जो मनुष्य रात्रिमें भोजन करते है वे नियमसे उल्लू वाघ हिरण सर्प वीछू होते हैं और रात्रि भोजियोंको बिल्ली और मूसोंकी योनियोंमें घूमना पड़ता है। और सुन—जो मनुष्य रात्रिमें भोजन नहिं करते उन्हें अनेक सुख मिलते है। रातमें भोजन न करनेवालोंको न तो इस भव संबंधी कष्ट भोगना पड़ता है और न परभव संबंधी। इसलिये हे विप्र! मै तुम्हें रातमें भोजन न दूंगी। सवेरा होते ही भोजन दूंगी। जिनमतीकी ऐसी युक्तियुक्त वाणी सुनकर विप्रने शीघ्रही रात्रिभोजनका त्याग किया और सवेरे आनंदपूर्वक भोजनकर सम्यक्त्व गुणसे भूषित किसी जैन मनुष्यके साथ गंगास्नानके लिये चल दिया। मार्गमें चलते२ एक पीपलका वृक्ष, जो कि फलोंसे व्याप्त था लंबी शाखाओंका धारी, भांति भांतिके पक्षियोंसे युक्त, और जिसके चौतर्फा बड़े२ पाषाणोंके ढेर थे, दीख पड़ा। वृक्षको देखते ही ब्राह्मणका कंठ भक्तिसे गद्गद हो गया। उसै देव जान शीघ्र ही उसने नमस्कार किया। गाढ़ मिथ्यात्वसे मोहित हो शीघ्र ही उसकी तीन परिक्रमा दीं और वार२ उसकी स्तुति करने लगा। विप्र रुद्रदत्तकी ऐसी चेष्टा देख और उसै प्रबल मिथ्यामती समझ उसके बोधार्थ वह वणिक कहने लगा—

विप्रवर ! कृपया कहो यह किस नामका धारक देव है ? और इसका माहात्म्य क्या है ? विप्रने जवाब दिया—

विष्णु भगवानके वासके लिये यह बोधिकर्म नामका देव है । यह इच्छानुसार मनुष्योंका बिगाड़ सुधार कर सकता है । ब्राह्मणके मुखसे वृक्षकी यह प्रशंसा सुन वणिकने शीघ्रही उसमें दो लात मारी और उससे पत्ते तोड़कर उन्हें जमीन पर बिछा-कर शीघ्रही उनके ऊपर बैठि गया और विप्रसे कहने लगा—

प्रियविप्र ! अपने ईश्वरका प्रताप देखो । अरे ! यह वनस्पति मनुष्यों पर क्या रिस खुश हो सकती है ? वणिककी वैसी चेष्टा देख रुद्रदत्तने जवाब तो कुछ नहिं दिया किंतु अपने मनमें यह निश्चय किया कि अच्छा क्या हर्ज है ? कभी मै भी इसके देवताको देखूंगा । इस वणिकने नियमसे मेरा अपमान किया है तथा इस प्रकार अपने मनमें विचार करता२ कहने लगा—भाई ! देवकी परीक्षामें किसीको मध्यस्थ करना चाहिये । ब्राह्मण रुद्रदत्तके ऐसे वचन सुन वणिकने उसके अंतरंगकी कालिमा समझ ली तथा वह वणिक उसै इस रीतिसे समझाने लगा—

प्रिय मित्र ! यह पीपल एकेंद्रिय जीव है । इसमें न तो मनुष्योंके समान विशेष ज्ञान है न किसी प्रकारकी सामर्थ्य है। यह तो केवल पक्षियोंका घर है । तुम निश्चय समझो सिवाय शुभाशुभ कर्मके यहां किसीमें सामर्थ्य नहिं जो मनुष्योंका बिगाड़ सुधार कर सकै । प्रिय भ्राता ! यह निश्चय है जो

मनुष्य धर्मात्मा है बड़े२ देव भी उनके दास बन जाते हैं और पापियोंके आत्मीयजन भी उनसे विमुख हो जाते हैं। इस प्रकार अपनी वचनभंगीसे और जिनेंद्र भगवानके आगमकी कृपासे श्रावक उस वणिकने शीघ्रही ब्राह्मणका मिथ्यात्व दूर कर दिया और वे दोनों स्नेहपूर्वक बातचीत करते हुए आगेको चल दिये।

आगे चल कर वे दोनों गंगा नदिके किनारे पहुंचे। वणिक तो भूखा था इसलिये वह खानेको बैठि गया और रुद्रदत्त शीघ्रही स्नानार्थ गंगामें घुस गया। बहुत देर तक उसने गंगामें स्नान किया पानी उछालकर पितरोंको पानी दिया पश्चात् जहां वह जैन श्रावक भोजन कर बैठा था वहीं आया। विप्रको आता देख वणिकने कहा—

विप्रवर! यह झूठा भोजन रक्खा है आनंदपूर्वक इसे खाओ। वणिककी ऐसी बात सुन विप्रने जवाब दिया—

वणिक सरदार! यह बात कैसे हो सकती है? झूठा भोजन खाना किस प्रकार योग्य नहिं। विप्रके ऐसे वचन सुन वणिकने जवाब दिया—

भाई, यह भोजन गंगाजल मिश्रित है। इसमें झूठापन कहांसे आया? तुम निर्भय हो खाओ। गंगाजल मिश्रित होनेसे इसमें जराभी दोष नहिं। यदि कहो की तीर्थ जलसे मिश्रितभी झूठा भोजन योग्य नहिं हो सकता तो तुम्हीं बताओ पापकी

शुद्धि गंगाजलसे कैसै हो शकती है ? अरे भाई। यदि यह बात ठीक हो कि स्नानसे शुद्धि हो जाती है तो मछलियां रातदिन गंगाके जलमें पड़ी रहती है। धीवर हमेशह न्हाते धोते रहते है। उन्हें शुद्ध हो सीधे स्वर्ग चले जाने चाहिये। प्रिय भाई ? तुम निश्चय समझो भीतरी शुद्धि स्नानसे नहिं होती किंतु तप व्रत जप ध्यान क्षमा और शुभभावसे होती है। देखो, शराबका घड़ा। हजारवार धोनेपर भी जैसा शुद्ध नहिं होता उसी प्रकार यह देहभी पापभय है अब्रह्म आदि पापोंसे व्याप्त है। कदापि इस देहकी स्नानसे शुद्धि नहिं हो सकती। किंतु जिन मनुष्योंने ज्ञानतीर्थका अवगाहन किया है—ज्ञानतीर्थमें स्नान किया है वे विना जलकेही घीके घड़ेके समान शुद्ध रहते हैं। वणिकके ऐसे वचन सुन ब्राह्मणने शीघ्रही तीर्थमूढताका त्याग कर दिया। वहीं पर एक तपस्वी भी पचाग्नितप तप रहाथा। वणिक ब्राह्मण रुद्रदत्तको उसके पास ले गया और जलती हुई अग्निमें अनेक प्राणियोंको मरते दिखाया जिससे विप्रसे पाखंडीतपोमूढता भी छुड़वा दी और यह उपदेशभी दिया कि—

वेदमें जो यह बात बतलाई है हिंसावाक्य भयका देनेवाला होता है। यह पाखंडी तप महान हिंसाका करनेवाला है सो कैसै तुम्हारे मनमें योग्य जच सकता है ? प्रिय विप्र। यदि विना दयाकेभी धर्म कहा जायगा तो बिल्ली मूंसे वाघ व्याध आदिको भी धर्मात्मा कहे जांयगे। यज्ञमें सफेद छागका मारना

यदि ठीक है तो धनयुक्त मनुष्यका चोरोंद्वारा मारना भी किसी प्रकार पापप्रद नहिं हो सकता। यदि कहो कि नरमेध और अश्वमेध यज्ञमें जो प्राणी मरते है वे सीधे स्वर्ग चले जाते हैं तो उक्त यज्ञभक्तोंको चाहिये कि वे अपने कुटुं-बीजनोंको भी यज्ञार्थ हनैं। प्रिय रुद्रदत्त! वेद हो चाहै लोक हो किसीमें पापप्रद प्राणीघातसे कदापि धर्म नहिं हो सकता प्राणिघातसे धर्म मानना बड़ी भारी भूल है। इस प्रकार अपने उपदेशसे वणिकने रुद्रदत्तकी आगम मूढ़ताभी छुड़वादी। सांख्यादि दूसरे २ मतोंके सिद्धांतोंका खंडन करता हुआ उसै जैन तत्त्वोंका उपदेश दिया जिससे उस ब्राह्मणने समस्तदोष रहित बड़े २ देवोंसे पूजित सम्यक्त्वमें अपने चित्तको जमाया। जिनोक्त तत्त्वोंमें श्रद्धा की और मिथ्यात्वकी कृपासे जो उसके चित्तमें मूढ़ता थी सब दूर हो गई।

कदाचित् श्रावकव्रतोंसे युक्त सम्यक्त्वके धारी आपसमें परमस्नेही वे दोनों तत्त्वचर्चा करते हुए मार्गमें जा रहे थे पूर्वपापके उदयसे उन्हैं दिशाभूल हो गई। वह वन निर्जनवन था। वहां कोई मनुष्य रास्ता बतलानेवाला न था। इसलिये जब उन दोनोंका संग छूट गया तो ब्राह्मण रुद्रदत्तने शीघ्रही सन्यास लेकर चारों प्रकारके आहारका त्याग करादिया और प्रथम स्वर्गमें जाकर देव हो गया। वहांपर बहुत कालतक उसने देवियोंके साथ उत्तमोत्तम स्वर्गसुख भोगे। आयुके

अंतमें मरकर अब तू अभयकुमार नामका धारी राजा श्रेणिकका पुत्र उत्पन्न हुआ और अब जैनशास्त्रानुसार तप कर तू नियमसे सिद्धपदको प्राप्त होगा। इस प्रकार जब गौतम गणधर अभयकुमारके पूर्वभवका वृत्तांत कह चुके तो दांतिकुमारने भी विनयसे कहा--

प्रभो! मै पूर्वभवमें कौन था? कैसा था? कृपाकर कहैं। दांतिकुमारके ऐसे वचन सुन गौतम भगवानने कहा—

यदि तुम्हैं अपने पूर्वभवके सुननेकी इच्छा है तो मैं कहता हूं तुम ध्यानपूर्वक सुनो—इसी पृथ्वीतलमें एक अनेक प्रकारके वृक्षोंसे मंडित भयंकर दारुण नामका वन है। किसी समय उस वनमें अतिशय ध्यानी सूधर्म नामका योगी तप करता था। और अतिशय निर्मल अपने शुद्धात्मामें लीन था। उस वनका रखवारा दारुणमिल नामका देव था। कार्यवश मुनिराजको विना देखेही उसने वनमें अग्नि लगादी। कल्पांतकालके समान अग्निकी ज्वाला धधकने लगी। अग्निज्वालासे मुनिराजका शरीर भस्म होने लगा। उनके प्राणपखेरु उडभगे और मरकर मुनिराज अच्युत स्वर्गमें जाकर देव हो गये।

जब वनरक्षक देवने मुनिराजका अस्थिपंजर देखा तो उसै परम दुःख हुआ। अपनी वार २ निंदा करता वह इस प्रकार विचारने लगा कि हाय!!! चारित्रसे पवित्र तपसे शोभित विनाकारण मैंने मुनिराजके शरीरको जला दिया। हाय!

मुझसे अधिक संसारमें पापी कोई न होगा तथा इस प्रकार विचार करते उसकी आयु समाप्त हो गई और वह मरकर उसी जगह शुभ, विशाल शरीरका धारक उन्नतदंतोंसे शोभित एवं अंजनपर्वतके समान ऊंचा हाथी हो गया।

कदाचित् अष्टान्हिका पर्वमें अच्युत स्वर्गका निवासी वह मुनिका जीव देव नंदीश्वर पर्वतकी वंदनार्थ निकला और उसी वनमें उसै वह हाथी दीखपड़ा। अपने अवधिज्ञानबलसे देवने अपनी पूर्व मुनिमुद्रा जानली और पुष्करविमानसे उतर कर उस वनमें उसी प्रकार ध्यानमें लीन होगया। हाथीने जब उसै देखा तो उसै शीघ्रही जातिस्मरण हो गया। जातिस्मरण होते ही उसकी आखोंसे अश्रुपात होने लगा। अपने पूर्वभवकी वारवार निंदा करते हुवे शीघ्रही उस देवको नमस्कार किया। देवके उपदेशसे हाथीने सम्यग्दर्शनके साथ शीघ्रही श्रावकव्रत धारण किये। देव वहांसे चला गया हाथी भी प्रासुकजल और पक्व फलाहारसे श्रावकव्रत पालन करने लगा। अपने आयुके अंतमें सन्यास धारणकर हाथीने समाधिपूर्वक अपना चोला छोड़ा। और अनेक देवोंसे सेवित सहस्रार स्वर्गमें जाकर देव हो गया। जैसे क्षणभरमें आकाशमें मेघसमूह प्रकट हो जाता है उसी प्रकार उत्पादशिलापर उत्पन्न होतेही अतर्मुहूर्तमें उसै पूर्ण शरीरकी प्राप्ति हो गई उसके कानोंमें कुंडल और केयूर झलकने लगे। वक्षस्थलमें मनोहर विशाल हार और शिरपर मनोहर

रत्नजड़ित मुकुट झिलमिलाने लगा। चारों ओर दिशा सुगंधिसे व्याप्त हो गई। निर्मल ऋद्धियोंकी प्राप्ति हो गई। शरीर दिव्यवस्त्र और आभूषणों शोभित हो गया। तथा नेत्र विशाल और निर्निमेष हो गये। जिस समय देवने अपनी ऐसी सुंदर दशा देखी तो वह विचारने लगा—

मै कौन हूं ? यहां कहांसे आया हूं ? मेरा क्या स्थान और क्या गति है ? मनोहर शब्द करनेवालीं ये देवांगना क्यों इस प्रकार मुझे चाहती हुईं नृत्यकर रही है ? इस प्रकार विचार करते २ अपने अवधिज्ञानबलसे शीघ्रही उसने 'मैं व्रतोंकी कृपासे हाथीकी योनिसे यहां आया हूं' इत्यादि वृत्तांत जान लिया। तथा वृत्तांत जानकर और अपनेको स्वर्गस्थ देव समझकर जिनेंद्र आदिको पूजते हुवे उसने धर्ममें मति की। दिव्यांगनाओंके साथ वह आनंद सुख भोगने लगा, नंदीश्वर पर्वतपर जिनमंदिरोंको पूजने लगा। इस रीतिसे वचनागोचर स्वर्ग भोगकर और वहांसे च्युत होकर अब तू रानी चेलनाके गर्भमें आकर उत्पन्न हुआ है। इस प्रकार गौतम गणधरद्वारा अभयकुमार दंतिकुमारका पूर्वभववृत्तांत सुन श्रेणिक आदि प्रधान २ पुरुषोंको अतिशय आनंद हुआ। सबोंने शीघ्रही मुनिनाथको नमस्कार किया। दृढसम्यक्त्वकथासे पूर्ण जिनशासनको स्मरण करते हुवे भगवानके गुणोंमें दत्तचित्त वे सब प्रीतिपूर्वक नगरमें आगये। और बड़े २ महाराजोंको वशमें कर महाराज श्रेणिकने महामंडलेश्वरपद प्राप्त कर लिया।

किसी समय महाराज इंद्र अपनी सभामें अनेक देवोंके साथ बैठे थे। अपने वचनोंसे सम्यक्त्वकी महिमा गान करते हुवे वे कहने लगे कि—

भरतक्षेत्रमें महाराज श्रेणिक सम्यग्दर्शनसे अतिशय शोभित है। वर्तमानमें उसके समान क्षायिक सम्यक्त्वका धारक दूसरा कोई नहि। जिसके सम्यग्दर्शनरुपी विशाल वृक्षको मिथ्यादर्शनरुपी गज तोड़ नहिं सकता और वह वृक्ष महा-शास्त्ररुपी दृढमूलका धारक और स्थिर है। कुसंगम कुठार उसे छेद नहिं सकता। कुशास्त्ररुपी प्रबल पवन भी उसे नहिं चला सकती। उसका सम्यक्त्वरुपी वृक्ष शास्त्ररुपी जलसे सिंचित है और उस सम्यग्दर्शनका दृढभावरुपी महामूल छिन्न नहिं किया जा सकता। महाराज इंद्रद्वारा श्रेणिकके सम्यग्दृष्टि-पनेकी इस प्रकार प्रशंसा सुन सभामेंस्थित समस्त देव आश्चर्य करने लगे एवं अतिशय प्रीतियुक्त किंतु मनमें अति आश्चर्ययुक्त दो देव शीघ्रही महाराज श्रेणीककी परीक्षार्थ पृथ्वी-मंडलपर उतरे और कहां तो महाराज श्रेणिक मनुष्य ? और कहां फिर उसकी इंद्रद्वारा तारीफ ? यह भलेप्रकार विचार कर जो महाराज श्रेणिकके आनेका मार्ग था उस मार्ग पर स्थित हो गये। उनमें एक देवने पीछी कमंडलु हाथमें लेकर मुनिरुप धारण किया और दूसरेने अर्यिकाका। वह आर्यिका गर्भवती बन गई और मुनिवेषधारी वह देव मछलियोंको

किसी तालावसे निकाल अपने कमंडलूमें रखता हुआ उस गर्भवती आर्यिकाके साथ रहने लगा। महाराज श्रेणिक वहा आये। उन्हें देख जल्दी घोड़ेसे उतर और भक्तिपूर्वक उन्है नमस्कारभी कर कहने लगे—

समस्त मनुष्योंका हास्यास्पद यह दुष्कर्म आप क्या कर रहे है ? इस वेषमें यह दुष्कर्म आपको सर्वथा वर्जनीय है। श्रेणिकके ऐसे वचन सुन मायावी उस देवने जवाब दिया—

राजन्! गर्भवती इस आर्यिकाको मछलीके मांस खानेकी अभिलाषा हुई है इसलिये इसीके लिये मैं मछलियां पकड़ रहा हूं। इस कर्मसे मुझै, कोई दोष नहिं लग सकता। देवकी यह बात सुन श्रेणिकने कहा—

मुनिवेष धारणकर यह कर्म आपके लिये सर्वथा अयोग्य है। इसमें मुनिलिंगकी बड़ी भारी निंदा है। आपको चाहिये कि इस कामको आप सर्वथा छोड़दें। देवने कहा—

राजन्। तुम्हीं कहो इस समय हमै क्या करना चाहिये ! मेरा अनायासही इस निर्जन वनमें इस आर्यिकाके साथ संबंध हो गया इसलिये इसै गर्मोत्पत्ति और मासाभिलाषा हो गई। मै इसै अब चाहता हूं इसलिये मेरा कर्तव्य है मै इसकी इच्छायें पूरण करुं। छली मुनिकी यह बात सुन राजाने कहा—

तथापि मुने ! इस वेषमें तुम्हारा यह कर्तव्य सर्वथा अयोग्य है। आपको कदापि यह काम नहिं करना चाहिये। राजाके ऐसे वचन सुन देवने कहा--

राजन् ! आप क्या विचार कर रहे है ? जितने मुनि और आर्यिकाओंको आप देख रहे हैं वे सब मेरेही समान शुभ कार्यसे विमुख हैं। निर्दोष कोई नहिं। महाराज ! जिसकी अंगुली दबती है उसे ही वेदना होती है। अन्य मनुष्य वेदनाका अनुभव नहिं कर सकते वे तो हंसते है उसी प्रकार आप हमै देखकर हंसते हैं। देवकी यह बात सुन श्रेणिकको कुछ क्रोधसा आगया। वे कहने लगे—

मुने ! तू मुनि नहिं है बड़ा निकृष्ट दयारहित चारित्र-विमुख और मूर्ख है। तेरे सम्यग्दर्शन भी नहिं मालूम होता। श्रेणिकके ऐसे वचन सुन देवने जवाब दिया—

राजन् ! जो मैने कहा है सो बिलकुल ठीक कहा है। क्या तेरा यह कर्तव्य है कि तू परम योगियोंको गाली प्रदान करै ? हमने समझ लिया कि तुझमें जैनीपना नाम मात्रका है। यतियोंको मर्मविदारक गाली देनेसे जैनीपनेका तुझमें कोई गुण नहिं दीख पड़ता। देवके ऐसे वचन सुन महाराजने कहा—

मुने ! संवेगादि गुणोंके अभावसे तो तेरे सम्यग्दर्शन नहिं है और दया विना चारित्र नहि है। ऐसे दुष्कर्म करनेसे तू बुद्धिमान भी नहिं नीतिमान योगी और शास्त्रवेत्ता भी नहिं। साधो ! यदि तू

ऐसा करैगा तो जैनधर्मकी प्रभावनाका नाश हो जायगा। इसलिये तेरा यह कर्तव्य सर्वथा अनुचित है। यदि तू नहिं मानता तो तुझै नियमसे इस दुष्कर्मका फल भोगना पड़ेगा। मुने! जो तुमने मुझसे दुष्टवचन कहे हैं उनसे तुम कदापि मुनि नहिं हो सकते इसलिये तुम शीघ्रही दुष्कर्मका त्याग करो जिससे तुम्है मुक्ति मिले। अभी तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारी सब आशा पूरी करूंगा। और यदि तुम मेरे साथ न चलोगे तो तुम्हैं गधेपर चढ़ाकर तुम्हारा हालबेहाल करूंगा। इसप्रकार साम्य आदि वचनोंसे मूनिको समाश्वासन दे राजा श्रेणिक उन दोंनोंको घर ले आये और अपने मंदिरमें लाकर ठहराया। जिस समय मंत्रियोंने राजा श्रेणिकको चारित्रभ्रष्ट मुनि और आर्यिकाके साथ देखा तो वे कहने लगे—

राजन्! आप क्षायिक सम्यग्दृष्टि है आपके संग चारित्रभ्रष्ट इस मुनि आर्यिका युगलके साथ कदापि योग्य नहिं हो सकता। आपको इनका संबंध शीघ्र ही छोड़ देना योग्य है। चारित्रभ्रष्ट मुनि आर्यिकाके नमस्कार करनेसे आपके दर्शनमें अतिचार आता है। मंत्रियोंके ऐसे वचन सुन महाराज श्रेणिकने जवाब दिया—

वेषधारी इस मुनिको मैंने वास्तविक मुनि जान नमस्कार किया है इससे मेरे दर्शनमें कदापि अतिचार नहिं आ सकता किंतु चारित्रमें अतिचार आता है सो चारित्र मेरे नहिं है इस-

लिये इनको नमस्कार करनेपर भी कोई दोष नहिं। महाराज श्रेणिकका ऐसा पांडित्य देख और इंद्रद्वारा की हुई प्रशंसाको वास्तविक प्रशंसा जान वे दोनों देव अति आनंदित हुए। अपना रूप वदल उन्होंने शीघ्रही आनंदपूर्वक रानी चेलना और महाराज श्रेणिकके चरणोंको नमस्कार किया। सुवर्ण सिंहासनपर बैठाकर दोनों देवोंने भक्तिपूर्वक गंगा सीता आदि नदियोंके निर्मल जलसे राजा रानीको स्नान कराया वस्त्र भूषण फूलोंसे प्रशंसापूर्वक उनकी पूजा की। अनेक अन्यान्य गुण और सम्यग्दर्शनसे शोभित उन दोनों दंपतीको नमस्कार कर आका-शमें पुष्पवर्षाके साथ वाद्यनादोंको कर अतिशय हर्षित और राजा रानीके गुणोंमें दत्तचित्त वे दोनों देव कीर्तिभाजन बने। सो ठीक ही है सम्यग्दर्शनकी कृपासे सम्यग्दृष्टियोंकी बड़े२ देव परमसंतोष देनेवाली पूजन करते हैं और संसारमें सम्यग्दर्श-नकी कृपासे इन्द्रोंद्वारा प्रशंसा भी मिलती है।

इस प्रकार पद्मनाभ तीर्थंकरके पूर्वभवके जीव
महाराज श्रेणिकके चरित्रमें देवद्वारा
अतिशयप्राप्तिवर्णन करने-
वाला तेरहवां सर्ग
समाप्त हुवा।

चौदहवां सर्ग।

कदाचित् महाराज सानंद सभामें विराजमान थे। समस्त भयोंसे रहित संसारकी वास्तविक स्थिति जाननेवाले कुमार अभय सभामें आये। उन्होंने भक्तिपूर्वक महाराजको नमस्कार किया और सर्वज्ञभाषित अनेक भेदप्रभेदयुक्त वह समस्त सभ्योंके सामने वास्तविक तत्त्वोंका उपदेश करने लगा। तत्त्वोंका व्याख्यान करते २ जब सब लोगोंकी दृष्टि तत्त्वोंकी ओर झुक गई है तो वह अवसर पाकर अपनी पूर्व भवावलीके स्मरणसे चित्तमें अतिशय खिन्न हो अपने पितासे कहने लगा—

पूज्यपिता! इस संसारसे अनेक पुरुष चले गये। युगकी आदिमें ऋषभ आदि तीर्थंकर भरत आदि चक्रवर्ती भी कूंच करगये। कृपानाथ! यह संसार एक प्रकारका विशाल समुद्र है क्योंकि समुद्रमें जैसी मछलियां रहती है संसाररुपी समुद्रमें भी जन्मरुपी मछलियां है। समुद्रमें जैसे भमर पड़ते हैं संसाररुपी समुद्रमें भी दुःखरुपी भमर है। समुद्रमें जैसी कल्लोलें होती है। संसारसमुद्रमें भी जरारुपी तीव्र कल्लोलें मोजूद है। समुद्रमें जिस प्रकार कीचड होती है संसाररुपी समुद्रमें भी पापरुपी कीचड़ है। जैसा समुद्र तटोंसे भयंकर होता है उसी प्रकार संसाररुपी समुद्र भी मृत्युरुपी तटसे भयंकर है। समुद्रमें जैसा वड़वानल होता है संसारसमुद्रमें भी चतुर्गतिरुप वड़वानल है।

समुद्रमें जैसे कछुवे होते है संसारसमुद्रमें भी बेदनारुपी कछुवे मोजूद है। समुद्रमें जैसे वालूके ढ़ेर होते हैं संसारसमुद्रमें भी दरिद्रतारुपी वालूके ढ़ेर मोजूद हैं। एवं समुद्र जैसा अनेक नदियोंके प्रवाहोंसे पूर्ण रहता है संसार भी उसी प्रकार अनेक प्रकारके आस्रवोंसे पूर्ण है। महनीयपिता! विना धर्मरुपी जहाजके इस संसारसे पार करनेवाला कोई नहिं। यह देह सप्तधातुमय है। नाक आंख आदि नौ द्वारोंसे सदा मल निकलता रहता है। यह पापकर्ममय पापका उत्पादक और कल्याणका निवारक है। ऐसा कोंन बुद्धिमान होगा जो इंद्रियोंके समूहसे देदीप्यमान, मनके व्यापारस परिपूर्ण, विष्टा आदि मलोंसे मंडित इस शरीरमें प्रीति करेगा? पूज्यपिता! ज्यों २ इन भोगोंका भोग और सेवन किया जाता है त्यों २ ये तृप्तिको तो नहिं करते किंतु घीकी आहुतिसे जैसी अग्नि प्रवृद्ध होती चली जाती है वैसे ही प्रवृद्ध होते जाते है। काष्टसे जैसी अग्निकी तृप्ति नहिं होती उसी प्रकार जिन मनुष्योंकी तृप्ति स्वर्गभोग भोगनेसे भी नहिं हुई है उन मनुष्योंकी तृप्ति थोड़ेसे स्त्रियोंके संपर्कसे कैसे हो सकती है? संसारको इसप्रकार क्षणभंगुर समझ पूज्यपिता! मुझपर प्रसन्न होजिये और मनुष्योंको अनेक कल्याण देनेवाली तपस्याके लिये आज्ञा दीजिये। पूज्यपाद! आपकी कृपासे आजतक मै राज्य संबंधी सुख और स्त्रीजन्य सुख खूब भोगचुका। अब मै इससे विमुख होना चाहता हूं।

पुत्रके ऐसे वचन सुन राजा श्रेणिकने अपने कान बंद कर लिये। उनके चित्तपर भारी आघात पहुंचा मूर्छित हो वे शीघ्रही जमीन पर गिरगये और उनकी चेतना थोड़ी देरके लिये एक ओर किनारा कर गई। महाराज श्रेणिककी ऐसी विचेष्टा देख उन्हें शीघ्र सचेतन किया गया। जब वे बिलकुल होशमें आ गये तो कहने लगे—

प्रिय पुत्र! तूने यह क्या कहा? तेरा यह कथन मुझे अनेक भय प्रदान करनेवाला है। तेरे विना नियमसे यह समस्त राज्य शून्य हो जायगा। मैं राज्य करूं और तू तप करै यह सर्वथा अयोग्य है। जिनभगवानके समीप जाकर तुझे चौथे-पनमें तप धारण करना चाहिये इस समय तेरी उम्र निहायत छोटी है। कहां तो तेरा रूप? कहां तेरा सौभाग्य? राज्य-योग्य तेरी क्रीड़ा कहां? कहा तेरा लावण्य तथा कहां तेरी युक्तियुक्त वाणी और कोमल देह? तेरी बुद्धि इस समय असाधारण है। बलवा-नपना वीरता वीर मान्यता जैसी तुझमें है वैसी किसीमें नहिं। प्रिय पुत्र! अनेक राजा और सामंतोंसे सेवनीय पुण्यवानों द्वारा प्राप्त करने योग्य यह राज्यभार तुम ग्रहण करो और तपका हठ छोड़ो। पिताके ऐसे मोह परिपूर्ण वचन सुन अभय-कुमारने कहा—

पूज्य पिता! संसारमें जितनेभर उत्तमोत्तम सुख मिलते हैं वे तपकी कृपासे मिलते है ऐसा बड़े२ पुरुषोंका कथन है।

आपने जो यह कहा कि तप चौथेपनमें धारण करना चाहिये सौ चौथेपनमें शरीर तपके योग्य रहता ही कहां है? उस समय तो शरीर मंद पड़ जाता है। इंद्रियां भी शिथिल पड़ जाती हैं। इसलिये स्वस्थ अवस्थामें ही तप महापुरुषोंद्वारा योग्य माना गया है। महनीयपिता! रूप लावण्य आदि क्षणिक हैं निस्सार है। गृहादिकमें संलग्न जो बुद्धि है सो मिथ्याबुद्धि है और असार है। कृपानाथ! यह राज्य भी विनाशीक है मैं कदापि इस राज्यको स्वीकार न करूंगा किंतु समस्तपापोंसे रहित मैं निश्चल तप धारण करूंगा। मैने अनेकवार इस राज्यका भोग किया है। मेरे सामने यह राज्य अपूर्व नहिं हो सकता। अक्षय-सुख मोक्षसुख ही मेरे लिये अपूर्व है। पूज्यवर! मैने आपकी आज्ञाका भी अच्छी तरह पालन किया है। अब मै भविष्यत् कालमें आपकी आज्ञा पालन न कर सकूंगा इसलिये आप कृपाकर मुझे तपके लिये आज्ञा प्रदान करें। पुत्रको तपके लिये उद्यमी देख महाराज श्रेणिकके मुखसे अविरल अश्रुधारा वहने लगी। तथापि अभयकुमार उन्हे अच्छीतरह समझा-कर अपनी माताको भी संबोध कर और अतिशय मनोहरांगी अपनी प्रिय स्त्रियोंको भी समझा कर शीघ्रही घरसे निकले और राजा आदिके रोकेजानेपर गजकुमार आदिके साथ हाथी पर सवार हो विपुलाचलकी ओर चलदिये।

उस समय विपुलाचलपर महावीर भगवानका समवसरण बिराजमान था इसलिये ज्योंही अभयकुमार विपुलाचलके पास

पहुचें उन्होंने राजचिन्ह छोड़ दिये गजसे उतर शीघ्रही समवसरणमें प्रवेश किया। समवसरणमें बिराजमान महावीरभगवानको देख तीन प्रदक्षिणा दीं पूजन नमस्कार और स्तुति की। गौतम गणधरको भी प्रणाम किया और दीक्षार्थ प्रार्थना की। वस्त्रभूषण आदिका त्यागकर बहुतसे कुटुंबियों के साथ शीघ्रही परम तप धारण किया। तेरह प्रकारका चारित्र पालने लगे एवं ध्यानैकतान मुक्तिके अभिलाषी वे परमपदकी आराधना करने लगे। जो अभयकुमार आदि महापुरुष अनेक कोमल २ वस्त्रों से शोभित हसोंके समान स्वच्छ रुईसे बने मनोहर पलिंगोंपर सोते थे वेहीं अब ककरीली जमीनपर सोने लगे। जो शीतकालमें मनोहर २ महलोंमें कामविह्वला रमणियोंके साथ सानंद शयन करनेवाले थे वे चौतर्फा अतिशय शीतल पवनसे व्याप्त नदीके तीरोंपर सोते हैं। ग्रीष्मकालमें जो शरीरपर हरिचंदनका लेप करा फुवारासहित महलोंके रहनेवाले थे वेही अब अतिशय तीक्ष्ण सूर्यके आतापको झेलते हुए पर्वतोंकी शिखरोंपर निवास करते है। जो उत्तमपुरुष वर्षाकालमें, जहां किसी प्रकारके जलका सचार नहि ऐसे उत्तमोत्तम घरोंमें रहते थे उन्हें अब जलसे व्याप्त वृक्षोंके नीचे रहना पड़ता है। पतले किंतु उत्तम चीनी वस्त्रोंसे सदा जिनके शरीर ढके रहते वेहीं अब चोहटोंमें वस्त्ररहित हो सानंद रहते है। जो चित्रविचित्र रत्नोंसे जड़ित सुवर्णपात्रोंमें भोजन करते थे उन्हें अब साछिद्र

पाणिपात्रोंमें भोजन करना पड़ता है। जो भांति २ के पके अन्न और खीर आदि पदार्थोंका भोजन करते थे उन्हें अब पारणामें तेलयुक्त कोदों कंगु आदि पदार्थ खाने पड़ते हैं। जो हाथी घोड़े आदि सवारियोंपर सवार हो जहांतहां घूमते थे वेही अब कंटकाकीर्ण जमीनपर चलते हैं। जो सात२ ड्योढ़ीयुक्त माणि-जड़ित महलोंमें सोते थे वेही अब अनेक सर्पोंसे व्याप्त पहाड़ों की गुफामें सोते हैं। राज्यावस्थामें जिनकी प्रशंसा पराक्रमी और महामानी बड़े २ राजा करते थे उनकी प्रशंसा अब चारित्रसे पवित्र निरभिमानी बड़े २ मुनिराज करते है। राज्य अवस्थामें जो रतिजन्य सुखका आस्वादन करते थे वेही अब विषयातीत नित्य ध्यानजन्य सुखका आस्वादन करते हैं। जो राजमंदिरमें कामिनियोंके मुखसे उत्तमोत्तम गायन सुनते थे उन्हें अब श्मसानभूमिमें मृग और शृगालोंके भयंकर शब्द सुनने पड़ते हैं। राजघरमें जो पुत्रनातियोंके साथ खेल खेलते थे अब वे निर्भय किंतु विश्वस्त मृगोंके साथ खेल खेलते रहते हैं। इसप्रकार चिरकालतक घोरतप तपकर परीषह जीतकर और घातियाकर्मोंका विध्वंसकर शुक्लध्यानके प्रभावसे मुनिवर अभयकुमारने केवलज्ञान प्राप्त कर लिया एवं केवलज्ञानकी कृपासे संसारके समस्त पदार्थ जानकर भूमंडलपर बहुतकालतक विहार कर अचिंत्य अव्याबाध मोक्षसुख पाया। इनसे अन्य और जितने योगी थे वे भी अपने२ कर्मविपाकके अनुसार स्वर्ग आदि उत्तमोत्तम गतियोंमें गये।

तीनों लोकमें यशस्वी अतिशय संतुष्ट जैनधर्मके आराधक नीतिपूर्वक प्रजाकेपालक महाराज आनंदपूर्वक राजगृहीमें रहने लगे। उनका पुत्र वारिषेण अतिशय बुद्धिमान, मनोहर, जैनधर्ममें रति करनेवाला, एवं व्रतरूपी भूषणसे भूषित था। कदाचित् राजकुमार वारिषेणने चतुर्दशीका उपवास किया। इधर यह तो रात्रिमें किसी वनमें जाकर कायोत्सर्ग धारण कर ध्यान करने लगा और उधर किसी वेश्याने सेठि श्रीकीर्तिकी सेठानीके गलेमें पड़ा अतिशय देदीप्यमान सुंदर हार देखा और हार देखते ही वह विचारने लगी—

इस दिव्य हारके विना संसारमें मेरा जीवन विफल है तथा ऐसा विचार शीघ्रही उदास हो अपने शयनागारमें खाटपर गिर पड़ी। एक विद्युत नामका चोर जो उसका आशक्त था रात्रिमें वेश्याके पास आया। उसने कईवार वेश्यासे वचनालाप करना चाहा वेश्याने जवाब तक न दिया किंतु जब वह चोर विशेष अनुनय करने लगा तो वह कहने लगी—

प्रिय वल्लभ! मैने सेठि श्रीकीर्तिकी सेठानीके गलेमें हार देखा है। मैं उसे चाहती हूं। यदि मुझे हार न मिला तो मेरा जीवन निष्फल है और तुम्हारे साथ दोस्ती भी किसी कामकी नहिं। वेश्याकी ऐसी रुखी वात सुन

चोर शीघ्रही चला तथा सेठि श्रीकीर्तिके घर जाकर और हार चुराकर अपनी चतुरतासे बाहर निकल आया। हार बड़ा चमकदार था इसलिये चोर ज्योंही सड़क पर आया और ज्योंही कोतवालने हारका प्रकाश देखा लेजानेवालेको चोर समझ शीघ्रही उसके पीछे धावा किया। चोरको और कोई रास्ता न सूझा वह शीघ्रही भगता२ श्मसान भूमिमें घुस गया। जब वह श्मसानभूमिमें घुसा तो उसै आगेको वहां कोई रास्ता न दिखा इसलिये उसने शीघ्रही कुमार वारिषेणके गलेमें हार डाल दिया और आप एक ओर छिप गया। हारकी चमकसे कोतवाल भगता२ कुमारके पास आया। कुमारको हार पहिने देख शीघ्रही दौड़ता२ राजाके पास पहुंचा और कहने लगा—

राजन्! यदि आपका पुत्र ही चोरी करता है तो चोरी करनेसे दूसरोंको कैसे रोका जा सकता है? राजकुमारका चोरी करना उसी प्रकार है जैसा वाड़द्वारा खेतका खाना। कोतवालकी बात सुन इधर महाराजने तो श्मसानभूमिकी ओर गमन किया और उधर कुमार वारिषेणके व्रतके प्रभावसे हार फूलकी माला बन गया। ज्योंही महाराजने यह दैवी अतिशय सुना तो वे कोतवालकी निंदा करने लगे और कुमारके पास क्षमा कराना चाहा। विद्युतचोर भी यह सब दृश्य देख रहा था उससे ये बातें न देखी गईं। वह शीघ्रही महाराजके सन्मुख

आया। तथा महाराजसे अभयदानकी प्रार्थना कर और अपना स्वरुप प्रकट कर जो कुछ सच्चा हाल था सारा कह सुनाया। जब महाराजने चोरके मुखसे सब समाचार सुनलिया तो उन्होंने कुमार वारिषेणसे घर चलनेके लिये कहा किंतु कुमारने कहा—

पूज्यपिता! मै पाणिपात्रमें भोजन करुंगा—दिगंबर व्रत धारण करुंगा। यह व्रत मैंने लेलिया है अब मैं घर जा नहिं सकता। महाराज आदिने दीक्षासे कुमारको बहुत रोका किंतु उन्होंने एक न मानी। वे सीधे सूर्यदेव मुनिराजके पास चलेगये और केशलुंचन कर दीक्षा धारण करली। एवं अष्ट अंग सहित सम्यग्दर्शनके धारक बड़े २ देवोंद्वारा पूजित वारिषेणमुनि तेरह प्रकारके चारित्रका पालन करने लगे। वारिषेण मुनिराजके व्रतरहित पुष्पडाल आदि अनेक शिष्य थे उन्हें उपदेश शुभाचार और चातुर्यसे सन्मार्गमें प्रतिष्ठित किया। बहुतकाल पर्यंत भूमंडलपर विहार किया। अनेक जीवोंको संबोधा। आयुके अंतमें रत्नत्रययुक्त हो सन्यास धारण किया भलेप्रकार आराधना आराधीं। एवं समाधिपूर्वक अपना प्राण त्यागकर मुनिवारिषेणका जीव अनेक देवियोंसे व्याप्त महान ऋद्धिका धारक देव हो गया।

किसीसमय धर्मसेवनार्थ चिंताविनाशार्थ और सुख-पूर्वक स्थितिके लिये पूर्वजन्मके मोहसे महाराजने समस्त

भूपोंको इकट्ठा किया और उनकी सम्मतिपूर्वक बड़े समारो-हके साथ अपना विशाल राज्य युवराज कुणकको दे दिया। अब पूर्वपुण्यके उदयसे युवराज कुणक महाराज कहे जाने लगे। वे नीतिपूर्वक प्रजाका पालन करने लगे और समस्त पृथ्वी उन्होंने चौरादिभय विवर्जित कर दी।

कदाचित् महाराज कुणक सानंद राज्य कररहे थे अकस्मात् उन्हें पूर्वभवके वैरका स्मरण हो आया। महाराज श्रेणिकको अपना वेरी समझ पापी हिंसक महा अभिमानी दुष्ट कुणकने मुनिकंठमें निक्षिप्त सर्पजन्यपापके उदयसे शीघ्रही उन्हें काठके पींजरेमें बंद करदिया। महाराज श्रेणिकके साथ कुणकका ऐसा वर्ताव देख रानी चेलनाने उसे बहुत रोका किंतु उस दुष्टने एक न मानी उल्टा वह मूर्ख गालि और मर्मभेदी दुर्वाक्य कहने लगा। खानेकेलिये महाराजको वह रुखासूखा कोदोंका अन्न देने लगा और प्रतिदिन भोजन देते समय अनेक कुवचन भी कहने लगा। महाराज श्रेणिक चुपचाप कीलोंयुक्त पींजरेमें पड़े रहते और कर्मके वास्तविक स्वरुपको जानते हुऐ पापके फलपर विचार करते रहते थे।

किसी समय दुष्टात्मा पापी राजा कुणक अपने लोकपाल नामक पुत्रके साथ सानंद भोजन कररहाथा। बालकने राजाके भोजनपात्रमें पेशाब करदिया। राजाने बालकके पेशाबकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया वह पुत्रके मोहसे सानंद भोजन करने लगा और उसी समय उसने अपनी मातासे कहा—

माता ! मेरे समान पुत्रका मोही इस पृथ्वीतलमें कोई नहिं, यदि है तो तू कह ! माताने जवाब दिया—

राजन् ! तेरा पुत्रमें क्या अधिक मोह है ? सबका मोह तीनोंलोकमें बालकों पर ऐसा ही होता है। देख ! ! ! यद्यपि तेरे पिताके अभयकुमार आदि अनेक उत्तमोत्तम पुत्र थे तोभी बाल्य अवस्थामें पिताका प्यारा और मान्य तू था वैसा कोई नहिं था। प्यारे पुत्र ! तेरे पिताका तुझमें कितना अधिक स्नेह था ? सुन, मैं तुझे सुनाती हूं—

एक समय तेरी अंगुलीमें बड़ाभारी घाव होगया था उसमें पीव पड़ गया था। बहुत दुर्गंध आती थी जिससे तुझै बहुत पीड़ा थी। घावके अच्छे करनेके लिये बहुतसी दवाइयां कर छोड़ी तोभी तेरी वेदना शांत न हुई। उस तेरे मोहसे तेरे पिताने तेरे मुखमें अंगुली देदी और तेरी सब पीड़ा दूर करदी। माता चेलनाकी यह बात सुन दुष्ट कुणकने जवाब दिया—

माता ! यदि पिताका मुझमें मोह अधिक था तो जिस समय मैं पैदा हुआ था उससमय पिताने मुझै निर्जनवनमें क्यों फिकवा दिया था ? माताने जवाब दिया—

प्रिय पुत्र ! तू निश्चय समझ तेरे पिताने तुझै वनमें नहिं फिकवाया था किंतु तेरी भृकुटी भयंकर देख मैंने फिकवाया,

था। तेरा पिता तो तुझै वनसे लेआया, राजा बनानेके लिये सानंद तेरा पालनपोषण किया था। यदि तेरा पिता ऐसा काम न करता तो तुझै राज्य क्यों देता? पुत्र, तेरे पिताका तुझमें बड़ा स्नेह बड़ा मोह और बड़ी भारी प्रीति थी। तुझसे वे अनेक आशा भी रखते थे इसमें जराभी झूठ नहिं। जैसी वेदनां इससमय तू अपने पिताको दे रहा है 'याद रख' तेरा पुत्र भी तुझै वेसी ही वेदना देगा। खेतमें जैसा बीज बोया जाता है वैसा ही फल.काटा जाता है उसी प्रकार जैसा काम किया जाता है फलभी उसीके अनुसार भोगना पड़ता है।

राजन्! जिसने तुझै राज्य दिया, जन्म दिया और विशेषतया पढ़ा लिखाकर तैयार किया, क्या उस पूज्यपादके साथ तेरा यह क्रूर वर्ताव प्रशंसनीय हो सकता है? अरे! जो मनुष्य उत्तम है वे अपने पिताकी पूज्य समझ भक्तिपूर्वक पूजा करते हैं। पितासे भी अधिक राज्य देनेवालेको और उससें भी अधिक विद्या प्रदान करनेवालेको पूजते है। तू यह निकृष्ट काम क्या कररहा है? जो उपकारका आदर करनेवाला है सज्जन लोग जब उसका भी उपकार करते हैं तो उपकार करनेवालेका तो वे अवश्य ही उपकार करते है। जो मनुष्य पर उपकारको नहिं मानते है वे नराधम कहलाते है और वे नियमसे नर्क जाते है। राजन्! जो किये उपकारका लोप करनेवाले हैं वे संसारमें कृतघ्न कहलाते है। किंतु जो कृत उपकारको

माननेवाले हैं वे कृतज्ञ कहे जाते है और सबलोग उनकी मुक्तकंठसे प्रशंसा करते है। प्यारे पुत्र ! पिता आदिका बंधन पुत्रके लिये सर्वथा अनुचित है महापापका करनेवाला है इसलिये तू अभी जा और अपने पिताको बंधन रहित कर। माताद्वारा इस प्रकार संबोध पा राजा कुणक मनमें अति खिन्न हुए। अपने दुष्कर्मकी वार२ निंदा कर वे ऐसा विचारने लगे–

हाय ! मुझ पापात्माने बड़ा निंद्यकाम करपाड़ा। हाय ! अब मै इस महापापसे कैसे छुटकारा पाऊंगा? अनेक हित करनेवाले पूज्यपिताको मैं अभी जाकर छुड़ाता हूं। इस-प्रकार क्षण एक अपने मनमें विचार कर राजा कुणक महाराजको बंधनमुक्त करने चल दिये। ज्योंही राजा कुणक कठेरेके पास पहुचे और ज्योंही क्रूरमूख राजा कुणकको महाराजने देखा देखते ही उनके मनमें यह विचार उठखड़ा—

यह दुष्ट अभी पीड़ा देकर गया है अब यह क्या करना चाहता है जिससे मेरी ओर आरहा है ! पहिले यह मुझे बहुत संताप दे चुका है अब भी यह मुझे अधिक संताप देगा। हाय ! इस निर्दयीद्वारा दिया दुःख अब मै सहार नहिं सकता। पस, इसप्रकार अपने मनमें अतिशय दुःखी हो शीघ्रही तलवारकी धारपर शिर मारा। तत्काल उनके प्राण-पखेरु घर उड़े और प्रथम नर्कमें पहुंच गये। पिताको असिधारापर प्राणरहित देख राजा कुणकके होश उड़ गये।

उस समय उन्हें और कुछ न सुझा। वे चेलना और अंतःपुरके साथ बेहोश हो करुणाजनक इसप्रकार रोदन करने लगे—

हा नाथ! हा कृपाधीश! हा स्वामिन्! हा महामते! हा विनाकारण समस्त जगतके बंधु! हा प्रजाधीश! हा शुभ! हा तात! हा गुणमंदिर! हा मित्र! हा शुभाकार! हा ज्ञानिन्! यह तुमने विना समझे क्या करपाड़ा? आप ज्ञानी थे। आपको ऐसा करना सर्वथा अनुचित था। महाराजकी मृत्युसे नंदश्री और रानी चेलनाको परमदुःख हुआ। उनकी आंखोंसे अविरल अश्रुधारा वह निकली। उन्होंने शीघ्रही अपने केश उपाट दिये छाती कूटने लगी। हार तोड़ दिये। हाथके कंकण तोडकर फेंक दिये। हाहाकार करती जमीनपर गिरगई और मूर्छित होगई। शीतोपचारसे बड़े कष्टसे रानीको होशमें लाया गया। ज्योंही रानी होशमें आई तो उसै और भी अधिक दुःख हुआ। वह पति विना चारों ओर अपना पराभव देख वह इसप्रकार विलाप करने लगी—

हा प्राणवल्लभ! हा नाथ! हा प्रिय! हा कांत! हा दयाधीश! हा देव! हा शुभाकार! हा मनुष्येश्वर! मुझ पापिनीको छोड़ आप कहां चले गये? हाय! मैं अशरण निराधार आपने कैसे छोड़ दी? रनवासके इसप्रकार रोनेपर समस्त पुरवासी जन और स्त्रियां भी असीम रोदन करने लगीं। पश्चात् राजा कुणकने महाराजका संस्कार किया। रानी चेलना-

द्वारा रोके जानेपर भी मिथ्यादृष्टि राजा कुणकने " महाराज सीधे मोक्ष जावे " इस अभिलाषासे सर्वथा व्रतरहित ब्राह्मणोंके लिये गौ हाथी घोड़ा घर जमीन धन आदिका दान दिया और भी अनेक विपरीत क्रिया कीं।

कदाचित् रानीचेलना सानंद बैठी थी अकस्मात् उसके चित्तमें ये विचार उठ खड़े—कि यह संसार सर्वथा असार है तथा संसारसे सर्वथा भयाभित हो वह इसप्रकार सोचने लगा—

संसारमें न तो पिताका स्नेह पुत्रमें है और न पुत्रका स्नेह पितामें है। समस्त जीव स्वेच्छाचारी हैं और जबतक स्वार्थ रहता है तभीतक आपसमें स्नेह करते है। संसारमें संपत्ति यौवन और ऐंद्रियक सुख भी अस्थिर है। भोग ज्यों२ भोगे जाते है उनसे तृप्ति तो बिलकुल नहिं होती किंतु काष्टसे अग्निज्वाला जैसी बढ़ती चली जाती है उसीप्रकार भोग भोगनसे और भी अभिलाषा बढती ही चली जाती है। कदाचित् तैलसे अग्निकी और जलसे समुद्रकी तृप्ति हो जाय किंतु इंद्रियभोग भोगनेसे मनुष्यकी कदापि तृप्ति नहिं हो सकती। अनेक बड़े२ पुरुष पहिले धनपरिवारका त्यागकर गये। अब जा रहे हैं और जांयगे। मै केवल पुत्रके मोहसे मोहित हो घरमें कैसे रहूं ? विषयभोगसे जीव निरंतर पापका उपार्जन करते रहते हैं और उस पापकी कृपासे उन्हें नियमसे नर्क जाना पड़ता हैं। हजार कंटकोंके धारक प्राणी के स्पर्शसे

जैसा दुःख होता है उससे भी अधिक जीवोंको नरकमें दुःख भोगना पड़ता है। संसारमें जो स्त्रियाँ दूसरे मनुष्योंकी अभिलाषा करती हैं नियमसे उन्हें पूर्वपापोदयसे लोहेकी तप्त पुतलियोंसे चिपकाया जाता है। जो मनुष्य परस्त्रियोंके साथ विषय भोगते हैं उन्हें नरकमें स्त्रीके आकारकी तप्त पुतलियोंके साथ आलिंगन कराया जाता है। जो मूर्ख यहां शराब गटकते हैं हाहाकार करते हुऐ भी उन मनुष्योंको जबरन लोह पिघलाकर पिलाया जाता है। जो यहां विना छने जलमें स्नान करते है नारकी उन्हें तप्ततेलकी भरीं कढ़ाइयोंमें जबरन स्नान कराते हैं। जो पापी मोहवश यहां परस्त्रियोंके स्तनमर्दन करते है नारकी उन्हें मर्मघाती अनेक शास्त्रोंसे पीड़ा देते हैं। नरकोंमें अनेक नारकी आपसमें लड़ते है। अनेक पैने हथियारोंसे और नखोंसे छिन्नभिन्न होते हैं। अनेक अग्निमें डालकर मारे जाते है। और आपसमें अनेक पीड़ा सहते है। नरकमें रातदिन भवनवासी देव भिड़ाते है इसलिये एक नारकी दूसरे नारकीको आपसमें बुरी तरह मारता है। मुष्टियोंसे पीस देता है। इसरीतिसे नारकी सदा पूर्व पापोदयसे नरकोंमें दुःख भोगते रहते है। नरकमें जीवितपर्यंत क्षणभर भी सुख नहिं मिलता किंतु तीव्र दुःखका ही सामना करना पड़ता है। तिर्यंचोंमें भी हमेशह वात ठंडी घामका दुःख रहता है। बिचारे तिर्यंचों पर अधिक बोझ लादा जाता है। उन्हें भूंखप्याससे वंचित रक्खा जाता है जिससे तिर्यंचोंको असह्य वेदना भोगनी पड़ती

हैं। आपसमें भी तिर्यंच एक दूसरेको दुःख दिया करते हैं। मनुष्योंद्वाराभी वे अनेक दुःख भोगते हैं। एवं जब एक बलवान तिर्यंच दूसरे निर्बलें तिर्यंचको पकड़कर खाजाता है तब भी उन्हें अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। मनुष्यभवमें भी जब मनुष्योंके माता पिता पुत्र मित्र मरजाते हैं उस समय उन्हे अधिक दुःख होता है। धनाभाव दरिद्रता सेवा आदिसे भी अनेक दुःख भोगने पड़ते हैं। देवगतिमें भी अनेक प्रकारके मानसिक दुःख होते है। मरणकालमें भी माला सुखजानेसे और देवांगनाके वियोगसे भी देवोंको अनेक दुःख भोगने पड़ते है। दुष्ट देवोंद्वारा भी अनेक दुःख सहने पड़ते हैं।

इस प्रकार सर्वथा दुःखप्रद चतुर्गतिरूप संसारमें चारों ओर दुःख ही दुःख भरा हुआ है। रंचमात्र भी सुख नहिं। इस रीतिसे चिरकाल पर्यंत विचारकर रानी चेलना भवभोगोंसे सर्वथा विरक्त हो गई और शीघ्रही भगवान महावीरके समव-सरणकी ओर चलदी। समवसरणमें जाकर रानीने तीन प्रद-क्षिणा दीं, भक्तिपूर्वक पूजा और स्तुति की और यति धर्मका व्याख्यान सुना पश्चात् चंदना नामकी आर्यिकाके पास गई। अपनी सासुको भक्तिपूर्वक नमस्कार कर अनेक रानियोंके साथ शीघ्रही संयम धारण करलिया। चिरकाल तक तप किया। आयुके अंतमें सन्यास लेकर और ध्यानबलसे प्राण परित्याग कर निर्मल सम्यग्दर्शनकी कृपासे स्त्रीवेदका त्याग किया और

महान ऋद्धिकाधारक अनेक देवोंसे पूजित देव हो गया। स्वर्गके अनेक सुख भोग भविष्यत कालमें चेलनाका जीव नियमसे मोक्ष जायगा। रानी चेलनाके सिवाय और जितनी रानियां थी वे भी तपकर और प्राणोंका परित्याग कर यथा-योग्य स्थान गईं। इस प्रकार चेलना आदि रानियां समस्त पापोंका नाश कर और पुंवेद पाकर स्वर्ग गईं। और वहां देव हो अनेक मनोहर देवांगनाओंके साथ क्रीड़ाकर भोगभोगने लगीं। महाराज श्रेणिक भी सप्तम नरककी प्रबल आयुका नाशकर रत्नप्रभानामक प्रथम नरकमें गये। तथा वहां पापफलका विचार करते हुए और अपनी निंदा करते हुए रहने लगे। अब वे चौरासी हजार वर्ष नरकदुःख भोगकर और वहांकी आयुको छेदकर भविष्यतकालमें तीर्थंकर होंगे और कर्म नाश सिद्धपद प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार तीर्थंकर पद्मनाभके पूर्वभवके जीव
महाराज श्रेणिकके चरित्रमें श्रेणिक
चेलना आदिकी गति वर्णन
करनेवाला चौदहवां सर्ग
समाप्त हुआ।

पंद्रहवा सर्ग ।

समस्त पदार्थोंके प्रकाश करनेमें सूर्यके समान, भावि तीर्थंकर श्री पद्मनाभ भगवानको नमस्कार कर स्वकल्याण सिद्धयर्थ उन्हीं भगवानके आचार्योंद्वारा प्रतिपादित पांच कल्याणोंका वर्णन करता हूं ।

उत्सर्पिणीकालके एक हजार वर्ष बाद अतिशय चतुर उत्तम ज्ञानके धारक चौदह कुलकर 'मनु' होंगे । और वे अपने बुद्धिबलसे प्रजाको शुभकार्यमें लगावेंगे । उन सबमें शुभकर्ता, अनेक देवोंसे पूजित, अनेक गुणोंके आकर, अपनी किरणोंसे समस्त अंधकार नाश करनेवाले गंभीर, अनेक आभरणोंसे शोभित और अतिशय प्रसिद्ध तीर्थंकर पद्मनामके पिता अंतिम कुलकर महापद्म होंगें । कुलकर महापद्म मुखसे चंद्रमाको नेत्रोंसे ताराओंको वक्षःस्थलसे शिलाको दांतोंसे कुंदपुष्पको और बाहुयुग्मसे शेषनागको जीतैगें । अनेक राजाओंसे वंदित राजा महापद्ममें उत्तमोत्तम गुण, रूप, समस्त कलायें, शील, यश आदि होंगे । महापद्म अपने उत्तम बुद्धिबलसे जीवेंगे । मनोहर रूपसे कामदेवकी तुलना करैगे । निरंतर विभूतिके प्रभावसे देवतुल्य और अपने शरीरकी कांतिसे सूर्यके समान होंगे । महापद्मके रहनेके लिये इंद्रकी आज्ञासे कुबेर अनेक रत्नोंसे जड़ित, मनोहर भूमियोंसे शोभित, अयोध्यानगरीका निर्माण

करैगा। अयोध्याका परकोटा मनोहर किरणोंसे व्याप्त, मुक्ताफल और भी अनेक रत्नोंसे निर्माण किया स्वर्गकी समताको धारण करैगा। और घर स्वर्गघरोंके साथ स्पर्द्धा करैगे। अयोध्याके घर विमानोंको जीतेंगे। मनुष्य देवोंको, स्त्रियां देवांगनाओंको, राजा इंद्रोंको और वृक्ष कल्पवृक्षोंको नीचा दिखांयगे। अयोध्यामें रहनेवाली कामिनियोंके मुखसे चंद्रमंडल जीता जायगा। नखोंसे तारागण, मनोहर नेत्रोंसे कमल और गमनसे हाथी पराजित होंगे। अयोध्यापुरीके महलोंपर लगीं ध्वजा चंद्रमंडलका स्पर्श करैगी। अयोध्यापुरीका विशेष कहांतक वर्णन किया जाय ? जिनेंद्रके रहनेके लिये कुबेर इंद्रकी आज्ञासे उसै एक ही बनावेगा। और वहां अनेक राजाओंसे पूजित चौतर्फा अपनी कीर्ति प्रसार करनेवाले अतिशय पुण्यवान, चतुर, सुंदर, और सात हाथ शरीरके धारक कुलकर महापद्म रहैगे। महापद्मकी प्रियभार्या सुंदरी होगी। सुंदरी अतिशय शरीरकी धारक, पद्मके समान सुंदर, रतिके समान होगी। उसके केश अतिशय देदीप्यमान और उत्तम होंगे। मुख कमलकी सुगंधिसे उसके मुखपर भौंरे गिरेंगे। और उसके शिरपर रत्नजड़ित देदीप्यमान चूड़ामणि शोभित होगा। अतिशय तिलकसे युक्त उसका भाल अतिशय शोभाको धारण करैगा और वह ऐसा मालूम पड़ेगा मानों त्रिलोककी स्त्रियोंके विजयके लिये विधाताने एक नवीन यंत्र रचा हो। कानोंतक विस्तृत विशाल और रक्त उसके नेत्र होंगे। और वे पद्मदलकी शोभा धारण करैंगे।

सुंदरीके भ्रकुटियोंके मध्यमें ओंकार अतिशय शोभाको धारण करैगा। विधाता उसै समस्त जगतको वश करनेके लिये निर्माण करैगा ऐसा मालूम पड़ता है। दांतरूपी अनुपम केसरका धारक नासिका रूपी बिशसे मनोहर ओष्ठरूपी पल्लवोंसे व्याप्त उसका मुखकमल अतिशय शोभा धारण करैगा। मनोहरकंबुके समान सुंदर, तीन रेखाका धारक, मुखरूपी घरकेलिये खंभेके समान कोकिल ध्वनियुक्त उसकी ग्रीवा अतिशय शोभित होगी। मुक्ताफलसे शोभित भांति २ के रत्नोंसे देदीप्यमान सुंदरीके वक्षःस्थलका हार अतिशय शोभा धारण करैगा। और वह ऐसा जान पड़ेगा मानो विधाताने स्तनकलशोंकी रक्षार्थ मनोहर सर्पका ही निर्माण किया हो। सुदुर्लभ हाररुपी सर्पोंसे शोभित चूचुकरुपी वस्त्रसे आच्छादित उसके दोनों स्तन मनोहर घड़ेके समान जान पड़ेंगे। अंगुलीरूपी पत्तोंसे व्याप्त, बाहुरूपी दंडोंका धारक, कंकणरूपी उन्नत केसरसे शोभित उसके दोनों करकमल अतिशय शोभा धारण करैंगे। मनोहरांगी सुंदरीका कामदेवरुपी हाथीसे युक्त मनोहर बिखरे हुए केशरुपी पद्मका धारक कामीजनोंकी क्रीड़ाका इष्टस्थल नाभिरुपी तालाव संसारमें एक ही होगा। सुंदरीका उन्नत स्तनोंके भारसे अतिशय कृश कटिभाग अति शोभित होगा सो ठीक ही है दो आदमियोंके विवादमें मध्यस्थ मारे भयके कृश होही जाता है। सुंदरीके दोनों जानु, कदली स्तंभके समान शोभा धारण

करेंगे। कामीजनोंको वश करनेके लिये वे कामदेवके दो बाण कहलाये जांयगे और अनेक शुभ लक्षणोंके धारक होंगे। मीन शंख आदि उत्तमोत्तम गुणोंसे उसके दोनों चरण अत्यंत शोभित होंगे। और नखरूपी रत्नोंसे युक्त उसकी अंगुली होंगी। विधाता सुंदरीका रुप तो अनेक उपायोंसे रचेगा और मुख चंद्रमासे, नेत्र कमलपत्रोंसे दांत मूगोंसे ओठ पके बिंबा-फलोंसे दोनों भुजा शाखाओंसे वक्षःस्थल सुवर्णतटोंसे दोनों स्तन सुवर्णकलशोंसे एवं दोनों चरण कमलपत्रोंसे बनावेगा। माता सुंदरी सरस्वतीके समान शोभित होगी क्योंकि सरस्वती जैसी सालंकृति अलंकारयुक्त होती है सुंदरी भी अनेक आभरणोंसे युक्त होगी। सरस्वती जैसी सर्वगुणा सर्वगुणयुक्त होती है उसीप्रकार सुंदरी भी सर्वगुणोंसे युक्त होगी। सरस्वती जैसी विदोषा दोष रहित होती है सुंदरी भी निर्दोष होगी। सरस्वती उत्तमरीतिसे देदीप्यमान होती है उसीप्रकार सुंदरी भी अतिशय सुडोल होगी। सरस्वती जैसी अनेकरसोंसे युक्त होती है सुंदरी भी लावण्ययुक्त होगी। सरस्वती जैसी शुभ अर्थयुक्त होती है सुंदरी भी अपने अवयवोंसे सुडोल होगी। माता सुंदरी गतिसे हथिनी जीतैगी और नयनसे मृगी, वाणीसे कोकिल, रूपसे रति एवं मुखसे चद्रमा जीतैगी। भगवानके जन्मके छै मास पहिलेसे जन्मतक पंद्रहमास पर्यंत कुबेर इंद्रकी आज्ञासे तीनोंकाल अमोघ रत्नोंकी

वृर्षा करैगा । माताकी सेवाके लिये इंद्रकी आज्ञासे छप्पन कुमारी आकर माताकी सेवार्थ आवेंगीं और राजा महापद्मको नमस्कार कर राजमहलमें प्रवेश करैगी ।

किसीसमय कमलनेत्रा रानी सुंदरी शयनागारमें अपनी मनोहर शय्यापर शयन करैगी अचानक ही वह रात्रिके पिछले प्रहरमें ये स्वप्न देखेगी । १ जिससे मद चू रहा है ऐसा सफेद हाथी, २ उन्नत स्कंधका धारक नाद करता हुआ बैल, ३ हाथीको विदारण करता बलवान केहरी, ४ दुग्धसे स्नान करती लक्ष्मी, ५ भ्रमरोंसे व्याप्त उत्तम दो माला, ६ सपूर्ण चंद्रमा, ७ अंधकारका नाशक प्रतापी सूर्य, ८ जलमें किलोल करतीं दो मछलियां, ९ दो उत्तम घड़े, १० अनेक पद्मोंसे व्याप्त सरोवर, ११ रत्न मीन आदिसे युक्त विशाल समुद्र, १२ मणिजड़ित सोनेका सिंहासन, १३ अनेक देवांगनाओंसे शोभित सुरविमान, १४ नागेंद्रका घर, १५ रत्नोंका ढेर, १६ और निर्धूमवन्हि । तथा उन्नत देहका धारक पवित्र किसी हाथीको अपने मूखमें प्रवेश करते भी वह सुंदरी देखेगी । प्रातःकालमें वीणा ढक्का शंख आदिके शब्दोंसे और मागधोंकी स्तुतिके साथ रानी पलंगसे उठाई जायगी और शय्यासे उठते समय वह प्राची दिशासे जैसा सूर्य उदित होता है वैसी शोभा धारण करैगी । महाराणी उठकर स्नान करैगी और शिरपर मुकुट, कठमें ललित हार, हाथोंमें कंकण, भुजाओंमें बाजूबंध, कानोंमें कुंडल, कमरपर

करधनी एवं पेरोंमें नूपुर पहनैगी । तथा अपने स्वामी राजा महापद्मके पास जायगी और सिंहासनपर उनके वामभागमें बैठिकर चित्तमें हर्षित हो इस प्रकार कहैगी—

स्वामिन् ! रात्रिके पिछले प्रहर मैंने स्वप्न देखे हैं कृपाकर उनका जैसा फल हो वैसा आप कहै । रानीके ऐसे वचन सुन राजा महापद्म इसप्रकार कहैगे—

प्रिये ! मृगाक्षि ! जो तुमने मुझसे स्वप्नोंका फल पूछा है मैं कहता हूं तुम ध्यानपूर्वक सुनो जिससे तुमैं सुख मिले-स्वप्नमें हाथीके देखनेका फल तो यह है कि तेरे पुत्ररत्न उत्पन्न होगा । बैलके देखनेका फल यह है कि वह तीनोंलोकमें अतिशय पराक्रमी होगा । तूने जो सिंह देखा है उसका फल यह है कि तेरा पुत्र अनंतवीर्यशाली होगा और दो मालाओंके देखनेसे धर्मतीर्थका प्रवर्तक होगा । जो तूने लक्ष्मीको स्नान करते देखा है उसका फल यह है कि मेरुपर्वत पर तेरे पुत्रको लेजाकर देवगण क्षीरोदधिके जलसे स्नान करावेंगे । चंद्रमाके देखनेसे तेरा पुत्र समस्तजगत्को आनंद प्रदान करनेवाला होगा । सूर्यके देखनेका फल यह है कि तेरा पुत्र अद्वितीय कांतिधारक होगा । कुंभके देखनेसे अगाध द्रव्यका स्वामी होगा। मीनके देखनेसे तेरा पुत्र सुखका भंडार होगा और उत्तमोत्तम लक्षणोंका धारक होगा । समुद्रके देखनेका फल यह है कि तेरा पुत्र ज्ञानका समुद्र होगा और जो तूने सिंहासन देखा है उससे

तेरा पुत्र तीनोंलोकके राज्यका स्वामी होगा। देवविमानोंके देखनेसे बलवान और पुण्यवान होगा। तूने जो नागेंद्रका घर देखा है उसका फल यह है कि तेरा पुत्र जन्मतेही अवधिज्ञा-नका धारक होगा। चित्रविचित्र रत्नराशी देखनेसे तेरा पुत्र अनेक गुणोंका धारक होगा। निर्धूम अग्निके देखनेका यह फल है कि तेरा पुत्र समस्त कर्म नाश सिद्धपद प्राप्त करैगा। और तुने जो मुखमें हाथी प्रवेश करते देखा है उसका फल यह है कि तेरे शीघ्र पुत्र होगा। राजाके मुखसे ज्योंही रानी स्वप्न-फल सुन हर्षित होगी त्योंही महान पुण्यका भंडार महाराज श्रेणिकका जीव नरककी आयुका विध्वंसकर रानी सुंदरीके शुभ उदरमें जन्म लेगा। तीर्थंकर महापद्मका आगमन अवधिज्ञानसे विचार देवगण अयोध्या आवेगे। तीर्थंकरके मातापिताको भक्तिपूर्वक प्रणाम करैगे। उन्हें उत्तमोत्तम वस्त्र पहनायगे। भगवानका गर्भकल्याण कर सीधे स्वर्ग चले जांयगे और वहां समस्त पुण्योंके भंडार समस्त कर्म नाश करनेवाले भगवान तीर्थंकरकी कथा सुन आनंदसे रहेंगे। छप्पन कुमारियां माताकी भोजनादिसे भक्तिपूर्वक सेवा करैगी। आज्ञानुसार माताका स्नपन विलेपन आदि काम करैगी। कोई कुमारी माताके पैर धोयगी। कोई उनके सामने उत्तमोत्तम पुष्प लाकर धरैगी। कोई माताकी देहसे तेल मलैगी। कोई क्षीरोदधिजलसे माताको स्नान करायगी। कोई पूआ मांड लाडू खीर उर्द मूंगके स्वाद दूध दही और भी भांतिके व्यंजन माताको देगी। कोई माताके भोजनार्थ उत्तमोत्तम भोजन बनानेके लिये उत्तमो-त्तम पात्र देगी। कोई २ माताकी प्रसन्नताकेलिये हावभावपूर्वक नृत्य करैगी। कोई माताकी आज्ञानुसार वर्ताव करैगी और

कोई कुमारिका अपने योग्य वर्तावसे माताके चित्तको अतिशय आनंद देगी। कोई २ कुमारी कत्था चूना सुपारी रखकर सुंदरीको पान देगी। कोई उसके गलेमें अतिशय सुगंधित माला पहनायगी। कोई कोई माताके लिये मनोहर शय्याका निर्माण करेंगी और कोई रत्नोंके दिया लगायगी। और कोई२ कुमारी माताके मस्तकपर मुकुट, कानमें कुंडल, हाथमें कंकण, गलेमें हार, नेत्रमें काजल, मुखमें पान, मस्तकपर तिलक, कमरमें करधनी, नाकमें मोती, कंठमें कंठी, पेरोंमें नूपुर, पामकी अंगुलियोंमें बीछिये पहिनांयगी। जब नौमा महिना पास आजायगा तब कुमारियां माताके विनोदार्थ क्रियागुप्त कर्तृगुप्त कर्मगुप्त और प्रहेलिका कहकर माताको आनंद बढांयगी। कोई पूछेगी, बता माता—शरीरका ढकनेवाला कौन है? चंद्रमंडलमें क्या है? और पापकी कृपासे जीव कैसे होते है? माता उत्तर देगी—

सभा विभा अभाः

कुमारियां फिर पूछेंगी—बता माता—जीवोंका अंतमें क्या होता है? कामी लोग क्या करते है? ध्यानके बलसे योगी कैसा होता है? माता उत्तर देगी—विनाश १ विलास २ विपास ३

कोई कुमारी क्रियागुप्त श्लोक कहकर मातासे पूछने लगी, बता माता—

[1]शुभेद्य जन्मसंतानसंभवं किल्विषं घनं।
प्राणिनां भ्रूणभावेन विज्ञानशत पारगे॥

१—हे अनेक विज्ञानोंकी आकर! शुभे! गर्भके प्रभावसे जीवोंके अनेक जन्मोसे चले आये वज्रपापोंका नाश करो।

इसमें क्रिया [१]कौन है ?

कोई कहने लगी, बता माता—

[२]आनंदयंतु लोकानां मनांसि वचनोत्करैः।
मातः कर्तृपदं गुप्तं वदभ्रूण विभावतः ॥

इसमें [३]कर्ता कौन है ?

कोई कहने लगी, बता माता—

[४]सुधीमनयसंपन्ना लभंते किंनराः क्वचित्।
स्वकर्मवशगा भीमे भवे विक्षिप्त मानसाः॥

इसमें कर्म क्या है ?

कोई२ कुमारी कहने लगी—माता! तुम समस्या पूरण करनेमें बड़ी चतुर हो। इस समय तुम गर्भवती भी हो मुनिर्वेश्यायते सदा इस समस्याकी पूर्ति करो। माताने जवाब दिया—

[५]नरार्थं लोकयत्येव गृहीत्वार्थं विमुंचति।
धत्ते नाभिविकारं च मुनिर्वेश्यायते सदा ॥

---

१ इसमें दो अवखडने धातुका लोटके मध्यम पुरुषका एक बचन 'द्य' क्रियापद है।

२—लोगोंके मन, वचनोंसे आनदको प्राप्त हों। हे माता इसमें कर्तृपद गुप्त है गर्भके प्रभावसे आप कहें। ३—इस श्लोकमें मनांसि कर्ता है।

४ विक्षेप चित्तयुक्त, कर्मोंके वशीभूत और नीतिरहित मनुष्य क्या ससारमे कहीं उत्तम बुद्धिके धारक हो सकते हैं? कदापि नहिं। इसमें सुधीं कर्ता है।

५ जो मुनि परधनकी ओर देखता रहता है, धन लेकर धनीको छोड़ देता है और नाभिविकारयुक्त होता है वह मुनि वेश्याके समान होता है।

दूसरी कुमारी बोली—माता ! वल्ली वेश्यायते सदा १ धरायां संगतं नभः। इन दो समस्याओंकी पूर्ति जल्द करो। माताने जवाब दिया—

१स्वपुष्पं दर्शयत्येव कुलीना सुपयोधरा ।
मधुपैश्चुंव्यमानाच वल्ली वेश्यायते सदा ॥१॥
२पानीये बालिशैर्नूनं धरास्थे प्रतिविम्बितं ।
दृश्यते च शुभाकारं धरायां संगतं नभः ॥२॥
३दूरस्थै र्दूरतो नूनं नरै विज्ञान पारगैः ।
दृष्यते च शुभाकारं धरायां संगतं नभः ॥३॥

कोई कुमारी मातासे यह कहेगी, शुभलक्षाणोंकी आकर—मृगनयनी ! प्रियवादिनि ! नियमसे आपके गर्भमें किसी पुण्यवानने अवतार लिया है। माता यह झूठ न समझो क्योंकि जो मनुष्य पक्षपाती और पूज्योंका वंचन करते हैं संसारमें वे

---

१ लता वेश्याके समान आचरण करती है क्योंकि वेश्या जैसी स्वपुष्पं दर्शयति। रजोधर्मयुक्त होती है लता भी पुष्प (फूल) युक्त होती है। वेश्या जैसी कुलीना नीच पुरुषोमें लीन रहती हैं लता भी कुलीना पृथ्वीमें लीन है। वेश्या जैसी सुपयोधरा उत्तम स्तनयुक्त होती है लता भी उत्तम दुधयुक्त है। वेश्या जैसी मधुपैश्चुंव्यमाना मद्यपजनोंसे चुंव्यमान होती है लता भी भौरोंसे चुंव्यमान है ॥२॥ मूर्खलोग भूमिस्थ पानीमें स्पष्टतया आकाशको देखते है इसलिये आकाश भूमिपर कहा जाता है ॥३॥ विज्ञानके वेत्ता पुरुष दूरसे आकाशको पृथ्वीपर रक्खा हुआ समजते हैं।

अनेक कष्ट भोगते है । इसप्रकार समस्त कुमारियां तीनोंकाल हृदयसे माताकी सेवा करैंगी और तीर्थंकर चक्रवर्ती नारायण प्रतिनारायण वासुदेव आदि महापुरुषोंकी कथा कहकर माताका मन आनंदित करैंगी। प्रायः स्त्रियोंके गर्भके समय वृद्धि आलस्य तंद्रा वगेरह हुआ करते हैं किंतु माताके गर्भके समय न तो उदरवृद्धि होगी, न आलस्य और तंद्रा होगी, मुखपर सफेदाई भी न होगी । जब पूरे नौ मास हो जांयगे तब उत्तम योगमें और उत्तम दिन चंद्रमा लग्न और नक्षत्रमें माता उत्तम पुत्ररत्न जनेगी । उस समय पुत्रके शरीरकी कांतिसे दिशा निर्मल हो जांयगी। भवनवासियोंके घरोंमें शंखशब्द होने लगेंगे । व्यंतरोंके घरोंमें भेरी बजैंगी। ज्योतिषियोंके घर मेघध्वनिके समान सिंहासन रव और वैमानिक देवोंके यहां घंटा शब्द होंगे । अपने अवधि-बलसे तीर्थंकरका जन्म जान देवगण अपने२ वाहनों पर सवार हो अयोध्या आंयगे । प्रथम स्वर्गका इंद्र भी अतिशय शोभनीय ऐरावत गजपर सवार हो अपनी इंद्राणीके साथ अयोध्या आयगा । अयोध्या आकर इंद्राणी इंद्रकी आज्ञासे शीघ्रही प्रसूतिघरमें प्रवेश करैगी। वहां तीर्थंकरको अपनी माताके साथ सोता देख उनकी गूढ़भावसे स्तुति करैगी । माताको किसी प्रकारका कष्ट न हो इसलिये इंद्राणी उस समय एक मायामयी पुत्रका निर्माण करैगी और उसे माताके पास सुलाकर और

भगवानको हाथमें लेकर इंद्रके हाथमें देगी। भगवानको देख इंद्र अति प्रसन्न होगा और शीघ्रही हाथीपर विराजमान करैगा। उस समय ईशान इंद्र भगवानपर छत्र लगायगा। सनत्कुमार और माहेंद्र दोनों इंद्र चमर ढोरैंगे एवं सबके सब मिलकर आकाश मार्गसे मेरुपर्वतकी ओर उसी क्षण चलदेंगे। मेरुपर्वतपर पहुंच इंद्र भगवानको पांडुकशिलापर विठायगा। उस समय देवगण एक हजार आठ कलशोंसे भगवानका अभिषेक करैंगे। इंद्र उसी समय भगवानका नाम पद्मनाभ रक्खेगा। अनेक प्रकार भगवानकी स्तुति करैगा। और उस समय भगवानका रूप देख तृप्त न होता हुआ सहस्राक्ष होगा। बालक भगवानको इंद्राणी अपनी गोदमें लेगी और अनेक भूषणोंसे भूषित करैगी। भूषणभूषित भगवान उस समय सूर्यके समान जान पड़ेंगे और दुंदुभि आनक शंख काहलोंके शब्दोंके साथ नृत्य करते हुए, तालके शब्दोंसे समस्त दिशा पूरण करते हुए, लयपूर्वक रागसहित सरस गान करते हुऐ, और जय२ शब्द करते हुए समस्त देव मेरुपर्वतपर भगवानके जन्मकालका उत्सव मनायगे। पश्चात् अनेक देवोंसे सेवित इंद्र भगवानको गोदमें लेकर हाथी पर विराजमान करैगा। अनेक शालि धान्य युक्त, बड़ी२ गलियोंसे व्याप्त ध्वजायुक्त, अनेक मकानोंसे शोभित अयोध्यापुरीमें आयगा। बड़े २

नेत्रोंसे शोभित भगवानको पिताके सुपुर्द करैगा । मेरुपर्वतपर जो काम होगा इंद्र उस सबको भगवानके पिता महापद्मसे कहैगा । पितामाताके विनोदार्थ इंद्र फिर नृत्य करैगा एवं भगवानको अनेक भूषण प्रदानकर और भगवानको भक्तिपूर्वक नमस्कार कर इंद्र समस्त देवोंके साथ स्वर्ग चला जायगा । इस प्रकार समस्त देवोंसे पूजित भांति २ के आभरणयुक्त देहका धारक, अनेक गुणोंका आकर बालक पद्मनाभ दिनोंदिन बढता हुआ पिता माताका संतोषस्थान होगा । पद्मनाभ अमृतसे परिपूर्ण अपने पाँवके अगूठेका चुसेगा और पवित्र देहका धारक शुभ लक्षणोंका स्थान वह कलाओंसे जैसा चंद्रमा बढ़ता चला जाता है वैसा ही शुभलक्षणोंसे बढ़ता चला जायगा । अतिशय पुण्यात्मा तीर्थंकर पद्मनाभके शरीरकी उचाई सात हाथ होगी और आयु ११६ एकसो सोलह वर्षकी होगी । तीर्थंकर पद्मनाभकी स्त्रीयां उत्तम अनेक गुणोंसे भूषित सुवर्णके समान कांतिकी धारक शुभ और यौवनकालमें अतिशय शोभायुक्त होंगी । भगवान ऋषभदेवके जैसे भरत चक्रवर्ती आदि शुभलक्षणोंके धारक पुत्र हुए थे वैसेही तीर्थंकर पद्मनाभके भी चक्रवर्ती पुत्र होंगे । तीर्थंकर ऋषभदेवके ही समान तीर्थंकर पद्मनाभ राज्य करैंगे । नीतिपूर्वक प्रजाका पालन करैंगे और प्रजावर्गको षटकर्मकी ओर योजित करैंगे । तथा देश ग्राम पुर द्रोण आदिकी रचना करायगे । वर्णभेद और नृपवंशभेदका निर्माण

करैंगे। राजा लोगोंको नीतिकी शिक्षा देंगे, व्यापारका ढंग सिखलांयगे और भोजनादि सामिग्रीकी शिक्षा प्रदान करैंगे। इसरीतिसे भगवान पद्मनाभ कुछ दिन राज्य करैंगे पश्चात् कुछ निमित्त पाकर शीघ्रही भवभोगोंसे विरक्त हो जांयगे और सद्धर्मकी ओर अपना ध्यान खींचेंगे। भगवानको भवभोगोंसे विरक्त जान शीघ्रही लोकांतिक देव आंयगे और महाराजकी वार२ स्तुति कर उन्हें नालिकी विठा वन ले जायगे। भगवान तप धारण कर और तपके प्रभावसे मनःपर्ययज्ञान प्राप्त करैंगे और पीछे केवलज्ञान प्राप्त करैंगे। भगवानको केवलज्ञानी जान देवगण आयगे और समवसरणकी रचना करैंगे। भगवान् समवसरणमें सिंहासन पर विराजमान हो भव्यजीवोंको धर्मोपदेश देंगे। जहांतहां विहार भी करैंगे और अपने उपदेश रुपी अमृतसे भव्यजीवोंके मन संतुष्ट कर समस्त कर्मोंको नाश निर्वाणस्थान चलेजांयगे— जिस समय भगवान मोक्ष चले जांयगे उससमय देव उनका निर्वाणकल्याण मनांयगे तथा सानंद अपनी देवांगनाओंके साथ स्वर्ग चले जायगे और वहां आनंदसे रहैंगे।

इसप्रकार भगवान पद्मनाभके पूर्वभवके जीव महाराज श्रेणिकके चारित्रमें भविष्यत कालमें होनेवाले भगवान पद्मनाभके पंच कल्याण वर्णन करनेवाला पंद्रहवां सर्ग समाप्त हुआ।

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथ ॥

शुद्धि अशुद्धि पत्र ।

अशुद्धि	शुद्धि	पृष्ठ	पंक्ति
गणाधर	गणधर	२	५
महाबीर	महावीर	१	८
कमरूपी	कर्मरूपी	२	२१
वेष्ठित	वेष्टित	११	५
राज्ययें	राज्यमें	१७	९
घोड़ा	घोड़ा	२१	१५
वरैका	वैरका	२२	१२
धरमें	घरमें	२७	९
स्तनरूषी	स्तनरूपी	३३	५
समाझिली	समझली	३९	१६
उतम	उत्तम	४१	३
श्रेणिक	उपश्रेणिक	४३	६
लाता हूं	लाता है	४८	२०
षके हुवे	पके हुवे	५९	१४
श्रेणिको	श्रेणिकको	७६	४
मिश्चित	मिश्रित	७८	२०
उयाय	उपाय	९०	१२
तंरग	तरंग	९४	६
उपश्रेणिको	श्रेणिकको	१००	१७

मृगांके	मृगांकके	१०१	६
अमना	अपना	१०९	४
परिश्रन	परिश्रम	१९६	१८
उसका विवाह	वह	१५९	१०
निर्यंच	तिर्यंच	१७६	१९
मी	भी	१७७	३
यिचारी	विचारी	१७८	१
घोड़ासा	थोड़ासा	१८२	४
बौघधर्मको	बौद्धधर्मको	१८३	१३
वैरके	वैरका	२०३	१
अहार	आहार	२२२	१२
वढ़ा	बड़ा	२५७	११
शूंठ	झूंठ	२८७	६
निकल्प	विकल्प	२८८	४
सकताहूं	सकता है	३०१	८
अह्वानन	आह्वानन	३०१	२०
भतिहार्य	प्रातिहार्य	३२१	१२
ताके	नोक	३२३	८
तेजकायिक	तेजःकायिक	३२५	४
दव्योंके	द्रव्योंके	३२६	७
वृतांत	वृत्तांत	३३१	५
मनुप्योंपर	मनुष्योंपर	३३३	९
नादीके	नदीके	३३४	७

किस	किसी	३३४	१६
मीतरी	भीतरी	३३५	९
नरमेघ	नरमेध	३३६	२
अश्वमेघ	अश्वमेध	३३६	३
सूधर्म	सुधर्म	३३७	११
शास्त्ररुपी	शास्त्ररूपी	३४०	८
आश्र्चर्य	आश्चर्य	३४०	१९
दूष्कर्म	दुष्कर्म	३४१	९
आपके	आपका	३४३	१३
सौ	सो	३४८	२
मुखसे	नेत्रोंसे	३४८	१९
रुखी	रूखी	३५१	२१
दिखा	दीखा	३५२	८
पिताकी	पिताको	३५६	१३
रानीको	चेलना रानीको	३५८	१३
वह इसप्रकार	इसप्रकार	३५८	१९
भयभित	भयभीत	३५९	७
विपास	विपाश	३७०	१७
शुभलक्षाणोंकी	शुभलक्षणोंकी	३७२	१०
नीत्रिकी	नीतिकी	३७६	१

२५७से २७२ तक की पृष्ठसख्या छपनेमें गलती हुई है सोभी पाठक सुधारलेवे।